स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकेन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप एवं बी.के महेश भाई, अकाउण्टस् आफिस, पाण्डव भवन, साकार एवं अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहे है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 85 से अधिक विषयों पर साकार एवं अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म'** एक है।

प्रस्तावना

अव्यक्त बापदादा ने दादी जी के देहावसान के समय तीन शब्द अर्थात् एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म बोले, तो इन तीनों शब्दों का भाव-अर्थ क्या है और उनकी अनुभूति, उनका कर्तव्य, समय आदि क्या है, उसके विषय में भी ज्ञान दिया है, वह भी हमको जानना आवश्यक है। एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वालों की अनुभूतियाँ अपनी-अपनी हैं और कर्तव्य भी अपने-अपने हैं, हमको दोनों के विषय में बाबा ने संक्षिप्त परिचय दिया है, इसलिए हमको उनके विषय में ज्ञान है और हम उनके विषय में विचार कर सकते हैं और दोनों की स्थिति को विचार कर हमको क्या पुरुषार्थ करना चाहिए, उसका निर्णय कर सकते हैं, उसके अनुरूप पुरुषार्थ करने में हमको सुविधा होगी। जब हम इन दोनों के रहस्य को समझेंगे, तब ही हम यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके एडवान्स जन्म ले सकेंगे अर्थात् सतयुग की प्रथम राजाई में जन्म ले सकेंगे और उस राजाई में अच्छा पद पा सकेंगे। इस अवधारणा को लेकर ही यहाँ पर कुछ विचार किया गया है। हम सभी ये आध्यात्मिक पढ़ाई पढ़ रहे हैं, हर एक की अपनी-अपनी बुद्धि है, जिसके अनुसार ही वह इन बातों पर विचार कर सकता है, इसलिए यहाँ जो विचार प्रगट किये हैं, वे ही फाइनल नहीं हैं। अन्य पुरुषार्थियों के विचार उनसे भिन्न हो सकते हैं, इसलिए वे अपने विचारों को प्रगट करेंगे तो इस सम्बन्ध में और भी अधिक समझने में मदद मिलेगी। आशा करते हैं कि वे अपने विचारों को अवश्य ही प्रगट करेंगे। यहाँ पर मैंने अपने विचारों को और बापदादा की मुरली के आधार पर मैंने क्या समझा है, वह व्यक्त किया है, यथार्थ सत्य में बहुत मार्जिन है, जिसको अभी विचार करना है और आगे बाबा जब स्पष्ट करेंगे, तब समझ में आयेगा। यदि कोई इस सम्बन्ध में अपने विचार देता है और वे ईश्वरीय महावाक्यों के अनुकूल होंगे, विवेकयुक्त, तर्कसंगत होंगे तो उनको मैं अवश्य स्वीकार करूँगा।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म

विषय-सूची

विषय पेज नं.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और परमात्मा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म की परिभाषा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वालों के गुण, कर्तव्य और विशेषतायें

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और संगमयुग

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और संगम का समय

दोनों कल्प के संगमयुग की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और चढ़ती कला और उतरती कला का संगम

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और परमात्मा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त बापदादा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और शिवबाबा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और ब्रह्मा बाबा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त बापदादा का पार्ट

एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और शिवबाबा का आना-जाना

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और तीन लोक

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त वतन एवं मधुवन

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और सम्पूर्णता

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हिसाब-किताब

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और कर्मभोग

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और स्थापना-विनाश

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और संगमयुगी ब्राह्मणों की जनसंख्या

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और संगमयुगी ब्राह्मण

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और पुरुषार्थ

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वालों के पुरुषार्थ और प्राप्ति में अन्तर

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वालों के पुरुषार्थ और प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन
एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और समाधि
एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और योग
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और कर्मातीत स्थिति
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म और पवित्रता एवं ब्रह्मचर्य
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और सृष्टि-चक्र का ज्ञान
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और गीता
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति
एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और गर्भ
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और जन्म
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और योगबल से जन्म
एडवान्स जन्म और योगबल से जन्म में अन्तर
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और जन्म-मृत्यु
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और धर्मराजपुरी
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व का नव-निर्माण
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी
एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और नये विश्व की राजाई
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अष्ट रतन
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अष्ट रतन एवं अष्ट समानान्तर राजाइयाँ
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हमारा कर्तव्य
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हमारी स्थिति
एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व-कल्याण की सेवा
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और माया
एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और साधना
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव एवं परिवर्तन की प्रक्रिया
वर्तमान परिवर्तन और अव्यक्त मिलन

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और फरिश्ता स्वरूप
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और शंकर पार्टी
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और दादी जी
प्रश्नोत्तर

Q. जब विनाश होगा तो पहले दुनिया वाले शरीर छोड़ेंगे या एडवान्स पार्टी वाले और एडवान्स स्टेज वाले शरीर छोड़ेंगे ?

Q. क्या एडवान्स पार्टी को इस बात का संकल्प या उत्सुकता होगी कि विनाश जल्दी हो, जैसाकि संगमयुगी ब्राह्मणों के मुख से प्राय: सुना जाता है ?

Q. एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज एवं संगमयुगी ब्राह्मणों और वैज्ञानिकों में क्या सम्बन्ध होगा ?

Q. क्या अभी ब्राह्मणों से शरीर छोड़ने वाले सभी एडवान्स पार्टी में जाते हैं या उनमें से कोई फिरसे ज्ञान में आयेंगे ? यदि आयेंगे तो क्यों और यदि नहीं आयेंगे तो जो नहीं आयेंगे उनका इस ब्राह्मण परिवार से क्या सम्बन्ध होगा ?

एडवान्स पार्टी अर्थात् जो संगमयुग के ज्ञान-योग के पार्ट से सम्पन्न होकर गये, इसलिए वे फिर ज्ञान में नहीं आयेंगे परन्तु उनका इस ब्राह्मण परिवार के प्रति स्नेह होगा, उसकी उन्नति के लिए सहयोग भी होगा परन्तु उनका ध्यान नई दुनिया की स्थापना के कार्य में होगा, जिसमें मुख्य कार्य है योगबल से जन्म देना। जो थोड़ा ज्ञान लेकर अर्थात् थोड़े समय ज्ञान में चलने के बाद ही शरीर छोड़ देते हैं और उनकी ज्ञान-योग में रुचि तथा ब्राह्मण परिवार से प्यार होता है, वे आयेंगे और अपने को ज्ञान-योग से सम्पन्न करेंगे।

Q. जो ज्ञान में आने के बाद शरीर छोड़ते हैं, वे सभी एडवान्स पार्टी में कहे जायेंगे ? यदि हाँ तो कैसे और नहीं तो क्यों और कैसे ?

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विविध ईश्वरीय महावाक्य

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म की परिभाषा

अव्यक्त बापदादा ने ये तीन शब्द कहे हैं, उन तीनों का अलग-अलग क्या अर्थ है, उनकी क्या स्थिति है, वह जानना भी अति आवश्यक है क्योंकि इस विश्व-नाटक में इस पुरुषोत्तम संगम समय पर विशेष महत्व है और जब बाबा ने कहा है तो उनसे हमारा कोई-कोई न कोई सम्बन्ध भी अवश्य है, उसके लिए हमको कोई विशेष पुरुषार्थ भी अवश्य करना है।

एडवान्स पार्टी अर्थात् जो आत्मायें इस ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों और पुरुषार्थ को पूर्ण करके, उससे कर्मातीत होकर गई हैं और उनको एडवान्स पार्टी में जाकर नये विश्व के नव-निर्माण के लिए आगे का कर्तव्य करना है, उसके लिए विधियाँ रचनी हैं, विधि-विधान बनाने हैं। उसमें मुख्य कर्तव्य है सतयुग में योगबल से जन्म देने का अविष्कार करना क्योंकि स्वर्ग और नर्क को विभाजित करने वाली यही मुख्य सीमा-रेखा है। योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही स्वर्ग और नर्क की स्थिति को स्पष्ट करती है अर्थात् जिसके आधार पर स्वर्ग और नर्क का नाम पड़ता है अर्थात् यह सृष्टि-चक्र अमरलोक और मृत्युलोक के रूप में विभाजित होता है।

एडवान्स स्टेज वाली वे आत्मायें हैं, जो वर्तमान ब्राह्मण जीवन में कर्मातीत स्थिति के निकट पहुँची हुई हैं या पहुँचने का पुरुषार्थ कर रही हैं अर्थात् जो आत्मायें वर्तमान ब्राह्मण जीवन में ज्ञान-योग से सम्पन्न होकर एडवान्स पार्टी या एडवान्स जन्म में जाने की तैयारी कर रही हैं और अपनी दृष्टि-वृत्ति-स्थिति, मन्सा-वाचा-कर्मणा परमात्मा का सन्देश अन्य आत्माओं को देने में तत्पर हैं। परमात्मा के द्वारा दिया गया यथार्थ ज्ञान एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं की ही बुद्धि में होता है।

एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुग के आदि का जन्म। एडवान्स जन्म में आने वाली आत्मायें एडवान्स पार्टी से भी हो सकती हैं और एडवान्स स्टेज वाली भी हो सकती हैं। एडवान्स जन्म वाली आत्मायें पहले परमात्मा पिता के साथ परमधाम जायेंगी और फिर आकर सतयुग के आदि में योगबल से जन्म लेंगी, जहाँ से नये कल्प अर्थात् स्वर्ग का आरम्भ होगा।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वालों के गुण, कर्तव्य और विशेषतायें

एडवान्स पार्टी

एडवान्स पार्टी वालों में आत्मिक शक्ति होती है, विश्व-कल्याण का संकल्प होता है, अव्यक्त बापदादा की उनको मदद भी मिलती है, परन्तु एडवान्स स्टेज वालों के समान उनमें ज्ञान स्पष्ट

नहीं होता है। उनकी भी चढ़ती कला होती है, परन्तु उनको चढ़ती कला, उतरती कला का उनको ज्ञान नहीं होता है अर्थात् उनकी स्वभाविक चढ़ती कला होती है। समय-समय पर जब उनको बाबा वतन में इमर्ज करता है, उनको अनुभव कराता है, उनको मार्ग-दर्शन देता है, जिससे ये ज्ञान की बातें उनकी बुद्धि में रिवाइज़ होती रहती हैं, जिससे उनको साकार में काम करने में सहयोग मिलता है। एडवान्स पार्टी वालों को नई दुनिया सतयुग के लिए तैयारी करनी है। एडवान्स जन्म लेने वालों के लिए योगबल से जन्म लेने की व्यवस्था करनी है। नई दुनिया के नव-निर्माण के लिए साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी वाली आत्माओं को तैयार करना है।

इस प्रकार हम विचार करें तो एडवान्स पार्टी को सतयुग की स्थापना और वहाँ के विधि-विधानों के अनुसार अनेक कर्तव्यों का अविष्कार करना और कराना है, जिनमें मुख्यता-

योगबल से गर्भ धारण करने और जन्म देने के विधि-विधान का अविष्कार करना और योगबल से जन्म देना।

अन्त समय और सतयुग-त्रेता में नष्टोमोहा बनकर रहना और सहज देह का त्याग करना क्योंकि वहाँ बीमारी आदि होती नहीं, इन्द्रियों की असमर्थता भी नहीं होती है तो कब और कैसे सहज देह का त्याग करते हैं, यह भी विचारणीय विषय है, जबकि यहाँ असाध्य बीमारी होते भी आत्मायें देह का त्याग करना नहीं चाहते हैं। सतयुग की स्थूल साधन-सम्पत्ति के निर्माण एवं स्थापना के लिए नये-नये अविष्कार करना-कराना।

सतयुग में महल, विमान आदि बनाने के लिए विभिन्न साधनों की जो आवश्यकता होगी, वे कैसे बनेंगे क्योंकि वहाँ प्रदूषण आदि करने वाली चीजें तो होती नहीं हैं, इसलिए जरूर कोई ऐसा विधि-विधान होगा, जिससे वातावरण में प्रदूषण न हो। इसका एक उदाहरण सौर-ऊर्जा का है। अभी सौर-ऊर्जा के द्वारा बिजली आदि के निर्माण का अविष्कार हुआ, विभिन्न साधन बनें हैं, जिसका विशेष प्रचार-प्रसार हो रहा है। कम्प्युटर आदि में भी संकल्प शक्ति आदि का प्रयोग हो रहा है।

दीदी ने कहा - अभी ऐसा संगठन बनाओ, जो चारो तरफ चक्कर लगाकर ऐसा वायब्रेशन फैलाये, जिससे व्यर्थ समाप्त हो समर्थ संकल्प द्वारा सकाश फैले। ... बाबा ने कहा - मेरे ये मुरब्बी बच्चे आज भी जहाँ हैं, उनकी सबके लिए शुभ कल्याण की भावना है।

सन्देश 29.07.10 मोहिनी बहन द्वारा

"तुम जानते हो - हम सभी एक्टर्स हैं, हर एक को अपना एक्ट करना है, जो ड्रामा में नूँध है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेकर अपना पार्ट बजाती है। अभी जो जिन संस्कारों से जायेंगे, वे वहाँ गुप्त भी सर्विस करेंगे। आत्मा में संस्कार तो रहते हैं ना। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं,

उनका मान भी होता है। भारत का कल्याण करने वाले सिर्फ तुम बच्चे ही हो, और तो सब अकल्याण ही करते हैं। पतित बनते हैं और बनाते हैं।"

सा.बाबा 20.06.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी वाले एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म लेने वालों के बीच की एक कड़ी हैं, जिससे उनमें दोनों के ही गुण-धर्म-संस्कार होंगे। उनको अपने जीवन में कोई दुख-अशान्ति नहीं होगी परन्तु अन्य आत्माओं के दुख-दर्द को मिटाने के लिए संकल्प अवश्य होगा, उस अनुसार उनका पुरुषार्थ होगा। जैसे गौतम बुद्ध को रहा।

एडवान्स स्टेज

एडवान्स स्टेज ही सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ स्टेज है, जो एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म का आधार है। इस जीवन में जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का, आत्मा की सम्पूर्णता-सम्पन्नता अनुभव होता है, वह सारे कल्प में और कहाँ भी नहीं हो सकता है। इसलिए इस जीवन का महत्व जानने वाले ही इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव करते हैं। वर्तमान संगमयुगी जीवन में यथार्थ ज्ञान की धारणा करके परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख का अनुभव करना और कराना ही एडवान्स स्टेज वालों की विशेषता और गुण-धर्म हैं। इसमें ही उनकी महानता है। एडवान्स स्टेज वालों को ही सर्वात्माओं को परमात्मा का सन्देश देना है और मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है। एडवान्स स्टेज वाले देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम शान्ति, परमशक्ति का अर्थात् मुक्ति का अनुभव करते हैं। एडवान्स स्टेज वाले देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर फरिश्ता रूप धारण कर अव्यक्त बापदादा के साथ विश्व कल्याण की सेवा करते हुए परमानन्द का अनुभव करते हैं। एडवान्स स्टेज वाले इस विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा करके इसको साक्षी होकर देखते हुए और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाते हुए परम-सुख को अनुभव करते हैं। साकार में परमात्म-मिलन का सुर-दुर्लभ सुख एडवान्स स्टेज वाले ही करते हैं।

इस एडवान्स स्टेज पर स्थित होकर श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके विश्व-कल्याण की सेवा करना और इस विश्व-नाटक का आनन्द लेना और अन्य आत्माओं को कराना हम ब्राह्मणों का परम कर्तव्य है। अभी भी हम आत्माओं में से भी कई आत्मायें एडवान्स पार्टी जायेंगी या जाने वाली हैं, वे अभी की धारणा और कर्तव्य के आधार पर ही एडवान्स पार्टी में जाकर वह कर्तव्य पूरा कर सकेंगे और एडवान्स जन्म लेकर नये विश्व का श्रेष्ठ सुख अनुभव कर सकेंगे। उनकी एडवान्स स्टेज के आधार पर ही नये सम्बन्ध और साधन-सम्पत्ति प्राप्त होंगे।

एडवान्स स्टेज वालों के जीवन में माया के या अपने कर्मों के हिसाब-किताब के कारण कुछ विघ्न भी आते हैं, परन्तु यथार्थ पुरुषार्थ के कारण वे विघ्न, विघ्न नहीं लेकिन परीक्षा के रूप में अनुभव होते हैं, इसलिए वे चढ़ती कला का आधार बनते हैं।

"तुम जानते हो भारत पवित्र था, उसको वाइसलेस कहा जाता है। उस समय तुम बहुत सुखी, एवर हेल्दी, एवर-वेल्दी थे। अभी भारत विशश पतित बना है। ... तुमको श्रीमत पर पढ़ना और पढ़ाना है। तुम्हारा यही धन्धा है। बाकी कर्मभोग तो जन्म-जन्मान्तर का बहुत है। कोई हार्ट फेल होता है, कोई बीमार होता है तो समझा जाता है भावी ड्रामा की। उनको शायद दूसरा पार्ट बजाना होगा, इसमें दुख की कोई बात नहीं है।"

सा.बाबा 20.06.12 रिवा.

"वह है नॉलेज रूपी दर्पण में अपना रूप देखना, ऐसे यह अपना लाइट का फरिश्ता रूप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलते-फिरते, बात करते ऐसे महसूस हो कि मैं लाइट-रूप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ, मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ। तब ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा। कर्तव्य करते हुए भी मैं फरिश्ता निमित्त इस कार्य अर्थ पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी।"

अ.बापदादा 15.09.74

"अनन्य रतन लाइट-हाउस मिसल घूमते और चारो ओर लाइट देते रहेंगे। लाइट-हाउस का भी प्रैक्टिकल रूप चाहिए ना। ... सूर्य एक स्थान को ही रोशनी देता है क्या ? तो आपकी भी विशेष शक्ति रूपी किरणें चारो ओर फैलनी चाहिए ना। नहीं तो मास्टर सर्वशक्तिवान और ज्ञान सितारे आप कैसे सिद्ध होंगे ? मास्टर ज्ञान सूर्य अर्थात् बाप समान।"

अ.बापदादा 15.09.74

"लाइट का भी चक्र हो और सेवा में प्रकाश फैलाने वाला चक्र भी हो, तब ही कहेंगे चक्रधारी। ऐसा चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है। चलते-फिरते लाइट का चक्र हर एक को दिखाई देगा, ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि इन ऑखों से दिखाई पड़ रहा है। ऐसे ही आप लोगों को अनुभव होगा, देखते-देखते वे खुद भी गुम होने लगेंगे (अर्थात् वे भी अशरीरी बन जायेंगे)।"

अ.बापदादा 15.09.74

"रास अर्थात् राशि मिलाना। राशि मिलाना अर्थात् स्वभाव-संस्कार, गुण और सेवा साथ-साथ मिलने में दिखाई दे। समान तो नहीं हो सकता, नम्बर तो होंगे ही लेकिन ज़रा सा अन्तर जो न के बराबर दिखाई दे। ... यह जो गायन है कि वे एक-दूसरे में समाकर एक हो गये, यह है महारथियों का मिलन। बाप में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।"

अ.बापदादा 30.09.75 - 28.10.12 रिवा.

"बाप में समा जाना अर्थात् समान बन जाना अर्थात् समान स्वरूप का अनुभव करना। उस समय बाप और महारथी बच्चों के स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंगे। साकार होते हुए भी निराकार स्वरूप के लव में खोये हुए होते हैं। तो स्वरुप भी बाप समान हो गया। ... बाप के सर्व गुण स्वयं में अनुभव होते हैं, जो ब्रह्मा का अनुभव साकार में था।"

अ.बापदादा 30.09.75 - 28.10.12 रिवा.

"सागर में समा जाना अर्थात् स्वयं की सम्पूर्ण स्टेज का अनुभव करना। अभी यह अनुभव ज्यादा होना चाहिए। हर संकल्प से वरदानी, नज़र से वरदानी, नज़र से निहाल करने वाले। बापदादा हर बच्चे की समीपता को देखते हैं। लीन अर्थात् समा जाना। अमृतवेले का समय विशेष ऐसी पॉवरफुल स्थिति का अनुभव करने का है। ऐसे अनुभव का प्रभाव सारा दिन चलेगा।"

अ.बापदादा 30.09.75 - 28.10.12 रिवा.

"अभी तुम्हारा यह टाइम बहुत वेल्यूएबुल है, इसको वेस्ट नहीं करना है। भक्ति मार्ग में बहुत टाइम वेस्ट करते आये हो। ... योग में रहने की ऐसी प्रैक्टिस हो, जो भल कितना भी आवाज़ हो, अर्थक्वेक हो, बॉम्बस गिरें, तो भी डरना नहीं है। यह तो जानते ही हो कि रक्त की नदियाँ बहनी है। आगे चल बहुत आफतें आनी है।"

सा.बाबा 7.11.12 रिवा.

एडवान्स जन्म

एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुग में पहले-पहले आने वाली आत्माओं का जन्म। एडवान्स जन्म में आत्माओं को सुख-शान्ति के साधन-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में अपने सतोप्रधान स्वरूप में उपलब्ध होते हैं, उनकी प्रकृति दासी होती है, इसलिए समय और आवश्यकतानुसार सब प्राप्तियाँ स्वत: होती हैं, इसलिए उनको उनके लिए संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए देवताओं को 9इच्छा मात्रम् अविद्या" कहा जाता है। परन्तु उनमें एडवान्स स्टेज वालों के समान ज्ञान नहीं होता है और उनको एडवान्स पार्टी वालों के समान अव्यक्त बापदादा की पालना भी नहीं मिलती है, इसलिए उनकी उतरती कला होती है। उतरती कला होते भी उनको ये आभास नहीं होता है कि हम उतरती कला में हैं अर्थात् दुख-अशान्ति की ओर बढ़ रहे हैं और समयान्तर में जीवन में दुख-अशान्ति की अनुभूति होनी ही है। यदि उनको ये ज्ञान और आभास हो तो उनका वह सर्व प्राप्ति सम्पन्न सुख ही उड़ जाये और चिन्ता लग जाये।

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वालों के कर्तव्य के विषय अव्यक्त बापदादा ने दादी जी के देह त्याग के समय विस्तार से अनेक बातों पर प्रकाश डाला है। बाबा ने इसके सम्बन्ध में क्या-क्या बताया है, उसके सम्बन्ध में भी विचारार्थ आगे लिखा गया है।

एडवान्स पार्टी वालों को मृत्यु पर विजय का सफल अभ्यास अर्थात् समय पर सहज बैठे-बैठे देह का त्याग करने का विधि निकालना और विधान बनाना आदि कार्य करने हैं। उसके लिए देह सहित देह के सम्बन्धों से सहज नष्टोमोहा और इस देह में रहते देह से अन्तर्ध्यान होने का सफल अभ्यास करना। ये देह से न्यारे होने और सेवा का संस्कार वे अपने पूर्व जन्म अर्थात् ब्राह्मण जीवन से लेकर गये हैं, इसलिए उनमें यह शक्ति है कि वे जब चाहें तब इस देह से अन्तर्ध्यान हो जायें अर्थात् इस देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायें और यह देह और देह की दुनिया आत्म को खींचे नहीं। एडवान्स स्टेज वालों को भी यह अभ्यास करना है। अभी के इस अभ्यास से ही एडवान्स जन्म लेने वालों को सतयुग में सहज देह का त्याग करके नया देह धारण करने की शक्ति होगी, जिससे उनको मृत्यु-दुख और मृत्यु का कोई भय नहीं होगा। यह पुरुषार्थ एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाले दोनों को ही करना होता है, परन्तु एडवान्स पार्टी वाले स्वभाविक रूप में करते हैं, एडवान्स स्टेज वाले जानकर करते हैं अर्थात् उनकी बुद्धि में यह सारा ज्ञान है।

दीदी ने कहा - बाबा अचानक की बात कहता था परन्तु अभी लगता है कि बाबा समय से पहले इशारा अवश्य देता है। अगर हम सूक्ष्म बुद्धि से उन इशारों को कैच कर लेते हैं तो अपना कल्याण कर सकते हैं। ... जो बाबा के आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार यज्ञ सेवक बच्चे हैं, आत्माभिमानी हैं, अन्त समय उनको अनुभव होगा कि हमारे द्वारा चारो ओर आत्माभिमानी स्थिति के वायब्रेशन फैल रहे हैं और वे स्वयं उपराम होते हुए अन्य आत्माओं को भी उपराम करेंगे। सन्देश 29.07.10 मोहिनी बहन द्वारा

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और संगमयुग

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और संगम का समय

संगमयुग का एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म तीनों प्रकार की आत्माओं के साथ क्या सम्बन्ध है, इस बात का ज्ञान भी हमारे लिए आवश्यक है। इससे हमारे पुरुषार्थ में भी मदद मिलती है अर्थात् हमको क्या पुरुषार्थ करना है, वह समझ में आता है और हमको अपने वर्तमान के यथार्थ कर्तव्य की भी प्रेरणा मिलती है, जिससे आत्मा यथार्थ कर्तव्य करने में समर्थ होती है और वह कर्तव्य करने से आत्मा को खुशी भी मिलती है।

संगमयुग का समय कब से कब तक होता है, इसका ज्ञान होने वाले ही इस सत्य को अनुभव कर सकते हैं और उस अनुसार कर्तव्य कर सकते हैं।

यह कल्प का संगमयुग है, जो दो भागों में विभाजित है। एक पुराने कल्प का समय और दूसरा नये कल्प का समय। जब से परमपिता परमात्मा इस धरा पर आते हैं, तब से संगमयुग आरम्भ होता है और जब परमात्मा परमधाम जाते हैं, विनाश आरम्भ होता है, जिससे अन्य आत्मायें भी देह का त्याग करके अपने पुराने हिसाब-किताब पूरे करके, परमात्मा के साथ परमधाम जाती हैं, तब तक का समय पुराने कल्प का संगम समय होता है और उसके बाद एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें आना आरम्भ होता है और उनका योगबल जन्म होता है अर्थात् जब से योगबल से जन्म लेने-देने की प्रथा आरम्भ होती है, तब से नये कल्प का संगम समय आरम्भ होता है और वह समय लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारूढ़ होने तक चलता है क्योंकि एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को जन्म देने और उनकी पालना करने वाली एडवान्स पार्टी की आत्मायें तो पुराने कल्प की ही होती हैं क्योंकि उनका जन्म तो भोगबल का ही होता है। परन्तु नये कल्प के संगम का समय पुराने कल्प के संगम के समय से बहुत कम होता है अर्थात् 25-30 वर्ष ही होता है।

विश्व-नाटक की कलम लगने का ज्ञान और संगमयुग का समय बहुत महत्वपूर्ण और बड़ा आनन्दमय है, जो इसकी वास्तविकता को जानता है, उस पर विचार करता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है। इस संगमयुग के सुख को अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है। आनन्द की अनुभूति संगम पर ही होती है, नई दुनिया में नहीं अर्थात् नई दुनिया में सुख-साधन प्रचुर मात्रा में होंगे, जिससे आत्मायें सुखी होंगी परन्तु वहाँ आनन्द नहीं होता। उनका वह सुख भी उतरती कला का होता है, जबकि अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द चढ़ती कला का सुख है। एडवान्स पार्टी की आत्मायें एडवान्स स्टेज अर्थात् ब्राह्मण जीवन और एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुगी प्रथम जन्म के बीच की एक कड़ी हैं, इसलिए उनमें दोनों के गुण, धर्म और संस्कार हैं अर्थात् उनमें संगमयुग के संस्कार भी हैं और सतयुगी जीवन के संस्कार भी हैं। अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है कि वे सेवा के संस्कार लेकर गये हैं, इसलिए वे सेवा में ही बिज़ी रहते हैं और उनकी पालना भी अव्यक्त बापदादा अर्थात् अव्यक्त ब्रह्मा बाबा द्वारा ही होती है और ब्राह्मण आत्माओं के वृत्ति और वायब्रेशन से भी उनको मदद मिलती है परन्तु यह विचारणीय है कि यह प्रक्रिया विनाश के समय तक ही चलती है, फिर वे सारा कार्य अपनी आत्मिक शक्ति के आधार पर करती हैं। उनके द्वारा ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य अर्थात् विश्व नव-निर्माण की सेवा भी होती ही है अर्थात् उनके द्वारा नये विश्व के नव-निर्माण का कर्तव्य भी होता है और

उनका जिस परिवार में जन्म हुआ है, वह अपेक्षाकृत अच्छे संस्कारों और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न ही होगा। इस विषय में साकार में परमात्मा ने ज्ञान दिया है और अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है कि उनका जन्म जरूर ऐसे सम्पन्न और श्रेष्ठ संस्कारी परिवार में ही होगा। दादी प्रकाशमणी जी के देह त्याग के समय भी बापदादा ने ऐसा सन्देश दिया था।

फिर बाबा ने कहा - आप तो बच्चों की सेवा के लिए एडवान्स में गई हो क्योंकि अपने राज्य में जो बच्चों का जन्म होने वाला है, वह पवित्र जन्म होने वाला है। नये राज्य में जो जन्म लेने वाले बच्चे हैं, उसके लिए आप और मेरे महारथी बच्चे ही निमित्त बनेंगे। जैसे यज्ञ की स्थापना में महारथी निमित्त बनें, ऐसे इस योगबल की पैदाइश करने के निमित्त भी ऐसे योगयुक्त बच्चे ही बनेंगे, इसलिए ही आप बच्चों को यह पार्ट बजाना पड़ रहा है। तो बाबा ने आज यह राज़ खोला। अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

उपर्युक्त अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को पर विचार करने के बाद विचारणीय है कि संगमयुग का समय अभी कितना और चलने वाला है ?

क्या एडवान्स पार्टी वाले महारथी एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देंगी या वे ऐसी निमित्त आत्माओं को तैयार करेंगी ? यदि वे स्वयं जन्म देती हैं तो क्या वे उनकी 20-25 साल तक पालना करेंगी ? यदि वे पालना करती हैं तो प्रथम एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें कौन होंगी क्योंकि वे महारथी आत्मायें तो बाद में जन्म ले सकेंगी ? यदि महारथी एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें योगबल से जन्म देने के लिए बाद में आने वाली एडवान्स पार्टी की आत्माओं को तैयार करेंगी और स्वयं परमधाम जाकर, फिर आकर एडवान्स जन्म लेंगी तो अभी कितनी आत्मायें एडवान्स पार्टी में जायेंगी ?

क्या एडवान्स पार्टी वाले महारथी एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देकर और कुछ समय बाद ही शरीर छोड़कर परमधाम जाकर, फिर आकर नया जन्म लेंगी और उन एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं की पालना बाद में जाने वाली एडवान्स पार्टी की आत्मायें करेंगी, तो कितनी आत्मायें एडवान्स पार्टी में जायेंगी और संगमयुग का समय कितना जायेगा ?

ये नई दुनिया की स्थापना का राज़ बड़ा गहरा और रहस्यमय है, इसलिए ये सब विचार करने योग्य बातें हैं और इन पर विचार करते हुए संगमयुग के परमानन्दमय जीवन का आनन्द लेना है। इस जीवन से कब ऊबना नहीं है और सतयुग की लालसा में भी नहीं जीना है। हम पुरुषार्थ करते हैं तो भविष्य हमारा अवश्य ही अच्छा होगा, वह फिर चाहे एडवान्स पार्टी में हो या सतयुग में हो।

"बापदादा याद-प्यार के साथ यह भी स्मृति दिला रहे हैं कि अब संगम का समय कितना श्रेष्ठ सुहावना है, इस संगम के समय ही बाप द्वारा सर्व खज़ाने प्राप्त होते हैं। संगम का एक-एक सेकेण्ड महान है, इसलिए संगम के समय का मूल्य सदा अपनी बुद्धि में रखो। संगम का एक सेकेण्ड कितनी प्राप्ति कराता है। ... अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के दिल में। पाना था वह पा लिया, अब उसको कार्य में लगाते हुए तीव्र पुरुषार्थी बन समय को समीप लाओ।"

अ.बापदादा 2.02.12

"सारे कल्प के अन्दर सिर्फ इस संगम युग को ड्रामा प्लेन अनुसार वरदान है - कौनसा? प्रत्यक्ष फल का वरदान सिर्फ संगमयुग को ही है। ... संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबकी 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है, श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।"

अ.बापदादा 10.09.75

एडवान्स पार्टी और संगमयुग

एडवान्स पार्टी वालों के लिए संगमयुग का समय पुराने कल्प और नये कल्प दोनों में हो सकता है क्योंकि एडवान्स पार्टी वालों को पुराने कल्प में अर्थात् पुरानी दुनिया में रहते हुए नई दुनिया के नव-निर्माण के लिए आत्माओं को तैयार करना है और नये कल्प अर्थात् नई दुनिया में आने वाली अर्थात् एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को जन्म भी देना है, उनकी पालना करनी है। ऐसी एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें जन्म तो पुराने कल्प के संगम समय पर लेती हैं परन्तु एडवान्स पार्टी की देह का त्याग नये कल्प के संगम पर करती हैं और परमधाम जाकर, फिर आकर नये कल्प के संगम समय में जन्म लेती हैं। एडवान्स पार्टी वालों के जीवन में उतरने की बात नहीं होती है, वे ज्ञान के सम्पर्क में न होते भी चढ़ती कला में ही होते हैं क्योंकि उनका सम्बन्ध सूक्ष्म में अव्यक्त बापदादा से रहता ही है, बाबा उनकी देखरेख करता ही है।

एडवान्स स्टेज और संगमयुग

एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं का कार्यकाल पुराने कल्प के संगम समय पर ही पूरा हो जाता है क्योंकि या तो वे पुराना शरीर छोड़कर एडवान्स पार्टी में चली जायेंगी या अन्त समय शरीर छोड़कर परमात्मा के साथ परमधाम जायेंगी और नये कल्प के संगम में आकर एडवान्स जन्म लेंगी। एडवान्स स्टेज वालों के जीवन में चढ़ना और उतरना दोनों होता है परन्तु

उतरने की गति मन्द होती है और चढ़ने की गति तीव्र होती है, इसलिए वे चढ़ते हुए अन्त में अपनी कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करती हैं।

"हर एक के दिल में परमात्म-प्यार समया हुआ है। ये परमात्म-प्यार भी इस एक जन्म में ही प्राप्त होता है। 83 जन्म देवात्माओं और साधारण आत्माओं द्वारा ही प्यार मिला। ... सिर्फ इस संगम पर इस एक जन्म में ही परमात्म-प्यार प्राप्त हुआ है। आत्माओं के प्यार और परमात्म-प्यार में कितना अन्तर है, वह तो जान लिया है।"

अ.बापदादा 22.12.95

एडवान्स जन्म और संगमयुग

एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें पुराने कल्प का संगम समय पूरा करके परमधाम वापस जाकर नये कल्प के संगम समय पर आकर जन्म लेती हैं, परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आने से ही सतोप्रधानता की कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं, जिसका उनको कोई आभास नहीं होता है। इस सम्बन्ध में अव्यक्त बापदादा ने भी कई बार कहा है और साकार बाबा ने भी मुरली में कहा है कि सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था श्रीकृष्ण की ही कहेंगे, नारायण की भी नहीं क्योंकि श्रीनारायण की सतोप्रधानता में 25-30 साल उतरती कला हो जाती है, इसलिए श्रीकृष्ण की कलाओं और श्रीनारायण की कलाओं में अन्तर हो जाता है।

एडवान्स स्टेज और एडवान्स पार्टी वाले दोनों के जीवन में चढ़ती कला और उतरती कला दोनों होती है, परन्तु एडवान्स पार्टी वालों के जीवन में उतरती कला नाम-मात्र होती है, चढ़ती कला ही होती है। एडवान्स जन्म वालों के जीवन में चढ़ती कला का कोई प्रश्न नहीं उठता क्योंकि चढ़ती कला के संगम का समय पूरा हो जाता है क्योंकि परमात्मा पिता परमधाम चले जाते हैं और नया कल्प आरम्भ हो जाता है। नये कल्प में तो आत्मा और प्रकृति की उतरती कला ही होती है। सतयुग के आदि में जन्म लेने वाली एडवान्स जन्म वाली आत्माओं के जीवन में उतरती कला की गति बहुत मन्द होती है क्योंकि वहाँ कोई विकार नहीं होता है।

कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि अर्थात् संगमयुग की स्थिति - पिछला हिसाब-किताब चुक्तू होकर नया हिसाब-किताब आरम्भ होना - स्वभाव-संस्कार बदलना। हिसाब-किताब ज्ञान-योग से भी पूरा करना है और सज़ाओं से भी पूरा होगा, परन्तु स्वभाव-संस्कार यहाँ ही बदलना चाहिए। बदला हुआ स्वभाव-संस्कार अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका आदि से मुक्त स्थिति।

संगम का समय दोनों कल्प में अर्थात पुराने कल्प में भी होगा और नये कल्प में भी

होगा परन्तु पुराने कल्प के संगम का समय 100 साल के लगभग होगा और नये कल्प के संगम का समय 25-30 साल होगा। पुराने कल्प के संगम के अन्त में एडवान्स स्टेज और एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें होंगी, जबकि नये कल्प के संगम में एडवान्स पार्टी की और एडवान्स जन्म वाली आत्मायें होंगी। पुराने कल्प के संगम में तमोप्रधानता अपनी चरम सीमा अर्थात् निकृष्ट स्थिति में होगी और नये कल्प के संगम में सतोप्रधानता की चरम स्थिति होगी और अपवित्रता की निम्न स्थिति होगी अर्थात् जो पुराने कल्प की एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें होंगी, उनमें अपवित्रता नाममात्र ही होगी, जो परमधाम जाने तक पूरी होगी।

इस सम्बन्ध में यह भी विचारणीय है कि आत्मा जब परमधा से आकर जन्म लेती है, तब से ही उसकी सतोप्रधानता की कलायें गिरना आरम्भ हो जाती हैं। साकार बाबा ने भी कहा है कि सम्पूर्ण सतोप्रधान श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, नारायण बनने तक 25-30 साल में जरूर कुछ कमी आ जायेगी। नये कल्प के संगम में पुराने कल्प की एडवान्स पार्टी वाली जो आत्मायें होंगी, उनमें अपवित्रता नाममात्र ही होगी परन्तु उनमें ब्रह्मचर्य की धारणा पूरी होगी, काम विकार की उनमें कोई आकर्षण नहीं होगी अर्थात् वे उसके अनुभव से भी परे होंगी। पुराने कल्प में जो एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें होंगी, उनमें काम विकार का अनुभव का संस्कार रूप में तो होगा परन्तु उसका त्याग किया हुआ होगा। एडवान्स जन्म वाली आत्माओं में तो अपवित्रता का अंश भी नहीं होगा।

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग कल्प का सबसे उत्तम समय है, जब परमपिता परमात्मा ने हमको तीनों लोकों, तीनों कालों अर्थात् विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर त्रिकालदर्शी बनाया है। इस ज्ञान के दर्पण में हम विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करते हैं, अपने सूक्ष्म स्वरूप अर्थात् अव्यक्त स्वरूप में स्थित होकर अव्यक्त रूपधारी बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा करते हुए परमानन्द का अनुभव करते हैं और विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने अकाल तख्तनशीन स्थिति में साक्षी होकर इस खेल को देखते हैं और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हैं तो परम-सुख को अनुभव करते हैं, जो त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ भी अनुभव नहीं हो सकता है। इस अनुभव को करना और कराना ही आत्मा की एडवान्स स्थिति है, जो एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म का आधार है। इस दर्पण में हम अपने को देखें कि हम कहाँ तक इस परम-प्राप्ति की अनुभूति में रहते हैं और दूसरों को कराते हैं। यदि नहीं करते और कराते हैं तो उसका कारण क्या है, उस कारण का निवारण कर इस परम-प्राप्ति का अनुभव करें और करायें। परमात्मा पिता का वरदानी हाथ

हमारे सिर पर है और उसकी कल्याणमयी छत्रछाया हमारे ऊपर है। इस मुक्ति-जीवनमुक्ति के देव-दुर्लभ सुख के अनुभव को करना और कराना ही इस संगमयुगी जीवन की सफलता है।

"जहाँ तक जीना है, वहाँ तक पुरुषार्थ करना है। इम्तहान की रिजल्ट तो विनाश के समय ही निकलेगी। एक तरफ रिजल्ट निकलेगी, दूसरे तरफ विनाश शुरू होगा। फिर तो ऐसा हाहाकार हो जाता है, जो बात मत पूछो। इसलिए विनाश होने के पहले, लड़ाई लगने के पहले तैयार होना है।... यह भी जानते हो - जब हमारी राजधानी स्थापन होती है, तब यह सारी सफाई भी होनी है।" सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

"सब पतित खलास हो जायें, हिसाब-किताब चुक्तू कर सब वापस चले जायें। एक भी पतित न रहे, तब कहेंगे पावन दुनिया। तुम इस समय पावन हो परन्तु सारी दुनिया तो पावन नहीं है ना। नई दुनिया का सम्वत् कोई पूछे तो समझाना चाहिए - जब महाराजा-महारानी तख्त पर बैठते हैं, तब नया सम्वत् शुरू होता है।"

सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

"हम ब्राह्मण भल नये हैं परन्तु दुनिया अथवा सारी पृथ्वी थोड़ेही नई है। अभी है संगम। फर्स्ट प्रिन्स-प्रिन्सेज राधे-कृष्ण हैं, फिर भी हम उस समय सतयुग नहीं कहेंगे। जब तक लक्ष्मी-नारायण तख्त पर नहीं बैठे हैं, तब तक कुछ न कुछ खिटपिट होती रहेगी। ये सब विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं। ... सूर्यवंशी डॉयनेस्टी का सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से शुरू होगा।"

सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

"लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से सूर्यवंशी सम्वत् शुरू होगा। प्रिन्स-प्रिन्सेज के नाम पर कभी सम्वत् नहीं होता है। बीच के समय में आना-जाना होता रहता है। छी-छी मनुष्यों को भी जाना है। कुछ न कुछ बचे हुए तो रहते ही हैं ना। जो भी बचे हुए होंगे, वे भी वापस जायें, उसमें टाइम लगता है। यह कौन समझाते हैं? ज्ञान-सागर भी समझाते हैं तो ब्रह्मपुत्रा ज्ञान-नदी भी समझाती है। दोनों इकट्ठे समझाते हैं।"

सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

"ड्रामा में सब एक्टर्स का पार्ट एक जैसा थोड़ेही हो सकता है। इसको कहा जाता है ईश्वरीय कुदरत। वास्तव में ड्रामा की कुदरत कहेंगे क्योंकि बाबा ऐसे नहीं कहते कि मैंने ड्रामा बनाया है। ... यह ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है, सो अभी तुम जान गये हो। आत्मा स्टार है, उसमें कितना बड़ा पार्ट है। ... परमात्मा में जो ज्ञान है, वह और किसमें नहीं है। परमात्मा को ज्ञान

का सागर कहा जाता है।"

सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

"द्वापर से भक्ति मार्ग शुरू होने से फिर सब मन्दिर बनाने लगते हैं। लक्ष्मी-नारायण की राजधानी में तो राधे-कृष्ण का मन्दिर बन नहीं सकता। मन्दिर भक्ति मार्ग में बनते हैं। ... गिरते जाते हैं। सूर्यवंशियों और चन्द्रवंशियों की जो प्रॉपर्टी है, वह वैश्यवंशी, शूद्रवंशी भोगते हैं। नहीं तो यह राजाई कहाँ से आये! ... बड़ी-बड़ी प्रॉपर्टी है, वह छोटी-छोटी होते फिर आखरीन कुछ भी नहीं रहता है। आपस में बांटते जाते हैं।"

सा.बाबा 18.08.12 रिवा.

Q. विनाश के बाद नये कल्प का आरम्भ होता है तो नये कल्प के आरम्भ से लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के समय को स्वर्ग या सतयुग कहेंगे या नहीं? यदि सतयुग या स्वर्ग नहीं कहेंगे तो जो बाबा ने कहा है कि स्वर्ग और नर्क आधा-आधा समय अर्थात् 2500-2500 वर्ष चलता है, वे गणना कैसे पूरी होगी?

नये कल्प के आरम्भ अर्थात् श्रीकृष्ण के जन्म से ही सतयुग अर्थात् स्वर्ग आरम्भ हो जाता है। एडवान्स जन्म लेने वाले सतयुग अर्थात् स्वर्ग में कहे जायेंगे और एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं के लिए नये कल्प का संगम समय होगा। जैसे अभी कलियुग में ब्राह्मणों के लिए संगम है और पतित अज्ञानी आत्माओं के लिए कलियुग है।

Q. सतयुग और सतयुग की राजाई के समय में कोई अन्तर है या दोनों एक ही हैं? यदि अन्तर है तो वह क्या है? यदि अन्तर नहीं है तो सतयुग कब से शुरू होगा अर्थात् यदि लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से आरम्भ होगा तो क्या सतयुग के 1250 पूरे होंगे और कल्प 5000 वर्ष होगा या कितना होगा?

बाबा का भाव सम्वत् के आरम्भ होने से है। सतयुग की गणना श्रीकृष्ण के जन्म से ही होगी, तब ही सतयुग के 1250 वर्ष पूरे होंगे और त्रेता को मिलाकर 2500 वर्ष पूरे होंगे अर्थात् आधा कल्प स्वर्ग का पूरा होगा।

Q. राधे-कृष्ण के जन्म लेने के समय से और गद्दी पर बैठने के समय के बीच में कौन-कौन रहेंगे अर्थात् पुरानी दुनिया के कौन होंगे अर्थात् क्या उस समय में विकार का अनुभव किये हुए होंगे या केवल विकार से जन्म लिये हुए ही होंगे?

विचारणीय यह है कि विकार की टेस्ट अलग बात है और विकार से जन्म लेना अलग बात है। भल एडवान्स पार्टी वालों ने विकार से जन्म लिया है, परन्तु उन्होंने काम विकार की टेस्ट नहीं की है, परन्तु पुरानी दुनिया का उनको कहेंगे, जिन्होंने विकार की टेस्ट की है। इसलिए श्रीकृष्ण

के जन्म से गद्दी पर बैठने तक एडवान्स पार्टी वाले और एडवान्स जन्म लेने वाले ही होंगे। जिसने काम विकार का टेस्ट लिया है अर्थात् विकार में गया है, ऐसी कोई आत्मा नये कल्प अर्थात् स्वर्ग में पैर नहीं रख सकती। जैसे देवताओं के पैर पतित दुनिया में नहीं पड़ते, ऐसे ही पतित आत्माओं के पैर पावन दुनिया में नहीं पड़ सकते, यह विश्व नाटक का विधान है।

एडवान्स पार्टी वालों को पतित नहीं कहा जायेगा क्योंकि उन्होंने पतित कर्म नहीं किया अर्थात् वे विकार में नहीं गये, इसलिए वे नई दुनिया अर्थात् सतयुग के संगम समय पर जा सकते हैं परन्तु जो विकारी होते हैं, उनको पतित अर्थात् पापात्मा कहा जायेगा और पतित-पापात्मा को नई दुनिया अर्थात् सतयुग में आने का विधि-विधान नहीं है।

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के समय भी पुरानी दुनिया के कोई होंगे या नहीं होंगे ? यदि नहीं होंगे तो लक्ष्मी-नारायण को गद्दी पर कौन बिठायेगा यदि होंगे तो बाबा इन महावाक्यों का क्या भाव है ?

यह विचारणीय है। बाबा ने कहा है लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठते हैं तो पुरानी दुनिया का कोई नहीं होगा और ये भी कहा है कि लक्ष्मी-नारायण को उनके माता-पिता गद्दी पर बिठायेंगे। यह भी विचारणीय है कि उनके माता-पिता पुरानी दुनिया के कहे जायेंगे या नई दुनिया के। नई दुनिया के तो एडवान्स जन्म लेने वाले ही कहे जा सकते हैं, विकारी बीज से जन्म लेने वाले नयी दुनिया कैसे कहे जा सकते हैं, भले वे एडवान्स पार्टी के हैं।

Q. क्या ब्राह्मणों को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो बाबा के इन महावाक्यों का क्या भाव है ?

बाबा ने कई बार कहा है - तुम ब्राह्मणों की आत्मा भल पवित्र बनी है या बन रही है परन्तु शरीर तो पतित है, इसलिए तुमको सम्पूर्ण पावन नहीं कह सकते हैं। ऐसे तो जो आत्मायें कलियुग में भी परमधाम से आती हैं, वे पहले पावन होती हैं, पीछे पतित बनती हैं।

दोनों कल्प के संगमयुग की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

पुराने कल्प में	नये कल्प में
ज्ञान सागर परमात्मा पिता का साथ, उनके ईश्वरीय ज्ञान, जिससे आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द और परम-सुख की और की अनुभूति	ब्रह्मा बाबा का श्रीकृष्ण के रूप में साथ, परमात्मा का ज्ञान ही नहीं, भौतिक सुखों की भरमार परन्तु अतीन्द्रिय सुख का न ज्ञान न ही अनुभूति। स्वभाविक शान्त स्थिति।
आत्माओं की चढ़ती और उतरती दोनों कलायें,	आत्माओं और प्रकृति की उतरती कला,

उतरती
परन्तु प्रधानता चढ़ती कला की। कला का भी ज्ञान और अनुभूति नहीं।
सतोप्रधानता और तमोप्रधानता की चरम स्थित। सतोप्रधानता की चरम स्थिति परन्तु तमोप्रधानता की निम्न स्थिति।
अति विकारी तमोप्रधान आत्मायें, एडवान्स पार्टी एडवान्स जन्म लेने वाली सतोप्रधान आत्मायें
वाली सतोप्रधान आत्मायें और एडवान्स स्टेज वाली और एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें। सतोप्रधानता की पुरुषार्थी आत्मायें।
अति तमोप्रधान प्रकृति और अति सतोप्रधान प्रकृति सम्पूर्ण सतोप्रधान प्रकृति परन्तु उतरती कला।
का संगम।
स्थापना और विनाश तथा विश्व-परिवर्तन का ज्ञान इस तरह का कोई ज्ञान नहीं, केवल .. ज्ञान
परस्पर व्यवहार में प्रेम और द्वेष का संगम अर्थात् सर्व आत्माओं में परस्पर प्रेमपूर्ण व्यवहार कुछ आत्माओं में द्वेषभाव, कुछ में प्रेम
समय 100 साल के लगभग समय 25-30 साल

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और चढ़ती कला और उतरती कला का संगम

"बाप इस सृष्टि-चक्र के सब राज़ कल्प के संगमयुग पर आकर समझाते हैं। तुम जानते हो - अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए, अभी हम संगमयुग पर हैं। यह सुहावना संगमयुग है, यही एक युग है ऊपर चढ़ने का। यह जैसेकि एक लिफ्ट है, ऊपर जाने के लिए, परन्तु जब तक पवित्र न बनें, स्वदर्शन चक्रधारी न बनें, बाप को याद न करे, तब तक लिफ्ट पर बैठ न सके।"

सा.बाबा 4.09.12 रिवा.

- चढ़ती कला के लिए दो बातें हैं - एक है ज्ञान की धारणा, बाप की याद और श्रेष्ठ कर्म। एडवान्स पार्टी वालों में ज्ञान जागृत न होते भी वे ईश्वरीय कार्य में सहयोगी हैं क्योंकि वे सेवा का संस्कार लेकर गये हैं, इसलिए नये विश्व के नव-निर्माण की सेवा में ही अपने मन-बुद्धि को लगाते हैं, इसलिए उनसे पुराने और नये दोनों कल्प के संगम में श्रेष्ठ कर्म ही होते हैं। अव्यक्त बापदादा भी उनको वतन में बुलाकर सेवा के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इसलिए नये कल्प में भी उनकी चढ़ती कला ही होती है क्योंकि उनको अभी परमधाम जाना है, फिर आना है।

इसलिए उनका उतरती कला का पार्ट आने के बाद आरम्भ होगा। नये कल्प में जहाँ एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें परमधाम से आकर उतरती कला में होती हैं, वहीं एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें चढ़ती कला में ही होती हैं, इसलिए ही उनका समय संगम का है। भले ही नये कल्प के आरम्भ होते ही ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा परमधाम चले जाते हैं, परन्तु एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें विश्व नव-निर्माण के कार्य में रहती ही हैं। विश्व-नाटक के नियमानुसार जो भी आत्मा संगम पर है, वह चढ़ती कला में ही होगी। वास्तविकता पर विचार किया जाये तो जो आत्मायें परमधाम होकर आयी हैं, उनके लिए संगम नहीं है परन्तु एडवान्स पार्टी वालों के लिए संगम है। जैसे पुराने कल्प में जो ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनते हैं, उनके लिए संगम है और जो नहीं बनते हैं, वे कलियुग में हैं।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और परमात्मा
एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त बापदादा
एडवान्स पार्टी

एडवान्स पार्टी वालों को परमात्मा और अव्यक्त बापदादा का साथ और सहयोग अप्रत्यक्ष रूप रहता ही है, परन्तु जब बापदादा उनको वतन में इमर्ज करते हैं तो उनके साथ का प्रत्यक्ष भी अनुभव होता है, इसलिए उनकी चढ़ती कला होती है परन्तु जब वे नये कल्प में प्रवेश करते हैं तो परमात्मा और अव्यक्त बापदादा का साथ और सहयोग पूरा हो जाता है क्योंकि परमात्मा परमधाम में और प्रजापिता ब्रह्मा बाबा श्रीकृष्ण के जन्म लेकर उनके साथ साकार उनके साथ होते हैं परन्तु उनकी कोई मदद मिलना या उनके साथ का आभास नहीं होता है, स्वभाविक साथ होता है। बाबा ने ये भी बताया है कि सतयुग-त्रेता की प्रालब्ध संगम पर ही आत्मायें बनाकर जाती हैं, वहाँ उनको कोई पुरुषार्थ नहीं करना होता है और न कोई किसकी मदद करता है तथा न किसको किसकी मदद की आवश्यकता अनुभव होती है। सब स्वतन्त्र होते हैं और संगमयुग के हिसाब-किताब अनुसार एक-दूसरे के पास जन्म लेते रहते हैं।

एडवान्स पार्टी वालों को अव्यक्त बापदादा का ज्ञान इमर्ज नहीं होता है परन्तु बापदादा को उनके विषय में जानकारी है और वे उनको भी शक्ति देते रहते हैं, प्रेरणा भी देते हैं और वतन में भी इमर्ज कर उनमें शक्ति भी भरते हैं और उनको संगमयुगी कर्तव्य पूरा करने की प्रेरणा भी देते हैं। उनको संगमयुगी ब्राह्मण जीवन अर्थात् एडवान्स स्टेज का अनुभव कराते हैं, जिससे वे ब्राह्मण जीवन की महानता का अनुभव करते हैं।

एडवान्स पार्टी एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म के बीच की एक कड़ी है, इसलिए

उनको दोनों तरफ के कर्तव्य करने होते हैं और दोनों तरफ का सूक्ष्म में आभास होता है।

आत्मा जिस सूक्ष्म शरीर में है, उसके ही स्वभाव-संस्कार आत्मा में इमर्ज होते हैं। इसलिए चाहे सूक्ष्मवतन में या स्थूलवतन में किस भी आत्मा को बुलाते हैं तो अभी जहाँ नया जन्म लिया है, वह स्वभाव-संस्कार इमर्ज होता है। इसलिए जो आत्मायें ब्राह्मण जीवन से एडवान्स पार्टी में गई हैं, उनमें वहाँ ज्ञान मर्ज होता है, परन्तु जब बाबा उनको वतन में बुलाते हैं तो बाबा की शक्ति से वे अपने पूर्व रूप में इमर्ज होते हैं, इसलिए उनमें ब्राह्मण जीवन के स्वभाव-संस्कार इमर्ज हो जाते हैं।

बीच-बीच में बाबा हमको वतन में बुलाते हैं और हम वतन में संगमयुगी ब्राह्मण लाइफ के रूप में मिलते हैं और आपस में लेनदेन करते हैं। बाबा गद्दी पर बैठे मुस्करा रहे थे और यह रूह-रुहान सुन रहे थे। ... मम्मा ने कहा - बाबा आप ही सुना दो कि हम कहाँ हैं। तो बाबा ने कहा - यह गुप्त रखना ही अभी ठीक है। ... आगे चलकर आपको टचिंग हो ही जायेगी।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

एडवान्स स्टेज

एडवान्स स्टेज वालों को परमात्मा के द्वारा दिया सृष्टि-चक्र का ज्ञान इमर्ज रूप में होता है, उनको परमात्मा और अव्यक्त बापदादा दोनों का सहयोग मिलता है, जिस सहयोग के आधार पर ही वे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं और एडवान्स पार्टी में जाते हैं या नये कल्प में जाकर एडवान्स जन्म लेते हैं। एडवान्स स्टेज वालों को परमात्मा और अव्यक्त बापदादा की मदद का ज्ञान भी होता है और अनुभव भी होता है। एडवान्स स्टेज वाले एडवान्स पार्टी वालों को भी बापदादा के डायरेक्शन अनुसार योग का सहयोग देते हैं, जिससे उनको अपना कर्तव्य पूरा करने में मदद मिलती है।

एडवान्स स्टेज वालों को परमात्मा और अव्यक्त बापदादा का सहयोग मिलता ही है परन्तु वे अपने योगबल से भी परमात्मा और अव्यक्त बापदादा का सहयोग ले सकते हैं। एडवान्स स्टेज वाले ही इस ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं, आत्माओं को ब्राह्मण बनने में सहयोग करते हैं। ज्ञान धन का यथार्थ नशा एडवान्स स्टेज वालों को ही रहता है। इस सहयोग लेने और सर्व आत्माओं को देने के विधि-विधान के विषय में भी बाबा ने अनेक बार मुरलियों में बताया है। यथार्थ अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द की अनुभूति एडवान्स स्टेज वालों को ही होती है। एडवान्स स्टेज वाले ही त्रिलोक और त्रिकाल को जानते हैं, इसलिए वे ही त्रिकाल-दर्शी, मास्टर ज्ञान सागर होते हैं।

"तुम भी अन्त में फरिश्ते बन जाते हो। तुम ब्राह्मणों को यहाँ ही पवित्र बनना है, फिर जाकर

पवित्र दुनिया में जन्म लेंगे। ... गाते भी हैं - ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। भक्ति के बाद ही बाबा सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य दिलाते हैं क्योंकि अभी इस पतित दुनिया का विनाश होना है, इसलिए देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल एक बाप को याद करना है।"

सा.बाबा 19.05.12 रिवा.

एडवान्स जन्म

एडवान्स जन्म में परमात्मा या अव्यक्त बापदादा का न ज्ञान होता है, न उनका उस समय उनका पार्ट होता है, इसलिए उनकी मदद का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। एडवान्स जन्म वाली आत्मायें परमात्मा की मदद की आवश्यकता भी अनुभव नहीं करती हैं। वहाँ वे अपनी संगमयुग पर बनाई प्रालब्ध का सुख भोगती रहती हैं। उस समय परमपिता परमात्मा शिव और ब्रह्मा बाबा दोनों परमधाम चले जाते हैं, अव्यक्त बापदादा का पार्ट भी पूरा हो जाता है। फिर साकार बाबा परमधाम से आकर नये कल्प में एडवान्स जन्म लेते हैं, उनके साथ सतयुग की प्रथम जनसंख्या अर्थात् 9,16,108 आत्मायें भी एडवान्स जन्म लेती हैं, परन्तु उनको संगमयुग के परस्पर सम्बन्धों के परिचय का कोई ज्ञान नहीं होता है। ब्रह्मा बाबा राजा के रूप में उनके साथ होते हैं अर्थात् राजा-प्रजा का सम्बन्ध होता है, संगम युग पर निभाये सम्बन्धों के कारण प्यार और आकर्षण भी होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं होता है।

दादी ने कहा - अभी हमारे जो सम्बन्धी हैं, उनको बाबा ने थोड़ा-थोड़ा टच किया है, तो वे भी हमको जानने लगे हैं कि यह हमारे पास कैसे आये हैं, उनको अभी क्वेश्चन उठा है कि ये है कौन! चार बजे जब हम वतन में चले जाते हैं तो उनको पता नहीं पड़ता है, वे सोये होते हैं। ... अभी थोड़ा-थोड़ा जानने लगे हैं कि ये कोई विशेष आत्मायें हैं, साधारण नहीं हैं।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

दादी ने कहा - विशेष सेवाधारी जो संगमयुग के कनेक्शन से गये हैं, सेवा का जन्म लिया है, तो उनके माँ-बाप अभी जानने लगे हैं कि ये अलौकिक हैं। ... अभी उनको अनुभव होने लगा है। फिर बाबा ने कहा - धीरे-धीरे यह प्रत्यक्षता होगी कि इन लोगों ने जो यह जन्म लिया है, वह कोई विशेष कार्य के लिए लिया है। (वह कब होगा ? जब उनको एडवान्स स्टेज वालों से ज्ञान का सन्देश मिलेगा, अनुभव होगा।)

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

बाबा ने कहा - अभी जो सर्विसएबुल बच्चे गये हैं, उनकी यह प्रत्यक्षता नहीं हुई है कि यह कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारियों ने जन्म लिया है, लेकिन यह समझ रहे हैं कि ये साधारण नहीं हैं। ... समझते कोई सेन्ट आत्मायें हमारे घर में आई हैं। ऐसा अनुभव उनके सम्बन्धियों को होने

लगा है। ... इनके सम्बन्धी कोई विशेष मौके पर किसी कार्य अर्थ इकट्ठे होते हैं (तब एडवान्स पार्टी वाले बच्चे भी उनके साथ आकर आपस में मिलते हैं)।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

फिर जो दादियाँ एडवान्स पार्टी में गई, उन्होंने कहा ... 4 बजे बाबा ने हमारे लिए टाइम मुकरर किया है। ... मम्मा वरदान दे रही थी - तीव्र पुरुषार्थी भव, दृढ़ संकल्प भव। अभी साधारण संकल्प का समय गया। अभी हम भी यहाँ रहते हुए, एडवान्स पार्टी का पार्ट बजाते हुए भी आपको यही कहेंगे कि आप एडवान्स ग्रुप हो। आपको बाबा के साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति का दरवाज़ा खोलना है। ... अपना काम दृढ़ संकल्प से करो।

अ.बापदादा का सन्देश 24.6.10 गुल्जार दादी जी

मैं बाबा के पास गई तो देखा - आदि की जो हमारी दादियाँ एडवान्स पार्टी में गई हैं, वे सब पुरानी दादियाँ बाबा के पास बैठी थीं और वहाँ रूह-रुहान चल रही थी, बाबा भी उनसे रूह-रुहान कर रहा था कि अभी आपको क्या करना है? बाबा कह रहे थे - सेवा तो सभी कर ही रहे हैं लेकिन सेवा के साथ अभी आप लक्ष्य रखो कि हमें अपना राज्य लाना ही है।

अ.बापदादा 25.08.12 सन्देश दादी गुल्जार

बाबा ने कहा - इस संसार के दुख को बदलकर सुख में लाना है क्योंकि आप लोग तो यहाँ मजे में बैठे हो लेकिन दुनिया के लोग अन्दर से कितने दुखी हैं, वह आपको अभी इतना महसूस नहीं हो रहा है कि इनको दुख से छुड़ाना है। अभी अन्दर से लाओ कि हमारे ही भाई-बहने जो दुखी हो रहे हैं, उनको सुख की दुनिया में ले जाना है या मुक्ति में ले जाना है।

अ.बापदादा 25.08.12 सन्देश दादी गुल्जार

"ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, फिर ब्राह्मण - यह चक्र फिरता रहता है। बाप ही आकर इस सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं। यह मनुष्य सृष्टि है, सूक्ष्म वतन में हैं फरिश्ते। वहाँ कोई झाड़ नहीं है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ यहाँ है। ... वह सूक्ष्मवतन वासी तो अव्यक्त ब्रह्मा है। मैं इस व्यक्त में प्रवेश करता हूँ, इनको अव्यक्त फरिश्ता बनाने के लिए। तुम भी अन्त में फरिश्ते बन जाते हो।"

सा.बाबा 19.05.12 रिवा.

"व्यक्त शरीर में स्वयं के प्रति, बच्चों के प्रति और विश्व के प्रति इन तीनों में ही समय देना पड़ता है। व्यक्त शरीरधारी होने के कारण व्यक्त साधनों के आधार पर सर्विस करनी पड़ती है, लेकिन अव्यक्त रूप में स्वयं के प्रति भी साधनों का आधार नहीं लेना पड़ता। इस प्रकार एक तो सम्पूर्ण होने के नाते सम्पूर्णता की तीव्रगति है, दूसरा स्वयं पर समय व शक्तियाँ यूज़ न करने के कारण सेवा में तीव्र गति है। तीसरा विनाशी साधनों का आधार न होने के कारण

संकल्प की गति भी तीव्र है। संकल्प द्वारा कहीं भी पहुँचने और विनाशी शरीर द्वारा कहाँ पहुँचने में समय और शक्ति का कितना अन्तर पड़ जाता है। ऐसे ही व्यक्त और अव्यक्त की गति में भी अन्तर है।" अ.बापदादा 30.06.74

एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और शिवबाबा
एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और ब्रह्मा बाबा

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, नई दुनिया का रचयिता है। वह पुरानी दुनिया को नया बनाने के लिए एडवान्स में आकर ब्रह्मा तन में प्रवेश करता है और ज्ञान देता है परन्तु वह एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज में आता नहीं है। शिवबाबा के आने से ही नई दुनिया अर्थात् एडवान्स विश्व के नव-निर्माण का कार्य आरम्भ होता है।

ब्रह्मा बाबा एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज तीनों में अग्रणी है। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की श्रीमत पर एडवान्स में अपना तन-मन-धन-जन यज्ञ सेवा में समर्पित कर दिया और पुरुषार्थ करके अपनी एडवान्स स्टेज बनाई और सबको एडवान्स में ले जाने के लिए एडवान्स में जाकर सूक्ष्मवतन में बैठे हैं और सबका एडवान्स में आने के लिए आवाहन कर रहे है।

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वालों की कलम शूद्रों से लगती है, जो परमपिता परमात्मा लगाते हैं अर्थात् वे शूद्रों के पास ही जन्म लेते हैं, परमात्मा शूद्रो को ब्राह्मण बनाकर, उनको ज्ञान देकर उनके गुण-धर्म-संस्कारों को परिवर्तित करते हैं। एडवान्स जन्म लेने वालों की कलम एडवान्स पार्टी से लगती है क्योंकि वे उनके पास या उनके सानिध्य में जन्म लेते हैं, इसलिए उनसे उनके जन्म, गुण-धर्म और संस्कारों की कलम लगती है। शिवबाबा ने ये कलम का जो राज़ बताया है, वह प्राय: सभी बातों में लागू होता है क्योंकि इस चक्रवत् विश्व की हर घटना चक्रवत चलती है, इसलिए नई घटना पुरानी घटना पर आधारित होती है अर्थात् पुरानी घटना ही नई घटना को जन्म देती है।

"ये बड़े गुह्य राज़ समझने के हैं। इन द्वारा वह निराकार परमात्मा रचना रचते हैं। ऐसे नहीं कि सरस्वती द्वारा कोई एडॉप्ट करते हैं। नहीं, यह बड़ी समझ की बात है। ... पतित-पावन बाप आकर ब्रह्मा तन से आत्माओं से बात करते हैं। इसलिए इनका नाम है प्रजापिता। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा प्रजा रचते हैं। कौनसी ? जरूर नई प्रजा ही रचेंगे। आत्मा जो अपवित्र है, उसको पावन बनाते हैं।" सा.बाबा 1.08.12 रिवा.

मम्मा ने कहा - देखो बाबा की एक ही सब बच्चों में आश है कि मेरे बच्चे एक-एक मेरे समान

और सम्पूर्ण बनें। ... एक-एक बच्चा विजयी रतन बन जाये, ज़रा भी माया वार नहीं करे। ऐसे बाबा हर एक बच्चे को महावीर देखना चाहता है।

अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

"पुरुषार्थ में किसको फॉलो करेंगे? साकार में पुरुषार्थ कैसे करना है और पुरुषार्थ किसको कहा जाता है? पहले तो पुरुषार्थ के सिम्बल अर्थात् साकार ब्रह्मा बाबा को देखते हुए सब आगे बढ़ते थे, लेकिन इस समय साकार में सिम्बल कौन हैं? महारथी। क्या महारथियों का ऐसा पुरुषार्थ चल रहा है, जिसको देखकर अन्य आत्माओं का भी पुरुषार्थ सिम्पुल हो जाये!"

अ.बापदादा 15.09.74

"जो ब्राह्मण बच्चे यह योगी भव और पवित्र भव का प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते तो बापदादा व ड्रामा भी उनको फर्स्ट क्लास में आने नहीं देते। फर्स्टक्लास अर्थात् वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकते। ... फर्स्टक्लास में आने के लिए ये मुख्य दो वरदान (पवित्र भव, योगी भव) प्रैक्टिकल रूप में चाहिए। विस्मृति या अपवित्रता क्या होती है, इसकी अविद्या हो जाये।"

अ.बापदादा 27.12.74

"अब स्थूल कारोबार से भी जैसेकि उपराम होते जायेंगे। इशारे से सुना, डॉयरेक्शन दिया और फिर अव्यक्त वतन में। जैसे साकार में देखा और अनुभव किया। ... अभी जिम्मेवारियाँ तो और भी बढ़ेंगी, कम नहीं होंगी। ... सर्विस बढ़ेगी। विश्व की हर प्रकार की आत्माओं का उद्धार होने का गायन भी शास्त्रों में है ना! ... फिर तो लाइट हाउस मिसल चारो ओर सर्विस करते रहेंगे।"

अ.बापदादा 15.09.74

"तुमको पहले-पहले यह निश्चय चाहिए कि बेहद का बाप आया हुआ है, हमको दुख की दुनिया से घर ले जायेंगे। सतयुग में तो बाप आते नहीं हैं। अभी आकर इन खिड़कियों से तुमको देखते हैं, इनकी आत्मा भी इन्हीं खिड़कियों से देखती है। यह है भाग्यशाली रथ, जिसमें बाप प्रवेश करते हैं। ... कब किसका कल्याण करने के लिए मैं बच्चों में भी प्रवेश करता हूँ, परन्तु बच्चे समझेंगे नहीं।"

सा.बाबा 9.05.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी की किस आत्मा ने कहाँ जन्म लिया, वह अव्यक्त बापदादा के पास सब स्पष्ट है परन्तु उनका इस साकार लोक से पार्ट पूरा हो गया अर्थात् वे कर्मातीत बन गये, इसलिए इस लोक की कोई आत्मायें उनको प्रभावित नहीं कर सकती हैं, इसलिए वे किसके कहने से किसी के विषय में कुछ नहीं बता सकते हैं। विश्व-कल्याण की सेवार्थ जो आवश्यक है, बाबा उतना ही बताते हैं और करते हैं। ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा इस सृष्टि के विधि-विधान

को जानते हैं, इसलिए उनको ध्यान में रखते हुए किसने कहाँ जन्म लिया, उसके विषय में कुछ भी न बताते हैं और न बतायेंगे।

"कहते हैं क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले गीता ज्ञान सुनाया, परन्तु उस समय कौनसी नेशनाल्टी थी, वह नहीं जानते, उसको समझना चाहिए। ... एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के क्रियेटर को न जानें तो उसको क्या कहेंगे! गाया हुआ भी है कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना हुई। ... डीटी डॉयनेस्टी में पहले-पहले श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं।"

सा.बाबा 14.04.12 रिवा.

"तुम बच्चों को जास्ती तमन्नायें नहीं रखनी चाहिए। यज्ञ से जो मिले सो खाना है, हबच है, कर्मेन्द्रियाँ वश में नहीं हैं तो ऊंच पद नहीं पा सकते हैं। ... अभी तुम हो शिवबाबा के परिवार। शिवबाबा के ऊपर तो कोई है नहीं। ... शिवबाबा है रचता, वह अभी नई रचना रच रहे हैं अर्थात् पुरानी को नया बनाते हैं। ... पहला नम्बर ही लॉस्ट नम्बर बनता है। पूरे-पूरे 84 जन्म श्रीकृष्ण ने ही लिए हैं, फिर नम्बरवार सब 84 जन्म लेते हैं।"

सा.बाबा 23.04.12 रिवा.

"जैसे ब्रह्मा बाप श्रीमत का हाथ में हाथ मिलाकर फरिश्ता बन गया, ऐसे ही फॉलो फादर करना है। तो याद है ना कि क्या फॉलो करना है ... ब्रह्मा बाप के हर कदम को फॉलो करना है। फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना। ... शिव बाप का कहना और ब्रह्मा बाप का करना समान रहा। तो बच्चों को भी ब्रह्मा बाप समान करना है। यह है सच्चा दिल का प्यार।"

अ.बापदादा 20.03.12

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त बापदादा का पार्ट
एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और शिवबाबा का आना-जाना

विवेक ये कहता है कि परमात्मा का साकार में अर्थात् अव्यक्त रूप से साकार तन में आकर मुरली चलाने और मिलने का जो पार्ट अभी चल रहा है, वह खत्म होने के बाद भी कुछ समय तक सूक्ष्मवतन से साक्षात्कार आदि कराने और मिलन का अनुभव कराने का पार्ट अव्यक्त बापदादा का अवश्य चलेगा, उसके बाद ही पुराने कल्प का अन्त और नये कल्प की आदि होगी अर्थात् आत्मायें घर परमधाम जायेंगी और एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें नये कल्प में आकर जन्म लेंगी अर्थात् नये कल्प का शुभारम्भ होगा। जैसे यज्ञ स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाबा साकार में थे तो भी अव्यक्त वतन में उनके सम्पूर्ण स्वरूप का साक्षात्कार होता था, ऐसे अन्त समय भी पार्ट चलेगा और कुछ समय तक चलता रहेगा।

जैसे आदि में बहुत समय तक शिवबाबा के अवतरण का पता नहीं चला, ऐसे ही अन्त में जब शिवबाबा जायेगा तब भी स्पष्ट पता नहीं चलेगा। जाने के बाद सिविल वार आदि आरम्भ हो जायेगी, साक्षात्कार आदि होते रहेंगे। शिवबाबा के जाने के बाद एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें भी परमधाम जाना आरम्भ हो जायेंगी, अन्त में एटॉमिक वार और प्राकृतिक आपदायें आयेंगी, भूतल पर उथल-पाथल होगी और सब आत्मायें परमधाम जायेंगी।

अव्यक्त बापदादा का पार्ट एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज दोनों प्रकार की आत्माओं की पालना करने का, उनको उमंग-उत्साह दिलाकर संगमयुगी स्थापना का कार्य सम्पन्न कराने का और नई आत्माओं को ज्ञान की तरफ आकर्षित करके ब्राह्मण बनाने का भी है, जो वे सूक्ष्म वतन से सम्पन्न कर रहे हैं और एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं से करा रहे हैं।

विनाश के बाद सबसे पहले एडवान्स जन्म लेने का पार्ट ब्रह्मा बाबा का ही श्रीकृष्ण के रूप में लेने का है, इसलिए शिवबाबा के पीछे पहले-पहले ब्रह्मा बाबा को ही जाना है और जाकर यहाँ पार्ट बजाने के लिए आना है।

"यह शिव जयन्ति तुम्हारा सबसे बड़ा दिन है। तुमको यह बहुत खुशी से और धूमधाम से मनानी चाहिए। सबको बताना है कि हम बेहद के बाप की जयन्ति मना रहे हैं, हम उनसे स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। शिवबाबा की मृत्यु तो हो न सके। वह जैसे आया है, वैसे ही चला जायेगा। ज्ञान पूरा होगा और लड़ाई शुरू हो जायेगी। पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होना है।"

सा.बाबा 6.12.12 रिवा.

"तुम जानते हो - कैसे बाप ने आकर प्रवेश किया है। दूसरी आत्मायें भी प्रवेश करती हैं। ... आत्माओं को बुलाते हैं। परन्तु आत्मा क्या चीज़ है, कैसे आती-जाती है, यह सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ऐसे नहीं कि आत्मा निकलकर यहाँ आती है। बाप कहते हैं - किसकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए यह साक्षात्कार कराता हूँ, जो पहले से ही ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 7.12.12 रिवा.

"ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अन्त तक नूँधा हुआ है। जब तक स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है, तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते हैं। जगतपिता का नये जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। मनुष्य सृष्टि सर्व वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है, इसलिए ग्रेट-ग्रेट ग्रॉण्ड फादर गाया हुआ है।" अ.बापदादा 30.06.74

"ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे

अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे। ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कन्ट्रेक्ट विश्व-परिवर्तन का उठाया है, वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या ? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव बीच से निकल सकती है क्या ? ... कर्म करके दिखाने के निमित्त बनी हुई आत्मा, अन्त तक साथी और सहयोगी अवश्य बनती है।" अ.बापदादा 30.06.74

"सीटी बजे और आप सीट पर बैठ जाओ, ऐसी गारण्टी है ? "कोशिश" शब्द कहना माना कोई शक है। कल्प पहले सीट पर नहीं बैठे थे क्या ? कोई न कोई कुर्सी लेना, वह कोई बड़ी बात नहीं है। वह तो प्रजा को भी मिलेगी। ... लेकिन फर्स्ट सीट के लिए सदा अपने को एवर-रेडी बनाना पड़े। ... यदि अपनी ही ऐसी स्टेज होगी तो जिनके निमित्त बनेंगे, वे कहाँ तक पहुँचेंगे ?" अ.बापदादा 21.07.73

"सीटी बजने का इन्तजार वह करेगा, जिसका पहले से ही अपना इन्तजाम हुआ पड़ा होगा। ... पहले से ही इन्तजाम करना, यह है महारथियों की व महावीरों की निशानी। तो एवर-रेडी बनने के लिए अभी से ही अपनी ऐसी चेकिंग करो। ... चारो मुख्य सब्जेक्ट्स को सामने रख अपनी चेकिंग करो। जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं वैसे ही चार सम्बन्ध भी हैं।"

अ.बापदादा 21.07.73

"अभी ऐसा समय आने वाला है कि जिसमें यदि अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव नहीं होगा तो बाप के मिलन का, प्राप्ति का और सर्वशक्तियों के वरदान का जो सुन्दर अनुभव है, उससे वंचित रह जायेंगे। ... लॉस्ट स्टेज की तैयारी कराने के लिए बाप को ही समय देना पड़ता है और सिखलाना पड़ता है।"

अ.बापदादा 21.07.73

"क्या होने वाला है ? अभी इतनी हलचल में नहीं आओ। जब होने वाला होगा तो अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने वालों को स्वयं ही आवाज़ आयेगा, टचिंग होगी, सूक्ष्म संकल्प होगा, तार पहुँचेगी या ट्रंक-काल होगा। समझा। उसको जब लाइन क्लियर होगी, तब ही पकड़ सकेंगे। जब अव्यक्त मिलन का अनुभव होगा, तब तो पहचानेंगे और पहुँचेंगे।"

अ.बापदादा 21.07.73

"संस्कार को दबाना नहीं, संस्कार कर देना क्योंकि समय को आपको समीप लाना है। आपके एडवान्स पार्टी की विशेष आत्मायें और बाप सूक्ष्मवतन निवासी इन्तजार कर रहे हैं। ... तो आप उन्होंको डेट देंगे या कहेंगे - वेट एण्ड सी।... इसके लिए हर एक अपने रहे हुए संस्कारों का संस्कार कर लो तो समय समीप आ जायेगा।... अच्छा बाप ने वायदा निभाया, आप भी अपना वायदा निभाना।" अ.बापदादा 13.04.11

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और तीन लोक

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अव्यक्त वतन एवं मधुबन

जैसे मधुवन ब्राह्मणों अर्थात् एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं के रिफ्रेश होने का स्थान है, इसलिए सभी ब्राह्मण जब तक मधुवन में नहीं आते, तब तक उनको सच्चा ब्राह्मण भी नहीं कहा जा सकता है और जो पुराने हैं, उनको भी रिफ्रेश होने के लिए मधुवन में आना ही होता है और आना ही चाहिए। अव्यक्त बापदादा का साकार में मिलन का स्थान भी मधुवन ही है। ऐसे ही अव्यक्त बापदादा एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को सूक्ष्मवतन में बुलाकर रिफ्रेश करते हैं, उनको प्रेरणा देते हैं, उनको संगमयुगी कर्तव्य की स्मृति दिलाते हैं, जिसके आधार पर वे एडवान्स पार्टी के जन्म में यह सब कार्य करने में समर्थ होते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रत्यक्ष ब्राह्मणों अर्थात् एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं और अप्रत्यक्ष ब्राह्मण अर्थात् एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं की पालना अव्यक्त बापदादा ही करते हैं, इसलिए दोनों ही ब्राह्मण हैं।

एडवान्स जन्म वाली आत्माओं यथार्थ में तीनों लोकों का ज्ञान नहीं होता है। भल वे साकार लोक में पार्ट बजाते हैं परन्तु साकार लोक के भूतकाल और भविष्य के विषय में कोई ज्ञान नहीं होता है। संगमयुग में किये पुरुषार्थ के आधार पर वे वहाँ वर्तमान में खुश-मौज में रहते हैं। उनको न भूतकाल का कोई चिन्तन होता है और न भविष्य की कोई चिन्ता होती है।

सूक्ष्मवतन मूलवतन और साकार वतन अर्थात् ब्रह्मतत्व और आकाश तत्व के समिश्रण से निर्मित क्षेत्र है, इसलिए सूक्ष्म वतन का कोई स्वतन्त्र तत्व नहीं है। परमात्मा ने भी वहाँ के तत्व के विषय में कुछ नहीं कहा है। सूक्ष्म वतन के ऊपरी भाग अर्थात ब्रह्म तत्व के साथ वाले क्षेत्र में फरिश्ता स्वरूप वाली अर्थात् सम्पूर्णता को पाई आत्मायें रहती हैं और नीचे के भाग अर्थात् आकाश तत्व के साथ वाले क्षेत्र में वे आत्मायें जिनको कुछ समय के लिए सूक्ष्म शरीर मिला है और फिर उनको इस साकार लोक में जन्म लेना है, वे विचरण करती हैं। "वह सूक्ष्मवतन में है इनका सम्पूर्ण रूप। ऐसे मम्मा का भी है, तुम्हारा भी ऐसे ही सम्पूर्ण रूप बन जाता है। ... बाप ने यह भी समझाया है कि बाबा कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाने भेज देते हैं। मुख से कुछ बोलते नहीं है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा अनुसार हर एक को अपने-अपने समय पर आना है। बाप तो इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं।"

सा.बाबा 31.08.12 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं रामराज्य अर्थात् स्वर्ग स्थापन करने आया हूँ। तुम बच्चों ने अनेक बार राज्य लिया है और फिर गँवाया है, अभी फिर बाप से राज्य ले रहे हो। अभी तुम त्रिकालदर्शी

बन गये हो। ... अभी रावण राज्य का कितना भभका है। यह है पिछाड़ी का भभका। फिर यह सब खत्म हो जायेगा। ... यह विमान आदि वहाँ भी होंगे। कोई बनाने के संस्कार ले जायेंगे, फिर वहाँ आकर विमान आदि बनायेंगे।"

सा.बाबा 17.10.11 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कि मूलवतन, जहाँ सभी आत्मायें रहती हैं, फिर बीच में है सूक्ष्मवतन। यह है साकार वतन। खेल सारा यहाँ चलता है। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। तुम ब्राह्मण बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनना है, देवताओं को नहीं। ... भक्ति में पैसे बरबाद करते, सीढ़ी नीचे उतरते ही आये हैं। अभी बाप आते हैं तो सबकी चढ़ती कला होती है।"

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

"यह हाइएस्ट अथॉरिटी, आलमाइटी गॉड फादरली गवर्मेन्ट है। साथ में धर्मराज भी है। ... बाप को न जानने के कारण ही पतित बन पड़े हैं। तमोप्रधान भी बनना ही है। फिर जब बाप आते हैं, तब आकर सभी को सतोप्रधान बनाते हैं। आत्मायें निराकारी दुनिया में बाप के साथ रहती हैं, फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते सतो, रजो, तमो, तमोप्रधान बनती हैं।"

सा.बाबा 3.01.11 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और सम्पूर्णता

सम्पूर्णता की स्थिति क्या है, उसकी निशानियाँ क्या है, वह कब और कहाँ होती है, इन सब बातों पर विचार करना अति आवश्यक है। सम्पूर्ण आत्मा की स्थिति और अनुभूति क्या होती है, वह भी विचार करना अति आवश्यक है, तब ही हम सम्पूर्ण बनने का यथार्थ रीति पुरुषार्थ कर सकेंगे और वर्तमान जीवन में सम्पूर्णता की अनुभूति कर सकेंगे और दूसरों को भी करा सकेंगे, जो संगमयुग की परम-प्राप्ति है।

यथार्थ रीति में तो आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति परमधाम में ही होती है, परन्तु वहाँ आत्मा को उसकी कोई अनुभूति नहीं होती है क्योंकि अनुभूति आत्मा को तब ही सम्भव है, जब वह देह के साथ है। इसलिए सम्पूर्णता की अनुभूति अभी संगम पर जब आत्माओं को सदा सम्पूर्ण परमात्मा आकर सम्पूर्णता का ज्ञान देते हैं और आत्माओं को उसका अनुभव कराते हैं तथा आत्माओं को सम्पूर्णता के लिए पुरुषार्थ कराते हैं।

साकार लोक में आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति परमधाम से आकर देह में प्रवेश करते समय और वापस परमधाम जाते समय ही होती है। जब तक आत्मा सूक्ष्मवतन में है तब तक भी शत प्रतिशत सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। बाबा ने कहा है कि आत्मा जब सम्पूर्ण बन जाती है तो परमधाम चली जाती है। बाबा ने कहा है सम्पूर्ण श्रीकृष्ण को ही कहेंगे लक्ष्मी-

नारायण को भी नहीं क्योंकि देह में प्रवेश करने से ही आत्मा की कलायें गिरनी आरम्भ हो जाती हैं और संगम पर परमधाम जाने के समय तक आत्मा में एड होता रहता है अर्थात् आत्मा चढ़ती कला में रहती है। अव्यक्त स्वरूप ब्रह्मा बाबा के विषय में सन्देशियाँ जो अनुभव सुनाती हैं, उसमें सुनाती हैं कि जब साकार बाबा अव्यक्त हुए थे, उस समय के बाबा के सूक्ष्म वतन के फीचर्स की चमक और वर्तमान की चमक में अन्तर है। अभी चमक बहुत बढ़ गई है। वैसे भी बुद्धि से विचार किया जाये तो ब्रह्मा बाबा वतन से जो सर्विस कर रहे हैं, उसका उनको फल तो अवश्य मिलेगा, इसलिए उसके फलस्वरूप उनकी आत्मा में जरूर कुछ एड होता है। जब आत्मा शत प्रतिशत सम्पूर्ण बन गई तो उसमें एड होने की कोई मार्जिन ही नहीं रहती है। जैसे शिवबाबा के लिए कहेंगे कि उनमें कोई प्लस-माइनस नहीं होता है क्योंकि उनको अपनी स्थूल या सूक्ष्म देह नहीं है।

जो आत्मा शत प्रतिशत सम्पूर्ण है, उसको किसी प्रकार के संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं है। जैसे शिवबाबा कहते हैं - मैं जब देह में आता हूँ तो ड्रामा अनुसार जो जिस समय बोलना होता है, वह बोलना आरम्भ हो जाता है, उसके लिए मुझे कोई संकल्प नहीं करना होता है। सम्पूर्ण आत्मा पूर्ण साक्षी होती है, इसलिए उसको इस जगत की कोई घटना प्रभावित नहीं करती है। ब्रह्मा बाबा की वाणी को देखें तो वतन में जाने के समय की वाणी की अपेक्षा वर्तमान की वाणी में अधिक साक्षीपन की अनुभूति होती है। सम्पूर्ण या सम्पूर्णता के निकट पहुँची आत्मा के सानिध्य से अन्य आत्माओं को अपनी सम्पूर्ण स्थिति का साक्षात्कार होता है क्योंकि सम्पूर्ण आत्मा एक दर्पण का काम करती है। उसके वायब्रेशन इतने शक्ति-शाली होते हैं कि वे अन्य आत्माओं को भी अल्पकाल के लिए उनकी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करा देते हैं, जिससे वे आत्मायें भी सम्पूर्णता के लिए पुरुषार्थ की प्रेरणा लेते हैं।

"यह जो रिद्धि-सिद्धि आदि सीखते हैं, वह मेरा काम नहीं है। जिससे मनुष्य किसको दुख देवे, वह कामनायें मैं पूरी नहीं करता हूँ, वे पूरी करना रावण का काम है। ... अभी सब बच्चे पुरुषार्थी हैं, अभी तक 16 कला सम्पूर्ण कोई बना नहीं है। जब तक विनाश हो, तब तक पुरुषार्थ चलना ही है। किसकी भी ताक़त नहीं, जो कहे कि मैं 16 कला सम्पूर्ण बन गया हूँ। अभी कोई बन ही नहीं सकता।" सा.बाबा 4.09.12 रिवा.

"भल कोई रात-दिन योग का पुरुषार्थ करने लग जाये परन्तु अभी कोई 16 कला सम्पूर्ण बन नहीं सकेगा। वह अवस्था अन्त में ही होगी। इस समय कोई कर्मातीत बन जाये तो शरीर छोड़ना पड़े। सूक्ष्मवतन में जाकर बैठना पड़े, मूलवतन में तो जा नहीं सके। मूलवतन में पहले जब ब्राइडग्रूम जाये, तब तो ब्राइड्स जायेंगी। यह सब समझने के लिए बुद्धि कितनी दूरादेशी

चाहिए।" सा.बाबा 4.09.12 रिवा.

"जब स्वयं सम्पूर्ण हो जायेंगे तो कार्य भी सम्पूर्ण होगा कि सिर्फ कार्य ही सम्पूर्ण होगा? एडवान्स पार्टी का क्या कार्य चल रहा है? वे आप लोगों के लिए सारी फील्ड तैयार कर रहे हैं। उनके परिवार में जाओ, न जाओ लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है, उसके लिए वे निमित्त बनेंगे। कोई पॉवरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पॉवर्स लेंगे, जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे।" अ.बापदादा 2.08.73

"एडवान्स पार्टी वाले जब वतन में आते हैं तो पूछते हैं कि कब मुक्ति का गेट खोलेंगे? किसको खोलना है? आप सभी मुक्ति का गेट खोलने वाले हो ना! आपका सम्पूर्ण बनना अर्थात् मुक्ति का गेट खुलना। ... अभी-अभी अपने मन में यह प्रॉमिस करो कि कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आने देंगे। यह हो सकता है? ... इस दीवाली पर यह एक दृढ़ संकल्प करना। जिन्होंने हाथ उठाया है, वे तो स्वाहा करना ही।"

अ.बापदादा 19.10.2011

"मन में दृढ़ संकल्प करना कि एक भी मेरे से भारी नहीं हो, सब हल्के रहें। ... बाप समझते हैं कि इस संकल्प से गेट का दरवाज़ा खोलने के लिए जल्दी तैयार हो जायेंगे। चेक करो - कोई भी हमारे से नाराज़ तो नहीं लेकिन भारी भी नहीं होना चाहिए। ... मुख्य बात चाहे भारतवासी चाहे फॉरेनर्स अपने को जल्दी-जल्दी ऐसे सम्पन्न बनाओ, जो आप सबकी सम्पन्नता मुक्ति का गेट खोल दे। अच्छा।"

अ.बापदादा 19.10.2011

"तब तो श्रेष्ठ संग में रहने वालों का रुहानी रंग भी सभी को दिखाई देना चाहिए। कोई भी देखे तो उनको यह अनुभव हो कि यह रुहानी रंग में रंगी हुई आत्मायें हैं। ... अन्त की डेट सभी की प्रत्यक्षता के आधार पर है। ड्रामा प्लॉन अनुसार आप श्रेष्ठ आत्माओं के साथ पश्चाताप का सम्बन्ध है। जब तक पश्चाताप नहीं किया है, तब तक मुक्तिधाम जाने का वर्सा भी नहीं पा सकते।" अ.बापदादा 19.4.73

"अभी अपने आगे ही अपनी सम्पूर्ण स्टेज प्रत्यक्ष नहीं है तो औरों के आगे कैसे प्रत्यक्ष होंगे? क्या अपनी सम्पूर्ण स्टेज आपको श्रेष्ठ दिखाई देती है? वास्तव में सम्पूर्ण स्टेज नॉलेज से तो सभी जानते हैं। ... लेकिन अपनी सम्पूर्ण स्टेज अपने आपको दिखाई देती है? "मैं कौन हूँ" - यह पहेली हल हुई है क्या? ... जब औरों को कल्प पहले वाली बातें याद दिलाते हो, तो याद दिलाने वालों को अपने आप की तो याद होगी ना?"

अ.बापदादा 19.04.73

"अन्त समय दूसरों के प्रति ही हर सेकेण्ड, हर संकल्प होगा, और कुछ भी याद नहीं होगा। अभी तो अपने पुरुषार्थ व अपने तन के लिए समय देना पड़ता है, शक्ति भी देनी पड़ती है। ... फिर यह स्टेज समाप्त हो जायेगी। फिर यह पुरुषार्थ बदली होकर ऐसा अनुभव होगा कि हर सेकेण्ड और हर संकल्प अपने प्रति न जाये बल्कि विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। इसको कहा जायेगा सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न।" अ.बापदादा 13.04.73

"अगर सम्पन्न नहीं तो सम्पूर्ण भी नहीं क्योंकि सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्ण स्टेज है। तो ऐसे अपने पुरुषार्थ को और ही महीन करते जाना है। विशेष आत्माओं का पुरुषार्थ भी जरूर न्यारा होगा। ... अभी तो दाता के बच्चे दातापन की स्टेज पर आने हैं। देना ही उनका लेना होना है। ... आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी।"

अ.बापदादा 13.04.73

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हिसाब-किताब

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और कर्मभोग

एडवान्स पार्टी

एडवान्स पार्टी वालों का प्राय: पुराने कल्प का हिसाब-किताब पूरा हो जाता है, नाममात्र हिसाब-किताब होता है, जिसके आधार पर वे उन माता-पिता के पास जन्म लेते हैं, उनको खुशी प्रदान करते हैं और उनके सहयोग से अपना कर्तव्य पूरा करते हैं। बाबा ने कहा है एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें भी पूरा कर्मातीत नहीं होती हैं, इसलिए उनको एडवान्स पार्टी के रूप में जन्म लेना होता है, कुछ हिसाब-किताब बाकी होता है, जिसके कारण उनको कुछ कर्मभोग भी हो सकता है परन्तु वह कर्मभोग नाममात्र होता है, इसलिए वह उनको दुखी बहुत कम करता है अर्थात् कर्मभोग की महसूसता ना के बराबर होती है।

एडवान्स पार्टी वालों का एडवान्स जन्म लेने वालों के साथ नये कल्प का हिसाब-किताब होता है, जिसके आधार पर वे उनको जन्म देते हैं और फिर परमधाम जाकर उनके पास आकर जन्म लेते हैं या उनके सम्बन्ध में आते हैं।

"सारी दुनिया विनाश हो जाती है, बहुत थोड़े संगमयुग में रहते हैं। कोई पहले से शरीर छोड़कर जाते हैं, वे फिर सतयुग में आने वालों को रिसीव करेंगे। ... जो अभी संगम से जाते हैं वे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सुख में ही जन्म लेते हैं। सुख तो उनको देखना ही है, बाकी थोड़ा दुख भी देखना है, क्योंकि अभी कर्मातीत अवस्था तो किसकी हुई नहीं है।"

सा.बाबा 21.12.10 रिवा.

"कोई निर्बल आत्मा सामने आये तो क्या उस निर्बल आत्मा को बल देने वाले बने हो या अभी

तक स्वयं में ही बल भरते जा रहे हो ? दाता हो या लेने वाले बने हो ? सर्व शक्तियों का वर्सा प्राप्त कर चुके हो या अभी प्राप्त करना है ? ... अगर अन्त तक किसी भी आत्मा के द्वारा किसी भी प्रकार की सेवा लेते रहेंगे तो सेवा का रिटर्न क्या भविष्य में करेंगे ? भविष्य प्रॉलब्ध भोगने का समय है या रिटर्न का फल देने का समय है ?"

अ.बापदादा 30.05.73

एडवान्स स्टेज

एडवान्स स्टेज वालों का पुरानी दुनिया की आत्माओं के साथ जो दुखदायी हिसाब-किताब होता है, जो उनको पूरा करना होता है और वे बापदादा की श्रीमत पर चलकर उसे पूरा करते हैं और नये कल्प के लिए वहाँ आने वाली आत्माओं के साथ अपना सुखदायी हिसाब-किताब बनाते हैं। एडवान्स स्टेज वालों को आधे कल्प के रहे हुए कर्मों के पुराने हिसाब-किताब के कारण कर्मभोग भी हो सकता है, प्राय: सभी को होता भी है और होना भी है, परन्तु हिसाब-किताब होते भी यथार्थ धारणा वालों को सन्तुष्टता रहती है, जीवन में खुशी रहती है। उन्होंने परमात्मा की श्रीमत पर निश्चय करके देह से न्यारा होने अर्थात अशरीरीपन का अभ्यास अच्छा किया हुआ होता है, इसलिए कर्मभोग को सहन करने की शक्ति होती है, कर्मभोग की महसूसता बहुत कम होती है।

"कमाल इसमें है कि कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी सम्पर्क से अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हैं लेकिन इन विशेष आत्माओं की मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ-भावना सदा रहती है अर्थात् वह अपनी कमजोरी स्वयं ही महसूस करे।"

अ.बापदादा 7.02.75

एडवान्स जन्म

एडवान्स जन्म में पुरानी दुनिया की आत्माओं के साथ कोई दुखदायी हिसाब-किताब नहीं रहता है क्योंकि उनका नये कल्प में नया सुखदायी हिसाब-किताब आरम्भ हो जाता है। एडवान्स पार्टी वाली जो आत्मायें उनको जन्म देती हैं, उनके साथ भी सुखदायी नया हिसाब-किताब ही होता है, जिसके आधार पर वे उनके पास जन्म लेती हैं और फिर वे उनको एडवान्स जन्म देती हैं। एडवान्स जन्म वालों को कर्मभोग की बात ही नहीं रहती है।

"जो जैसा कर्म करते हैं, ऐसा भोगना है जरूर। समझो सन्यासी अच्छे हैं, फिर भी उनको जन्म तो गृहस्थियों के पास ही लेना है। तुम भी अभी के संस्कारों अनुसार नई दुनिया में जाकर जन्म लेंगे। नई दुनिया के लिए तुम यहाँ से ही संस्कार ले जाते हो। अभी भी जो शरीर छोड़ते हैं,

वे संस्कारों अनुसार जाकर ऊंच कुल में जन्म लेंगे। मरना तो बहुतों को है। पहले रिसीव करने वाले भी जाने हैं।" सा.बाबा 10.11.10 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को राइट और रॉंग को समझने के ज्ञान चक्षु मिले हैं तो राइट कर्म ही करना है। ... आत्मा ही अपने साथ संस्कार ले जाती है, जिस अनुसार दूसरा जन्म मिलता है। कर्मों का हिसाब-किताब है ना। सतयुग में विकर्म की बात ही नहीं होगी, कर्म तो जरूर करेंगे। ... गायन है - पुरानी दुनिया पर देवताओं की परछाई नहीं पड़ती है।"

सा.बाबा 19.11.10 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और स्थापना-विनाश

एडवान्स पार्टी

एडवान्स पार्टी वाले नयी दुनिया की स्थापना के लिए अधिक प्रयत्नशील होंगे, विनाश की चिन्ता कम करेंगे क्योंकि विनाश स्वत: होता है, उसकी तैयारी तो पुरानी दुनिया वाले वैज्ञानिक आदि स्वयं करते हैं। एडवान्स पार्टी वाले नई दुनिया के निर्माण के आधार होते हैं इसलिए नई दुनिया के स्थापनार्थ वहाँ एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देने की तैयारी और नई दुनिया के निर्माण में सहयोग देना और आत्माओं को सहयोगी बनाना, उनका विशेष कर्तव्य है। एडवान्स पार्टी वाले नये विश्व के नव-निर्माण के निमित्त बनने वाली आत्माओं को प्रेरणा देकर तैयार करते हैं। वे स्थापना और विनाश दोनों ही प्रकार के दृश्यों को देखते हैं।

"एडवान्स पार्टी वाले आप लोगों के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, न जाओ, लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है, उसके लिए वे निमित्त बनेंगे। ... उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है। सारे कार्य का आधार आप विशेष आत्माओं के ऊपर है।"

10.04.11 रिवा.

"विलायत वाले भी तुम्हारी बातों को सुनकर बहुत खुश हों और पुरुषार्थ कर योग सीखेंगे, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए पुरुषार्थ करेंगे। तुम्हारे सर्विस के लिए बहुत ख्यालात चलने चाहिए। ... हुनर तो सब सीख रहे हैं। साइन्स का कितना घमण्ड चल रहा है। यह साइन्स फिर वहाँ भी काम में आयेगी। यहाँ सीखने वाले फिर दूसरा जन्म लेकर वहाँ यह काम करेंगे।" सा.बाबा 25.02.11 रिवा.

एडवान्स स्टेज

"अकेले ब्रह्मा की तो बात नहीं, लेकिन ब्रह्मा सहित सब ब्राह्मणों का भी जब एक साथ यह संकल्प उठे कि 9अब हम सब एवर-रेडी हैं और नई दुनिया की स्थापना होनी ही चाहिए या होगी ही"- ऐसा दृढ़ संकल्प जब सब ब्राह्मणों के अन्दर उत्पन्न हो, तब ही सृष्टि का परिवर्तन हो अर्थात् नई सृष्टि की रचना प्रैक्टिकल में दिखाई दे।"

अ.बापदादा 23.10.75

एडवान्स स्टेज वाले स्थापना और विनाश दोनों के विषय में विचार करते हैं और उनके संकल्प, वृत्ति-वायब्रशेन्स दोनों प्रकार के कार्य करने वालों को प्रेरणा देते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि विनाश तुम्हारे लिए रुका हुआ है अर्थात् तुमको सम्पूर्ण बनना है और विनाश के समय को नज़दीक लाना है। वे विनाश के दृश्य तो अपनी एडवान्स स्टेज की ऑखों से देखते हैं, परन्तु स्थापना के दृश्य एडवान्स स्टेज की ऑखों से नहीं देखते हैं। स्थापना के दृश्य एडवान्स जन्म लेने के बाद देखते हैं।

"अपने कार्य में मगन हो वा विनाशकारियों की तरफ नज़र रखते हो ? विनाश के साधनों के समाचारों को सुनने के आधार पर तो नहीं चल रहे हो ? ... स्थापना के आधार पर विनाश होना है या विनाश के आधार पर स्थापना होनी है ? स्थापना करने वाले विनाश की ज्वाला प्रज्ज्वलित करने के निमित्त बने हुए हैं, न कि विनाश वाले स्थापना करने वालों के पुरुषार्थ की ज्वाला प्रज्ज्वलित करने के निमित्त हैं।"

अ.बापदादा 8.02.75

एडवान्स जन्म

एडवान्स जन्म वाली आत्मायें नई दुनिया के नव-निर्माण में ही सहयोग करती हैं, उनको पुरानी दुनिया का न ज्ञान होता है और न ही उनसे कोई सम्बन्ध होता है और न ही उस समय पुरानी दुनिया रहती है। केवल पुरानी दुनिया के कुछ अवशेष होते हैं, जिनकी सफाई आदि होती है परन्तु वह सब कार्य प्रकृति करती है, एडवान्स जन्म वालों को उसके लिए न कुछ करना होता है और न कुछ विचार करना होता है। एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को एडवान्स जन्म लेने के बाद पुरानी दुनिया के विनाश आदि की कोई स्मृति नहीं रहती है। वे नई दुनिया के नव-निर्माण का कार्य स्वभाविक देखते हैं, उनको उसके विषय में कोई चिन्तन आदि नहीं करना होता है।

फिर लास्ट में बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को दो शब्द पक्के कराना - एक एवर-रेडी। यह याद रखो कि कभी भी क्या भी हो सकता है। दूसरा हमको अभी सम्पन्न और

सम्पूर्ण बनना ही है, होंगे नहीं, होना ही है। ... अभी ऐसे एवर-रेडी बनें, जो सबको एवर-रेडी बच्चों का साक्षात्कार हो। जैसे बाबा का सबको साक्षात्कार हुआ। ... शक्तियों और पाण्डवों का संगठित रूप में साक्षात्कार हो।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

यह प्रत्यक्ष हो कि इनको सिखाने वाला भगवान है, अभी भगवान तक नहीं पहुँचे हैं। ब्रह्माकुमारियाँ बहुत अच्छी हैं, पॉवरफुल हैं, ऐसे कहते हैं लेकिन भगवान आया हुआ है, वह इनको पढ़ा रहा है, यह प्रत्यक्षता होगी, तब समाप्ति होगी। एक-एक के मुख में आये कि हमारा बाबा आ गया। (वह प्रत्यक्षता कब होगी ? जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा)

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

"बाप तुमको इस सृष्टि-चक्र का सारा राज़ अच्छी रीति समझाते रहते हैं। कैसे नई सृष्टि की स्थापना होती है, फिर पुरानी सृष्टि का विनाश कैसे होगा ? आपस में लड़ेंगे, रक्त की नदियाँ बहेंगी। ... तुम अभी देहाभिमान छोड़ मामेकम् याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। ... बहुत सन्यासी लोग भी ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ दते हैं। भक्तों की महिमा भी कोई कम नहीं है।"

सा.बाबा 16.07.12 रिवा.

"एडवान्स पार्टी पूछती है कि समाप्ति का गेट कब खोलेंगे ? एक-दो तो नहीं खोलेगा ना। तो अभी पुरुषार्थ करो कि गेट खोलने के समय को समीप लाओ। सम्पन्न बनना अर्थात् समय को समीप लाना। अच्छा बापदादा चारो ओर के सभी बच्चों को दिल का स्नेह दे रहे हैं और साथ-साथ बापदादा ने जो दो मास का कार्य दिया है, व्यर्थ को समाप्त करने का, उसकी स्मृति भी दिला रहे हैं।"

अ.बापदादा 2.02.12

"वतन में एक तरफ आप बच्चे थे, दूसरी तरफ एडवान्स में गये हुए आपके साथी साथ में आये हुए थे। ... एक-एक दादियाँ बापदादा को भी मुबारक दे रही थी, साथ में आप सब भाग्यवान बच्चों को भी मुबारक दे रही थीं। ... सभी विशेष बहनों और भाइयों का एक ही आवाज़ था कि अभी घर का गेट कब खोलेंगे ? ... सब कह रहे थे हमारी तरफ से यही कहना कि घर चलने के लिए कौनसी तारीख फिक्स की है ?"

अ.बापदादा 19.02.12

"विनाश जरूर होगा। अन्त में तुम बहुत मज़े देखेंगे। तुमको बाबा बहुत कुछ दिखायेंगे। फिर जो अच्छी रीति नहीं पढ़े हुए होंगे, वे अन्दर में पश्चाताप करते रहेंगे, फथकते रहेंगे। फिर कर ही क्या सकते हैं। अभी तुमको कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। बाप को याद करना है, इसमें ही मेहनत है। पापों का बोझा सिर पर बहुत है, उसको योग से उतारना है। यह है

योगबल, ज्ञान-बल, जिससे तुम माया पर विजय पाकर विश्व के मालिक बनते हो।"

सा.बाबा 5.12.12 रिवा.

Q. बाबा ने कहा है कि ऐसा समय आयेगा, जब एक बूँद पानी भी नहीं मिलेगा, उस समय जो योगयुक्त आत्मायें होंगी, वे सेफ रहेंगी, तो ऐसी कौनसी आत्मायें होंगी, जो सेफ रहेंगी और कौनसे स्थान सेफ रहेंगे ?

"समय आयेगा, जो पानी की एक बूँद भी कहीं दिखाई नहीं देगी, अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, ... क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है ? उस समय योग लगेगा या प्यास लगेगी ? ... जैसे कि गायन है कि चारो ओर आग लगी हुई थी लेकिन भट्ठी में पड़े हुए पूँगरे ऐसे ही सेफ रहे। ... अगर योगयुक्त हैं तो भल नज़दीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वे सेफ रह जायेंगे, अगर अपनी गफलत नहीं है तो।"

अ.बापदादा 13.09.74

उसमें दो प्रकार की आत्मायें होंगी, एक तो जो एडवान्स पार्टी में गई हैं, वे आत्मायें जहाँ होंगी, वे सेफ रहेंगी और वह स्थान भी सेफ रहेगा क्योंकि उससे ही नई दुनिया की कलम लगेगी, उनमें उस स्थिति को सहन करने की भी शक्ति होगी क्योंकि उन्होंने पहले से ही अशरीरीपन का पुरुषार्थ किया है। दूसरी जो एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें हैं, वे भी सेफ रहेंगी, उनमें भी सहन करने की शक्ति होगी परन्तु विनाश के समय उनको भी घर वापस तो जाना ही है, इसलिए उनको भी शरीर तो छोड़ना ही होगा और उनके स्थान विनाश होंगे ही क्योंकि नये कल्प और नई दुनिया अर्थात् सतयुग में इस ज्ञान के अवशेष भी खत्म हो जायेंगे। यह विचारणीय है।

Q. विनाश कब और कैसे तथा उसका वर्तमान ब्राह्मण जीवन से सम्बन्ध क्या है ?

विवेक कहता है कि सतयुग की आदि में एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं की जितनी संख्या होगी और उनको योग बल से जन्म देने वाली आत्माओं की संख्या भी इतनी हो जायेगी, जो एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को जन्म दे सकें, तब ही विनाश होगा परन्तु विशेष बात ये है कि वर्तमान ब्राह्मण जीवन अर्थात् एडवान्स स्टेज का महत्व सतयुगी जीवन अर्थात् एडवान्स जन्म से भी महत्वपूर्ण है और सुखदायी है, उसका सुख लेना और संगमयुगी कर्तव्य पूरा करना हमारा परम कर्तव्य है। अतीन्द्रिय सुख एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं को ही अनुभव

होता है, उनका ही गायन है। जो एडवान्स पार्टी में आत्मायें जा रही हैं, वे ही एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देंगी या योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं को तैयार करेंगी।

यह भी सम्भव है कि एडवान्स पार्टी में इतनी आत्मायें जायें, जो एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को जन्म दे सकें, तब पुरानी दुनिया का विनाश हो। इसलिए नये कल्प के सतयुगी संगमयुगी जीवन में इतनी आत्मायें जायें, जितनी सतयुग आदि की जनसंख्या होगी और उनको जन्म देने वाली आत्माओं की संख्या होगी। इसलिए हमको सतयुग या विनाश की प्रतीक्षा में ये वर्तमान संगमयुगी अमूल्य जीवन का समय नहीं बिताना है बल्कि इस संगमयुगी जीवन का आनन्द लेना है, इसका सुख अनुभव करना है। देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप परमशान्त, परमशक्ति सम्पन्न परमानन्दमय है, जिसके अनुभव करने के लिए ही बाबा अभी पुरुषार्थ करा रहा है और घड़ी-घड़ी हमको कहते हैं - तुम्हारा चेहरा सदा खुशनुमा होना चाहिए, जिसको देखकर आत्मायें अनुभव करें कि ये ईश्वरीय सन्तान हैं, इनको कुछ विशेष मिला है। तुमको ब्रह्मा बाप के समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहना है। तुमको सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर इस संगमयुगी कर्तव्य को सम्पन्न करना है।

"यह 84 जन्मों का चक्र है। तुम जानते हो 5 हजार वर्ष पहले हमारा राज्य था। ... जो भी एक्टर्स हैं, सबको यहाँ अन्त में हाजिर होना ही है। ... ऊपर से आना पूरा हो जाता है, तब लड़ाई लगती है।" सा.बाबा 14.7.07 रिवा.

"कुछ भी याद नहीं आये, देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है।। ... जब संकल्प किया कि सबकुछ तेरा तो एवर-रेडी हो गये ना। सभी ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मैं बाप की और बाप मेरा।... समय आप मालिकों का इन्तजार कर रहा है। कम से कम 9 लाख तो तैयार चाहिए ना।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 5

"समय पर साधन नहीं हों तो भी साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए। ... यह भी बता दिया कि जितना साधन बढ़ायेंगे, उतनी संख्या डबल, ट्रिबल बढ़ेगी। ... क्योंकि सेवा को समाप्त भी करना है। सम्पन्न करके समाप्त करना है। तो सम्पन्न तब होगी, जब कम से कम 9 लाख की माला बनाओ। अच्छा।" अ.बापदादा 9.01.95

"यह तो अण्डरस्टुड है कि अगर स्थापना की तैयारी कम है तो विनाश की तैयारी कैसे होगी ? इन दोनों का आपस में कनेक्शन है। ... अगर बहुत समय से महाविनाश का सामना करने की तैयारी का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय भी सफल नहीं हो सकेंगे। इसका बहुत समय का अभ्यास चाहिए। नहीं तो इतने वर्ष अभ्यास के लिए क्यों दिये गये हैं।"

श्रीकृष्ण का जन्म जब होता है, तब रावण सम्प्रदाय नहीं होती है, परन्तु एडवान्स पार्टी वाले ब्राह्मण होते हैं। रावण सम्प्रदाय वाले सब परमधाम चले जाते हैं, तब ही श्रीकृष्ण का जन्म होता है क्योंकि श्रीकृष्ण का जन्म नये कल्प के आदि में योगबल से होता है। जैसे देवताओं के पैर पुरानी विकारी दुनिया में नहीं पड़ सकते हैं, ऐसे ही विकारी पतित मनुष्यों के पैस नई दुनिया में नहीं पड़ सकते हैं, इसलिए नये कल्प आरम्भ होने तक सभी पतित-विकारी सभी आत्मायें परमधाम चली जायेंगी परन्तु परमधाम वे भी पावन बनकर ही जायेंगी।

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाली दोनों प्रकार की आत्माओं को ब्राह्मण कहेंगे क्योंकि उनकी पालना भी ब्रह्मा बाप द्वारा ही होती है। वह पालना चाहे साकार रूप में यज्ञ से हो या अव्यक्त रूप से हो। जो आत्मायें बाबा की साकार में बनती हैं, वे सब जब तक एडवान्स जन्म में नहीं जाती हैं अर्थात् परमधाम नहीं जाती हैं या देवता नहीं बनती हैं, तब तक उनको ब्राह्मण ही कहा जायेगा। बाबा ने अनेक बार कहा है - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता।

"तुम किसको भी यह समझा सकते हो कि हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। अभी विश्व में इनका राज्य स्थापन हो रहा है। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय नहीं कहेंगे। अभी तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। देवता बनने वाले हो। दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे, फिर तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों स्वच्छ होंगे। ... याद से विकर्माजीत बनना है। यह सारी मेहनत की बात है।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और संगमयुगी ब्राह्मणों की जनसंख्या

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और संगमयुगी ब्राह्मण

नये कल्प के आदि अर्थात् सतयुग के आदि में विश्व की जनसंख्या कितनी होगी, उसमें कितनी एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें होंगी और कितनी एडवान्स जन्म वाली आत्मायें होंगी, वह विचारणीय विषय है क्योंकि इस विषय में अपने एडवान्स स्टेज वाले भाई-बहनों की भी अलग-अलग मान्यतायें और विचार हैं। इसलिए इस विषय को समझने के लिए यहाँ कुछ विचार किया गया है।

एडवान्स पार्टी में 9 लाख या 18 लाख के लगभग आत्मायें होंनी चाहिए, जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या अर्थात् 9,16,108 जीवात्माओं को जन्म देंगी। यदि वे एक बच्चा और एक बच्ची दो को जन्म देती हैं तो 9 लाख अर्थात् साढ़े चार लाख युगल हो सकते

हैं और यदि एक युगल एक ही बच्चे को जन्म देता है तो 18 लाख के लगभग अवश्य होने चाहिए। पुराने कल्प के संगम समय में एडवान्स पार्टी के साथ विश्व की जनसंख्या 700 करोड़ के लगभग मनुष्यात्माओं की है, जिससे सारा ही विश्व भरा हुआ है। जब नये कल्प का संगम समय आरम्भ होगा अर्थात् जब पुरानी दुनिया का विनाश हो जायेगा, तब अधिकांश आत्मायें शरीर छोड़कर मुक्तिधाम अर्थात् परमधाम चली जायेंगी और एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें परमधाम होकर नई दुनिया में जन्म लेंगी। नये कल्प के संगम पर एडवान्स पार्टी की आत्मायें भी होंगी तो एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें भी होंगी, इसलिए जब नये कल्प अर्थात् नई दुनिया का आरम्भ होगा तो विश्व में 18 लाख से 27 लाख तक मनुष्यात्माओं की जनसंख्या जरूर होगी। उससे अधिक ही होगी क्योंकि वहाँ एडवान्स जन्म लेने वालों को जन्म भी देना है और नये विश्व के नव-निर्माण का कार्य भी सम्पन्न करना होगा परन्तु वे सब एडवान्स पार्टी अर्थात् ब्राह्मण कुल से गई हुई आत्मायें ही होंगी क्योंकि विकारी आत्मायें नये कल्प में प्रवेश नहीं कर सकती हैं। उस समय एडवान्स पार्टी की आत्मायेंआत्माओं के साथ एडवान्स जन्म वाली आत्मायें भी इस धरा पर आ जायेंगी। एडवान्स स्टेज अर्थात् सतयुग की प्रथम जनसंख्या में एडवान्स जन्म लेने वाली 9,16,108 आत्मायें होंगी, परन्तु आत्माओं की एडवान्स स्टेज का गायन पुरानी दुनिया के विनाश तक ही होना है, फिर तो वे आत्मायें एडवान्स जन्म में चली जायेंगी। इसलिए एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं के समय विश्व में मनुष्यात्माओं की जनसंख्या 700 करोड़ के लगभग होती है।

पुरानी दुनिया के विनाश के समय तक संगमयुगी ब्राह्मणों की जनसंख्या 33 करोड़ अवश्य होगी, जिसमें एडवान्स पार्टी की आत्मायें, एडवान्स जन्म लेने वाली एडवान्स स्टेज की आत्मायें और साधारण ब्राह्मण आत्माओं की गणना होगी। त्रेता के अन्त तक आने वाली सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश अवश्य मिलेगा और वे जाने-अन्जाने ब्राह्मण अवश्य बनेंगे, फिर वे भले एक दिन के लिए ही क्यों न ब्राह्मण बनें क्योंकि बाबा ने कहा है किसी को ब्राह्मण बनने और उस अनुरूप कर्म किये बिगर स्वर्ग का वर्सा मिल नहीं सकता। स्वर्ग में आने का अधिकार उसी को मिलता है, जो स्वर्ग के रचता बाप को पहचानता है, उसको बाप मानता है। इस प्रकार संक्षेप में एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वाली आत्माओं के विषय में विचार करें तो देखेंगे कि पुराने कल्प के अन्त में विश्व की जनसंख्या 700 करोड़ है, जिसमें सभी धर्मों की आत्माओं के साथ एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म लेने वाली सभी आत्मायें भी सम्मलित हैं, जिनकी संख्या 33 करोड़ है।

नये कल्प में 25-30 वर्ष तक विश्व में एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें

ही होंगी, जिनकी संख्या 18 से 27 लाख तक होगी और उसके बाद विश्व में एडवान्स जन्म वाली आत्मायें ही रह जायेंगी, जिनकी संख्या 9,16,108 होगी अर्थात् 1.1.1 सम्वत् में विश्व की जनसंख्या 9,16,108 होगी। उसके बाद देवी-देवता घराने की अन्य आत्मायें आती रहेंगी और निरन्तर विश्व की जनसंख्या बढ़ती जायेगी, जो बढ़ते-बढ़ते त्रेता के अन्त तक 33 करोड़ के लगभग हो जायेगी अर्थात् देवी-देवता घराने की सभी आत्मायें इस धरा पर आ जायेंगी। फिर जब द्वापर आरम्भ होगा, स्वर्ग पूरा हो जायेगा, तब समयान्तर में अन्य धर्मवंशों की स्थापना होगी और उनके धर्म की आत्माओं का इस धरा पर उतरना आरम्भ होगा, जिससे विश्व की जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जायेगी।

नये कल्प के संगम के आदि में एडवान्स जन्म लेने वाले 9,16,108 और उनको जन्म देने वाले ... दोनों प्रकार की आत्मायें होंगी। एडवान्स जन्म देने वाली कितनी आत्मायें होंगी, यह विचारणीय विषय है। मेरे विचार से कम से कम 18-19 लाख आत्मायें जरूर होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त नये विश्व का नव-निर्माण करने वाली भी कुछ आत्मायें अवश्य होंगी।

एडवान्स पार्टी की संख्या में वृद्धि एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें, जो अपना पुराना हिसाब-किताब चुक्ता करके कर्मातीत स्थिति के निकट पहुँचती हैं, उनसे होती है। एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं की वृद्धि अज्ञानी अर्थात् भक्ति मार्ग की भक्त आत्माओं से ज्ञान-योग की सेवा के आधार पर होती है और एडवान्स जन्म वाली आत्मायें एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाली दोनों प्रकार की आत्माओं से आती हैं अर्थात् दोनों से ही एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुग की प्रथम जनसंख्या में आने वाली आत्मायें निकलकर आती हैं, बाद में उनमें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार और आत्मायें आकर जन्म लेकर वृद्धि को पाती हैं।

"एडवान्स पार्टी में सब चाहिए। अभी आप लोग जायेंगे (एडवान्स जन्म लेंगे) तो एडवान्स पार्टी भी तैयार चाहिए ना। कितने सारे चाहिए। तो एडवान्स पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थीं। साकार बाप की पालना लेने वाली थीं तो पालना तो देंगी ना।"

अ.बापदादा 25.11.2000 एक्सीडेण्ट में 8 ने शरीर छोड़ दिया

"सभी बच्चे नम्बरवार तो हैं ही। जो अच्छा समझते हैं, वे अच्छा समझाते भी हैं। ... तुम किसको भी समझा सकते हो - हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं तो जरूर नई दुनिया के हुए ना। विचार करना है कि सतयुग के देवतायें नई दुनिया के हैं या ब्राह्मण नई दुनिया के हैं? ब्राह्मणों की चोटी गाई हुई है। विराट रूप में देवताओं को माथे में दिखाते हैं। तो चोटी ऊपर या माथा ऊपर ?"

सा.बाबा 16.06.12 रिवा.

अभी बाबा ने हमको हमारे तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवपूर्ण स्थित की स्मृति दिलाई है। हमारे वर्तमान संगमयुग के गौरवपूर्ण (Graceful) कर्तव्य और स्थिति ही तीनों कालों और तीनों लोकों में प्रतिबिम्बित (Reflect) होती है अर्थात् वहाँ के गौरवपूर्ण जीवन का आधार बनती है। अभी के संकल्प, बोल, कर्तव्यों का जो प्रभाव जड़, जंगम, चेतन तीनों प्रकृतियों पर पड़ता है, उसके फलस्वरूप ही हमारी परमधाम में स्थिति होती है, उस अनुसार ही सतयुग-त्रेता में स्वर्गिक जीवन और जीवन का सुख होता है तथा उसी अनुसार द्वापर-कलियुग अर्थात् भक्ति मार्ग में हमारे चित्रों का पूजन होता है और उस अनुसार ही हमारा इन दोनों युगों में पुजारी जीवन होता है अर्थात् हमारी भक्ति-भावना होती है। इस वर्तमान जीवन में प्राप्तियों और स्थितियों की अनुभूति के अनुसार ही घर वापस जाते समय सूक्ष्मवतन में स्थिति होती है। तो हमको अपने इस वर्तमान जीवन में अपने संकल्प, बोल और कर्मों पर कितना ध्यान होना चाहिए, यह विचारणीय है। अपनी वर्तमान प्राप्तियों, परमात्म-सहयोग पर विचार करें तो परमात्मा पिता ने हमको क्या नहीं दिया है! परन्तु बिडम्बना यह है कि देहाभिमान के वशीभूत आत्मा पर-चिन्तन, पर-दर्शन में अपना समय-स्वांस और संकल्प व्यर्थ गँवाती है, जिसके कारण अपनी इस गौरवपूर्ण स्थिति का वर्तमान में अनुभव नहीं कर पाती है। इसलिए ही बाबा ने कहा है कि अपनी वर्तमान प्राप्तियों की अनुभूति की अथॉरिटी बनो अर्थात् उनका गहराई से अनुभव करो।

यथार्थ रीति पुरुषार्थ करने वाले पुरुषार्थियों को उनके संकल्प-बोल-कर्म के फल तथा सारे कल्प की गौरवपूर्ण स्थितियों की अनुभूति यहाँ ही होती है, जिसके आधार पर वे अपने तीनों लोकों और तीनों कालों के जीवन अर्थात् वहाँ की स्थिति और प्राप्तियों का अनुभव कर सकते हैं और सबको होता ही है। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि बाबा सब बच्चों के वर्तमान पुरुषार्थ से उनके भूतकाल के जीवन और भविष्य के जीवन को समझ जाते हैं कि वे क्या पद पाने वाले हैं।

"बाप आकर अमर कथा सुनाते हैं। जब तुम फरिश्ते बन जायेंगे, तो कथा पूरी होगी। कथा सुनाई जाती है पतित को पावन बनाने के लिए। ... यह सृष्टि का चक्र है, जिसको मनुष्य नहीं जानते हैं। सभी बातों में मनुष्य मूँझे हुए हैं। शिव जयन्ति मनाते भी हैं परन्तु समझते नहीं हैं। ... शिवबाबा ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों को ही आकर राजयोग सिखाते हैं, वे ही फिर जाकर राजा-रानी बनते हैं।" सा.बाबा 9.05.12 रिवा.

"झाड़ में पहले थोड़े पत्ते होते हैं, फिर बढ़ते जाते हैं। भिन्न-भिन्न धर्म के पत्ते दिखाये गये हैं। ... तुम जानते हो बरोबर अभी नये झाड़ की स्थापना हो रही है, अभी हमारे दैवी झाड़ का

फाउण्डेशन लग रहा है। और जो धर्म-स्थापक आते हैं, वे यह नहीं जानते हैं कि हम फलाने झाड़ का फाउण्डेशन लगाते हैं। वह तो पीछे समझ में आता है कि फलाने ने यह फाउण्डेशन लगाया।" सा.बाबा 24.04.12 रिवा.

"विशेष बच्चों के प्रति अमृतवेले का समय ही निश्चित है। फिर तो विश्व की अन्य आत्माओं के प्रति, यथा-शक्ति भावना का फल व कोई भी रजोप्रधान कर्म अल्पकाल के लिए जिन आत्माओं द्वारा होते रहते हैं, उनको भी उनके कर्मों के अनुसार अल्पकाल के लिए फल देने के प्रति, साथ-साथ सच्चे भक्तों की पुकार सुनने और भक्तों की भिन्न-भिन्न प्रकार की भावना के अनुसार साक्षात्कार कराने और अब तक भी चारो ओर कल्प पहले वाले छुपे हुए ब्राह्मण आत्माओं को सन्देश पहुँचाने के लिए, बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में, पुरानी दुनिया को समाप्त कराने अर्थ निमित्त बने हुए वैज्ञानिकों की देखरेख करने, ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सहयोगी बच्चों को सारे दिन में ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में हिम्मते बच्चे मदद दे बाप के नियम के अनुसार उनको भी मदद देने के कर्तव्य में ड्रामानुसार निमित्त बने हैं।" अ.बापदादा 30.6.74

"अमृतवेले जब बापदादा चक्कर लगाने जाता है तो विशेष आपके पूर्वज दादियाँ भी साथ में चक्कर लगाने चलती हैं। ... शिव बाप को तो फरिश्ता रूप भी नहीं हैं तो हाथ कौनसा है? बाप की श्रीमत ही हाथ है। ... ब्रह्मा बाप ने सदा कदम-कदम श्रीमत पर चलकर आप सभी को करके दिखाया। क्या करना है, कैसे करना है - ब्रह्मा बाप साकार में एग्जॉम्पुल है।"

अ.बापदादा 20.3.12

"जो महारथी एडवान्स पार्टी में गये हैं, उनकी विशेषता यह है कि वे अमृतवेले हाज़िर हो जाते हैं। अमृतवेले का मिलन छोड़ा नहीं है। ... अहो प्रभु कहने के बजाये मेरा बाबा तो कहा, इसलिए बापदादा पहली बार आने वालों को देख खुश है। ... बापदादा रोज़ चारो ओर चक्कर लगाते हैं, तो बाबा के साथ जो आपके एडवान्स पार्टी के विशेष गये हैं, वे भी बापदादा के साथ चक्कर पर निकलते हैं। आप लोगों को देख वे भी खुश होते हैं कि हमारे भाई-बहन आ गये।" अ.बापदादा 5.03.12

"पिछाड़ी में भी कोई को रहना भी है ना। जिनका बुद्धियोग एक बाप से लगा हुआ होगा, निर्भय होंगे, वे ही अन्त में सब देख सकेंगे। ... यह शिवबाबा का रुद्र ज्ञान यज्ञ है, इस यज्ञ के तुम ब्राह्मण हो रक्षक। यज्ञ की सम्भाल हमेशा ब्राह्मण ही करते हैं और ब्राह्मण जितना समय यज्ञ रचते हैं तो पतित नहीं बनते हैं। तुम ब्राह्मण कब पतित नहीं बन सकते।"

सा.बाबा 1.01.12

"जो एरोप्लेन आदि बनाते हैं, वे भी वहाँ होंगे। प्रजा में कोई न कोई बन जायेंगे। संस्कार लेकर जायेंगे, फिर आकर ये सब चीज़े बनायेंगे। ... विनाश तो जरूर होना है। शिवबाबा ने ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ रचा हुआ है, इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जायेगी। यज्ञ ब्राह्मणों द्वारा ही रचते हैं, मिलता भी ब्राह्मणों को ही है। ब्राह्मण वर्ण ही सो देवता वर्ण बनता है।"

सा.बाबा 25.01.12 रिवा.

"तुम अभी संगमयुगी हो और सतयुगी राजधानी में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो, बाकी सुख के दिन तो सबके लिए आ रहे हैं। ... इस समय तुम हो ईश्वरीय सन्तान, फिर बनते हो दैवी सन्तान, फिर वैश्य, शूद्र सन्तान बनते हो। इस समय तुम्हारा कुल सबसे ऊंचा है। महिमा सारी शिव की और शिवशक्तियों की है क्योंकि इस समय तुम सेवा करते हो। जो सेवा करते हैं, उनको ही ऊंच पद मिलता है।"

सा.बाबा 4.09.12 रिवा.

"ऐसे भी नहीं कि सब झट से एडॉप्ट हो जाते हैं। नहीं, आहिस्ते-आहिस्ते बाप के बनते हैं। अभी देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। झाड़ धीरे-धीरे वृद्धि को पाता है। ... झाड़ घीरे-धीरे बढ़ता है। यह फिर है बेहद का झाड़, जो भी धीरे-धीरे बढ़ता रहता है। बहुतों को शिवबाबा के गले का हार बनना है। शिवबाबा के गले का हार बनेंगे, तब विष्णु के गले का हार बनेंगे।"

सा.बाबा 24.11.12 रिवा.

"गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। देवताओं के खज़ाने में नहीं, ब्राह्मणों के खज़ाने में। ... ये प्राप्तियाँ अभी अनुभव करते हो ? और ये प्राप्तियाँ भी अविनाशी हैं, अल्पकाल की नहीं हैं। ... सब प्राप्तियाँ हैं ? जिसको एक भी प्राप्ति कम नहीं है तो उसकी चलन और चेहरे में क्या विशेषता दिखाई देगी ? सदा प्रसन्नता। (अतीन्द्रिय सुख अभी का गाया हुआ है)"

अ.बापदादा 22.12.95

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और पुरुषार्थ

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें पुरुषार्थी आत्मायें हैं अर्थात् वे सम्पूर्णता के लिए पुरुषार्थ करती हैं परन्तु एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं का परमधाम जाने से पुरुषार्थ का समय पूरा हो जाता है और एडवान्स जन्म लेने से प्रॉलब्ध का समय आरम्भ हो जाता है अर्थात् वे संगम पर किये गये पुरुषार्थ की प्रॉलब्ध भोगने लगते हैं।

एडवान्स पार्टी का पुरुषार्थ नये विश्व के नव-निर्माण अर्थ होगा और उनका पुरुषार्थ स्वभाविक होता है। बाबा ने भी कहा है कि एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें सेवा का संकल्प

लेकर गई हैं, इसलिए वे सेवा के बिना रह नहीं सकती हैं परन्तु उनकी सेवा स्वभाविक होती है और उनको सेवा अर्थ अव्यक्त बापदादा से भी प्रेरणा और शक्ति मिलती रहती है। एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं का पुरुषार्थ नये विश्व के विधि-विधानों का निर्माण करने अर्थ होगा, जिसमें योगबल से जन्म देना मुख्य है परन्तु यह सब स्वभाविक होगा, हम कोई पुरुषार्थ कर रहे हैं, उसका संकल्प नहीं होगा।

एडवान्स स्टेज वालों का पुरुषार्थ है बाबा का सन्देश, बाबा का ज्ञान सर्वात्माओं को देने अर्थ होगा और अपनी स्टेज को कर्मातीत बनाने के लिए होगा। उनको पुरुषार्थ करने का संकल्प रहता है कि हमको पुरुषार्थ करके कर्मातीत बनना है, बाबा का सन्देश सर्वात्माओं को देना है। स्वर्ग में हम क्या पद पायेंगे, उसका ध्यान रखकर भी उनको पुरुषार्थ करना होता है। एडवान्स स्टेज वाले ही शिवबाबा से डायरेक्ट ज्ञान सुनते हैं। एडवान्स स्टेज वाले ही विश्व में योग का वायब्रेशन फैलाकर सर्वात्माओं को शान्ति देने अर्थ पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए बाबा ने इण्टरनेशनल योग का प्रोग्राम दिया है।

एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को एडवान्स जन्म में कोई पुरुषार्थ या सेवा नहीं करना होता है। उन्होंने एडवान्स स्टेज में और एडवान्स पार्टी के रूप में जो पुरुषार्थ और सेवा की, उसके आधार पर उनको प्राप्ति होती है और वे स्वभाविक स्वर्गिक सुख साधनों का उपभोग करते हैं। उनका पुरुषार्थ का समय पूरा हो, प्रॉलब्ध का समय आरम्भ हो जाता है। सेवा में भी एम यही हो कि इन्होंको दुख से छुड़ायें। आपके पास दुखियों के आवाज़ आने चाहिए। अभी यह रहमदिल का रूप आवश्यक है। ... सभी मुख्य भाई-बहनें एडवान्स में गये हैं, वे सब बाबा के पास थे। भाई थोड़े थे, बहनें ज्यादा थीं। ... उन्होंने कहा कि हम एडवान्स में हैं तो इसमें भी एडवान्स जायेंगे। सभी उमंग में थे। फिर बाबा ने सबको प्यार से भोग खिलाया। अ.बापदादा 25.08.12 सन्देश दादी गुल्जार

"अभी ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी पुराने संस्कार रहे हुए हैं, वे भस्म होने हैं। अभी आपकी एडवान्स पार्टी के साथी भी आप सबसे यह चाहते हैं कि अभी समाप्ति के समय को सामने लाओ। अब रिटर्न जर्नी याद रखो। आपकी दीदी को सदा याद रहता था कि अब घर जाना है। दादी को याद रहा कि अभी सम्पन्न बनना है, सम्पूर्ण बनना है।" अ.बापदादा 31.12.11

"अब ज्वालामुखी योग की बहुत आवश्यकता है। चाहे औरों को शक्ति देने के लिए, चाहे अपने ब्राह्मण परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए। अभी समय को समीप लाने वाले आप निमित्त हो। ... मन्सा द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करो और अपने सहयोग द्वारा ब्राह्मण साथियों की

विशेष सेवा करो, तब ही हम लोगों की दिल की आश पूरी होगी। तो आज वतन में एडवान्स पार्टी आपको याद भी दे रही थी और अपने दिल की आशायें भी बता रही थी।"

अ.बापदादा 31.12.11

"ऐसे हर गुण और शक्ति की गुह्यता में जाओ। ... ऐसे ही आप जितना अन्तर्मुख होकर स्वयं में खोये हुए रहोगे तो बहुत नये-नये अनुभव होंगे। ... ऐसे आप सबकी लगन अपने निजी स्वरूप के भिन्न-भिन्न अनुभवों के सागर से होनी चाहिए। कार्य अर्थ वाह्यमुखता में आये, आधार लिया ... लेकिन लगाव और आकर्षण उस अनुभव के सागर की तरफ ही होनी चाहिए।"

अ.बापदादा 25.1.74

"मन के मालिक बन बन को ऐसे बिज़ी करो जो और तरफ आकर्षित ही न हो। लगाम को ढीला नहीं करो। ... समय और संकल्प दोनों को बचाना है क्योंकि बापदादा सबका चार्ट देखते हैं तो चार्ट में यह कमी मैजारिटी में देखने में आई। मन के मालिक ही विश्व के मालिक बनने हैं। जैसे ब्रह्मा बाप मनजीत बन विश्व का मालिक बन गया। अभी तो आप बच्चों का आवाह्न कर रहे हैं। आपकी एडवान्स पार्टी भी आपका आवाह्न कर रही है।"

अ.बापदादा 19.10.2011

आज बच्चों को क्या सौगात देंगे ? ... मम्मा ने कहा कि जैसे मैंने दो शब्दों का पुरुषार्थ किया - बाबा ने कहा और मैने किया। बाबा का कहना और मम्मा का करना। यह दो शब्द सदा सभी स्मृति में रखकर चलते चलेंगे तो बाबा की, मम्मा की, ड्रामा की आपको मदद मिलती रहेगी। ये दो शब्द कभी नहीं भूलना तो सब विजयी बनकर विजयी माला के मणके बन जायेंगे।

अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

पुरुषार्थ का ज्ञान एडवान्स स्टेज वालों को ही होता है। एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म में पुरुषार्थ का ज्ञान नहीं होता है परन्तु एडवान्स पार्टी वाले स्वभाविक रूप में पुरुषार्थ करते हैं, एडवान्स जन्म वाले कोई पुरुषार्थ नहीं करते हैं, उनकी प्रकृति दासी होती है, जो उनको मनवांच्छित फल देती है। वास्तविकता को देखा जाये तो एडवान्स जन्म वाले और स्वर्ग में आने वाली आत्मायें विश्व में जितनी साइन्स और टेक्नॉलॉजी का अविष्कार और निर्माण संगमयुग पर होता है, उसको भोगकर आधे कल्प में पूरा कर देते हैं। देवतायें किसी प्रकार का कोई नया अविष्कार आदि नहीं करते हैं, इसलिए धीरे-धीरे साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी जो संगमयुग पर वैज्ञानिक निर्माण करते हैं, जिससे नये विश्व का नव-निर्माण होता है, वह खत्म हो जाती है। फिर द्वापर से पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधि-विधान चालू होता है।

बापदादा और हम (एडवान्स पार्टी) सभी के सम्पन्न बनने का इन्तजार कर रहे हैं क्योंकि बापदादा और हम सभी आपके भाई-बहनों का आप सबसे दिल का प्यार है ... यहाँ का कार्य समाप्त कर तीव्र गति से उड़ो। ऐसा कोई तीव्रता का प्लॉन स्व-परिवर्तन और विश्व-परिवर्तन का जल्दी-जल्दी बनाओ। आ.दादी प्रकाशमणी 27.12.07

आप लोगों के लिए पालनहार तैयार कर रहे हैं। हम लोग इसी काम में बिजी हैं। ... हम लोग भी तपस्या करते हैं। तो मेरा प्रश्न उठा कि आप लोग कैसी तपस्या करते हैं? ... मम्मा ने कहा - आप लोगों के यज्ञ में तपस्या वा फरिश्ता बनने के भिन्न-भिन्न रीति से साधना के अभ्यास चलते हैं, ऐसे ही हम एडवान्स पार्टी वालों को भी बाबा द्वारा टचिंग मिलती है और हम भी उसी टचिंग के आधार पर अपनी साधना करते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

हमको भी बाबा द्वारा टचिंग मिलती है और हम भी उसी टचिंग के आधार पर अपनी साधना करते हैं। हमारे माता-पिता इस रहस्य को समझते नहीं हैं क्योंकि माँ-बाप ज्ञान के राज़ों को जानने वाले नहीं हैं लेकिन बच्चे जो भी करें, उसमें वे एतराज नहीं उठाते हैं। क्योंकि उनको मालूम है कि यह आत्मायें साधना करने वाली हैं। ये महान आत्मायें हैं। कोई अवतार आत्मायें हैं। अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

तपस्या वर्ष में हम लोगों ने भी तपस्या की। तो मैंने पूछा आप लोगों ने कैसे तपस्या की? ... हम लोग जहाँ भी हैं, अमृतवेले का अभी भी अभ्यास करते हैं। ... नुम: शाम के समय भी हम सभी आत्मायें बाबा से विशेष टचिंग लेते हैं, शक्ति लेते हैं। मम्मा ने कहा - हमको भी फरिश्ता बनकर आपके साथ-साथ फिर नया जन्म लेना है। हमको इसी जन्म में तो नहीं रहना है। हमको भी अपनी सेवा पूरी कर फरिश्तेपन की स्थिति में स्थित होकर परमधाम में जाना है और फिर नया जन्म लेना है। अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

अव्यक्त बापदादा का उपर्युक्त सन्देश सुनने के बाद ये स्पष्ट होता है कि एडवान्स पार्टी वाले भी पुरुषार्थ करते हैं परन्तु उनका पुरुषार्थ संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं के पुरुषार्थ से भिन्न होता है। वे भी फरिश्ता बनने का, कर्मातीत बनने का, सम्पूर्ण बनने का, परमधाम जाने का भक्तों और हठयोगियों के समान पुरुषार्थ करते हैं परन्तु भक्त और हठयोगियों के पुरुषार्थ से उनका पुरुषार्थ भिन्न होता है क्योंकि वे इसी कल्प में शरीर छोड़ने के समय ये ज्ञान का संस्कार लेकर जाते हैं, इसी संकल्प के साथ शरीर छोड़ते हैं और समय-प्रतिसमय अव्यक्त बापदादा भी उनको बुलाकर प्रेरणा देता रहता है, उनकी आत्मा में संस्कार भरता रहता है और सूक्ष्मवतन से भी उनको प्रेरणा देता रहता है। उनको भी बाबा की पालना मिलती है। भक्तों

और हठयोगियों में यह ज्ञान का संस्कार नहीं होता है और उनका शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के साथ सम्बन्ध भी नहीं होता है, उनमें केवल परमात्मा के प्रति भावना होती है। एडवान्स पार्टी वालों का पुरुषार्थ स्वभाविक होता है।

एडवान्स पार्टी की आत्माओं को अव्यक्त बापदादा के पास वतन में जाने से ब्राह्मणपन की अनुभूति होती है। यह अनुभूति भी पुरानी दुनिया से नई दुनिया की कलम लगाने का आधार बनता है, ये भी विश्व-नाटक का विधि-विधान है।

विजयी बनने के लिए क्या करना पड़ेगा ? सिर्फ आप जब अमृतवेले मिलन मनाते हो, उस समय शक्ति लेने के बाद अपने से यह दृढ़ संकल्प करो कि आज ... विजयी बनना है और हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखनी ही है। फिर रात्रि को चेक करो कि हम विजयी रहे और सभी के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रही ?

अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

"जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो, वह नहीं कर पाते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो, वह निभा नहीं सकते। तो अब अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे।"

अ.बापदादा 5.12.74

इस विविधतापूर्ण विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा को अपनी-अपनी प्राप्तियाँ हैं, हर एक का अपना पार्ट है, जो उसको बजाना ही है। इसमें कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रॉलब्ध, ड्रामा का पार्ट और सुख-दुख की अनुभूति का बड़ा वण्डरफुल सन्तुलन है, जिसमें संकल्प मात्र भी सोचने की मार्जिन नहीं है।

"अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिए कौनसा है ? वह है अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त फरिश्ता रूप क्या है ? ... वह सामने रखने से जैसे लाइट के कार्ब में यह मेरा आकार है। जैसे वतन में भी अव्यक्त रूप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो ? व्यक्त पाँच तत्वों के कार्ब में है और अव्यक्त लाइट के कार्ब में है।"

अ.बापदादा 15.09.74

"साकार में फरिश्ता रूप अर्थात् लाइट के कार्ब में यह आकार दिखाई देता है। जैसे सूर्य को देखते हो तो चारो ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में सूर्य का रूप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है लेकिन उसके चारो ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रूप में फैली हुई दिखाई देती है। ... इसी प्रकार से मैं आत्मा ज्योतिरूप हूँ, यह तो लक्ष्य है ही लेकिन मैं

आकार में भी लाइट के कार्ब में हूँ।" अ.बापदादा 15.9.74

"अभी तुम बाप से पढ़ रहे हो, फिर यह पुराना शरीर छोड़ रॉयल धनवान घर में जन्म लेंगे। तुम यह पढ़ाई भविष्य नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हो। ... जैसे यह मम्मा-बाबा अच्छी तरह पढ़ते हैं, वैसे तुम भी पढ़ो तो ऊंच पद पायेंगे। रात को जागकर विचार सागर मन्थन करो तो बहुत खुशी में आ जायेंगे। ज्ञान से खुशी का पारा चढ़ता है।"

सा.बाबा 4.03.12 रिवा.

"एडवान्स पार्टी वाले भी वतन में आज अपने दिल का स्नेह देने लिए और लेने लिए आये थे। वे पूछ रहे थे कि आखिर हमारा यह पार्ट कब तक ? तो क्या जबाब दें ? ... बापदादा के साथ स्नेह है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ। बैठते हैं, उसकी बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन बैठने का वायुमण्डल शक्तिशाली चाहिए।"

अ.बापदादा 18.1.12

"मैं कहता हूँ - तुम मेरे साथ मेरे धाम में चलो, जहाँ से तुम आये थे। फिर यह सब डिस्ट्रक्शन हो साफ होकर अच्छा हो जाये, फिर आकर तुम अच्छी दुनिया में सुख पायेंगे। बाप साथ भी देता है, मदद भी करता है, सिर्फ कहता है तुम थोड़ी हिम्मत करो। इसलिए कहा हिम्मते मर्दा तो मदद दे खुदा। अच्छा मीठे-मीठे सभी लवली लकी बच्चों को माँ का यादप्यार और नमस्ते। ओम् शान्ति।" मातेश्वरी 20.6.64

मम्मा के दो मन्त्र सदा याद रखो - "हर घड़ी हमारी अन्तिम घड़ी है" और "हुकमी हुकुम चलाये रहा है" इन दो मन्त्रों की धारणा से हम सहज ही नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप हो जायेंगे।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म वालों के पुरुषार्थ और प्राप्ति में अन्तर

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म की प्राप्ति और पुरुषार्थ का तुलनात्मक अध्ययन

जो प्राप्ति और सुख एडवान्स स्टेज में है, वह एडवान्स पार्टी में नहीं होता है क्योंकि उनमें स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है परन्तु दोनों की चढ़ती कला होती है। एडवान्स पार्टी वालों को भी अव्यक्त बापदादा की पूरी मदद मिलती है, इसलिए उनके जीवन में दुख नहीं होता है और वे भी सुख का अनुभव अवश्य करते हैं। अतीन्द्रिय सुख एडवान्स स्टेज वालों को ही अनुभव होता है।

एडवान्स जन्म वालों को केवल भौतिक सुख होता है, एडवान्स स्टेज वालों की तरह

अतीन्द्रिय सुख या आनन्द नहीं होता है क्योंकि उनको यह आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता है, परन्तु उनमें आध्यात्मिक शक्ति होती है, जिसके फलस्वरूप उनको भौतिक सुख प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं। एडवान्स जन्म वालों की उतरती कला होती है परन्तु उनको उतरने का आभास नहीं होता है।

एडवान्स पार्टी का पुरुषार्थ स्वभाविक होता है, एडवान्स स्टेज वालों को पुरुषार्थ का संकल्प रखना होता है और उनको ज्ञान से मदद मिलती है। एडवान्स स्टेज वालों का पुरुषार्थ ज्ञान सहित है, जो एडवान्स पार्टी वालों का नहीं होता है, उनके पुरुषार्थ में अव्यक्त बापदादा की विशेष मदद होती है।

एडवान्स जन्म वालों को भौतिक सुखों की भरपूर प्राप्ति होती है, परन्तु उनको न पुरुषार्थ का ज्ञान होता है और न ही उनको कोई पुरुषार्थ करने की आवश्यकता होती है। संगमयुग के किये गये पुरुषार्थ के आधार पर उनकी प्रकृति दासी होती है, इसलिए सर्व प्रकार के सुख उनको प्राप्त होते हैं, परन्तु उनकी उतरती कला होती है अर्थात् सुख निरन्तर कम होते जाते हैं, उसका भी उनको ज्ञान और अनुभव नहीं होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यथार्थ पुरुषार्थ एडवान्स स्टेज वाले ही करते हैं, एडवान्स पार्टी वालों का पुरुषार्थ स्वभाविक होता है, एडवान्स जन्म वाले कोई पुरुषार्थ नहीं करते हैं।

"पद कृष्ण का ऊंच कहा जायेगा, उनके बाप का सेकेण्ड क्लास का पद है, जो सिर्फ निमित्त बनते हैं कृष्ण को जन्म देने के।... बाप का नाम गुम हो जाता है, वह भी है जरूर ब्राह्मण, परन्तु पढ़ाई में कृष्ण से कम है।... कृष्ण का बाप कौन था, यह किसको पता नहीं है। आगे चलकर मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है।"

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

"कृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेगा ना कि हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि कृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता है।... साहूकार के पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फर्क हो जाता है।... कृष्ण के बाप का पद ऊंच नहीं कहेंगे, पद कृष्ण का ऊंच कहा जायेगा।" सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

"सतयुग में शुरू से ही राजाई चलती है। आदि सनातन डबल सिरताज देवी-देवता धर्म था, वह धर्म कैसे स्थापन हुआ, यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो।... तुम जानते हो - हम शूद्र से अभी ब्राह्मण बन रहे हैं। ब्राह्मणों की है चोटी।... यह व्यक्त ब्रह्मा सो सम्पूर्ण बनकर अव्यक्त फरिश्ता बनते हैं। ये बड़ी समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 24.04.12 रिवा.

"पिछाड़ी में बहुत वण्डरफुल पार्ट देखेंगे, बैठे-बैठे साक्षात्कार करते रहेंगे। तुम पूरे फरिश्ते यहाँ ही बनते हो। जो भी मनुष्यात्मायें हैं, वे सब शरीर छोड़ेंगी और वापस घर चली जायेंगी।... यह ज्ञान भी अभी ही तुमको है, सतयुग में ज्ञान का नाम-निशान नहीं रहेगा। वहाँ है प्रॉलब्ध, अभी है पुरुषार्थ।... शुरू में तुमने बहुत कुछ देखा, फिर अन्त में बहुत कुछ देखना है।" सा.बाबा 30.04.12 रिवा.

"साइन्स वाले भी हुनर सीख रहे हैं, यही साइन्स फिर वहाँ काम आयेगी। यहाँ सीखने वाले वहाँ जाकर दूसरा जन्म ले काम करेंगे। ... सबसे अच्छी बात है बाप से बहुत लव होना चाहिए। बाप जो फुरना देते हैं, उसको धारण करना है और दूसरों को भी ज्ञान दान करना है। जितना दान देते, उतना ही अपना जमा होता जायेगा। सर्विस ही नहीं करेंगे तो धारणा कैसे होगी।" सा.बाबा 27.11.11 रिवा.

एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और समाधि

एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और योग

समाधि शब्द भक्ति मार्ग अर्थात् हठयोग का है। ज्ञान मार्ग में भी योग में विभिन्न स्थितियाँ होती है, उनकी अपनी-अपनी विशेष अनुभूतियाँ होती हैं। ये स्थितियाँ भी समाधि ही हैं अर्थात् योग की इन स्थितियों को ही भक्ति मार्ग में हठयोगियों ने समाधि के रूप में सम्बोधित किया है। हठयोग में विशेष रूप से दो समाधियों का विशेष वर्णन है। एक है निर्संकल्प समाधि और दूसरी है निर्विकल्प समाधि। परन्तु ज्ञान मार्ग के दृष्टिकोण से देखें तो तीन प्रकार की समाधियाँ अर्थात् योग की स्थितियाँ हैं। एक है निर्संकल्प समाधि, दूसरी है निर्विकल्प समाधि और तीसरी है शुभ-संकल्प समाधि। इन समाधियों के अपने-अपने विशेष अनुभव हैं, जो यथार्थ रूप से अभी संगम पर ही आत्मा करती है, जब ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान दिया है।

पहली है निर्संकल्प समाधि अर्थात् आत्मा जब देह में रहते देह से न्यारी अपनी बिन्दुरूप स्थिति में स्थित होती है तो उसे निर्संकल्प समाधि अर्थात् स्थिति कहेंगे, जिसमें आत्मा को दैहिक दुनिया का कोई संकल्प नहीं रहता है परन्तु अपने मूल आत्मिक स्वरूप का सूक्ष्म संकल्प रहता ही है, जिसके आधार पर आत्मा परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति करती है।

दूसरी है शुभ-संकल्प समाधि अर्थात् जब आत्मा यथार्थ ज्ञान की धारणा कर इस साकार देह में रहते, देह से न्यारे अपने सूक्ष्म अर्थात् फरिश्ता स्वरूप में स्थित होती है तो वह

आत्मा की शुभ-संकल्प समाधि है अर्थात् उस स्थिति में आत्मा के जो संकल्प होते हैं, वे विश्व-कल्याण के होते हैं और उस समय आत्मा से जो वृत्तियाँ और वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं, वे विश्व का कल्याण करते हैं अर्थात् उससे चेतन आत्मायें और जड़-जंगम प्रकृति पावन होती है। इस स्थिति में आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है क्योंकि इस शुभ कर्म के कारण आत्मा को परमात्मा और आत्माओं की दुआयें मिलती हैं। ये शुभ-संकल्प समाधि की स्थिति आत्मा की अभी संगम पर ही होती है जब परमात्मा आकर विश्व-कल्याण का दिव्य कर्तव्य करते हैं और आत्माओं को भी करना सिखलाते हैं। इस स्थिति में ही आत्मा आनन्द का अनुभव करती है। इसके लिए बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम विशेष समय निकाल कर मन्सा सेवा करो।

तीसरी है निर्विकल्प समाधि अर्थात् जब आत्मा साकार देह में रहते, देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति हो इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अकाल तख्तनशीन होकर इसको साक्षी होकर देखती है और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाती है तो आत्मा को परम-सुख की अनुभूति होती है। सतयुग में आत्मा में संकल्प तो होते हैं परन्तु विकल्प नहीं होते हैं, इसलिए वहाँ भी आत्मा निर्विकल्प तो होती है परन्तु वहाँ यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मा को परम-सुख की अनुभूति जो अभी संगम पर होती है, वह नहीं हो सकती है। वहाँ आत्मा के संगम के संचित खाते के आधार पर भौतिक सुखों की भरमार होती है।

योग की इन तीनों स्थितियों का यथार्थ रीति पुरुषार्थ और उनसे प्राप्ति का ज्ञान और अनुभव एडवान्स स्टेज वाले ही कर सकते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि में ही ज्ञान इमर्ज रूप में होता है, एडवान्स पार्टी वाले पूर्व के पुरुषार्थ के आधार पर और अव्यक्त बापदादा के सहयोग से इस स्थिति में रहते हैं और कुछ-कुछ अनुभव करते। एडवान्स जन्म में संगम के पुरुषार्थ के आधार पर निर्विकल्प स्थिति का ही आत्मा को अनुभव होता है, परन्तु वे समझ से कोई भी प्रकार की समाधि का पुरुषार्थ नहीं करते हैं।

"अभी ऐसा बोल कभी नहीं बोलना - क्या करूँ, कैसे करूँ, होता नहीं, आता नहीं, न चाहते हुए भी हो ही जाता है। क्या ये बोल फरिश्ता बोलता है? ... क्या अनेकों को बन्धन-मुक्त करने वाली आत्मा ऐसा बोल, बोल सकती है, यह बन्धन-मुक्त आत्मा के बोल हैं? ... पाँच विकारों के वंश को भी और पाँच तत्वों के अनेक प्रकार के आकर्षण अर्थात् इन दस ही बातों के विजयी बनो अर्थात् विजय का दिवस मनाओ।"

अ.बापदादा 4.10.75

"सिद्धि तो रिवाजी आत्माओं को भी प्राप्त होती है। वे भी एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रगट कर सकते हैं और अनुभव करा सकते हैं। वह है अल्पकाल की सिद्धि

लेकिन यह है ज्ञान-युक्त विधि से सिद्धि। आगे चलकर कई नई बातें भी तो होंगी ना। जैसे आदि में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था। प्रक्टिकल में बोल रहा है, इशारा दे रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा। (यह पार्ट किन आत्माओं का होगा अर्थात् एडवान्स पार्टी वालों का, एडवान्स स्टेज वालों का या एडवान्स जन्म वालों का)"

अ.बापदादा 11.10.75

"भारत का कोई दुश्मन नहीं है। यह तो और धर्म वालों ने लोभ के कारण आपस में लड़ाया है। यह भी खेल बना हुआ है। ... यह ज्ञान अभी ही तुमको है। सतयुग में राज्य करते हैं परन्तु वहाँ यह नॉलेज नहीं रहती है कि हमने यह राज्य कब और कैसे पाया। तुम जानते हो अभी हम बाप से यह राज्य-भाग्य पा रहे हैं। ज्ञान सागर बाप ही यह सब ज्ञान समझाते हैं।"

सा.बाबा 23.11.12 रिवा.

Q. ज्ञानी योगी, सहयोगी योगी, हठयोगी योगियों के पुरुषार्थ में क्या अन्तर होता है?

ज्ञानी योगी निर्विकारी होते हैं, वे उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं, उनमें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होता है, उनका परमात्मा से डायरेक्ट सम्बन्ध होता है, वे परमात्मा की श्रीमत पर चलते हैं अर्थात् श्रीमत पर चलने का पुरुषार्थ करते हैं।

सहयोगी योगी दो प्रकार हैं - एक हैं ब्राह्मण आत्माओं के साथ सहयोगी और दूसरे हैं एडवान्स पार्टी के साथ सहयोगी। ब्राह्मण आत्माओं के साथ के सहयोगी योगी आत्माओं को इस ईश्वरीय ज्ञान का कुछ न कुछ ज्ञान रहता है, अनुभव रहता है परन्तु जो एडवान्स पार्टी के द्वारा सहयोगी योगी बनते हैं, उनको ज्ञान स्पष्ट नहीं होता है और डायरेक्ट परमात्मा से सम्बन्ध भी नहीं होता है। उनका अधिक सम्बन्ध एडवान्स पार्टी की आत्माओं के साथ ही होता है, जिसके आधार पर वे नई दुनिया की स्थापना अर्थात् निर्माणार्थ सहयोग करते हैं।

हठयोगी और भक्त योगी भावना के आधार पर पुरुषार्थ करते हैं परन्तु वे निर्विकारी नहीं बनते हैं। वे गिरती कला में होते है और वे नई दुनिया के निर्माण में भी किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं। उनके पुरुषार्थ से उनका अपना और आत्माओं का कोई विशेष कल्याण भी नहीं होता है।

ज्ञानी योगी, सहयोगी योगी आत्माओं की चढ़ती कला होती है, जबकि हठयोगी योगी आत्माओं की उतरती कला होती है।

ईश्वरीय ज्ञान का मनन-चिन्तन करके खुशी में ज्ञानी-योगी ही आयेंगे और ईश्वरीय सेवा भी यथार्थ रीति वे ही कर सकेंगे। सहयोगी सेवा में साधन-सम्पत्ति से मददगार बनते हैं,

जिससे उनका भाग्य बनता है परन्तु ज्ञान की यथार्थ सेवा वे नहीं कर सकते क्योंकि पढ़ाई यथार्थ रीति नहीं पढ़ते, ज्ञान की धारणा नहीं करते। वे केवल कार्य अच्छा समझकर सहयोगी बनते हैं। हठयोगी तो ब्रह्म को याद करेंगे या किसी देवता को याद करेंगे, उस पर अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र करेंगे, परन्तु यथार्थ ज्ञान का पता न होने के कारण वे ज्ञान का मनन-चिन्तन नहीं कर सकते हैं, इसलिए उनकी चढ़ती कला नहीं होती है। सब पुरुषार्थ करते भी उनकी उतरती कला ही होती है। परन्तु ज्ञानी-योगी और सहयोगियों की चढ़ती कला होती है क्योंकि वे परमात्मा के विश्व नव-निर्माण के कार्य में सहयोग करते हैं।

"जितना-जितना सर्व आत्मायें सन्तुष्ट होंगी, उतना उनकी सन्तुष्टता का उसको आशीर्वाद व सूक्ष्म-स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेस्पान्स मिलेगा - इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं। ... सर्व को सन्तुष्ट करने का मुख्य साधन कौनसा है ? ... मुख्य बात यह है कि जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो, वैसा अपने को मोल्ड कर सकें। अपने स्वभाव-संस्कार के वशीभूत न हों।"

अ.बापदादा 7.02.75

"हेविनली गॉड फादर कहते हैं तो जरूर उनको हेल के अन्त में आना पड़े, तब तो हेविन में ले जाये। अभी तुम दोज़ख और बहिश्त के बीच में बैठे हो। और सभी तो दोज़ख में ही हैं। सिर्फ तुम बच्चे ही अपने पुरुषार्थ से बहिश्त में जाते हो, इसलिए तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। ये सब बुद्धि से समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 17.07.12 रिवा.

"जब आप फरिश्ते स्वरूप आत्माओं द्वारा विश्व की आत्माओं के प्रति सर्व-शक्तियों, सर्व गुणों तथा सर्व वरदानों की पुष्प वर्षा होगी, तब ही आप सबको देवता अर्थात् देने वाला समझकर भक्त गण द्वापर युग से देवताओं का गायन और पूजन करते आ रहे हैं। क्योंकि अन्त समय सर्वात्मायें, विशेषकर वे भारतवासी आत्मायें, जो देवता धर्म की अन्त तक वृद्धि पाने वाली आत्मायें, जो सतयुग में आपके देवताई रूप की पालना तो नहीं लेंगी बल्कि बाद में इस धर्म की वृद्धि होने के समय से लेकर अन्त तक के समय में आपका देवता रूप, दाता रूप अथवा वरदाता रूप अनुभव करेंगी।"

अ.बापदादा 5.09.75

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और कर्मातीत स्थिति

एडवान्स जन्म वाले कर्मातीत स्थिति वाली आत्मायें होती हैं क्योंकि वे कर्मातीत बनकर परमधाम जाती हैं और फिर आकर एडवान्स जन्म लेती हैं। एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें कर्मातीत बनने का लक्ष्य लेकर पुरुषार्थ नहीं करती हैं, परन्तु उनका स्वभाविक पुरुषार्थ अर्थात् साधना होती है, वह उनको कर्मातीत बनाती है। सूक्ष्मवतन में जो संगठन होता है, उसमें कई बार उन आत्माओं ने कहा है कि वे भी स्वभाविक रूप में साधना करते हैं, वह साधना उनको कर्मातीत बनाकर घर वापस ले जाती है। एडवान्स स्टेज वालों को कर्मातीत स्थिति क्या होती है, उसके लिए क्या पुरुषार्थ है, वह समझ होती है और वे उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं और उस स्थिति में स्थित होकर कर्मातीत स्थिति का अनुभव भी करते हैं।

एडवान्स जन्म वाले कर्मातीत स्थिति से कर्म-सम्बन्ध में आकर नये कल्प का आरम्भ करते हैं, जब कि एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाले कर्मातीत बनकर पुराने कल्प अर्थात् पुरानी दुनिया का अन्त करते हैं और अन्त करके कर्मातीत बनकर घर वापस जाते हैं। बाबा ने कई बार मुरलियों में कहा है कि जब तुम कर्मातीत बन जायेंगे तो यह शरीर ही नहीं रहेगा। एडवान्स जन्म वालों को कर्मातीत स्थिति क्या होती है, उसका ज्ञान भी नहीं होता है और ड्रामा के विधि-विधान अनुसार उनको उसे जानने की आवश्यकता भी नहीं होती है।

"विनाश का सारा मदार तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होने पर है। अन्त में सब नम्बरवार कर्मातीत अवस्था को पहुँच जायेंगे। ... तुम देखेंगे अन्त में कई ऐसे निकलेंगे, जो बस उठते-बैठते बाप को याद करते रहेंगे, कर्मातीत अवस्था को पाने का अथक पुरुषार्थ करते रहेंगे। ... जो देहाभिमान में रहते हैं, बाप को याद नहीं करते, उनको यह दुनिया याद आती रहती है।"

सा.बाबा 25.09.10 रिवा.

हर गुरुवार को हम जहाँ भी हैं, वहाँ विशेष साइलेन्स में बैठते हैं, जिसको वे लोग समझते हैं कि ये साधना में बैठे हैं। ... एडवान्स पार्टी में सेवा करते हुए उन लोगों की गुप्त साधना चल रही है। जैसे हमारा लक्ष्य है कर्मातीत बनने का, वैसे उन्होंका भी लक्ष्य है कर्मातीत बनने का, उसका विशेष अभ्यास करते रहते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

"आत्मा आदि में कर्म-बन्धन से रहित थी, बाद में कर्म-बन्धन में आई और अब फिर से उसको अपने कर्म-बन्धनों से छूटना है। ... कर्म पर अपना कन्ट्रोल हो, तब ही कर्मों की बंधायमानी नहीं आयेगी, इसको ही जीवनमुक्ति कहते हैं। ... कर्मों को इस स्थिति में आना चाहिए जो आत्मा को कर्मों की बंधायमानी न रहे।" मातेश्वरी 24.06.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म और पवित्रता एवं ब्रह्मचर्य

यहाँ ये विचारणीय है कि पवित्रता अर्थात् सतोप्रधानता और ब्रह्मचर्य में बहुत बड़ा अन्तर है। एक बालक ब्रह्मचारी हो सकता है परन्तु सतोप्रधान भी हो, यह निश्चित नहीं। ऐसे ही एक सन्यासी ब्रह्मचारी तो हो सकता परन्तु सतोप्रधान भी हो, यह निश्चित नहीं है। पवित्र अर्थात् सतोप्रधान आत्मा परमधाम जाने के समय और आने के समय ही होती है, उसके आगे-पीछे उसकी सतोप्रधानता की कलाओं में कुछ न कुछ कमी अवश्य होती है, जिसके लिए साकार बाबा ने कहा है सम्पूर्ण सतोप्रधान श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, नारायण को नहीं क्योंकि 25-30 साल में सतोप्रधानता में कुछ कमी अवश्य आयेगी।

एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं की पवित्रता में कुछ कमी होगी, कुछ हिसाब-किताब होते हैं, जिनको पूरा करना होता है और उनको नये कल्प के लिए तैयारी करनी होती है परन्तु उनमें ब्रह्मचर्य की पूर्ण धारणा होगी। एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं ने ब्रह्मचर्य की धारणा पुरुषार्थ करके की होगी, कुमार-कुमारियों को छोड़कर उनमें कुछ ने काम विकार का अनुभव भी किया होगा, जिसकी स्मृति उनमें संस्कार रूप में होगी। एडवान्स जन्म वाली आत्माओं में तो पवित्रता और ब्रह्मचर्य की धारणा अपने सम्पूर्ण स्वरूप में होगी। बाद में उनमें समय की गति के साथ अपवित्रता तो आयेगी परन्तु सतयुग-त्रेता में ब्रह्मचर्य की धारणा रहेगी। सतयुग-त्रेता में परमधाम से आने वाली नई आत्माओं और आदि से चली आने वाली आत्मायें ब्रह्मचारी तो होंगी परन्तु जन्म-पुनर्जन्म लेने वाली आत्माओं में अपवित्रता अवश्य आयेगी।

"तुम अभी आत्माभिमानी बने हो। तुम जानते हो आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। शरीर को कपड़ा कहा जाता है। अभी यह कपड़ा मूत-पलीती है क्योंकि शरीर विकार से पैदा हुआ है और आत्मा विकार में जाती रहती है। पावन और पतित अक्षर विकार के लिए कहा जाता है।... अभी बाप तुमको दुख से लिबरेट कर शान्तिधाम ले जाते हैं, फिर वहाँ से आकर नये सिर अपना पार्ट रिपीट करना है।"

सा.बाबा 1.06.12 रिवा.

"जो ब्राह्मण बच्चे यह योगी भव और पवित्र भव का प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते तो बापदादा व ड्रामा भी उनको फर्स्ट क्लास में आने नहीं देते। फर्स्टक्लास अर्थात् वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकते। ... फर्स्टक्लास में आने के लिए ये मुख्य दो वरदान प्रैक्टिकल रूप में चाहिए। विस्मृति या अपवित्रता क्या होती है, इसकी अविद्या हो जाये।"

अ.बापदादा 27.12.74

"मूल बात है पवित्रता की। कोई गला भी काट दे तो भी अपवित्र नहीं बनना है। कोई बाबा से

पूछते हैं कि इस हालत में क्या करूँ, तो बाबा समझ जाते हैं कि सहन नहीं कर सकते हैं, हिम्मत नहीं है। तो बाबा कहते हैं जाकर पतित बनो, वह तुम्हारे ऊपर है। वे तो करके इस एक जन्म के लिए मार देंगे परन्तु पतित बनने से तो तुम 21 जन्म के लिए अपना कत्ल करती हो।" सा.बाबा 10.09.12 रिवा.

"काम की चोट सबसे जास्ती लगती है। इसलिए बाप कहते हैं - काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। ... काम से हराने वाले को बाबा कहेंगे तुम तो कुल कलंकित हो, क्रोध वा मोह के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। सारा मदार है काम पर। ... विचार करो - हम कितना बाप को याद करते हैं। इतना याद करते हैं, जो याद से पुराना हिसाब खत्म भी हो और नया जमा भी हो। इसमें धन की बात नहीं है। इसमें तो पाप का खाता खत्म करना है और पुण्य का खाता जमा करना है।" सा.बाबा 19.09.12 रिवा.

"सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से ही शुरू होता है। सतयुग का पहला सम्वत् है विकर्माजीत सम्वत्। भल जब श्रीकृष्ण का जन्म होता है, उस समय भी कोई न कोई थोड़े बहुत पतित दुनिया वाले भी रहते हैं, जिनको वापस जाना है। पतित से पावन बनने का यह संगमयुग है। जब सब पावन बन जाते हैं तो फिर लक्ष्मी-नारायण का राज्य, नया सम्वत् शुरू हो जाता है, जिसको विष्णुपुरी कहते हैं।"

सा.बाबा 13.09.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और सृष्टि-चक्र का ज्ञान

अभी ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान दिया है, जो हमारे जीवन की सफलता का मुख्य आधार है। एडवान्स पार्टी वालों की बुद्धि में सृष्टि-चक्र का ज्ञान मर्ज होगा क्योंकि उनका ज्ञान का पार्ट पूरा हो गया परन्तु अव्यक्त बापदादा की टचिंग उनको रहती है, जिससे वे अपने एडवान्स कर्तव्यों को सम्पन्न करने का पुरुषार्थ करते रहते हैं। एडवान्स स्टेज वालों की बुद्धि में सृष्टि-चक्र का ज्ञान इमर्ज रूप में होगा, जिसके आधार पर वे अभीष्ट पुरुषार्थ कर पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द की अनुभूति में रहेंगे और अपने संगमयुगी कर्तव्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। एडवान्स जन्म वालों को न सृष्टि-चक्र का ज्ञान होता है और न ही उनको इस ज्ञान की आवश्यकता होती है क्योंकि वे जीवनमुक्त स्थिति में होते हैं। सृष्टि-चक्र का ज्ञान देकर, उसकी धारणा कराकर बाबा एडवान्स स्टेज बनाते हैं, जिससे एडवान्स स्टेज वाले एडवान्स पार्टी और फिर एडवान्स जन्म लेते हैं।

"शरीर में आत्मा है, तब ही शरीर से कुछ भी कर सकते हो। आत्मा नहीं तो शरीर कुछ भी

कर नहीं सकता है। ... अभी तुम्हारी आत्मा शरीर छोड़ेगी तो जाकर किसी ऊंच घर में जन्म लेगी परन्तु लेंगे सब नम्बरवार। कम ज्ञान वाला साधारण घर में जन्म लेगा और ऊंच ज्ञान वाला ऊंच घर में जन्म लेगा।" सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

"सभी धर्म-स्थापक तो धर्म की स्थापना करने आते हैं। जब सब आ जाते हैं, फिर तो वापस जायेंगे। (अर्थात जब सब आ जायेंगे तो विकार से जन्म की प्रथा खत्म हो जायेगी, तब ही योगबल से जन्म की प्रथा चालू होगी, जिससे एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें जन्म लेंगी) ... अभी सब भिन्न नाम-रूप में तमोप्रधान अवस्था में हैं। ... अब सबको वापस घर जरूर जाना है। फिर से चक्र को फिरना है। फिर पहले नम्बर का धर्म चाहिए, जो पहले सतयुग में था। बाप आकर उसी देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। फिर विनाश भी होना है।"

सा.बाबा 20.08.10 रिवा.

"यहाँ से भी जो जाकर जन्म लेते हैं परन्तु वे भी समझेंगे तो कुछ भी नहीं। ... यहाँ से जो सीखकर गया, उस अनुसार छोटेपन में ही शिवबाबा-शिवबाबा करता रहेगा। ... वह बिन्दु आदि तो कुछ समझेगा नहीं।" सा.बाबा 11.05.10 रिवा.

"पहले बापदादा, फिर बच्चे हैं, तो यह नई रचना हुई ना। फिर हू-ब-हू कल्प पहले मुआफिक बाबा हमको राजयोग सिखला रहे हैं। फिर भक्ति मार्ग में उसका किताब बनता है, जिसको कहा है गीता। परन्तु इस समय उस गीता की कोई बात नहीं है।... भक्ति मार्ग की पुस्तक आदि पढ़ने से कोई फायदा नहीं है। बेहद के बाप से वर्सा अभी संगमयुग पर ही मिलता है।"

सा.बाबा 20.06.12 रिवा.

"बाप आकर राजयोग सिखाकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। तुम ही फिर सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हो। ऐसे नहीं कि तुमको सतयुग में ही बैठ जाना है। ... दिन के बाद रात और रात के बाद दिन जरूर होना है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का चक्र फिरना ही है। ... शरीर कहाँ भी छोड़ें, राजाई में तो आना ही है। अभी तुमको योगबल से ही शरीर छोड़ना है।" सा.बाबा 25.11.11 रिवा.

"कोई शरीर छोड़ते हैं, तो जाकर दूसरा पार्ट बजायेंगे, इसमें रोने की क्या दरकार है। ... तुम्हारी मम्मा गई, ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजा रही है। ऐसे बहुत जायेंगे, कोई कहाँ जन्म लेंगे, कोई कहाँ जन्म लेंगे। यह समझ की बात है कि जैसा-जैसा आज्ञाकारी बच्चा होगा, वह जरूर उतने अच्छे घर में जन्म लेगा। नम्बरवार तो होते ही हैं।"

सा.बाबा 28.11.11 रिवा.

"राधे-कृष्ण ही पहले नम्बर में महाराजा-महारानी बनें, उनका पद सबसे ऊंचा है। उनके माँ-

बाप का इतना नाम नहीं है क्योंकि उनके माँ-बाप उनसे कम पढ़े हुए हैं। ... यह ज्ञान अच्छी रीति बुद्धि में रहना चाहिए। यहाँ बैठे हो तो यह स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। इस चक्र से ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे, आत्मा पावन बनेंगी।"

सा.बाबा 10.11.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और गीता

यथार्थ रीति गीता ज्ञान एडवान्स जन्म में ही सुनते हैं, जिस गीता ज्ञान के आधार पर एडवान्स पार्टी में जाते हैं और बाद में एडवान्स जन्म लेकर सतयुग में पार्ट बजाते हैं। एडवान्स जन्म ली हुई आत्माओं को गीता ज्ञान का कोई ज्ञान नहीं होता है और न ही उनको कोई आवश्यकता होती है।

"हम आत्मा है और वह परमात्मा है, जब तक यह अनुभव नहीं कराओ, तब तक यह बात सिद्ध भी कैसे होगी ? जब कोई ऐसा भाषण करने वाला हो जो उनको अनुभव कराये कि आत्मा और परमात्मा में रात और दिन का अन्तर है। जब यह अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान भी सिद्ध हो ही जायेगा। सिर्फ प्वाइन्ट्स से उनकी बुद्धि में नहीं बैठेगा। उससे तो और ही लहरें उत्पन्न होने लगेंगी। लेकिन अनुभव कराते चलो तो अनुभव के आगे कोई बात जीत नहीं सकती।"

अ.बापदादा 2.08.73

"बाप समझाते हैं - तुमको उस अवस्था में ही जाना है, जिस सतोप्रधान अवस्था में तुम यहाँ आये थे। उस अवस्था में जाकर फिर उसी अवस्था में आना है सतयुग में। ... अभी छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि सबको वापस वाणी से परे अपने घर शान्तिधाम जाना है। सच्ची-सच्ची वानप्रस्थ अवस्था तुम्हारी है। बेहद का बाप सबको वापस ले जाने आया है।"

सा.बाबा 24.01.12

"मुख्य विशेषता है प्रैक्टिकल लाइफ की। प्रैक्टिकल कोई भी बात आप बताओ तो वे एकदम चुप हो जायेंगे।... सुनने वालों को आपके शब्दों की पॉवर से अनुभव हो। एक सेकेण्ड के लिए भी उनको अनुभव हो जाता है तो अनुभव को वे कभी छोड़ नहीं सकते, आकर्षित हुआ आपके पास पहुँचेगा।... भाषण के साथ उनको आत्मा और परमात्मा में रात और दिन का अन्तर है, यह अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान आपही सिद्ध हो जायेगा।"

अ.बापदादा 2.08.73

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो हर आत्मा को

समयानुसार मिलती है परन्तु अभी जब परमात्मा पिता इस धरा पर आते हैं और इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं और योग सिखाता हैं, जिसकी धारणा कर जो मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करते हैं, वही मुक्ति-जीवनमुक्ति का ययथार्थ अनुभव है।

एडवान्स पार्टी वालीं आत्मायें स्वभाविक मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति में रहेंगी और जाने-अन्जाने उसका अनुभव करती रहेंगी। एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें ज्ञान होने के कारण यथार्थ पुरुषार्थ कर मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम-सुख की अनुभूति में होंगी और वह स्थिति सदा रहे, उसके लिए प्रयत्नशील होंगी। एडवान्स जन्म वाली आत्मायें जीवनमुक्त होंगी, परन्तु उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान नहीं होगा और न ही उनको उसके विषय में जानने आदि का कोई संकल्प चलेगा अर्थात् जीवनमुक्त होते भी जीवनमुक्त की कोई अनुभूति नहीं होगी क्योंकि परमधाम से आने के कारण जीवन-बन्ध का अनुभव न होने के कारण उनको जीवनमुक्त का यथार्थ अनुभव नहीं होगा।

मुक्तिधाम में सभी आत्मायें जाती हैं और वहाँ मुक्ति की अवस्था में रहती हैं परन्तु परमधाम में कोई अनुभूति नहीं है क्योंकि अनुभूति करने का आधार देह नहीं है। इसलिए मुक्ति का यथार्थ अनुभव इस संगमयुग पर ही होता है, जो एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें ही यथार्थ रूप में करती हैं।

जो प्राप्ति और सुख एडवान्स स्टेज में है, वह एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म वालों को नहीं हो सकता है क्योंकि उनको यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, परन्तु एडवान्स पार्टी वालों को अव्यक्त बापदादा की पूरी मदद मिलती है। अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों का ही गाया हुआ है अर्थात् जो आत्मायें यथार्थ ज्ञान की धारणा के साथ अपने साथ परमात्मा का अनुभव करती हैं और वह अनुभव एडवान्स स्टेज वालों को ही होता है। इसलिए यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख उनको ही अनुभव होता है, जिनकी बुद्धि में मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान इमर्ज होता है।

यह मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और अन्य आत्माओं को कराना एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं का कर्तव्य है। वे ही यह अनुभव कर और करा सकती हैं।

"बाप सभी को इकट्ठा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। जो देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं, वे ही जीवनमुक्ति में जायेंगे, बाकी सब मुक्ति में जायेंगे। एक्यूरेट हिसाब तो नहीं निकाल सकते हैं। कोई तो विनाश के बाद भी रहेंगे। विनाश का भी साक्षात्कार करेंगे, यह सुहावना समय भी देखेंगे।"

सा.बाबा 17.03.68

One who realise the reality of this world drama, only he can realise the real happiness of this sangam yugi Godly

Life i.e. advance stage. Realisation of soul, Supereme Soul and this world drama is the root of real realisation of this sangam yugi advance life i.e. happiness of advance stage.

"आपके लेक्चर में ऐसी पॉवर होनी चाहिए, जो आपका एक-एक शब्द अनुभव कराने वाला हो। जैसे आप समझाते हो ना कि आप अपने को आत्मा समझो, न कि शरीर। तो इन शब्दों को बोलने में भी इतनी पॉवर होनी चाहिए, जो सुनने वालों को आपके शब्दों की पॉवर से आत्मा का अनुभव हो। ... आप जब भाषण करते हो बीच-बीच में जो साइलेन्स में ले जाने का अनुभव कराते हो, इसको और बढ़ाते जाओ।"

अ.बापदादा 2.08.73

"भाषण में जब बेहद की वैराग्य वृत्ति की प्वाइन्ट देते हो तो तो वह देते हुए उनको बेहद के वैराग्य वृत्ति के अनुभव में ले जाओ। वे फील करें कि सचमुच यह सृष्टि अब जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। ... उन पण्डितों आदि के बोलने में भी पॉवर होती है, जिससे एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते और एक सेकेण्ड में रुला भी देते हैं।"

अ.बापदादा 2.08.73

"वे भाषण करने वाले एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते और एक सेकेण्ड में रुला भी देते हैं। ... जब उनके भाषण में इतनी पॉवर होती है तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पॉवर नहीं हो सकती है! अशरीरी बनाना चाहो तो क्या वह अनुभव करा सकते हो कि वह लहर छा जाये? सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जाये। इसको कहा जाता है - प्रैक्टिकल अनुभव कराना।"

अ.बापदादा 2.08.73

"बड़ी आयु की तुलना में छोटेपन में सतोप्रधानता रहती है, कुछ न कुछ प्योरेटी की पॉवर होने के कारण उनकी बुद्धि जो काम करेगी, वह बड़ों की नहीं करेगी। अब यह चेन्ज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगॉर्ड देंगे। ... अभी बच्चों को भी मालिक समझ कर चलाते हैं, तो यह भी ड्रामा में पार्ट है। छोटे ही कमाल कर दिखायेंगे। एडवान्स पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है, लेकिन वे भी आपकी स्थिति एडवान्स में जाने के लिए रुके हुए हैं। उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है।"

अ.बापदादा 2.08.73

"सारे कार्य का आधार आप विशेष आत्माओं के ऊपर है। अभी चलते-चलते ठण्डाई हो जाती है। ... समझते हैं यह तो परम्परा से खेल चलता ही आ रहा है। लेकिन यह चलते-चलते शीतलता क्यों आती है? ... लेक्चर्स तो करते हो, लेकिन लेक्चर्स के साथ-साथ फीचर्स

भी अट्रेक्ट करें, तब लेक्चर्स का इफेक्ट हो। ... आपकी मुख्य विशेषता है प्रैक्टिकल लाइफ की। जब लेक्चर्स से प्रैक्टिकल का भाव प्रगट हो, तब वह लेक्चर देने से न्यारा दिखाई दे।"

अ.बापदादा 2.08.73

एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और गर्भ

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और जन्म

एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें जो जन्म लेती हैं, वह विकारी गर्भ से ही लेती हैं परन्तु गर्भ उनको गर्भजेल जैसा अनुभव नहीं होता है अर्थात् गर्भ में कोई दुख की अनुभूति नहीं होती है। इसके सम्बन्ध में दादी प्रकाशमणि के देह त्याग के समय वतन में दादी जी और गुल्जार दादी जी का वार्तालाप भी वतन में अव्यक्त बापदादा के सामने हुआ था। एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं के लिए गर्भ महल के समान सुखदायी होता है। एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं को गर्भजेल और गर्भ-महल दोनों के विषय में ज्ञान होता है परन्तु उन्होंने गर्भ-जेल से जन्म लिया है, इसलिए वह अनुभव उनकी स्मृति में संचित होता है, गर्भ-महल का ज्ञान परमात्मा से मिलता है और उसका अनुभव भी उनकी बुद्धि में मर्ज होता है, इसलिए उनको गर्भ में जाने का मन नहीं होता है परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार समय पर जाना ही होता है और पार्ट बजाना ही होता है।

एडवान्स जन्म जब लेंगे अर्थात् सतयुग-त्रेता में गर्भ में कोई गन्दगी आदि होती, ऐसा संकल्प भी नहीं होगा, इसलिए उनको गर्भ में जाने की कोई हिचक नहीं होगी। खुशी से समय पर एक शरीर छोड़ गर्भ में जाकर नया जन्म लेंगी। एडवान्स पार्टी वालों को नाममात्र इन बातों का ज्ञान होगा परन्तु उनका इस सम्बन्ध में अधिक संकल्प नहीं चलता है क्योंकि उनके एडवान्स पुरुषार्थ के आधार पर वह अनुभव मर्ज हो जाता है। एडवान्स स्टेज वालों को संगमयुग पर गर्भ-जेल, गर्भ-महल आदि का ज्ञान होता है, उसका अनुभव उनकी आत्मा में संचित होता है, इसलिए उनको गर्भ में जाने में हिचक भी होती है परन्तु ड्रामा अनुसार पार्ट बजाना ही है, इसलिए ज्ञान से वह हिचक बुद्धि से निकालनी होती है।

संक्षेप में विचार करें तो यह विश्व-नाटक का सारा खेल जन्म-मरण पर आधारित है। सारे कल्प में पार्ट बजाने के लिए एक शरीर छोड़ दूसरा लेने के लिए गर्भ में जाना ही होता है परन्तु समय-समय पर पार्ट और कर्मानुसार उसकी अनुभूति अलग-अलग होती है। एडवान्स पार्टी वाले एडवान्स पुरुषार्थ करके एडवान्स पार्टी में गये हैं, इसलिए उनका जन्म तो भोगबल से ही होता है परन्तु उनका जन्म अच्छे घर में होता है, उनके माता-पिता चरित्रवान होते हैं, जिसके कारण गर्भ में रहते और जन्म लेते समय भी उनको कोई दुख-दर्द नहीं होता है।

एडवान्स स्टेज वालों का जन्म तो भोगबल से ही हुआ है, उनकी आत्मा में गर्भजेल का अनुभव भी संचित है, इसलिए प्राय: सभी आत्मायें अभी पुरानी दुनिया में जन्म लेने में डरती हैं। एडवान्स स्टेज वाले और एडवान्स पार्टी वाले अभी के पुरुषार्थ अनुसार एडवान्स जन्म लेते हैं, जो योगबल से होता है। एडवान्स जन्म वालों को योगबल और भोगबल का ज्ञान नहीं होता है, वहाँ तो योगबल से जन्म लेना स्वभाविक होता है। एडवान्स पार्टी वाले ही योगबल एडवान्स जन्म लेने के विधि-विधान का अविष्कार करते हैं।

सतयुग में एडवान्स जन्म वाली आत्माओं के लिए गर्भ-धारण पुराने कल्प के संगम समय में होगा और जन्म एवं पालना नये कल्प के संगम समय पर होगी क्योंकि श्रीकृष्ण और उनके समकक्ष जन्म लेने वाले परमधाम जाकर तुरन्त नये कल्प में आकर गर्भ में प्रवेश करेंगे तो जरूर गर्भ में शरीर पहले से ही निर्मित होगा, तब तो वे आकर उसमें प्रवेश करेंगे।

दादी ने कहा - अभी मैं वतन में आई हूँ तो गर्भ की याद नहीं है। मैंने कहा - कहते हैं गर्भ जेल होता है, गन्दगी होती है, आपको उसकी क्या फीलिंग है ? दादी बाबा को कहती है - बाबा, यह मेरे से क्या पूछती है ? दादी को कुछ भी याद नहीं था। तो बाबा ने कहा - अच्छा मैं तुमको इमर्ज कराता हूँ... तो दादी ने कहा मैं साक्षी होकर देखती हूँ कि वह स्टेज क्या है, मेरे को वह कोई जेल नहीं लगता है या कोई गन्दगी आदि नहीं लगती है। मैं समझती हूँ कि मैं जैसे महल में सोई हुई हूँ।... माँ को भी कोई दुख की फीलिंग नहीं है। मेरे जो माँ-बाप हैं, वे समझते हैं कि कोई अवतार आने वाला है, बच्चा नहीं समझते हैं। अभी मेरा चोला तैयार हो रहा है, जब तैयार हो जायेगा, तब बाहर आ जाऊंगी।... फिर बाबा ने कहा - सुना, अभी दादी को यह भूल जायेगा। (इस सन्दर्भ में महाभारत में शुकदेव के सम्बन्ध में भी वर्णन है कि उनको गर्भ भी महल के समान सुखदाई अनुभव होता था, बाहर आने की दिल नहीं होती थी)

25.10.07 सन्देश गुल्जार दादी

मम्मा ने कहा - गुप्त एडवान्स पार्टी में हम लोगों का काम है आप लोगों को पालनहार पार्टी की तैयारी करना। तो हम जहाँ आप लोगों की पालना होगी, उन आत्माओं को तैयार कर रहे हैं। आप लोग तो सतयुग के राजा-रानी तैयार कर रहे हो लेकिन राजा-रानी आयेंगे कहाँ, पालना कहाँ लेंगे ? ... तो हम लोग इसी काम में बिजी हैं। ... हम लोग भी तपस्या करते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

"एडवान्स पार्टी वाले भी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। ... वे भी आप लोगों का आवाहन कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। उनमें दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म लगन है लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है।

यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। अगर ज्ञान इमर्ज हो जाये तो सभी भागकर मधुवन में आ जायें। ... ज्ञान की शक्ति है, शक्ति कम नहीं हुई है। ... महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा।"

अ.बापदादा 19.3.2000

"अभी इन एडवान्स जो शरीर छोड़ेंगे, वे कोई के पास तो जायेंगे ना। निर्विकारी के पास तो पहले-पहले श्रीकृष्ण को ही जन्म लेना है। बाकी उससे पहले जो जायेंगे, वे विकारी के पास ही जन्म लेंगे, परन्तु वे गर्भ में इतनी सज़ायें नहीं भोगेंगे। बड़े अच्छे घर में जन्म लेंगे। सज़ायें तो कट गई हैं, बाकी करके थोड़ी होंगी, इसलिए उनको इतना दुख नहीं होगा।"

सा.बाबा 9.10.10 रिवा.

"बाप को भी नई दुनिया बनाने में मेहनत लगती है। ऐसे नहीं कि झट से नई दुनिया बन जाती है। तुमको देवता बनने में टाइम लगता है। अभी जो अच्छे कर्म करते हैं, वे अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। ... अभी तुम्हारी आत्मा अच्छे कर्म सीख रही है। आत्मा ही अच्छे या बुरे संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

"यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं और शरीर छोड़ते हैं तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं, ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं, फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है। तमोप्रधान जो भी हैं, वे सब खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं, तब कृष्ण का जन्म होता है। तब तक बदली-सदली होती रहती है।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

"अभी तुमको भासना आती है कि जो बाबा ज्ञान का सागर है, सभी आत्माओं का बाप है, वह हमको पढ़ा रहे हैं। ... तुम हो कितने साधारण और बनते क्या हो, विश्व के मालिक। तुम्हारा कितना श्रृंगार होगा, गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। ... अभी जो अच्छे-अच्छे बच्चे शरीर छोड़ते हैं, तो जरूर बहुत अच्छे घर में जन्म लेते हैं।"

सा.बाबा 9.10.10 रिवा.

"सतयुग में लॉ बना हुआ है - जब समय होता है तो दोनों को साक्षात्कार हो जाता है कि अब बच्चा होने वाला है। उसको कहा जाता है योगबल। पूरे टाइम पर बच्चा पैदा हो जाता है। वहाँ कोई तकलीफ नहीं, रोने की आवाज़ नहीं। ... वहाँ जब शरीर छोड़ने का टाइम होता है तो

टाइम पर शरीर छोड़ देते हैं, कोई मोह आदि होता नहीं है। सर्प का मिसाल है ना।"

सा.बाबा 25.08.12 रिवा.

"अभी कितने मनुष्य हैं, सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। वहाँ सब सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं, वहाँ लक्ष्मी-नारायण की गद्दी चलती है, तो जरूर उनको बच्चा भी होगा परन्तु वहाँ बच्चे योगबल से होते हैं, विकार की बात नहीं। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। पवित्र होने के कारण साक्षात्कार होता है कि अब बच्चा होने वाला है। पपीते का भी मिसाल है ना।"

सा.बाबा 26.12.11 रिवा.

"साक्षात्कार होता कि अब बच्चा होने वाला है। पपीते का भी मिसाल है ना। मेल-फीमेल एक-दो के बाजू में होने से फल पैदा होता है। ... मोर और डेल का भी मिसाल है, उसको भारत का नेशनल बर्ड कहा जाता है। डेल को प्रेम के ऑसू से गर्भ हो जाता है। वह विकार तो नहीं हुआ ना। ... योगबल से तुम विकारों रूपी रावण पर विजय पाते हो।"

सा.बाबा 26.12.11 रिवा.

"अभी तुमको बाप से अविनाशी ज्ञान रतन प्राप्त कर, उनको धारण का औरों को भी दान करना है। तुम अपना तन-मन-धन सब समर्पण करते हो तो तुमको उसका बाप से एवज़ा मिलता है। अज्ञान काल में भी दान करने वालों को उसका फल मिलता है, वे साहूकार के पास जन्म लेते हैं। यहाँ तुम बाप के आगे सरेण्डर करते हो तो जो पिछाड़ी में साहूकार बनते हैं, उनके पास जाकर जन्म लेते हो।"

सा.बाबा 1.09.12 रिवा.

Q. विचारणीय प्रश्न है कि श्रीकृष्ण की माँ और उनके समकक्ष जन्म लेने वाली आत्माओं को जन्म देने वाली मातायें नये कल्प में गर्भ धारण करेंगी या पुराने कल्प में अर्थात् आत्माओं में ये योगबल से जन्म देने की शक्ति नये कल्प में आयेगी या पुराने कल्प में ही आ जायेगी ?
विवेक कहता है कि ये शक्ति पुराने कल्प में ही आ जायेगी अर्थात् वे मातायें गर्भ तो पुराने कल्प में ही धारण करेंगी लेकिन उस गर्भ में निर्मित शरीर में आत्मायें नये कल्प में प्रवेश करेंगी क्योंकि आत्मायें तो विनाश के समय परमधाम जाकर नये कल्प में ही वापस आकर पार्ट बजाने आयेंगी। ये भी एक पुरानी दुनिया से नई दुनिया की कलम लगती है। 4-5 मास पुराने कल्प में और 3-4 मास नये कल्प में गर्भ में शरीर का पूर्ण निर्माण होता है।
अन्त में जब विनाश होगा और सुनामी, बाढ़ आदि के द्वारा बचे हुए भूभाग की सफाई हो जायेगी और उस समय जिन भूभागों में एडवान्स पार्टी की आत्मायें बचेंगी, जिसके लिए गायन

है कि 12 कोस पर एक दीपक जगता होगा अर्थात् सारे विश्व में शान्ति ही शान्ति होगी। उस समय ड्रामा अनुसार कुछ तो पहले से ही युगल जोड़े बने हुए होंगे और कुछ उस समय बन जायेंगे, उनमें परस्पर प्रेम-प्यार बढ़ेगा और उस प्रेम-प्यार के आधार पर उनके द्वारा एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं के लिए योगबल से गर्भ धारण करने की प्रथा का आरम्भ और नई दुनिया के निर्माण का अन्य कार्य होगा। ड्रामा में ये सब विधि-विधान नूँधा हुआ है, जो समय आने पर आत्माओं को प्रेरित करता है और आत्मायें वे कार्य करने में समर्थ होती हैं। ड्रामा अनुसार ही आत्माओं की बुद्धि में ये योगबल से गर्भ धारण करने का विधि-विधान भी आयेगा और स्वभाविक यह प्रथा चल पड़ेगी।

Q. संगमयुगी एडवान्स पार्टी के जीवन और सतयुगी देवताई जीवन में क्या मूलभूत अन्तर है, जिसके आधार पर एडवान्स पार्टी के जीवन में आत्मा की चढ़ती कला की स्थिति होती है और देवताई जीवन में उतरती कला की स्थिति होती है ?

शरीर छोड़ते समय के संकल्प की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है और एडवान्स पार्टी वाले सेवा का संकल्प लेकर जाते हैं, इसलिए एडवान्स पार्टी में भी बाबा के विश्व के नव-निर्माण के कार्य में सहयोगी रहते हैं, इसलिए उनको अव्यक्त बापदादा करते हैं और बापदादा की मदद उनको मिलती है। सतयुग आरम्भ होने के बाद बापदादा होते नहीं हैं, इसलिए एडवान्स पार्टी तथा एडवान्स जन्म लेने वाले दोनों को बापदादा की मदद की बात नहीं है और नये विश्व का नव-निर्माण हो गया, फिर उसकी आवश्यकता भी नहीं रहती है परन्तु एडवान्स पार्टी वाली जो आत्मायें सतयुग के संगम समय पर इस धरा पर रहती हैं, वे सतयुग के निर्माण का कार्य करती हैं, इसलिए वहाँ भी उनकी चढ़ती कला ही होती है, उतरती कला नहीं। एडवान्स जन्म वाली आत्मायें परमधाम से आती हैं, इसलिए उनको सर्विस आदि का कोई संकल्प नहीं होता है, इसलिए उनके द्वारा कोई सुकर्म नहीं होता है। सतयुग के कर्मों को अकर्म कहा जाता है क्योंकि उनके द्वारा न सुकर्म होता है और न ही विकर्म होता है। वे संगमयुग की प्रालब्ध के आधार पर सतयुग के साधन-सम्पत्ति का उपभोग करते हैं, इसलिए उनकी उतरती कला होती है।

पुराने कल्प के संगम समय पर एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को भी सूक्ष्मवतन में विद्यमान बापदादा की मदद मिलती है क्योंकि वे उस संकल्प के साथ ही शरीर छोड़ते हैं और बाबा भी नई दुनिया की स्थापना के लिए मदद देने के लिए ही सूक्ष्मवतन में हैं। समय-समय पर अव्यक्त बापदादा एडवान्स पार्टी वालों को वतन में बुलाकर संगमयुग के ब्राह्मण जीवन

का, ज्ञान का अनुभव कराते रहते हैं, उनमें नई दुनिया के निर्माणार्थ उमंग-उत्साह भरते रहते हैं। उस ज्ञान और संगमयुग के योगयुक्त वायब्रेशन के कारण उनके कर्म सुकर्म होते हैं, जिससे उनकी चढ़ती कला होती है। एडवान्स जन्म लेने वाले देवी-देवताओं के जीवन में ये सब नहीं होता है, इसलिए उनके कर्म अकर्म होते हैं और पार्ट बजाने के साथ उनकी आत्मिक शक्ति की कलायें उतरती जाती हैं। परमधाम से आकर जन्म लेने वाली आत्माओं की चढ़ती कला हो नहीं सकती, जब तक कल्प का अन्त न आये और बापदादा पुनः नई दुनिया के स्थापनार्थ न आयें।

एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें संगमयुग पर ज्ञान का सूक्ष्म संस्कार लेकर ही एडवान्स पार्टी में जन्म लेती हैं, इसलिए उनको सेवा का संस्कार रहता है, जिसके फलस्वरूप उनके कर्म सुकर्म होते है, जिससे उनकी चढ़ती कला होती है। जबकि सतयुग में आने वाली एडवान्स जन्म वाली आत्मायें परमधाम से आती हैं और परमधाम जाते समय ये ज्ञान के संस्कार आत्मा में पूर्ण रूपेण मर्ज हो जाते हैं, इसलिए उनके द्वारा कोई सुकर्म का कार्य नहीं होता है, इसलिए उनकी उतरती कला होती है। सतयुग में एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं में ज्ञान-योग-सेवा के संस्कार पूर्ण रूपेण मर्ज होते हैं, उनमें ज्ञान-योग-सेवा के फलस्वरूप मिली प्रालब्ध के संस्कार इमर्ज होते हैं और वे वहाँ उस प्रालब्ध को भोगते हैं, जिससे उनकी उतरती कला होती है। सतयुग में एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं के कर्म न सुकर्म होते हैं और न विकर्म होते हैं, वहाँ केवल ज्ञान-योग-सेवा से बनाई प्रालब्ध को भोगने के संस्कार रहते हैं, उस अनुसार कर्म होते हैं।

चढ़ती कला का आधार सुकर्म होते हैं, जो त्याग-तपस्या, ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के आधार पर होते हैं, जो एडवान्स स्टेज और एडवान्स पार्टी वालों के ही होते हैं, जिससे उनकी चढ़ती कला होती है। एडवान्स जन्म वालों के न सुकर्म होते हैं और न ही विकर्म होते हैं, वे कोई त्याग-तपस्या भी नहीं करते हैं, इसलिए उनके कर्मों को बाबा ने अकर्म कहा है परन्तु यथार्थ दृष्टि से विचार करें तो अकर्म कोई होता नहीं है अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है। इसलिए ही एडवान्स जन्म वाली आत्माओं की उतरती कला होती है।

भले अभी एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को यह स्पष्ट ज्ञान नहीं है लेकिन ज्ञानी आत्माओं के द्वारा और परमात्मा के द्वारा जो ज्ञान का संस्कार वातावरण में प्रसारित हो रहा

है, वह भी उनको अवश्य ही टच करता है और उनको सुकर्म करने के लिए प्रेरित करता है, उनसे सुकर्म कराता है, जो सतयुगी एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं के जीवन में नहीं होता है क्योंकि नये कल्प के आरम्भ से ही ज्ञान-योग का संस्कार वातावरण में मर्ज हो जाता है।

ज्ञानी ब्राह्मण आत्मा का योगदान और परमात्मा की मदद एडवान्स पार्टी की आत्माओं में स्थापना का संस्कार जाग्रत करता है, उनसे सुकर्म कराता है, जिससे उनकी चढ़ती कला होती है। इसलिए ही बाबा ने शरीर छोड़ने वाली आत्माओं को योगदान देने का विधि-विधान बनाया है और सिखाया है।

चढ़ती कला में परमात्मा का साथ बहुत महत्वपूर्ण है, जो एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी वालों को ही होता है, एडवान्स जन्म वाली आत्माओं को नहीं होता है क्योंकि उस समय परमात्मा परमधाम में रहते हैं, साकार वतन और सूक्ष्मवतन में उनका पार्ट पूरा हो जाता है।

मम्मा ने कहा - गुप्त एडवान्स पार्टी में हम लोगों का काम है आप लोगों को पालनहार पार्टी की तैयारी करना। तो हम जहाँ आप लोगों की पालना होगी, उन आत्माओं को तैयार कर रहे हैं। आप लोग तो सतयुग के राजा-रानी तैयार कर रहे हो लेकिन राजा-रानी आयेंगे कहाँ, पालना कहाँ लेंगे ? ... तो हम लोग इसी काम में बिजी हैं। ... हम लोग भी तपस्या करते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

इन सब रहस्यों को विचार करने पर स्पष्ट होता है कि एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं अर्थात् सतयुग की प्रथम जनसंख्या को जन्म देने वाले ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् जो ब्राह्मण बनकर पुरुषार्थ करने के बाद एडवान्स पार्टी में गई हैं, केवल वे ही नहीं होंगे, बल्कि उनके सम्बन्ध-सम्पर्क से या सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सहयोगी भक्त और हठयोग की साधना करने वाली आत्मायें भी होंगी। इसलिए बाबा ने भी कहा है कि सहयोगी भी योगी है क्योंकि परमात्मा के कार्य में सहयोगी है, इसलिए वे भी परमात्मा के साथ हैं, परमात्मा से प्रीतबुद्धि है।

"सभी ज्ञानी तू आत्मा नहीं बनेंगे। एक हैं बाप समान बनने वाली फर्स्ट क्वालिटी की आत्मायें, दूसरी हैं सिर्फ बाप के सम्बन्ध में रहने वाली और तीसरी हैं बाप व सेवा के सम्पर्क में रहने वाली। ... जिसको जो चाहिए, उसी प्रमाण उनको सम्पर्क में रखते रहना है। ... कोई कैसा

भी आये परन्तु कोई खाली हाथ न जाये। सम्बन्ध्-सम्पर्क वाले नियमों पर नहीं चलते हैं, लेकिन स्नेह में रहना चाहते हैं, ऐसी आत्माओं पर भी अटेन्शन जरूर रखना है।"

अ.बापदादा 3.08.75

जो ज्ञान-योगी आत्मायें अर्थात् ब्राह्मण बनने वाली आत्मायें हैं, वे सतयुग की राजाई और प्रजा में आयेंगी और ऐसी सहयोगी आत्मायें बाद में त्रेता के अन्त तक और बाद में द्वापर-कलियुग में भी आती रहेंगी। बाबा ने भी कहा है कि त्रेता के बाद में भी आत्मायें आकर देवी-देवता घराने की आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में आती हैं परन्तु वे सतयुग-त्रेता में देवी-देवता नहीं बनते हैं। ऐसी आत्मायें अपने को हिन्दू कहलाते हैं और देवी-देवता घराने की आत्माओं के ही सम्बन्ध-सम्पर्क में द्वापर-कलियुग में रहते हैं। ऐसी आत्मायें कल्पान्त में नई दुनिया सतयुग की स्थापना में सहयोगी बनते हैं। ऐसी आत्मायें भी एडवान्स जन्म अर्थात् योगबल से जन्म देने के निमित्त बन सकती हैं।

जैसे साइन्स वाले नये विश्व के निर्माण कार्य में सहयोगी बनते हैं, वैसे ही एडवान्स जन्म अर्थात् योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें भी सहयोगी आत्मायें होंगी या हो सकती हैं। उन आत्माओं को एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें तैयार करेंगी।

इस सेवा के लिए ही मम्मा और भाऊ विश्वकिशोर आदि पहले गये हैं क्योंकि उनको नई दुनिया के निर्माण और उसके विधि-विधानों के निर्माण करने के लिए तैयारी करनी है और उसके लिए अवस्था भी कुछ होनी बड़ी चाहिए।

उपर्युक्त रहस्यों को ध्यान में रखने से यह भी स्पष्ट होता है कि यज्ञ में अभी तक जो ये अभिधारणा है कि दीदी और भाऊ विश्वकिशोर श्रीकृष्ण के माता-पिता बनेंगे - ये विचारणीय है क्योंकि अभी दीदी का एडवान्स पार्टी का जन्म 17-18 साल का और भाऊ विश्वकिशोर का जन्म 44-45 साल का हो गया है।

Q. जो एडवान्स पार्टी की आत्मायें नये कल्प के संगम के समय में जायेंगी, वे आत्मायें कहाँ और किनके पास जन्म लेंगी ?

विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी की जो आत्मायें नये कल्प में प्रवेश करेंगी, वे परमधाम से आने वाली नई आत्माओं के पास जन्म लेंगी और उनसे नये कल्प की कलम लगेगी क्योंकि वे

अपेक्षाकृत अन्य आत्माओं से गुण-धर्मों में श्रेष्ठ होंगी या फिर जो अच्छे भगत होंगी, नियम-संयम से रहने वाले होंगे, उनके पास जन्म लेंगी।

ऐसे ही जो क्षेत्र ड्रामा अनुसार विनाश के समय सुरक्षित होंगे, वहाँ वे आत्मायें होंगी और एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें, उनके पास जन्म लेंगी, जिससे विनाश के समय एडवान्स पार्टी की आत्माओं को जन्म देने वाली आत्मायें तो शरीर छोड़कर वापस परमधाम चली जायेंगी और एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें रह जायेंगी, जो फिर एडवान्स जन्म लेने वालों को योगबल से जन्म देंगी।

पुराने राजायें अर्थात् राजघराने वाले अपने स्वभाव-संस्कार, खान-पान आदि में परिवर्तन करें और धार्मिक प्रवृत्ति वाले बन जायें तो ही एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें उनके पास जन्म ले सकती हैं। हो सकता है कि उन राजघरानों से अन्त में कोई ऐसे बनें, जिनके द्वारा नई राजाई की कलम लगे परन्तु ये है बहुत कठिन काम।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और योगबल से जन्म

एडवान्स जन्म और योगबल से जन्म में अन्तर

एडवान्स जन्म अर्थात् जो आत्मायें सतयुग की आदि में अर्थात् नई दुनिया में पहले-पहले जन्म लेती हैं। योगबल से जन्म तो सतयुग के आदि से त्रेता के अन्त तक आने वाली सभी आत्मायें लेंगी परन्तु उसको एडवान्स जन्म नहीं कहा जायेगा। योगबल से जन्म ही स्वर्ग की विशेषता है, जो स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा है। एडवान्स जन्म लेने वालों के जन्म से स्वर्ग आरम्भ होता है अर्थात् योगबल से जन्म लेने की विधि और विधान की आदि होती है। ये योगबल से जन्म लेने-देने का विधि-विधान नर्क की आदि अर्थात् त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि तक चलता है। त्रेता के बाद और द्वापर के आदि से भोगबल से जन्म लेने-देने का विधि-विधान आरम्भ हो जाता है। एडवान्स जन्म और योगबल से जन्म लेने की प्रथा की आदि साथ-साथ होती है, उसमें पहला-पहला जन्म श्रीकृष्ण का होता है। ये योगबल से जन्म लेने-देने का विधि-विधान आधे कल्प तक चलता रहता है।

एडवान्स जन्म वे आत्मायें ही लेती हैं, जिनकी अभी एडवान्स स्टेज होती है परन्तु योगबल से जन्म वे सभी आत्मायें लेती हैं, जो ब्राह्मण बनती हैं, थोड़ा भी ज्ञान सुनती हैं या इस ईश्वरीय यज्ञ में तन, मन, धन, आदि किसी से भी सहयोग करती हैं। बाबा ने कहा है - जो ब्राह्मण बनते या तन-मन-धन से सहयोगी बनते हैं, वे सभी स्वर्ग में आयेंगे, भले वे त्रेता के अन्त में आयें।

जैसे शंकराचार्य आदि में देह से न्यारे होने की शक्ति थी, ऐसे ही एडवान्स पार्टी की आत्माओं में भी वह शक्ति होगी और विनाश के समय वे भी सहज देह से न्यारी हो जायेंगी और वह संस्कार सतयुग में भी जाग्रत होगा।

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वालों का उस समय का जन्म योगबल से नहीं होता है, उनका जन्म तो भोगबल का ही होता है परन्तु एडवान्स पार्टी वालों के माता-पिता भले उनको भोगबल से जन्म देते हैं परन्तु वे अन्य आत्माओं के समान विकारी नहीं होते हैं। वे नाम मात्र ही जन्म देने के लिए विकार में जाते हैं।

सभी एडवान्स जन्म लेने वालों का जन्म योगबल से ही होगा परन्तु सभी योगबल से जन्म लेने वाले एडवान्स जन्म वाले नहीं होंगे। एडवान्स जन्म वाले तो सतयुग की प्रथम जनसंख्या ही कही जायेगी, जहाँ से योगबल से जन्म लेने-देने की प्रथा का शुभारम्भ होगा।

"अभी शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है। उसके बाद ही नई दुनिया बैकुण्ठ कहा जाता है। कृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। कृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। ... कृष्ण से पहले जिनका भी जन्म होता है वह योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं कि कृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उनका भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है कि उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, जितना कृष्ण ने किया है। तुम ये सब बातें आगे समझते जायेंगे।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

"पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वे ही पहले सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं, तब उनका जन्म होता है, फिर कहेंगे पावन दुनिया, इसलिए कृष्ण का नाम बाला है। उनके माँ-बाप का इतना नहीं है। आगे चलकर तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। अभी टाइम पड़ा है।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

"जब कोई छी-छी नहीं रहेगा, तब कृष्ण आयेगा। तब तक तुम आते-जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे, बाकी सब चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है।"

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

"राधे के माँ-बाप भी तो होंगे ना, परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। ... जो यहाँ पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं, वे वहाँ भी पहले आयेंगे। नम्बरवार तो आते

हैं ना। ये बड़ी महीन बातें हैं, जो कम बुद्धि वाले तो धारण कर न सकें। सब नम्बरवार जाते हैं, तुम भी नम्बरवार ट्रान्सफर होते हो।"

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

"गाया हुआ है राजाओं के पास जन्म होता है, परन्तु क्या होता है सो तो आगे चलकर देखना है। अभी थोड़ेही बाबा बतायेंगे, वह फिर आर्टिफिशियल नाटक हो जाये। इसलिए बाबा बताते कुछ भी नहीं हैं। ड्रामा में पहले बताने की नूँध नहीं है। बाप कहते हैं - मैं भी पार्टधारी हूँ। आगे की बाते पहले से ही जानता होता तो बहुत कुछ बतलाता।"

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

"जब यह पढ़ाई पूरी होगी तब कृष्ण जन्म लेंगे। बाकी थोड़ा टाइम है पढ़ाई का। जरूर अनेक धर्मों का विनाश होने के बाद कृष्ण का जन्म हुआ होगा। सो भी एक कृष्ण तो नहीं होंगे, सारी कृष्णपुरी होगी। ये ब्राह्मण ही हैं, जो राजयोग सीखकर फिर देवता पद पायेंगे। ... शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं, विष्णुपुरी का राज्य देने।"

सा.बाबा 24.08.10 रिवा.

"यह है कल्प की आदि और अन्त का संगम। बाप कल्प के संगम पर ही आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। अभी पावन दुनिया की स्थापना होती है, फिर पतित दुनिया का विनाश होता है। पहले आदि में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं, फिर वृद्धि को पाते जाते हैं। ... यहाँ एक भी पावन नहीं है, फिर पावन दुनिया में एक भी पतित नहीं होता है। ये बड़ी समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 27.08.12 रिवा.

फिर बाबा ने कहा - आप तो बच्चों की सेवा के लिए एडवान्स में गई क्योंकि अपने राज्य में जो बच्चों का जन्म होने वाला है, वह पवित्र जन्म होने वाला है। नये राज्य में जो जन्म लेने वाले बच्चे हैं, उसके लिए आप और मेरे महारथी बच्चे ही निमित्त बनेंगे। जैसे यज्ञ की स्थापना में महारथी निमित्त बनें, ऐसे इस योगबल की पैदाइश करने के निमित्त भी ऐसे योगयुक्त बच्चे ही बनेंगे, इसलिए ही आप बच्चों को यह पार्ट बजाना पड़ रहा है। तो बाबा ने आज यह राज़ खोला। अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

Q. बाबा ने कहा कि सतयुग में जन्म लेने-देने का विधि-विधान ऐसा ही होगा, उसका अर्थ यज्ञ के कुछ मुख्य भाई-बहनें ऐसा अर्थ लगाते हैं कि वहाँ भी गर्भ-धारण स्त्री-पुरुष के सम्पर्क अर्थात् लिंग-सम्पर्क (Intercourse) से ही होगा ? परन्तु इस सम्बन्ध में विचारणीय है कि -

कि बाबा ने ये भी कहा है कि मोरिनी के गर्भ धारण में मोर-मोरनी का लिंग-सम्पर्क नहीं होता है, वह मोर के आंसू पीने से गर्भ धारण करती है, इसलिए भक्ति मार्ग में श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर-पंख दिखाया है। बाबा ने पपीते का भी उदाहरण दिया है। इसी सम्बन्ध में विचार करें तो स्त्री-पुरुष शरीर से जो शेल्स वातावरण में प्रसारित होते हैं, जो एक-दूसरे के ऊपर प्रभावित होते हैं अर्थात् एक-दूसरे के शरीर में स्वभाविक प्रवेश होते हैं।

यदि वहाँ भी लिंग-सम्पर्क से ही गर्भ धारण होगा तो स्वर्ग अर्थात् सतयुग-त्रेता वालों को देवता और द्वापर-कलियुग वालों को मनुष्य या असुर क्यों कहा है। सतयुग-त्रेता को स्वर्ग और द्वापर-कलियुग को नर्क क्यों कहा है अर्थात् सतयुग-त्रेता को अमरलोक और द्वापर-कलियुग को मृत्युलोक क्यों कहा जाता है। यदि कहें कि वहाँ केवल गर्भ-धारण के लिए लिंग-सम्पर्क होगा तो अभी भी इस दुनिया में जानवर भी गर्भ-धारण के लिए ही लिंग-सम्पर्क करते हैं।

सतयुग से आई हुई आत्मा अपने पार्ट का आधा समय पूरा करने के बाद त्रेता के अन्त में देवता कहला सकती तो द्वापर के आदि में ऊपर से आई हुई नई आत्मा देवता क्यों नहीं कही जा सकती क्योंकि वे जब आती हैं तो पूर्ण पावन होती हैं और जो आत्मायें ऊपर से नई आयेंगी, उनमें पहले तो काम-वासना होगी नहीं और आते ही काम-विकार की अति तो नहीं हो सकती है, भले वे विकार अर्थात् लिंग-सम्पर्क से जन्म लेती हैं और जो धर्म-स्थापक आते हैं, वे तो देवी-देवता धर्म वाली आत्मा के तन में ही आयेंगे, तो वे देवता क्यों नहीं कहे जा सकते हैं क्योंकि वे आते हैं तो पूर्ण पावन होते हैं। देवी-देवता घराने की आत्माओं का अपने पार्ट का आधा समय पूरा करने के बाद भी उसके लिंग-सम्पर्क को योगबल और नई आई हुई आत्मा के लिंग-सम्पर्क को भोगबल क्यों कहा जाता है।

त्रेता के अन्त में जो उपर से नई आत्मा आयेंगी, वह त्रेता के अन्त में देवता कहलायेगी और एक जन्म के बाद या उसी जन्म में द्वापर में उसे मनुष्य कहा जायेगा, वाम-मार्गी कहा जायेगा, उसका कारण क्या है।

क्या वहाँ गर्भ-धारण के लिए स्त्री-पुरुष में संकल्प उठेगा कि अब बच्चा पैदा करना है, जिससे वे लिंग-सम्पर्क करेंगे और क्या वे वहाँ लिंग-सम्पर्क करेंगे तो इन्द्रियों की उत्तेजना होगी, जिसके आधार पर सम्पर्क होगा और गर्भ-धारण के लिए आवश्यक रस-स्राव होगा, जिससे गर्भ-धारण की प्रक्रिया सम्पन्न होगी।

इन सब बातों पर विचार करें तो निश्चित ही स्वर्ग और नर्क के गर्भ-धारण के विधि-विधान में अन्तर जरूर होना चाहिए। इसके आधार पर ही जब पुराना कल्प अर्थात् नर्क का

समय पूरा हो, नया कल्प अर्थात् स्वर्ग का समय आरम्भ होता है तो महाविनाश होता है, जिससे सारे सौर-मण्डल में महा-परिवर्तन होता है, जिससे सब तत्व अपने मूल रूप में प्रस्थापित होते हैं। ऐसे ही जब त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में इस गर्भ-धारण के विधि-विधान में परिवर्तन होता है तो भूमण्डल पर उथल-पाथल होती है, जिससे स्वर्ग के अवशेष भूगर्भ में चले जाते हैं और पृथ्वी जो 90 अंश पर सीधी थी, साढ़े तेइस अंश पर झुक जाती है, जिससे जल-प्रवाह में अनेक परिवर्तन होते हैं और पहले जो पृथ्वी की सतह एक साथ होती है, वह विभाजित होकर अनेक भागों में विभाजित हो जाती है और अनेक नये महाद्वीपों का उदय होता है अर्थात् जो जल के गर्भ में थे, वे ऊपर आ जाते हैं। यदि वास्तविकता पर विचार करें तो यही स्वर्ग और नर्क की मूल सीमा-रेखा है।

- बाबा ने योगबल से जन्म लेने-देने के सम्बन्ध में मुख के प्यार की बात भी कही है, मोर और पपीते का उदाहरण भी दिया है, फिर बाबा ने यह भी कहा है कि जो होगा, वहाँ चलकर देखेंगे, अभी बाप से वर्सा तो ले लो। अभी संगम पर बाबा से हमको पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द का वर्सा मिलता है, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है, जो अभी संगम पर ही होता है। परन्तु बाबा के महावाक्यों के अनुसार जन्म लेने-देने का विधि-विधान यहाँ है, वह सतयुग में नहीं होगा। इसी कारण जब इस विधि-विधान में परिवर्तन होता है तो सृष्टि नर्क से स्वर्ग बनती है और स्वर्ग से नर्क बनती है। स्वर्ग के अन्तिम चरण के देवी-देवतायें भी योगबल से जन्म लेने के कारण पूजे जाते हैं, जब काम विकार अर्थात लिंग-सम्पर्क (Intercourse) से जन्म लेने वालों को पूजा करनी होती है। बाबा ने कहा है - भल वे आत्मायें परमधाम से 16 कला सम्पूर्ण आती हैं, तो भी उनके मन्दिर नहीं बनते, पूजा नहीं होती क्योंकि उनका जन्म विकार से हुआ है।

- धर्म-पितायें भी अपने धर्म की स्थापना कर जब जन्म लेंगे तो वे भी ऐसे-वैसे अर्थात् पतित संस्कारों वालों के घर में तो नहीं जन्म लेंगे। वे भी जरूर अपने धर्म की अच्छे संस्कारी आत्मा के घर में जन्म लेंगे। फिर भी बाबा ने कहा है कि उनकी पूजा नहीं हो सकती क्योंकि उनका विकार से जन्म होता है। तो देवताओं की पूजा का आधार क्या है, जो त्रेता के अन्त में जन्म लेने वाला भी देवता कहा जायेगा और उसकी पूजा होगी।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और जन्म-मृत्यु

एडवान्स जन्म वालों को तो मृत्यु शब्द का ही ज्ञान नहीं होगा, वे समय पर सहज ही एक शरीर छोड़ दूसरा धारण कर लेते हैं, इसलिए उनकी जन्म-मृत्यु को वस्त्र बदलना कहा

जाता है। उनको देह छोड़ने और धारण करने अर्थात् जन्म-मृत्यु का न भय होगा और न दुख होगा। एडवान्स पार्टी वालों को जन्म-मृत्यु शब्दों का ज्ञान तो होता है, परन्तु उनको मृत्यु का कोई भय नहीं होता है। एडवान्स स्टेज वालों को जन्म-मृत्यु का ज्ञान होता परन्तु वे अभी देह के त्याग से हिचकते हैं क्योंकि जन-साधारण की ये अभिधारणा है कि मृत्यु के समय आत्मा को दुख होता है और गर्भ में गन्दगी आदि होती है, इसलिए उनको गर्भ में रहना भी अच्छा नहीं लगता है, परन्तु गर्भ में जाना, जन्म लेना और मृत्यु अर्थात् देह का त्याग करना इस विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटना है, इसलिए वे इसको जानकर इसको स्वीकार करके सहज देह का त्याग करके गर्भ में जाकर सहज जन्म लें, उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं।

"यह बाबा तो समझते हैं कि मैं जाकर बच्चा बनूँगा। बचपन की बातें सामने आती हैं तो चलन ही बदल जाती है। ऐसे ही वहाँ भी जब बूढ़े होंगे तो समझेंगे कि अब यह वानप्रस्थ शरीर छोड़ हम किशोर अवस्था में चले जायेंगे। बचपन है सतोप्रधान अवस्था। लक्ष्मी-नारायण तो युवा हैं, शादी किये हुए हैं। ... इसलिए कृष्ण पर लव जास्ती रहता है।"

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

"ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को वर्सा मिलता है दादे का। स्वर्ग का रचयिता कोई ब्रह्मा नहीं है। तुम्हारा गुरु ब्रह्मा नहीं है। सत्गुरु तो एक ही निराकार परमात्मा शिव है। यह ब्रह्मा भी उनसे सीखते हैं। ... समझो यह ब्रह्मा चला जाता है तो भी तुमको याद तो शिवबाबा को करना है। शरीर तो छूटेगा ही। तुमको याद शिवबाबा को करना है।"

सा.बाबा 31.07.12 रिवा.

"तुम जानते हो अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए, अब यह ड्रामा का चक्र पूरा होता है, अब हमको नई दुनिया में नया जन्म मिलेगा। ... यहाँ तुमको प्रैक्टिस कराई जाती है कि कैसे एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। स्वर्ग में समय पर आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। सर्प का मिसाल भी तुम्हारे लिए है। ... इस ड्रामा को बड़ा युक्ति से समझकर फिर किसको समझाना होता है।"

सा.बाबा 1.09.12 रिवा.

"बाबा कहते हैं - हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है। इसमें तेरा-मेरा का फेरा कुछ भी नहीं रहता है। ... फिर होश में आये ही नहीं, यह बहुत अच्छा मौत है। मनुष्य तो रोते-पीटते हैं, तुम तो खुश होंगे। अरे वाह! इनका मौत बड़ा सहज हुआ, इनको कोई दुख नहीं हुआ। ... कोई बैठे-बैठे अपनी इस पुरानी जूती को छोड़ दे, कर्मातीत अवस्था में शरीर छोड़े तो वह सबसे अच्छा है।"

सा.बाबा 20.10.12 रात्रि क्लास रिवा.

"अगर आत्मा हर्षित हो शरीर छोड़ेगी तो वह हर्षितपना चेहरे पर बाहर से दिखाई तो पड़ेगा

ना। आत्मा तो खत्म होती नहीं है, आत्मा शरीर छोड़ती है। खुशी से शरीर छोड़ती तो कहा जायेगा कर्मातीत अवस्था। तुम बच्चों को ऐसे शरीर छोड़कर जाना है। ... आपही शरीर छोड़ते हैं, इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं। सतयुग में खुशी से शरीर छोड़ते हैं, तो वह प्रैक्टिस यहाँ से करनी होती है, जो वह आगे चलती रहेगी।"

सा.बाबा 20.10.12 रात्रि क्लास रिवा.

"सतयुग में दुख की कोई बात होती नहीं है। वहाँ शरीर खुशी-खुशी से छोड़ते हैं। घुट-घुट कर मरना रावण राज्य में होता है। तुम तो खुशी से तैयारी कर रहे हो कि हम कब बाबा के पास जायें। ... तुमको इस जन्म में बिल्कुल घुटका नहीं खाना है, बहुत खुशी से शरीर को छोड़ना है। कई अच्छे सन्यासी भी होते हैं जो बैठे-बैठे ब्रह्म की याद में शरीर छोड़ देते हैं, फिर सन्नाटा हो जाता है। वे समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे।"

सा.बाबा 26.09.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और धर्मराजपुरी

बाबा ने कहा है - जो यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके अपने विकर्मों को विनाश नहीं करेंगे और नये पाप कर्म करते रहेंगे, उनको अन्त में विनाश के समय धर्मराज की सजायें भोगनी होगी, उन सजाओं को भोगकर रहा हुआ हिसाब-किताब चुक्तू करके ही घर वापस जा सकेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं योगबल से सारा हिसाब-किताब पूरा कर लो और अपनी अवस्था ऐसी बना लो, जो धर्मराजपुरी की सजायें न भोगनी पड़ें और ही धर्मराज तुम्हारा स्वागत करके आगे भेजे। एडवान्स पार्टी वालों को धर्मराजपुरी की सजायें आदि नहीं भोगनी होगी, क्योंकि वे एडवान्स पार्टी में जाने से पहले ही अपना योगबल से या भोगबल से अपना सारा हिसाब-किताब चुक्तू करके सेवा अर्थ एडवान्स पार्टी में गये हैं अर्थात् एडवान्स पार्टी में जन्म लिया है। यदि उनको कोई सज़ा भोगनी भी होगी तो बहुत कम होगी।

एडवान्स स्टेज वाले भी अपने विकर्मों के हिसाब-चुक्तू कर लेते हैं, तब ही वे एडवान्स जन्म में जा सकेगे परन्तु बाबा ने कहा है कि पास विद् ऑनर तो आठ ही होते हैं, जिनको कोई सज़ा नहीं भोगनी होती है और ही धर्मराज उनको आदर-सम्मान के साथ आगे भेजता है। बाकी सब एडवान्स जन्म लेने वालों को भी अन्त में कुछ न कुछ सज़ायें भोगनी ही होती है।

एडवान्स जन्म लेने वालों को तो एडवान्स जन्म लेने के समय धर्मराजपुरी का ज्ञान भी नहीं होगा क्योंकि वे परमधाम से सीधे आयेंगे और एडवान्स जन्म लेकर सतयुग की आदि

करेंगे। वास्तविकता ये है कि उस समय धर्मराजपुरी होगी ही नहीं, परन्तु एडवान्स जन्म लेने से पहले एडवान्स स्टेज के समय उनमें ये धर्मराजपुरी का ज्ञान रहता है और वे इसके लिए पुरुषार्थ करते हैं कि अन्त समय उनको धर्मराजपुरी में जाकर सज़ायें आदि न खानी पड़ें। वे अपना सारा हिसाब-किताब चुक्तू करके ही परमधाम जाते हैं और वहाँ से आकर एडवान्स जन्म लेते हैं। एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म लेने वाले दोनों ही संगमयुगी ब्राह्मण जन्म से जब जाते हैं अर्थात् शरीर छोड़ते हैं, तब ही अपना पूरा हिसाब-किताब चुक्ता करके जाते हैं। उनमें एडवान्स पार्टी वाले इस दुनिया में जन्म लेकर सेवा का पार्ट बजाते हैं और एडवान्स जन्म वाले सीधे घर वापस जाते हैं और नई दुनिया में आकर एडवान्स जन्म लेते हैं।

ब्राह्मणों में अर्थात् एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं में जिन आत्माओं का हिसाब-किताब रहा हुआ है, उसको विनाश के समय धर्मराजपुरी की सज़ायें आदि भोगनी होंगी और उनको इसका ज्ञान भी रहेगा परन्तु उनको सजायें बहुत कम भोगनी होती हैं। धर्मराजपुरी में सजायें न भोगनी पड़ें, इसलिए बाबा ये सब बातें बताकर पुरुषार्थ कराते हैं। बाबा सदैव ही ब्राह्मण आत्माओं को कहते हैं - अभी पुरुषार्थ करके अपना सारा पुराना हिसाब-किताब पूरा कर लो, जो धर्मराजपुरी में सज़ायें न खानी पड़ें।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व का नव-निर्माण

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाली आत्मायें नये विश्व के नव-निर्माण के लिए नये-नये साधनों का अविष्कार करते भी हैं और वैज्ञानिकों ने जिन साधनों का अविष्कार किया, उनको नये विश्व के नव-निर्माण के लिए उपयोग भी करते और वे ऐसी आत्माओं की सेवा भी करते हैं, जो साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी के द्वारा नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी हों और नये विश्व का नव-निर्माण किया जा सके। एडवान्स पार्टी वाले ये कार्य अपने में नीहित संस्कार और अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाओं के आधार पर करते हैं और एडवान्स स्टेज वाले ज्ञान सागर बाप से मिले ज्ञान के आधार पर यह कार्य करते हैं अर्थात् ऐसी आत्माओं को परमात्मा का ये अध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे उनको नये विश्व की जानकारी हो और वे अपनी अध्यात्मिक उन्नति और नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी बनें। वे उनको अपने योगबल से भी प्रेरित करते हैं। नये विश्व का नव-निर्माण करना और कराना विशेषकर एडवान्स पार्टी वालों का ही काम है और नये विश्व का सन्देश देकर आत्माओं को जाग्रत करना एडवान्स स्टेज वाली आत्माओं का काम है।

एडवान्स जन्म अर्थात् नये विश्व के आदि में यह साइन्स और टेक्नॉलॉजी अपने चरमोत्कर्ष पर होती है, जिससे एडवान्स जन्म वाली आत्मायें उसका उपयोग और उपभोग करती हैं, उनका सुख लेती हैं परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार वह साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का ज्ञान और कला निरन्तर क्षीण होती जाती है क्योंकि एडवान्स जन्म वाले और उनके बाद नये विश्व में जन्म लेने वाले किसी नये साधन का या नई टेक्नॉलॉजी का अविष्कार या निर्माण नहीं करते हैं। वहाँ ये सब ज्ञान आने वाली आत्मायें परम्परागत पाती रहती हैं परन्तु उस ज्ञान में निरन्तर ह्रास होता जाता है और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि तक जो संगमयुग पर साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का निर्माण हुआ, वह पूरा हो जाता है और द्वापर से नये साधनों के अविष्कार की आवश्यकता होती है और आवश्यकता अनुसार नये-नये साधनों का अविष्कार और निर्माण होता रहता है। इसलिए ही कहा गया है "आवश्यकता अविष्कार की जननी है।"

एडवान्स पार्टी वालों का सम्बन्ध नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी वैज्ञानिकों से अधिक होगा। एडवान्स स्टेज वालों का सम्बन्ध विनाश के निमित्त बनने वाले वैज्ञानिको और नये विश्व के नव-निर्माण में सहयोग करने वाले वैज्ञानिकों से भी होगा। उनकी प्रेरणायें, वृत्ति-वायब्रेशन्स दोनों को अधिक प्रेरणा देने वाले होंगे। एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं के समय विनाश के निमित्त बनने वाले वैज्ञानिक तो होंगे ही नहीं क्योंकि उस समय विनाश का काम पूरा हो जायेगा, थोड़ी सफाई आदि होगी, वह होती रहेगी। उनके समय नये विश्व के नव-निर्माण के निमित्त बनने वाले वैज्ञानिक ही होंगे। समयान्तर में वे भी शरीर छोड़ेंगे और परमधाम जाकर सतयुग-त्रेता में अपने किये गये पुरुषार्थ अनुसार आकर जन्म लेंगे। एडवान्स जन्म लेने वाले एडवान्स जन्म के समय इस क्षेत्र में कोई नया पुरुषार्थ नहीं करते हैं। वे उस साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी से निर्मित साधनों का उपभोग मात्र करते हैं। वे अपने पूर्व जन्म में विश्व के नव-निर्माण अर्थ पुरुषार्थ करते हैं, जिसके आधार पर उनको एडवान्स जन्म मिलता है।
"एक तरफ समाप्ति का नगाड़ा, दूसरी तरफ नई दुनिया का नज़ारा साथ-साथ दिखाई देगा। वहाँ ही विनाश की अति होगी और वहाँ ही जलमई के बीच चारो ओर विनाश में एक हिस्सा धरती और बाकी तीन हिस्सा तो जलमई होगी ना। ... अनेक देश भी एक सैरगाह के रूप में जल के बीच एक टापू के मुआफिक हो जायेंगे।"

अ.बापदादा 23.10.75

साइन्स वालों को प्रेर रही हूँ कि जल्दी-जल्दी वे कोई ऐसी नई इन्वेन्शन करें, जिससे शरीर

छोड़ने में दुख कम हो और परिवर्तन हो जाये। ... हिंसा करने वालों को हिंसा से वैराग्य आ जाये, ऐसा वायुमण्डल फैलाने के लिए बाबा ने कहा है तो हम सब मिलकर ऐसा वायुमण्डल फैला रहे हैं। अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

"यह जैसे कि बाजोली है। पहले शूद्र हैं अनेक, फिर बाप आकर रचना रचते हैं, ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की। ... यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। परमधाम में है आत्माओं का झाड़। ... यहाँ वैराइटी मनुष्यों का वैराइटी रूप है। यह ज्ञान किसको समझाने में कितना मज़ा आता है। ब्राह्मण जब हैं तो सब धर्म हैं। शूद्रों से ही ब्राह्मणों का सेपलिंग लगता है। मनुष्य तो झाड़ों का सेपलिंग लगाते हैं, बाप नई दुनिया का सेपलिंग लगाते हैं, जहाँ विश्व में शान्ति होती है।"

सा.बाबा 2.09.10 रिवा.

"हर एक अपनी रचना अर्थात् अपनी राजधानी तो बना रहे हो ना, परन्तु राजधानी में भी नम्बरवार तो होते हैं ना! वे भी किस आधार से होते हैं और उनमें भी कोई आपके भक्त हैं। शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं। ... प्रजा कोई न कोई संस्कार-स्वभाव के वशीभूत होने के कारण हाई जम्प नहीं दे सकती, इसलिए रॉयल परिवार में व राजकुल में आने के बजाये, रॉयल प्रजा बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 14.07.74

"महाभारत लड़ाई भी दिखाई है। दूसरे किसी शास्त्र में लड़ाई की बात नहीं है। महाभारत लड़ाई संगम पर ही लगती है। ... याद के बल से तुमको बाबा से विश्व की बादशाही मिलती है, उस साइन्स के बल से विनाश होता है, फिर उसी साइन्स के बल से सतयुग में सुख होगा। साइन्स वाले इन्वेन्शन करते हैं, सुख के लिए। अन्त में वे भी आकर कुछ ज्ञान लेंगे।"

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

"अन्त में तुम्हारे साइलेन्स बल का बहुत आवाज़ निकलेगा। आगे चलकर साइन्स वाले भी आयेंगे। ... एक्टर्स को पता तो होना चाहिए कि हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। भारतवासियों को अपने धर्म का पता न होने के कारण और-और धर्मों में चले जाते हैं।"

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

Q. साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी सतयुग के निर्माण के लिए आवश्यक साधन है, तो ये सब साधन संगमयुग पर निर्माण होंगे या सतयुग में निर्माण होंगे और उनको निर्माण करने का आधार क्या होगा अर्थात् वह शक्ति क्या होगी, जिससे इन साधनों का निर्माण होगा ?

विवेक कहता है कि सतयुग के नव-निर्माण और सतयुग के संचालन में सौर-ऊर्जा का विशेष

सहयोग होगा, जिसका अविष्कार अभी संगमयुग पर हुआ है और दिनोदिन विकास को पायेगा और अन्त में सतयुग के नव-निर्माण में सहयोगी बनेंगा क्योंकि वहाँ प्रदूषण फैलाने वाली कोई चीजें होती नहीं हैं। ये प्रदूषण फैलाने वाली चीजें द्वापर के बाद बनती हैं तब तक यह सौर-ऊर्जा का ज्ञान विलुप्त हो जाता है। नये विश्व के नव-निर्माण के लिए प्राय: सभी प्रकार के साधनों का अविष्कार संगमयुग पर ही होता है और उनका निर्माण सतयुग-त्रेता में भी होता रहेगा, परन्तु वह ज्ञान दिनोदिन विलुप्त होता जायेगा।

"आत्मा में इतनी शक्ति होनी चाहिए, जो आत्मा कर्मों के बंधायमानी में न आये। इन बातों को धारण करने से सहज कर्मातीत अवस्था हो जायेगी। ... बाकी अपने को कोई वेद-शास्त्र पढ़कर डिग्री हांसिल नहीं करनी है, बल्कि इस ईश्वरीय ज्ञान से अपने को अपनी जीवन बनानी है, जिसके लिए हमको ईश्वर से वह शक्ति लेनी है।"

मातेश्वरी 24.06.12 रिवा.

"बहुत मनुष्य यह प्रश्न पूछते हैं कि सृष्टि की आदि कैसे हुई ? सभी धर्म वाले इतना ही जानते हैं कि सृष्टि की आदि हमारे धर्म से ही हुई है। ... कोई-कोई समझते हैं पहले हड्डियों से आदमी बनाया गया, ... फिर उसमें स्वांस लगाया गया, फिर लंग्स आदि लगाई गई, इस प्रकार पहला मनुष्य बना, बाद में सारी सृष्टि पैदा हुई। ... वास्तव में परमात्मा अनादि है तो यह सृष्टि भी अनादि है, उस अनादि सृष्टि की आदि भी परमात्मा द्वारा ही हुई है।"

मातेश्वरी 19.02.57

"अभी यह नाटक पूरा होता है, सब एक्टर्स शरीर छोड़ वापस परमधाम चले जायेंगे, बाकी थोड़े रहेंगे। ... दोनों तरफ के थोड़े-थोड़े बचेंगे। फिर विनाश के बाद मकान आदि बनाने वाले, सफाई करने वाले भी बचते हैं। हम भी चले जायेंगे, फिर तुमको राजाई में जन्म मिलेगा। बाबा ने कहा है - जहाँ जीत, वहाँ जन्म। भारत में ही जीत होगी।"

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

"राजायें आदि जो धनवान होंगे, वे बचेंगे, जिनके पास तुम जन्म लेंगे। फिर तुमको सारी सृष्टि का मालिक बनना है। ऐसे नहीं कि यहाँ की धन-दौलत कोई तुमको वहाँ काम में आयेगी। ... वहाँ सबकुछ नया बन जायेगा, हीरे-जवाहरों की खानियाँ भरपूर हो जायेंगी। नहीं तो महल आदि कहाँ से बनेंगे। इन बातों को समझने के लिए कितनी विशाल बुद्धि चाहिए।"

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

"साइन्स वाले समय को और अपनी इनर्जी अर्थात् मेहनत को, साधनों के विस्तार को सूक्ष्म और शार्ट कर रहे हैं। ... सफलता को भी पा रहे हैं। जैसे विनाश के अर्थ निमित्त बनी हुई

आत्माओं की गति सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है, ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिए ना! तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे।" अ.बापदादा 30.06.74

"अभी अपने निराकार स्वरूप को जान तो लिया है, अब इसकी स्मृति-स्वरूप के अभ्यास की गुह्यता में जाना चाहिए। जैसे साइन्स वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं और नये-नये इन्वेन्शन करते रहते हैं, ऐसे ही आप अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण-संस्कार के एकक-एक की डीपनेस में जाना चाहिए। जैसे आनन्द स्वरूप है तो वह आनन्द स्वरूप की स्टेज क्या है, उसकी अनुभूति क्या है, उससे प्राप्ति क्या है, आनन्द कहा किसको जाता है, उस समय की स्थिति का प्रत्यक्ष प्रभाव स्वयं पर और अन्य आत्माओं पर क्या होता है? ऐसे हर गुण और शक्ति की गुह्यता में जाओ।"

अ.बापदादा 25.01.74

"भारत अविनाशी खण्ड है, जिसका कभी विनाश नहीं होता है। यह साइन्स जिससे अभी इतना सुख मिलता है, वह हुनर भी वहाँ रहता है। साइन्स की सीखी हुई चीज़े दूसरे जन्म में भी काम आती हैं। ... ये विमान आदि बनाने वाले भी वहाँ होंगे, जो विमान आदि बनायेंगे। अन्त मति सो गति होती है। भल उन्हों में यह ज्ञान जो बाप दे रहे हैं, वह नहीं होता है।"

सा.बाबा 3.12.11 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म, एडवान्स स्टेज और नये विश्व की राजाई

परमपिता परमात्मा कल्पान्त में आकर, जब सारे विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था होती है, तब विश्व में पुन: राजतन्त्र की राज-व्यवस्था की स्थापना करते हैं अर्थात् राजाई की स्थापना करते हैं क्योंकि विश्व में आदि से ही राजतन्त्र की राज-व्यवस्था रही है और उसमें ही विश्व सुखी रहा है। प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था तो कलियुग के अन्त में थोड़े समय के लिए आई है। इस राज-व्यवस्था का ज्ञान सागर बाप ने ज्ञान दिया है और पुन: कैसे राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापन हो, उसके लिए पुरुषार्थ भी कराया है। राजा-प्रजा बनने का विधि-विधान अर्थात् पुरुषार्थ क्या है, वह भी बाबा ने बताया है। विश्व में राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापन करने में एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म लेने वालों की क्या भूमिका होगी, वह भी बाबा ने बताया है। इस सम्बन्ध में कई बातें विचारणीय हैं, जिनमें कुछ पर यहाँ विचार किया गया है।

"नई दुनिया के लिए ज्ञान देने वाला एक बाप ही है, वही ज्ञान देकर नई दुनिया स्थापन करते

हैं। यह ज्ञान कृष्ण ने नहीं दिया। ... कृष्ण की अपनी राजधानी और राधे की अपनी राजधानी थी, फिर उनकी आपस में सगाई होती है, वे ही शादी के बाद लक्ष्मी-नारायण, विश्व के महाराजा-महारानी बनते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में यह बातें टपकती रहनी चाहिए।"

सा.बाबा 10.11.12 रिवा.

"इस थोड़े से समय में राज्य अधिकारी बनने वा रॉयल फेमिली में आने के लिए क्या करना होगा ? वैसे संख्या के हिसाब से सतयुग में विश्व का तख्त सभी को तो मिल भी नहीं सकता। ... रॉयल फेमिली में भी आते हैं तो वे भी पहला नम्बर हैं। चाहे बड़े तख्त पर नहीं बैठते लेकिन प्रॉलब्ध नम्बरवन के हिसाब से ही है। ... तो पहले नम्बर के रॉयल फेमिली में आना, ये भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।"

अ.बापदादा 13.12.95

"नम्बरवन तख्त पर बैठना और उनकी रॉयल फेमिली में आना, इसका भी गुह्य रहस्य है। जो सदा संगम पर बाप के दिल तख्तनशीन स्वत: और सदा रहता है, कभी-कभी नहीं। जो सदा आदि से अन्त तक स्वप्नमात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में सदा रहा है, स्वप्न तक भी अपवित्रता को टच नहीं किया है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन हो सकती हैं।"

अ.बापदादा 13.12.95

"जो आदि से चारो ही सब्जेक्ट में बाप के दिल पसन्द है, वही तख्त ले सकता है। साथ-साथ जो ब्राह्मण संसार में सर्व के प्यारे, सर्व के सहयोगी रहे हैं, ब्राह्मण परिवार का हर एक दिल से सम्मान करता है। ऐसा सम्मानधारी ही तख्तनशीन बन सकता है। अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है तो वह नम्बरवार रॉयल फेमिली में आ सकता है।"

अ.बापदादा 13.12.95

"प्रजा और भक्त इन दोनों अन्तर क्या होगा ? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरूर होगी। वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में यथा योग्य और यथा शक्ति पुरुषार्थी होगी। बाकी और भी जो दूसरे सब्जेक्ट्स हैं धारणा और ईश्वरीय सेवा के, उनमें भी यथा शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी।"

अ.बापदादा 14.7.74

Q. एडवान्स पार्टी से राजाई की स्थापना होगी या श्रीकृष्ण से राजाई की स्थापना होगी ?
बाबा ने कहा है कि श्रीकृष्ण राजकुमार है तो जरूर किसी राजा का बच्चा होगा और वह राजा उसको पैर धोकर गद्दी पर बिठायेगा। यह भी कहा है कि जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे तो पुरानी दुनिया का कोई नहीं रहेगा। बाबा ने यह भी कहा है कि सतयुग में योगबल से पहला

जन्म श्रीकृष्ण का ही होगा, उससे पहले वालों के जन्म भोगबल से होंगे और वे पुरानी दुनिया के लोग ही होंगे या कहे जायेंगे क्योंकि नये कल्प में भोगबल से सन्तान देने-लेने की प्रथा खत्म हो जायेगी। अब इन सब बातों पर विचार करके निर्णय करना है कि सतयुग की नई राजाई कब और कैसे स्थापन होगी, जबकि अभी कलियुग में कहाँ भी राजाई नहीं है और जो तथाकथित राजघराने हैं, उनके खानपान जीवन व्यवहार को भी सभी जानते ही हैं।

यदि श्रीकृष्ण राजकुमार होगा अर्थात् किसी राजा के घर जन्म लेगा तो पहले उनके बाप की राजाई स्थापन हो क्योंकि वर्तमान में तो विश्व में कहाँ भी राजाई है नहीं और बाबा ने ये भी कहा है कि आगे चलकर विश्व राजाई का नाम-निशान ही मिट जायेगा, सर्वत्र पंचायती राज हो जायेगा अर्थात् प्रजा का प्रजा पर राज्य हो जायेगा और वे पंचायती राज वाले आपस में लड़ेंगे। इसलिए पहले श्रीकृष्ण के बाप की राजाई स्थापन हो, फिर श्रीकृष्ण उनके घर में जन्म ले, तो उसमें कितना समय लगेगा, यह विचारणीय है।

अब विचारणीय है कि दोंनों में क्या यथार्थ है और दोनों बातों में बाबा का क्या भाव-अर्थ है। दोनों में क्या और कैसे सम्भव होगा अर्थात् सतयुग की राजाई की स्थापना कब से और किसके द्वारा और कैसे होगी ?

यह भी सम्भव है कि श्रीकृष्ण के माता-पिता से सतयुग की राजाई की स्थापना हो और वे श्रीकृष्ण को सिहांसन पर बिठाकर देह का त्याग कर दें क्योंकि जैसे योगबल से जन्म देने की सतयुग की प्रथा है, वैसे ही समय पर सहज देह का त्याग करना भी तो सतयुग की एक प्रथा है। उसमें दुख आदि की कोई बात ही नहीं है।

यह भी सम्भव है कि श्रीकृष्ण से राजाई की स्थापना हो और उस समय के उनके साथी-सहयोगी श्रीकृष्ण को राजा चुन लें और गद्दी पर बिठायें, जैसे विक्रमादित्य के सिंहासन के विषय में खेल खेलने वाले बच्चों की कहानी है।

"सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। सतयुग में उनको किसने महाराजा-महारानी बनाया, जबकि अभी कलियुग अन्त में कोई राजाई नहीं है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। ... भगवानुवाच - मैं तुमको नर से नारायण बनाता हूँ, फिर तुम चले जायेंगे अपने घर। इस ड्रामा को अच्छी रीति समझना है।" सा.बाबा 25.08.12 रिवा.

वतन में बाबा के पास महारथी दादियों का संगठन देखा। ... बाबा ने कहा आप सबके लिए ही इन दादियों को बुलाया है। एडवान्स पार्टी के निमित्त बनाया है क्योंकि इतनी बड़ी राजधानी स्थापन होनी है तो उसमें पॉवरफुल आत्मायें चाहिए।

सन्देश 29.07.10 मोहिनी बहन द्वारा

"ये बॉम्बस आदि जो बनाये हैं, ये भी पुरानी दुनिया के विनाश में काम आयेंगे। बाप तुमको ज्ञान और योग सिखलाते हैं, जिससे तुम राज-राजेश्वर डबल सिरताज देवी-देवता बनेंगे। ... बाप हमको पावन बनाये राज-राजेश्वर बना रहे हैं, यह निश्चय और नशा हो तो बहुत खुशी में रहे। अपने दिल से पूछो - हम कितनों को आप समान बनाते हैं।"

सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

"अभी तुम बाप से स्वर्ग की बादशाही का वर्सा ले रहे हो, जो सन्यासी आदि तो दे न सकें। बाप ही स्वर्ग का रचयिता है। अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। ... अभी सारे सृष्टि-चक्र की नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। तुम ही पूज्य थे, फिर पुजारी बनें, अभी फिर पूज्य बनना है। पावन राजायें भी थे, पतित राजायें भी थे, अभी नो राजा। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। अभी फिर सृष्टि-चक्र को फिरना है, फिर से सतयुग आना है।"

सा.बाबा 24.08.12 रिवा.

"जब तुम्हारी राजाई स्थापन हो जाती है, वहाँ से सब आत्मायें आ जाती हैं, तब लड़ाई लगती है। ये सब बातें बाप बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। ... अभी तुम बच्चों को बाबा अच्छे कर्म करना सिखलाते हैं। ऐसे श्रेष्ठ कर्म और कोई सिखला न सके। अभी तुम श्रेष्ठ बन रहे हो। अभी तुम शरीर छोड़ेंगे तो भी ऊंच सर्विस ही जाकर करेंगे क्योंकि तुम्हारी अभी चढ़ती कला है।"

सा.बाबा 21.07.12 रिवा.

"बरोबर गांधी ने कांग्रेस राज्य स्थापन किया। नहीं तो यहाँ राजाओं का राज्य था। अभी बाप फिर से नई राजधानी रामराज्य स्थापन कर रहे हैं। ये बात सभी बच्चों की बुद्धि में नहीं बैठती है। अगर यथार्थ रीति बैठे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। ... कोई राजा-रानी बनते, कोई नौकर-चाकर, साहूकार प्रजा भी बनते हैं।"

सा.बाबा 26.05.12 रिवा.

"प्रजा कोई न कोई संस्कार-स्वभाव के वशीभूत होने के कारण हाई जम्प नहीं दे सकती, इसलिए रॉयल परिवार में व राजकुल में आने के बजाये, रॉयल प्रजा बन जाते हैं। ... बाकी भक्त जो होंगे, वे कभी भी स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक भक्तपने के संस्कार रहेंगे अर्थात् वे सदा मांगते ही रहेंगे। आशीर्वाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो या दृष्टि दो आदि-आदि। ... उन्हें कब बच्चेपन का नशा और मास्टर सर्वशक्तिमान का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे। ... भक्त कभी भी डॉयेरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही सन्तुष्ट रहते हैं।"

अ.बापदादा 14.7.74

"आपके भक्त कौन और किस हिसाब से बनेंगे ? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं के द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं। जो समीप आत्मायें होती हैं, जिन आत्माओं का बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फेमिली में आते हैं।" अ.बापदादा 14.7.74

"एक ही समय में हर एक आत्मा अपनी रॉयल फेमिली भी बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राज-घराना भी बना रही है, प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है। ... प्रजा और भक्त इन दोनों अन्तर क्या होगा ? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरूर होगी। ... बाकी भक्त जो होंगे, वे कभी भी स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे।"

अ.बापदादा 14.07.74

"पिछाड़ी में तुम जाकर राजाई घर में जन्म लेते हो। कौन राजाओं के पास जायेंगे, वह खुद समझ सकते हैं। फिर भी दैवी संस्कार ले जाते हैं तो अच्छे घर में ही जन्म लेंगे। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मन्थन करना होता है। बाप ज्ञान का सागर है तो बच्चों को भी ज्ञान का सागर बनना है।" सा.बाबा 28.11.11 रिवा.

"कृष्ण ने भी किसी माँ-बाप के पास जन्म लिया होगा। कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके माँ-बाप का इतना गायन नहीं है। ... कृष्ण जब जन्म लेते हैं, थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वे बिल्कुल खत्म हो जाते हैं, वह वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका सम्वत् शुरू होता है। सतयुग का सम्वत् लक्ष्मी-नारायण से शुरू होता है।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

Q. अभी विश्व में कहीं राजाई नहीं है। अब प्रश्न उठता है कि राजाई श्रीकृष्ण के बाप से स्थापन होगी या श्रीकृष्ण से ?

Q. श्रीकृष्ण और उनके समकक्ष राजाओं और उस समय की अन्य जनसंख्या को जन्म देने वाले माँ-बाप पुरानी दुनिया के कहे जायेंगे या नई दुनिया के ? क्योंकि उनका जन्म योगबल का तो नहीं हो सकता है। योगबल का जन्म श्रीकृष्ण से ही आरम्भ होता है।

Q. जब श्रीकृष्ण गद्दी पर बैठेगा तो पुरानी दुनिया के मनुष्य होंगे या नहीं होगे ?

"कृष्ण का भी जन्म होगा। कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है, उनके बाप का इतना नाम नहीं गाया जाता है। कृष्ण जरूर किसी राजा का बच्चा होगा। ... परन्तु वह पतित राजा होने के

कारण उनका इतना नाम नहीं है। कृष्ण जब है तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वे बिल्कुल खलास हो जाते हैं, तब वह गद्दी पर बैठते हैं। वे जब अपना राज्य ले लेते हैं, तब ही उनका सम्वत् शुरू होता है। सम्वत् लक्ष्मी-नारायण से शुरू होता है।"

सा.बाबा 16.08.11 रिवा.

उपर्युक्त महावाक्यों को ध्यान में रखकर राजाई श्रीकृष्ण से स्थापन होना अधिक तर्कसंगत है या श्रीकृष्ण के बाप से राजाई का स्थापन होना अधिक तर्कसंगत है ?

श्रीकृष्ण के जन्म से गद्दी पर बैठने तक पुरानी दुनिया के जो एडवान्स पार्टी में हैं, उनमें अधिकांश योगबल से प्रथम जनसंख्या में बहुतों को जन्म देकर शरीर छोड़कर परमधाम जायेंगे और फिर आकर स्वयं जन्म लेकर पहली राजाई में आयेंगे।

Q. दैवी राजाई और अन्य धर्मों की राजाई में क्या अन्तर है ?

यद्यपि दोनों की राजाई की स्थापना के लिए पुरुषार्थ तो करना ही होता है और उसमें समय भी अवश्य लगता है परन्तु दैवी राजाई की स्थापना के लिए पुरुषार्थ पुराने कल्प के संगम समय में होता है और उसके बाद सभी आत्मायें परमधाम जाती हैं और देवी-देवता धर्म की राजाई परमधाम से आते ही स्थापन हो जाती है अर्थात् वे आत्मायें राजाई में ही आती हैं, जबकि अन्य धर्मों की राजाई नये कल्प में जब उनका धर्म स्थापन होता है, उसके बाद जब उनके धर्म की आत्माओं की वृद्धि होती है, तब स्थापन होती है।

"तुम जानते हो भारत श्रेष्ठाचारी, पुण्यात्माओं की दुनिया थी, जिनके चित्र भी हैं। भारत सतयुग आदि में बहुत साहूकार था। ... तुम्हारी शुरू से लेकर राजाई चलती है। सतयुग आदि में ही लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। और धर्म वालों की शुरू में राजाई नहीं होती है। उनका धर्म स्थापन होता है और उनकी आत्मायें आती जाती हैं। जब लाखों-करोड़ों के अन्दाज में हो जाते हैं, तब राजा-रानी बनते हैं। (वास्तव में हमारी राजाई भी संगम पर स्थापन होती है तो उसमें भी समय तो लगता है परन्तु फिर हम परमधाम जाते हैं और परमधाम से राजाई में आते हैं, अन्य धर्म वालों की राजाई बाद में स्थापन होती है।)"

सा.बाबा 26.04.12 रिवा.

"जिनको विश्व महाराजन बनना है, उनका पुरुषार्थ सिर्फ अपने प्रति नहीं होगा। अपने जीवन में आने वाले विघ्न व परीक्षाओं को पास करना, यह तो बहुत कॉमन है लेकिन जो विश्व-महाराज बनने वाले हैं, उनके पास अभी से ही स्टॉक भरपूर होगा, जो विश्व की आत्माओं के प्रति प्रयोग कर सकें। इसके लिए जो विशेष आत्मायें निमित्त बनेंगी, उनमें भी सभी शक्तियों का स्टॉक

अन्दर अनुभव हो, तब ही समझेंगे कि अब सम्पूर्ण स्टेज का व प्रत्यक्षता का समय नज़दीक है।"

अ.बापदादा 13.4.73

"अभी हम यात्रा कर रहे हैं, वापस अपने स्वीट होम जाने की। अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। ... धन्धा-धोरी, कर्म करते इस यात्रा पर रहना है। नींद भी कर्म है। इस यात्रा पर रहेंगे, बाप को याद करते रहेंगे तो तुम देवता बन जायेंगे।... भारत में ये लक्ष्मी-नारायण होकर गये हैं। भारत में देवी-देवताओं के मन्दिर बहुत बनाते हैं। ऐसे और कोई राजाओं आदि के मन्दिर नहीं बनाते हैं, जिनकी मनुष्य महिमा गायें, पूजा करें।"

सा.बाबा 27.11.12 रिवा.

"अभी हम यात्रा कर रहे हैं, वापस अपने स्वीट होम जाने की। अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। ... धन्धा-धोरी, कर्म करते इस यात्रा पर रहना है। नींद भी कर्म है। इस यात्रा पर रहेंगे, बाप को याद करते रहेंगे तो तुम देवता बन जायेंगे। ... भारत में ये लक्ष्मी-नारायण होकर गये हैं। भारत में देवी-देवताओं के मन्दिर बहुत बनाते हैं। ऐसे और कोई राजाओं आदि के मन्दिर नहीं बनाते हैं, जिनकी मनुष्य महिमा गायें, पूजा करें।"

सा.बाबा 27.11.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी

ज्ञान सागर शिवबाबा ने अभी हमको तीनों लोकों और तीनों कालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताई है, जिससे हम एडवान्स पुरुषार्थ करके एडवान्स स्टेज बनाकर सतयुग में एडवान्स जन्म लेते हैं। इस हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानने वाले ही यह एडवान्स पुरुषार्थ कर सकते हैं, जिससे उनको एडवान्स जन्म मिले। अभी एडवान्स स्टेज वालों को ही इस हिस्ट्री-जॉग्राफी का पता रहता है। एडवान्स पार्टी वालों को भी इसका यथार्थ ज्ञान नहीं रहता है, भले वे नये विश्व के नव-निर्माण के लिए पुरुषार्थ करते हैं परन्तु वह पुरुषार्थ उनके पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर होता है। इस हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने का उनका पार्ट पूरा हो जाता है। एडवान्स जन्म लेने वालों को इसका कोई ज्ञान ही नहीं होगा और वे इसकी आवश्यकता भी महसूस नहीं करेंगे। अभी जो इस हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानकर एडवान्स स्टेज में जितना पुरुषार्थ करते हैं, उस अनुसार ही वे सतयुग-त्रेता में सतोप्रधान, सतो सामान्य प्रकृति का सुख भोगते हैं। बाबा ने यह भी बताया है कि इस विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है, इसलिए अभी सतयुग की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होने का समय है।

"जब सब आत्मायें यहाँ आ जाती हैं, तब बाप आते हैं। भल थोड़ी सी आत्मायें ऊपर होंगी भी,

वे भी आ जायेंगी। ... वह बाप बेहद का शिक्षक है। हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त अर्थात् तीनों कालों की समझानी देते हैं। तीनों कालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। सतयुग में कौन राज्य करते थे, कितने इलाके पर राज्य करते थे, वह सब बताते हैं।"

सा.बाबा 11.09.12 रिवा.

"बाप हमको सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। सतयुग में देवी-देवतायें सारे विश्व पर राज्य करते थे, वहाँ और कोई धर्म नहीं होता है। बाकी और राजायें क्यों नहीं होते! हर एक को अपना वर्सा मिलेगा। ... बाप हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज समझाकर त्रिकालदर्शी बनाते हैं। दुनिया में त्रिकालदर्शी और कोई नहीं होता है।"

सा.बाबा 11.09.12 रिवा.

Q. क्या सतयुग में पृथ्वी चौरस (Flat) होगी या वहाँ सदा ही चाँदनी रात होगी ?

यह विचारणीय है परन्तु बाबा ने कहा है - वहाँ भी ऐसे ही दिन-रात होंगे परन्तु वहाँ सब सतोप्रधान होगा, जिससे सब सुखदायी होगा।

"भारत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी थी, जो पास्ट हुई। उसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको पता नहीं है। अभी तुमको पता पड़ा है। सतयुग में थोड़ेही जानते हैं कि सतयुग के बाद त्रेता होता है। दो कला कम होने से वह सुख कम हो जाता है। यह ज्ञान सतयुग में हो तो घुटका खाते रहें। दिल खायेगी - क्या हम फिर उतरेंगे। राजाई ही अच्छी नहीं लगे। यहाँ तुमको राजाई मिलने की खुशी है।"

सा.बाबा 3.01.12

"अन्त समय जब विनाश होगा तो सागर में जोर से तूफान आयेगा, जोर से लहरें उठेंगी, सब खण्ड खलास हो जायेंगे, देरी नहीं लगेगी। नेचुरल केलेमिटीज़ को गॉडली एक्ट कह देते हैं। ... परन्तु बाप कहते - मैं कोई ऐसा डॉयरेक्शन नहीं देता हूँ। यह सब ड्रामा में नूँध हैं। अन्त में तूफान, नेचुरल केलेमिटीज़ आदि सब अपना काम करेंगी। कल्प-कल्प ये नेचुरल केलेमिटीज़ आनी हैं और सब खण्ड खत्म होंगे। बाकी एक भारत ही रह जायेगा। यह नेचुरल खेल बना हुआ है।"

सा.बाबा 16.01.12 रिवा.

"देहली बहुत पुरानी गद्दी है। आदि सनातन देवी-देवताओं की भी यहाँ ही राजधानी बनती आई है और रावण राज्य में भी यह राजधानी रही है। ... तुम जानते हो अभी हम योगबल से अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। तुम यहाँ राजयोग बल सीखने आये हो, जो तुम 5000 वर्ष पहले भी सीखे थे। यह राज़ तुम बच्चे ही जानते हो।"

सा.बाबा 22.02.12 रिवा.

"परमधाम में आत्मायें रहती हैं, वहाँ गिरने की बात नहीं। जैसे साइन्स वाले स्पेस में जाते हैं तो

बताते हैं कि वहाँ दोनों तरफ की इतनी आकर्षण रहती है कि गिरने की बात नहीं। जैसे आकाश में सूर्य, चान्द, तारे ठहरे हुए हैं, ऐसे ही ब्रह्म महतत्व में आत्मायें भी ठहरी हुई हैं। यह सारा ड्रामा बना हुआ है। हम 84 जन्मों के चक्र में आते हैं, हर आत्मा आकर अपना पार्ट बजाती है।" सा.बाबा 2.03.12 रिवा.

"अभी तुम जानते हो विनाश होना ही है। नेचुरल केलेमिटीज़ आदि भी आयेंगी। मनुष्य इनको गॉडली केलेमिटीज़ कह देते हैं। परन्तु गॉड थोड़ेही केलेमिटीज़ लाते हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। विनाश न हो तो नई दुनिया कैसे आयेगी। इस महाभारत लड़ाई से ही स्वर्ग के गेट्स खुलेंगे। ... यह ड्रामा का चक्र है, इसको अच्छी रीति समझना है।"

सा.बाबा 13.04.12 रिवा.

"यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, जिसको कोई नहीं जानता है। बाप ही आकर सुनाते हैं कि नई दुनिया फिर पुरानी कैसे बनती है, फिर पुरानी को नया कौन बनाते हैं। यह ड्रामा कहाँ से शुरू होता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन और स्थूलवतन क्या है, सृष्टि का यह चक्र कैसे फिरता है। ... यह व्यक्त ब्रह्मा ही जब पवित्र बन जाते हैं तो अव्यक्त ब्रहमा बन जाते हैं, जिनका सम्पूर्ण अव्यक्त रूप में साक्षात्कार भी होता है।"

सा.बाबा 16.04.12 रिवा.

"अभी विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट हो रही है। बाप स्वर्ग स्थापन करने वाला है, हम अब बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। स्वर्ग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। ... यह है युद्ध स्थल। तुम इस समय माया पर जीत पाने के लिए युद्ध के मैदान पर खड़े हो। जब तक अन्त न आये, तब तक यह माया से लड़ाई चलती रहेगी।"

सा.बाबा 25.04.12 रिवा.

"इस ड्रामा को अच्छी रीति समझना है। यह एक ही सृष्टि का चक्र है, जो फिरता रहता है। बाप आकर इसका राज़ बताते हैं। ... कहते भी हैं कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है परन्तु कैसे रिपीट होगी, यह कोई नहीं जानते हैं। अभी स्वर्ग की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी, उसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो।" सा.बाबा 1.05.12 रिवा.

"यह है नया ज्ञान, जो ज्ञान सागर बाप तुमको देते हैं। वेद शास्त्रों में यह ज्ञान नहीं है। तुम अभी यह जो ज्ञान सुनते हो, वह फिर प्राय: लोप हो जाता है। ... अभी तुम कितने समझदार बन रहे हो। तुम सारे सृष्टि-चक्र को जानते हो। सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना समझ की बात है ना। अगर नहीं जानते तो बेसमझ कहेंगे।"

सा.बाबा 5.05.12 रिवा.

"अभी बाप तुमको सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। अभी तुम जानते हो - हमने 84 जन्म कैसे लिए। तुम ये सब बातें समझकर औरों को भी समझाने लायक बने हो। बाप तुमको समझदार बनाते हैं तो फिर औरों को भी यह समझानी देनी चाहिए। ... सभी धर्म वाले उस एक बाप को ही याद करते हैं। सभी बाप से वर्सा पाने के सभी हक़दार हैं। बेहद के बाप का वर्सा है मुक्ति-जीवनमुक्ति।"

सा.बाबा 5.05.12 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम बच्चे ही बाप द्वारा जानते हो, और कोई जान न सके। ... पहले-पहले श्रीकृष्ण का जन्म होता है, फिर दूसरे जन्म में वही कृष्ण हो न सके। धीरे-धीरे कलायें कमती होती जाती हैं। 16 कला से 14 कला बनना ही होता है। जन्म बाई जन्म थोड़ा-थोड़ा फर्क पड़ता जायेगा। यह बहुत गुह्य राज़ है, जो बाप ही बताते हैं।"

सा.बाबा 7.05.12 रिवा.

"अभी इस विनाश ज्वाला में सब खत्म होंगे। तुम इस चक्र को जानते हो। तुम बच्चों को स्कूलों में जाकर यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाना है। ... यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इसमें तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान आ जाता है। आदि में निराकारी दुनिया में बहुत आत्मायें रहती हैं, अन्त में फिर सभी आत्मायें नीचे आ जाती हैं। ... अब बाप बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, 84 के चक्र में वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आ जाती है।"

सा.बाबा 8.05.12 रिवा.

"समय आयेगा, जो पानी की एक बूँद भी कहीं दिखाई नहीं देगी, अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, ... क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है? उस समय योग लगेगा या प्यास लगेगी? ... जैसे कि गायन है कि चारो ओर आग लगी हुई थी लेकिन भट्ठी में पड़े हुए पूँगरे ऐसे ही सेफ रहे। ... अगर योगयुक्त हैं तो भल नज़दीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वे सेफ रह जायेंगे, अगर अपनी गफलत नहीं है तो।"

अ.बापदादा 13.09.74

"अभी सारी बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम्हारी बुद्धि में है। तुम अपनी तक़दीर को तो देखो कि हम ऐसी कॉलेज में बैठे हैं, जहाँ से हम भविष्य प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हैं। ... वहाँ 5 तत्व भी सतोप्रधान हो जाते हैं, जो तुम्हारे लिए अच्छी चीज़ पैदा करेंगे।"

सा.बाबा 23.06.12 रिवा.

"तुम्हारी बुद्धि में यह सृष्टि-चक्र फिरता रहना चाहिए। बुद्धि में रहना चाहिए - हमने सतयुग, त्रेता, ... 84 जन्मों का चक्र पूरा किया। अब कलियुग का अन्त आ गया है, अब फिर

सतयुग से नया चक्र फिरेगा। सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। अभी तुम जानते हो सतयुग में सारे विश्व पर देवी-देवतायें राज्य करते थे।"

सा.बाबा 28.08.12 रिवा.

"तुम जानते हो यह ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। सतयुग नीचे चला जाता है, कलियुग ऊपर आ जाता है, फिर सतयुग को ऊपर आना ही है। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है, इसलिए तुमको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। यह स्वदर्शन चक्र फिराते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 29.08.12 रिवा.

"इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू रिपीट होती है। कितना अच्छा यह चक्र है। अभी कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि है। इस समय सभी धर्म यहाँ हैं। अभी हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी, यानी कलियुग के बाद सतयुग जरूर होना है। जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन जरूर आता है। ऐसा हो नहीं सकता कि रात के बाद दिन न आये या दिन के बाद रात न आये।"

सा.बाबा 5.09.12 रिवा.

"बाप सब बातें समझाते हैं कि सतयुग में कितने महाराजा-महारानी होंगे, उनकी कितनी गद्दियाँ चलेंगी, कैसे वृद्धि होगी। दुनिया में और किसकी बुद्धि इन बातों में नहीं चलती है। एक्टर्स को तो ड्रामा के क्रियेटर, डॉयरेक्टर, समय आदि का सब मालूम होना चाहिए। कहते भी हैं क्राइस्ट से 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, जहाँ गॉड-गॉडेज़ का राज्य था परन्तु यथार्थ रीति समझते नहीं हैं।"

सा.बाबा 23.11.12 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अष्ट रत्न

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और अष्ट रतन एवं अष्ट समानान्तर राजाईयाँ

वर्तमान समय देखें तो लगभग सभी आदि रतन तो यह ब्राह्मण देह त्याग कर एडवान्स पार्टी में चले गये हैं। अब विचारणीय है कि अष्ट रतन कौन होंगे अर्थात् सतयुग की अष्ट समानान्तर राजाइयाँ चलेंगी, उनमें वे राजा-रानी बनेंगे या दिल्ली की मुख्य चक्रवर्ती राजाई होगी, उसमें क्रमानुसार गद्दी पर बैठेंगे।

दूसरी बात जो सतयुग की पहली चक्रवर्ती राजाई के समय समानान्तर राजाइयों में राजा-महाराजा बनेंगे, वे दो-तीन राजाइयों तक तो चक्रवर्ती राजाई में राजा-रानी नहीं बन सकेंगे। अब विचारणीय यह है कि महान कौन होंगे अर्थात् जो प्रथम चक्रवर्ती राजाई के

समानान्तर राजाइयों में होंगे या बाद में चक्रवर्ती राजाई में आने वाले होंगे। उसके बाद क्रमानुसार जो राजाइयाँ चलेंगी, उनमें कौन-कौन राजा-महाराजा होंगे, वह अलग बात है।

"कल्प पहले वाली हर एक की तक़दीर बन रही है, फिर भी बाप पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बाप यह नहीं बता सकते कि आठ रत्न कौन बनेंगे। बताने का पार्ट ही नहीं है। आगे चलकर तुम अपने पार्ट को भी जान जायेंगे। जो जैसा पुरुषार्थ करेंगे, वे वैसा अपना भाग्य बनायेंगे। बाप तो रास्ता बताने वाला है, चलना बच्चों का काम है।"

सा.बाबा 28.03.68

Q. प्रथम चक्रवर्ती राजाई और समानान्तर राजाइयों में कौन-कौन राजा-महाराजायें होंगे या हो सकते हैं?

मधुवन में बाबा-मम्मा
दिल्ली में दीदी मनमोहिनी
पंजाब में चन्द्रमणी दादी
बम्बई में पुष्प शान्ता दादी, बृजेन्द्रा दादी
पूना में जानकी दादी
उत्तर प्रदेश में आत्म इन्द्रा दादी, शान्तामणी दादी
बिहार में प्रकाशमणी दादी
बंगाल-उड़ीसा में निर्मलशान्ता दादी
कर्नाटक में हृदयपुष्पा दादी

विचारणीय है कि प्रथम लक्ष्मी-नारायण के समानान्तर जो राजाइयाँ चलेंगी, उनमें ऊपर वालों से कौन-कौन राजा-महाराजा होंगे या हो सकते हैं।

अष्ट रत्नों में आने का आधार एडवान्स स्टेज है। एडवान्स स्टेज वाले ही एडवान्स पार्टी में जाकर नई दुनिया की स्थापना में सहयोगी बनते हैं। फिर वे ही आकर एडवान्स जन्म लेकर सतयुग के सतोप्रधान सुखों का उपभोग करते हैं। तो प्रश्न उठता है कि अष्ट रतनों में आने वाली आत्मायें एडवान्स जन्म में आयेंगी और वे चक्रवर्ती राजगद्दी पर किस क्रम में बैठेंगी।

अष्ठ रत्न - बाबा, भाऊ विश्वकिशोर, दादा आनन्दकिशोर, दादा विश्वरतन, ... मम्मा, दीदी मनमोहिनी, दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी पुष्पशान्ता, दादी जानकी...

इनमें से किसको कम किया जा सकता है और किसको बढ़ाया जा सकता है।

"अभी यह राजधानी स्थापन हो रही है। तुम कृष्णपुरी में जाने का पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ कर सूर्यवंशी घराने में तो जाओ। सूर्यवंशी में भी 8 घराने हैं। इतना पुरुषार्थ करो, जो राजाई में

आकर राजकुमार के साथ झूलो। ... बाप का बच्चा बन, पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर अगर विकार में गिरते हैं तो नाम बदनाम कर देते हैं। फिर धक्का बहुत जोर से आ जाता है।"

सा.बाबा 5.08.11 रिवा.

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हमारा कर्तव्य

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और हमारी स्थिति

"आत्मा सम्पूर्णता को पा रही है, यह मुख्य किस बात से सबको अनुभव होता है? मुख्य बात यह है कि ऐसी आत्मा सदा स्वयं से सर्व सब्जेक्ट्स में सन्तुष्ट रहने का अनुभव करेगी और साथ-साथ अन्य आत्मायें भी उससे सदा सन्तुष्ट रहेंगी। तो सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेस्पान्स मिले, इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं।"

अ.बापदादा 7.02.75

"अभी साकार दुनिया में पानी का तूफान आया हुआ है, उसका नज़ारा सुनते रहते हो। सुनते हुए मज़ा आता है या रहम आता है या भय भी आता है? ... भय तो होना नहीं चाहिए, सदा अपने को कम्बाइण्ड शिव-शक्ति रूप की स्मृति में रहना। ... यह कम्बाइण्ड स्थिति का प्रभाव उस समय के प्रकृति और व्यक्ति के ऊपर पड़ेगा अर्थात् उसको किसी भी प्रकार के वार करने में संकोच होगा।"

अ.बापदादा 13.9.75

"उस समय परिवर्तन करने की शक्ति को यूज़ करो - मैं अकेली नहीं, शिव-शक्ति कम्बाइण्ड हूँ। जो स्वयं की पॉवरफुल स्मृति और स्थिति से व्यक्ति को और प्रकृति को परिवर्तन कर ले। अभी तो ये दूसरी-तीसरी क्लास के पेपर्स हैं, फाइनल पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुणा भयानक रूप की होगी।... शक्ति स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट, शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है।"

अ.बापदादा 13.9.75

"एक सेकेण्ड में परिवर्तन करो क्योंकि खेल ही एक सेकण्ड के आधार पर है। ऐसे समय पर एक तरफ नथिंग न्यू का पाठ भी याद रहना चाहिए।... अर्थात् एक साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो खेल देखने में मज़ा भी आयेगा और साथ-साथ विश्व-कल्याणकारी की स्थिति, जिसमें तरस भी होगा। साक्षीपन और विश्व-कल्याणकारी दोनों का बैलेन्स चाहिए।"

अ.बापदादा 13.09.75

Q. ज्ञान सागर बाबा ने हमको एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म तीनों का राज़ समझाया है, जिसको समझने के बाद हमारी स्थिति कैसी होनी चाहिए और हमारा कर्तव्य क्या है?

ज्ञान सागर बाबा ने हमको एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म तीनों का ज्ञान दिया है और उनका राज़ समझाया है, उसको जानकर हमारा परम कर्तव्य है कि हम यथार्थ रीति ज्ञान को धारण कर अपनी एडवान्स स्टेज बनायें, जो ही एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म का आधार है और उस पर स्थित होकर इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इसके परम सुख को अनुभव करें और औरों को करायें। हमारी एडवान्स स्टेज ही अन्य आत्माओं की सेवा का आधार बनेगी।

ये विश्व-नाटक अनन्त रहस्यों से परिपूर्ण है। विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को जानने वाला ही निर्संकल्प, निर्भय, निश्चिन्त स्थिति में स्थित होकर परमशान्ति और परमशक्ति का अनुभव करेगा, वही निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर सकेगा और वही इस विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव कर सकेगा, जिसको मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति कहा जाता है।

एडवान्स स्टेज वाले ही एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म में जायेंगे और उसमें अभी की स्टेज अनुसार ऊंच पद पायेंगे। जो इन तीनों के राज़ को समझ लेता है, उसको एडवान्स पार्टी में जाने का कोई भय नहीं होता है। एडवान्स स्टेज वालों का एडवान्स जन्म निश्चित है। इस समय हम जितना अपनी सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति अर्थात् एडवान्स स्टेज में स्थित होकर जड़-जंगम-चेतन प्रकृति को पावन बनने में सहयोग करेंगे, उतना ही ये जड़-जंगम-चेतन प्रकृति हमको एडवान्स पार्टी के जीवन में और एडवान्स जन्म में सहयोग करेगी अर्थात् हमारे लिए सुख का आधार बनेंगी।

बाबा ने हमको एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म तीनों के विषय में सारा ज्ञान दिया है। यह ज्ञान एडवान्स स्टेज वालों को ही होता है। उस ज्ञान के आधार पर जो आत्मायें अपनी एडवान्स स्टेज अर्थात् अपने सम्पूर्ण-सम्पन्न स्वरूप में स्थित होती हैं, वे परम शान्ति, परम शक्ति का अनुभव करती हैं क्योंकि आत्मिक स्वरूप परम शक्ति सम्पन्न परम शान्त है। वे ही परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में परमानन्द का अनुभव करती हैं। विश्व-नाटक का ज्ञान समझकर वे साक्षी होकर इसे देखते और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इस विश्व-नाटक का परम सुख का अनुभव करते हैं। एडवान्स स्टेज वालों का एडवान्स जन्म तो सुख सम्पन्न होता ही है, परन्तु यदि वे एडवान्स पार्टी में जाते हैं तो भी वे बहुत खुशी मौज

में रहते हुए एडवान्स पार्टी के कर्तव्य को सम्पन्न करते हैं। यह एडवान्स स्टेज में स्थित होने का पुरुषार्थ ही हमारे हाथों में है, जो एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म की सफलता का आधार है।

"बापदादा ने पहले भी कहा है कि अभी धारणा में यह मुख्य धारणा का अटेन्शन दो कि कोई भी बात हो गई तो चेक करो और सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगा दो। ... नहीं लगता है, क्वेश्चन मार्क हो जाता है। आगे चलकर ऐसे सरकमस्टाँस आयेंगे, जो आपको सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा। ... सेकेण्ड में फुलस्टॉप की आवश्यकता होगी। इसका बहुत समय पहले से अभ्यास चाहिए, तब ही उस समय विजयी बन सकेंगे।"

अ.बापदादा 24.10.10

"हलचल के समय सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभी से अभ्यास करो तो यह बहुत समय का अभ्यास आगे चलकर आपका बहुत सहयोगी बनेगा।... समय की रफ्तार प्रमाण अभी पुरुषार्थ में सदा तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। बापदादा इशारा दे रहा है कि समय तीव्रगति से समाप्ति के नज़दीक आ रहा है। उस हिसाब से अपने स्वभाव-संस्कार के परिवर्तन में विशेष तीव्रगति चाहिए।"

अ.बापदादा 24.10.10

"किसी भी आत्मा को अपने फीचर्स से उस आत्मा का वा अपना फ्युचर दिखा सकते हो ? लेक्चर से फीचर्स दिखाना तो आम बात है लेकिन फीचर्स से फ्युचर दिखाना, यही अलौकिक आत्माओं की अलौकिकता है। ... वैसे ही जो बिन्दी स्वरूप में स्थित रहते हैं अर्थात् अपने को इन धारणाओं के श्रृंगार से सजाते हैं, (वे ही यह सेवा कर सकते हैं) ... और सबका ध्यान उनकी आत्मा बिन्दी तरफ ही जायेगा।"

अ.बापदादा 9.05.72

"ऐसे कोई भी आत्मा आपके सम्मुख आती है तो उसका ध्यान आपके अविनाशी तिलक (बिन्दी स्वरूप) की तरफ आकर्षित हो। वह तब होगा, जब स्वयं सदा अविनाशी तिलकधारी होकर रहेंगे। अगर स्वयं ही अविनाशी तिलकधारी नहीं तो दूसरों को भी आपका अविनाशी तिलक दिखाई नहीं दे सकता।"

अ.बापदादा 9.05.72

अव्यक्त बापदादा ने अपने पाँच स्वरूपों अर्थात् निराकारी, देवता, पूज्य, ब्राह्मण और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास के लिए कहा था। जो देवी-देवता घराने की आदि आत्मायें हैं, जो अभी ब्राह्मण बनीं हैं, वे अपने पाँचों रूपों में महान है अर्थात् सारे कल्प में उनकी महानता रहती है। परन्तु जो भी आत्मा इस धरा पर पहले पार्ट बजाने आती है, उसमें पवित्रता की शक्ति होने के कारण उस समय उसमें महानता होती है और उनकी महिमा भी अवश्य होती है और होगी भी, जिसको हम द्वापर से आज तक आने वाली अनेकानेक आत्माओं के जीवन से

देखते आये हैं और देख रहे हैं। द्वापर से आने वाली आत्माओं की भी पवित्रता के आधार पर महिमा होती है परन्तु उनकी हमारे अर्थात् देवताओं के समान मन्दिर बनाकर पूजा नहीं होती है, उसका राज़ भी परमात्मा ने समय प्रति समय बताया है। इसलिए जब हमारी बुद्धि में अपने पार्ट की महानता का और इस विश्व-नाटक की यथार्थता का राज़ होगा, तब जो नशा और खुशी रहेगी, वह विशेष होगी, जो ही संगमयुग और इस ब्राह्मण जीवन की विशेषता है और संगमयुगी एडवान्स कर्तव्य करने का आधार है। अव्यक्त बापदादा बार-बार हमको कहते हैं कि तुम्हारे चेहरे और चलन से वह नशा और खुशी झलकनी चाहिए।

बाबा बोले - हर एक बच्चा अभी यही चेक करे कि एक सेकेण्ड में कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर हमारे में है या नहीं ? एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाओ। ... अब आवश्यकता किस बात की है ? अचानक बातें आयेंगी, जो आपको एक सेकेण्ड में अशरीरी फरिश्ता वा ब्राह्मण सो देवता स्वरूप धारण करना पड़ेगा। एक सेकेण्ड में जो स्थिति चाहो, वह बनानी पड़ेगी।

अ.बापदादा 27.07.12 गुल्जार दादी

परिवर्तन शक्ति अर्थात् किसी को भी बीती बातों का वायब्रेशन नहीं देना है, सिर्फ प्यार की बातों का अनुभव कराना है। अगर कोई कमजोर संकल्प आये तो अपनी शुभ-वृत्ति, शुभ-भावना, शुभ-कामना द्वारा परिवर्तन कर देना। ... मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर बैठकर दिल से कहना मेरा बाबा तो सभी शक्तियों का आना शुरू हो जायेगा। शक्तियाँ तो बाबा ने आप सबको वर्से में दी हैं।

अ.बापदादा 18.08.12 गुल्जार दादी

"समीपता की निशानी है समानता। किस बात में ? सेकेण्ड में आवाज़ में आना और आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना, मनन करना और मगन रहना, रूह-रुहान में आना और रुहानियत में स्थित हो जाना, सोचना और करना, कर्मेन्द्रियों का आधार लेना और उनसे परे होना, प्रकृति द्वारा प्राप्त साधनों को स्वयं प्रति कार्य में लगाना और समय प्रमाण साधनों से निराधार होना, ... इन सभी बातों में समानता को कहा जाता कर्मातीत अवस्था की समीपता।"

अ.बापदादा 1.09.75

"फाइनल पेपर में चारो ओर की हलचल होगी। वायुमण्डल की, व्यक्तियों की, सर्व सम्बन्धों की और आवश्यक साधनों के अप्राप्ति की हलचल। ऐसे चारो तरफ की हलचल के बीच अचल रहना - यही फाइनल पेपर होना है। ... परिस्थिति के आधार पर स्थिति व किसी भी प्रकार के साधनों के आधार पर सफलता होगी तो ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर में फेल कर

देगा। इसलिए बाप समान बनने का पुरुषार्थ तीव्रगति से करो।"

अ.बापदादा 1.09.75

"समय करा लेगा या समय पर कर लेंगे - ऐसा अलबेलेपन का संकल्प समर्थ बनने नहीं देगा। ... खबरदार होशियार! एवर-रेडी अर्थात् अभी-अभी किसी भी परिस्थिति व वातावरण में ऑर्डर मिले व श्रीमत मिले कि एक सेकेण्ड में सर्व कर्मेन्द्रियों की अधीनता से न्यारे हो कर्मेन्द्रियजीत बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ तो श्रीमत मिलना और स्थिति होना साथ-साथ हो जाये।"

अ.बापदादा 1.09.75

"जिस "सर्वशक्ति सम्पन्न" स्थिति के लिए गायन है - अप्राप्त नहीं कोई शक्ति ब्राह्मणों के खज़ाने में। जैसे देवताओं के लिए गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु देवताओं के खज़ाने में। ... जब बाप का नाम ही सर्वशक्तिमान ऑलमाइटी अथॉरिटी है अर्थात् सर्वशक्तियों के खज़ानों के मालिक के बालक हो। तो ऐसे बालक जो बाप की सर्वशक्तियों के मालिक हैं, उनके पास कोई अप्राप्ति हो सकती है?"

अ.बापदादा 23.6.73

"मन को बिजी रखने का अपना आप टाइमटेबुल बनाओ। ... आप जानते हो ब्रह्मा बाप भी आपका इन्तजार कर रहे हैं और आपकी एडवान्स पार्टी भी आपका इन्तजार कर रही है कि कब आप समय को समीप लाते हैं क्योंकि समय को समीप लाने के जिम्मेवार आप हो। अपने को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाना अर्थात् समय को समीप लाना।"

अ.बापदादा 30.11.11

एडवान्स पार्टी के तीन मुख्य दादी जी, दीदी जी और चन्द्रमणी दादी बाबा के सामने बैठे थे। बाबा ने पूछा - आपके मन में विशेष क्या चलता है। दादी से पूछा कि वहाँ तो तुम बच्चे के रूप में हो परन्तु जब यहाँ वतन में आती हो तो तुम्हारे मन में क्या संकल्प चलता है। दादी ने कहा - बाबा हमने इतना समय नहीं समझा था कि हम इतना समय एडवान्स पार्टी में रहेंगे। दीदी जी और चन्द्रमणी दादी ने कहा - बाबा हमको अनुभव है कि हम साकार में प्लैन तो बहुत अच्छे बनाते हैं परन्तु प्लैन बुद्धि रहे। ... हम भी समझते जल्दी सम्पूर्ण बनें, कार्य को सम्पन्न करें, परन्तु कोई न कोई छोटी बात विघ्न बन जाती है।

अ.बापदादा का सन्देश 25.08.11

एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विश्व-कल्याण की सेवा

परमात्मा का इस धरा पर अवतरण विश्व-कल्याणार्थ ही होता है। जब वह इस धरा पर आते हैं तो जो उनके बच्चे बनते हैं, उनका भी जीवन भी विश्व-कल्याणार्थ ही होता है।

विश्व-कल्याण का कर्तव्य दो प्रकार है। एक तो आत्माओं को ज्ञान देकर, उनको दुख-दर्द से मुक्त कर मुक्ति-जीवनमुक्ति देना अर्थात् रास्ता बताना और दूसरा जो जीवनमुक्ति में पहले-पहले आने वाले हैं, उनके लिए साधन-सामग्री आदि का निर्माण करना। तो जो आत्मायें एडवान्स पार्टी में गई हैं या जाने वाली हैं तथा जो एडवान्स स्टेज में हैं, उन सबको परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण का कर्तव्य करना ही है, भले वे कहाँ भी हैं। ब्रह्मा बाबा फरिश्ता स्वरूप में हैं, फिर भी अहर्निश विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर हैं। भले सूक्ष्म वतन में रात-दिन का प्रश्न नहीं है। एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें भी जो एडवान्स स्टेज या एडवान्स पार्टी के रूप में विश्व-कल्याण की सेवा करती हैं, उसके आधार पर ही उनका एडवान्स जन्म होता है। परमपिता परमात्मा सर्वात्माओं का बाप, इसलिए सर्वात्माओं को पावन बनाना और सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देना उनका कर्तव्य है, वह पार्ट वे भारत में आकर बजाते हैं और उसके लिए ब्रह्मा और ब्राह्मणों की रचना रचते हैं। ब्राह्मण आत्मायें ही एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज के द्वारा परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती हैं और वे सारे विश्व की आत्माओं की सेवा करती हैं अर्थात् विश्व-कल्याण का कर्तव्य करती हैं।

"भारत को धर्म-भूमि कहा जाता है। यहाँ जितने धर्मात्मा रहते हैं, उतने और कहाँ भी नहीं रहते हैं। तुम कितना दान-पुण्य करते हो। बाप को जानकर, अपना तन-मन-धन सब इस ईश्वरीय सेवा में लगा देते हो। बाप ही आकर सबको दुखों से लिबरेट करते हैं। ... और कोई धर्म-स्थापक किसको दुख से नहीं छुड़ाते हैं। वे सब अपने धर्म की स्थापना करते हैं।"

सा.बाबा 16.10.10 रिवा.

"अभी वाचा सेवा के साथ मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं को सुख की किरण, शान्ति की किरण, खुशी की किरण, प्रेम की किरण पहुँचाने की सेवा भी करो। ... आगे चलकर इसकी बहुत आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए उस पर ध्यान देते रहो। ... जो बच्चे ये मन्सा सेवा कर रहे हैं, उनको मुबारक है और जो नहीं कर रहे हैं, उनको करना चाहिए। आगे चलकर ऐसे सरकमस्टाँस बनेंगे जो सुनने वाले और सुनाने वालों का मिलना मुश्किल हो जायेगा।"

अ.बापदादा 24.10.10

"पहले करना है, फिर कहना है। सिर्फ कहने का फल अच्छा नहीं होता है। तो पहले करो, फिर कहो। फिर देखना क्वालिटी वाली सर्विस कैसे होती है। पहले अपनी क्वालिटी को देखो। वृत्ति और वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाओ। आप ब्राह्मणों का जन्म ही है बनने और बनाने के लिए। सिर्फ बनने के लिए नहीं लेकिन बनने और बनाने के लिए, पढ़ने और पढ़ाने के लिए है। विश्व कल्याणकारी हो ना!"

अ.बापदादा 10.5.72

यही कल्याणकारी, विश्व के आधारमूर्त हैं, यही विश्व-परिवर्तक हैं, इस रूप से नहीं पहचानते हैं। ... इनको सिखाने वाला भगवान है, अभी भगवान तक नहीं पहुँचे हैं। ... आप एडवान्स स्टेज वाले जो हैं, उनको अभी यह कार्य करना है। (क्यों ? क्योंकि यथार्थ ज्ञान को प्रत्यक्ष एडवान्स स्टेज वाले ही कर सकते हैं, उनके पास ही ज्ञान स्पष्ट है। एडवान्स पार्टी वालों के पास तो ज्ञान स्पष्ट न है और न ही होगा। उनमें ज्ञान मर्ज है, वे नये विश्व के निर्माणार्थ कार्य करेंगे।)

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

इनको (एडवान्स पार्टी में गई आत्माओं को) यह पहचान नहीं होती, लेकिन आगे चलकर धीरे-धीरे इनको फील होगा कि हम कोई बहुत नज़दीक के हैं। बाबा ने कहा - यह एडवान्स पार्टी है और आप एडवान्स स्टेज वाले हो। जितना आप अपने को प्रत्यक्ष करेंगे, उतना प्रत्यक्षता होगी। अभी सिर्फ कहते हैं कि इनका कार्य अच्छा है लेकिन यही विश्व-कल्याणकारी हैं, विश्व के आधारमूर्त हैं, यही विश्व-परिवर्तक हैं, इस रूप से नहीं पहचानते हैं।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

एडवान्स पार्टी के साथ रूह-रुहान में बाबा ने कहा अभी आप लोगों का विशेष पार्ट है, क्योंकि मैजारिटी जो हमारे बड़े पूर्वज गये हैं, वे 4 बजे साधारण रूप में वतन में पहुँचते हैं और उसी रूप में बाबा उन्हों से मन्सा द्वारा चारो ओर सेवा कराते हैं, अनुभव कराते हैं। यहाँ कइयों का प्रश्न उठता है कि वे क्या कर रहे हैं ? बाबा ने कहा - आप लोग तो पुरुषार्थी लाइफ में हैं लेकिन ये लोग मन्सा सेवा के बहुत-बहुत अनुभवी हैं।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

बाबा ने कहा - आप लोग तो पुरुषार्थी लाइफ में हैं लेकिन ये लोग मन्सा सेवा के बहुत-बहुत अनुभवी हैं क्योंकि ये आपके सेवाधारी ग्रुप के साथी हैं, तो ये भी सेवा के बिना नहीं रह सकते हैं। बाबा इस एडवान्स ग्रुप से मन्सा सेवा द्वारा प्रैक्टिकल कार्य करा रहे हैं। ... इनका यह कोई कर्म-बन्धन का जन्म नहीं हुआ है। सेवा के बन्धन से इन्होंका जन्म है। ... अभी की मन्सा सेवा और भविष्य की सेवा के लिए इन्होंका जन्म हुआ है।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

दीदी, विश्वकिशोर, जगदीश भाई आदि थे, उनसे हमने कहा - आपको संगमयुग याद आता है ? तो कहा - हाँ, हम तो सारा समय संगमयुग में ही रहते हैं क्योंकि हमारी नस-नस में सेवा का संस्कार साकार में भी था और अभी भी है।

अ.बापदादा सन्देश 25.08.10 गुल्जार दादी

"संकल्प में सोचते हो कि हम सर्व आत्माओं से ऊंचे ब्राह्मण हैं लेकिन बोल और कर्म में अन्तर

है। सोचते हो कि हम विश्व-कल्याणकारी हैं लेकिन बोल और कर्म में अन्तर है। तो तीनों समान हो जायें, इसको कहा जाता तीव्र-पुरुषार्थी अर्थात् बाप समान। ... जब तक आपस में ही प्रत्यक्ष नहीं होंगे तो विश्व के आगे प्रख्यात कब होंगे और विश्व के आगे प्रख्यात नहीं होंगे तो प्रत्यक्षता कैसे होगी ? ... लॉस्ट सो फास्ट पुरुषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा। प्रतिज्ञा अर्थात् करना ही नहीं लेकिन अभी करना है।"

अ.बापदादा 23.6.73

बाबा ने कहा मेरी एक ही आश है कि अब समाप्ति के समय को समीप लाओ। अभी दुख बढ़ता जा रहा है। आपको मन में रहम आना चाहिए कि हमारे भाई-बहनें बहुत दुखी-अशान्त हो रहे हैं। ... अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, समय बहुत नाज़ुक होता जा रहा है और होने वाला है। अभी दृढ़ संकल्प से अपने राज्य के समय का आवाह्न करके जल्दी लाना है।

अ.बापदादा 24.06.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

"अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी सारे दिन की रिजल्ट कैसी देनी है ? तीव्र पुरुषार्थ की। ... अभी बापदादा अचानक ही बीच में रिजल्ट मँगायेगा। डेट नहीं बताते हैं। ... अपने आप से यह संकल्प करो और प्रैक्टिकल करके दिखाओ। ... समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने दुखी परिवार पर रहम नहीं आता है ? रहमदिल बनो, दुखियों को सुख का रास्ता बताओ। चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना।"

अ.बापदादा 30.11.11

"ये सब बातें बुद्धि में रख अपने आपको चेक करो कि हमारा अन्तिम पार्ट व भविष्य क्या होगा ? जब अभी से सर्वात्माओं को बाप का खज़ाना देने वाले दाता बनेंगे, ... वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप लायेंगे और बाप के सम्बन्ध में लायेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में इक्कीस जन्मों तक राज्य पद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे।"

अ.बापदादा 30.5.73

"सर्व आत्माओं को उनकी भावना का फल प्राप्त हो, कोई भी वंचित न रहे। हर आत्मा को उसकी भावना का फल देने के लिए अपनी पॉवरफुल स्टेज अर्थात् सर्वशक्तियों को अभी से अपने में जमा करना होगा, तब जमा की हुई शक्तियों से किसको समाने की शक्ति, किसको सहन करने की शक्ति दे सकेंगे अर्थात् जिसको जो आवश्यकता होगी, वही उसको दे सकेंगे।"

अ.बापदादा 13.4.73

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और माया

यह सृष्टि माया और प्रभु का, राम और रावण का अनादि-अविनाशी खेल है, इसलिए दोनों का प्रभाव आत्माओं पर रहता ही है और दोनों के आधार पर ही आत्मायें इस खेल का आनन्द लेते हैं। एडवान्स जन्म में तो न माया होगी और न ही माया का ज्ञान होगा। एडवान्स पार्टी वालों को माया का माया के रूप में तो ज्ञान नहीं होगा परन्तु उनके पास नाममात्र माया विदाई लेने के लिए आयेगी, जिसको वे सहज पार कर लेंगे। एडवान्स स्टेज वालों को माया का ज्ञान भी है और उनका माया के साथ युद्ध भी होता है, परन्तु वे परमात्मा के सहयोग से माया पर सहज विजय पा लेते हैं। उनकी माया को चेलेन्ज रहती है कि माया आये और वे उस जीत पाकर अर्थात् माया का पेपर में पास करके आगे बढ़ते रहें। वास्तव में देखा जाये तो बिना माया के परमात्मा का भी ज्ञान नहीं होगा और परमात्मा के बिना कोई माया पर विजय नहीं पा सकेगा। इसलिए दोनों का ही इस विश्व-नाटक में महत्व है, जिसमें एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वालों का विशेष पार्ट है।

"लॉस्ट पेपर भी आउट है और पेपर का समय भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप। ... एक सेकेण्ड में अगर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप न बनें, अपने को स्वरूप बनाने में युद्ध करने में समय गँवा दिया और बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय लगा दिया तो क्या हो जायेंगे ? फेल। ... अगर हिम्मत, उल्लास, नशा और निशाना सदा साथ रखेंगे तो अनेक कल्प के समान फुल पास हुए ही पड़े हैं। कोई मुश्किल नही।"

अ.बापदादा 23.06.73

एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और साधना

Q. कई बार सन्देशों में सुना है कि एडवान्स पार्टी वाले भी साधना करते हैं, तो हम ब्राह्मण अर्थात् एडवान्स स्टेज वाले, जिनकी बुद्धि में ज्ञान प्रत्यक्ष है, उनकी साधना और एडवान्स पार्टी वालों की साधना में क्या अन्तर होगा ?

एडवान्स स्टेज वालों को ही यह ज्ञान है और वे ही ज्ञान-योग की साधना करते हैं और अन्य आत्माओं को भी यह ज्ञान देते हैं, योग सिखाते हैं, परमात्मा से सम्बन्ध जुड़ाते हैं। जैसे एडवान्स स्टेज वाले योग लगाते हैं, वैसे एडवान्स पार्टी वाले तो योग नहीं लगाते हैं, क्योंकि उनकी बुद्धि में यह ज्ञान स्पष्ट नहीं है, परन्तु उनकी साधना स्वभाविक होती है। अमृतवेले उठना, अमृतवेले और सायंकाल शान्ति में बैठना, चक्कर लगाना, विश्व-कल्याण के विषय में विचार करना, उनकी स्वभाविक दिनचर्या होगी, जिससे शान्ति का वायब्रेशन विश्व में फैलता रहेगा। विश्व-कल्याण के संकल्प का वायब्रेशन अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करेगा। उनके

शान्ति में बैठने, विचरण करने से उनको विश्व-कल्याणार्थ स्व-पुरुषार्थ से तथा बाबा की मदद से नई-नई प्रेरणायें आयेंगी, नई-नई बातें बुद्धि को टच करेंगी, जिससे वे नये विश्व के निर्माण का कर्तव्य करने में समर्थ होंगे। यह शान्ति का वायब्रेशन फैलाना और उसके लिए चिन्तन करना ही उनकी साधना है। ब्रह्मा बाबा भी उनको ऊपर से टच करते रहते हैं, जो उनको टच होता है।

एडवान्स पार्टी वालों की प्रेरणा से अन्य आत्मायें ज्ञान में आ सकती हैं परन्तु वे स्वयं ज्ञान में नहीं आयेंगे क्योंकि उनका ज्ञान का पार्ट सम्पन्न हो गया है, इसलिए उनकी मन-बुद्धि विश्व नव-निर्माण के लिए ही आकर्षित होगी।

एडवान्स जन्म वालों को साधना करने की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि गायन है - दुख में सुमिरण सब करें, दुख में करे न कोई। सतयुग में एडवान्स जन्म वालों को दुख-अशान्ति नहीं होती, इसलिए वे कोई साधना नहीं करते हैं। उन्होंने अपने पूर्व जन्म अर्थात् एडवान्स स्टेज, एडवान्स पार्टी के समय जो साधना की है, उसका फल मिलता है।

एडवान्स स्टेज वालों की साधना ज्ञान-योग की धारणा कर अन्य आत्माओं को भी ज्ञान-योग का सन्देश दे, परमात्मा से वर्सा दिलाने की होती है। एडवान्स पार्टी वालों की साधना अमृतवेले, सायंकाल अपने देह से न्यारे शान्त स्वरूप की अनुभूति में बैठ शान्ति का वायब्रेशन फैलाने की चलती होगी, भले उनमें यह ईश्वरीय ज्ञान ऐसे इमर्ज रूप में नहीं होता है, जैसे एडवान्स स्टेज वालों की बुद्धि में है। एडवान्स स्टेज वालों की बुद्धि में ज्ञान इमर्ज रूप में होने के कारण वे ज्ञान-योग की धारणा का स्वयं भी अभ्यास करते हैं और दूसरों को भी सन्देश देकर ज्ञान-योग की धारणा का मार्ग बताते हैं, परमात्मा से वर्सा लेने का रास्ता बताते हैं।

एडवान्स पार्टी वाले ज्ञान-योग का चिन्तन नहीं करते हैं परन्तु रहमदिल बन विश्व-कल्याण का चिन्तन अवश्य करते हैं, उसके लिए प्लॉनिंग आदि बनाते हैं। अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है कि वे सेवा का संस्कार लेकर गये हैं, इसलिए सेवा के बिना रह नहीं सकते, इसलिए विश्व-कल्याण की सेवा अपनी वृत्ति और वायब्रेशन से करते हैं। जैसे गौतम बुद्ध को स्वयं कोई दुख-दर्द नहीं था परन्तु वे दूसरों का दुख-दर्द देख, उनके कल्याणार्थ साधना के लिए निकल पड़े और साधना करने के बाद उनके तन में बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया। ऐसे एडवान्स पार्टी वालों को भी विश्व में व्याप्त दुख-दर्द देख, उनके कल्याणार्थ चिन्तन चलता होगा। अव्यक्त बापदादा भी उनको प्रेरणायें देते रहते हैं, उनको वतन में भी बुलाकर सर्विस की प्रेरणा देते हैं।

एडवान्स जन्म वाले साधना रूप में कोई पुरुषार्थ नहीं करते हैं परन्तु वे शान्ति में अवश्य रहते हैं क्योंकि परमधाम से आने के कारण शान्ति उनको खींचती है, भल उनको शान्तिधाम आदि का ज्ञान नहीं होता है। इसलिए देवताओं की दिनचर्या बहुत सीमित होती है।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव एवं परिवर्तन की प्रक्रिया

गायन है आत्मा, परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिले दलाल।

आत्मा और परमात्मा के मंगल्-मिलन का अलौकिक अनुभव है जो कल्प के संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं। सारे सृष्टि-चक्र अर्थात् सारे कल्प में यही मंगल मिलन है क्योंकि आत्मा और परमात्मा के मिलन से ही आत्मा और सारे विश्व की चढ़ती कला होती है, इसलिए इसको सुन्दर मेला कहा जाता है। इस मिलन-मेले के कई अद्वितीय परिदृश्य हैं, जो आत्माओं को लुभाते भी हैं, हर्षाते भी हैं और जीवन में परम-प्राप्ति की अनुभूति भी कराते हैं। निराकार परमात्मा के साकार तन में आकर मिलन मनाने की एक अद्भुत कहानी है, जिसको सुनकर, उस पर विचार करने से आत्मा गद्गद् हो जाती है और स्वयं भी उस मिलन का अद्भुत अनुभव करके अपने को धन्य-धन्य अनुभव करती है।

अब प्रश्न उठता है कि एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म में किसको इस मंगल-मिलन का सबसे अच्छा अनुभव होता है। वास्तव में ये अनुभव आत्मा रूप में तो तीनों को ही होता है, जिसके आधार पर वे एडवान्स पार्टी में जाते हैं और बाद में एडवान्स जन्म लेते हैं। इसलिए इस मंगल-मिलन की सूक्ष्म स्मृति उन आत्माओं में मर्ज रूप में रहती है परन्तु साकार रूप में इसका अनुभव एडवान्स स्टेज वाले ही करते हैं क्योंकि उनमें ही यह ज्ञान इमर्ज रूप में होता है।

इस मंगल-मिलन के अनेक परिदृश्य हैं, जिनमें से कुछ का यहाँ यादगार रूप में वर्णन करते हैं -

* निराकार बाप का गुप्त वेष में मिलन अर्थात् आदि में निराकार शिवबाबा ने अनेकानेक आत्माओं को साक्षात्कार आदि के द्वारा अलौकिक अनुभव कराकर प्रेरित किया और आत्माओं को ऐसा अनुभव कराया कि वे देह और देह की दुनिया भूलकर, पतित दुनिया की लोक-लाज छोड़कर प्रभु संग के रंग में रंग गई।

दूसरा है गोप-गोपियों और गोपी-वल्लभ के रूप में आत्मा-परमात्मा का मिलन। यज्ञ की स्थापना के आदि में 14 साल की अखण्ड भट्ठी चली, जिसमें अखण्ड तपस्या के साथ साकार तन में पधारे परमात्मा और साकार ब्रह्मा बाबा के साथ ब्रह्मा वत्सों का गोप-गोपियों के रूप में मिलन रहा और उन्होंने परमात्म-मिलन का अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हुए अखण्ड तपस्या की। वे आत्मायें परम भाग्यशाली रहीं, जिन्होंने यह अलौकिक अनुभव किया और विश्व नव-निर्माण की स्थापना की नींव डाली।

तीसरा मिलन है, जब 14 साल की भट्ठी के बाद संस्था का मुख्यालय कराची से भारत में स्थानान्तरित हुआ और विश्व-कल्याण की सेवा की आदि हुई तो सेवा के आदि में आने वाली आत्माओं ने निराकार शिवबाबा से साकार मम्मा-बाबा की परम सुखदायी गोद के मिलन का अनुभव अर्थात् दोनों का साथ-साथ मिलन का अनुभव। आने वाली आत्मायें पहले मम्मा की गोद में, फिर बाबा की गोद में जाकर परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव करते थे। वे आत्मायें भी परम भाग्यशाली रहीं, जिन्हों के मिलन का वह पार्ट रहा।

चौथा है साकार में परमात्मा से मिलन और उनकी परम कल्याणमयी गोद का मिलन अर्थात् उसका अनुभव। जब मम्मा एडवान्स पार्टी में सेवा-अर्थ चली गई तो साकार बाबा के तन द्वारा निराकार बाप का मिलन भी अद्वितीय था। साकार बाबा ने मम्मा-बाबा दोनों का पार्ट बजाया और बच्चों को गोद में लेकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराया। परमात्म-मिलन का वह अनुभव भी अविस्मरणीय है। वह अनुभव भी बड़े भाग्य की बात है, जिसके लिए बाबा ने कहा है, समय आयेगा जब इस साकार मिलन को आत्मायें याद करेंगी।

पांचवा है साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद अव्यक्त बापदादा का साकार तन द्वारा साकार के समान मिलन। 18 जनवरी सन् 1969 में जब साकार ब्रह्मा बाबा कर्मातीत होकर अव्यक्त हुए तो अव्यक्त बापदादा का साकार में आकर मिलन भी अति न्यारा-प्यारा था। जैसे साकार में शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के तन द्वारा व्यक्तिगत रूप में मिलते थे, हाल-चाल पूछते थे, अपनी कल्याणमयी दृष्टि से, मधुर वचनों से आत्माओं को प्यार और दुलार देते थे वैसे ही अव्यक्त बापदादा भी बच्चों से मिलकर उनका हालचाल पूछते और बच्चों को प्यार और दुलार देकर बच्चों की पालना करते थे। परमात्म-मिलन के वे दिन भी अति सुन्दर थे।

छटा है अव्यक्त बापदादा का साकार तन द्वारा व्यक्तिगत रूप में मिलन-मेला अर्थात् बच्चों की वृद्धि होने से पहले जैसा मिलन का विधि-विधान तो नहीं रहा लेकिन अव्यक्त बापदादा आत्माओं व्यक्तिगत रूप में वरदान देकर मिलन मनाते थे। समय सतत परिवर्तन-शील है, इसलिए समय की गाड़ी आगे बढ़ती गई और समय के साथ मिलन की रीति भी

परिवर्तन होती गई, फिर भी समय-समय पर अव्यक्त बापदादा व्यक्तिगत रूप में मिलकर भी वरदान देते मिलन मनाते रहे। वह भी समय था, जब ओम् शान्ति भवन में अव्यक्त बापदादा के साथ मिलन मनाने में गुड-नाइट और गुड-मार्निंग दोनों साथ-साथ होते थे अर्थात् परमात्म-मिलन में रात से दिन हो जाता था। वे मिलन की रातें भी कितनी सुहावनी थीं।

सातवाँ है अव्यक्त बापदादा का पार्टी के रूप में मिलन अर्थात् बापदादा का पार्टी के रूप में मिलन मनाने का समय अर्थात् दृश्य। उसमें भी बापदादा रात-रात भर बच्चों से मिलन मनाते रात को दिन बनाते रहे और आत्माओं को भरपूर करते रहे।

आठवाँ मिलन-मेले का दृश्य आया अर्थात् सभा में दृष्टि और मुरली के द्वारा मिलन मेला अर्थात् बाबा का साकार तन में आकर सारी सभा को दृष्टि देकर मिलन मनाने का समय अर्थात् दृश्य, वह भी अति मंगलकारी मिलन मेला रहा। जिसके लिए बाबा नये-नये बच्चों को कहते थे - भले आप लेट आये परन्तु टू-लेट नहीं अर्थात् परमात्म-मिलन का साकार में अनुभव तो किया। यह भी बड़ा भाग्य है।

* समय परिवर्तनशील है, उसकी चेतावनी भी अव्यक्त बापदादा समय-समय पर देते ही रहे हैं और विवेक भी कहता है कि परिवर्तन तो होना ही है परन्तु परिवर्तन क्या होगा, वह ड्रामा में अदृश्य है, जिसको समय ही बतायेगा। 1969 में जब साकार बाबा अव्यक्त हुए तो अव्यक्त बापदादा ने अव्यक्त मिलन के आदि में ही इशारा दिया था कि जो बच्चे अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का सफल अभ्यास करेंगे, उसका अनुभव करेंगे, वे ही अन्त में सदा काल का मिलन मना सकेंगे।

समय परिवर्तनशील है, समय की गति के साथ परमात्म-मिलन की रूपरेखा परिवर्तन होती रही है और परिवर्तन हो भी रही है और होनी भी है, जिसके लिए अचानक की चेतावनी बापदादा दो साल से देते रहे हैं और कहते रहे हैं कि अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाना ही स्थाई मिलन मनाना है।

समय के अनुसार अभी जो यह परिवर्तन हुआ है कि हम सबको संगठन में अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर इस परमात्म-मिलन का अनुभव करना है। यह मिलन मेला भी अति मंगलकारी है और आत्माओं को शक्ति देने वाला है। यह संगठन का मिलन भी अन्तिम समय में हमको विशेष सहयोग देने वाला है। क्योंकि अन्त समय तो शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों ही परमधाम जायेंगे, उस समय इस संगठन के मिलन-मेले का विशेष महत्व होगा। जो निश्चयबुद्धि बनकर अभी इस संगठन के मिलन-मेले के महत्व को जानकर स्वयं में परिवर्तन करेंगे और इस संगठन के मिलन के महत्व को स्वीकार करेंगे अर्थात् समय के परिवर्तन को

स्वीकार करके इस मिलन को मनायेंगे, वे अन्त समय इसके महत्व को विशेष अनुभव करेंगे और मिलन-मेले में रह सकेंगे। अन्त में विनाश के समय यह संगठन का मिलन-मेला हमारे लिए छत्रछाया बन जायेगा। हम सभी को भी घर तो वापस जाना ही है परन्तु अन्त समय के अति भयानक दृश्य को सहन करने और अति मंगलकारी दृश्य को देखने के लिए यह संगठन का मिलन-मेला ही सहयोगी होगा। मिलन के दिन संगठित योग में भाग लेना हमारा कर्तव्य भी है और उसमें ही हमारे ब्राह्मण जीवन की सफलता भी समाई हुई है।

विचारणीय सत्य यह है कि यह विश्व-नाटक सतत् परिवर्तनशील है और परिवर्तन ही इसकी शोभा है। जो आत्मायें इस विश्व-नाटक के इस राज़ को समझकर इस परिवर्तन की प्रक्रिया को स्वीकार करते हैं और समय अनुसार अपनी विचारधारा में परिवर्तन करते हैं, वे सदा ही इस विश्व-नाटक का सुखद अनुभव करते हैं। परमात्म-मिलन की प्रक्रिया का परिवर्तन भी इस विश्व-नाटक के सतत् परिवर्तन की एक कड़ी है, जो समयानुसार होना ही है। परिवर्तन के इस सत्य को स्वीकार कर अभीष्ठ पुरुषार्थ करने वाले सदा ही बापदादा से मनाते रहते हैं और मनाते रहेंगे क्योंकि परमात्मा पिता ने कहा है कि बाबा सदा तुम आत्माओं के साथ है और अन्त तक साथ रहेगा, उस साथ का अनुभव करना-कराना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है। "इसमें हर एक की इण्डिविजुअल तक़दीर है, इसलिए हर एक को पुरुषार्थ भी इण्डिविजुअल करना है। अपनी आपही चेकिंग करनी चाहिए। ... जो पक्का प्रण कर लेते हैं कि हम बाप को कभी नहीं भूलेंगे, बाप से स्कॉलरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। ऐसे बच्चों को फिर मदद भी मिलती है। ऐसे बच्चे अन्त में साक्षात्कार करते रहेंगे। जैसे शुरू में हुआ, वही फिर पिछाड़ी में देखेंगे। जितना नज़दीक होते जायेंगे, उतना खुशी में नाचते रहेंगे। उधर धूने नाहेक खेल भी चलता रहेगा।"

सा.बाबा 6.11.12 रिवा.

"अभी तुम्हारा यह टाइम बहुत वेल्यूएबुल है, इसको वेस्ट नहीं करना है। भक्ति मार्ग में बहुत टाइम वेस्ट करते आये हो। ... योग में रहने की ऐसी प्रैक्टिस हो, जो भल कितना भी आवाज़ हो, अर्थक्वेक हो, बॉम्बस गिरें, तो भी डरना नहीं है। यह तो जानते ही हो कि रक्त की नदियाँ बहनी है। आगे चल बहुत आफतें आनी है।"

सा.बाबा 7.11.12 रिवा.

अब समय तो सम्पूर्णता की ओर बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए अन्तिम मिलन-मेले का अनुभव करना और खुशी-खुशी घर जाने के लिए तैयारी करने के लिए यह संगठन का मिलन-मेला भी ड्रामा में नूँधा हुआ है। परिवर्तनशील ड्रामा है, जिसमें हर क्षण परिवर्तन होता रहा है, होता रहता है और परिवर्तन होता रहना भी अवश्य सम्भावी है परन्तु उस परिवर्तन के

साथ स्वयं में परिवर्तन करना और समय की चुनौती को स्वीकार करना ही ज्ञानी आत्माओं का लक्षण है, भूतकाल को सोचने में समय गँवाना एक भूल होगी। बाबा ने हमको जो दिया है, जो अनुभव कराया है, उसके महत्व को जानकर, उसका उपयोग करने और कराने में ही इस संगमयुगी जीवन की सफलता है। इस विश्व-नाटक की विविधता और सतत् परिवर्तनशीलता को बुद्धि में रखकर समय अनुसार अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करके परमात्म-मिलन मनाना, मिलन का अनुभव करना और आत्माओं को कराना हर ब्राह्मण आत्मा परम कर्तव्य है।

बाबा ने यह भी कहा है कि जो पार्ट आदि में चला है, वह अन्त में भी अवश्य चलेगा अर्थात् आत्माओं को साक्षात्कार आदि होंगे, जिससे उनको परमात्म-मिलन का अनुभव होगा। इसलिए बाबा के ये महावाक्य भी हमारी बुद्धि में जागृत रहना अति आवश्यक हैं।

यह भी इस विश्व-नाटक की सत्यता है कि जिस आत्मा ने कल्प पहले जो और जैसा अनुभव किया है, उसकी ही उसको समय पर आकर्षण होती है और वह उसमें ही सन्तुष्टता का अनुभव करता है। अभी भी जो परिवर्तन हुआ है, जो हो रहा है और जो होगा, उसको स्वीकार करके जो श्रद्धा-भावना से यहाँ आयेंगे, वे अवश्य ही परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव करेंगे, उनको परमात्मा से प्रेरणा मिलेगी क्योंकि यह वरदान भूमि है, इस भूमि में परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव समाया हुआ है, जो आने वाली हर आत्मा को होगा ही।

परिवर्तनशील ड्रामा है, आदि से ही परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे। परिवर्तनशीलता के इस सत्य को बुद्धि में रखकर अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर परमात्म-मिलना मनाना और अन्य आत्माओं को अनुभव कराना ही ज्ञानी-योगी आत्माओं का कर्तव्य है। ज्ञान सागर बाबा ने हमको अनेक प्राप्तियों से भरपूर किया है, यह संगमयुग परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण है, इसलिए संगमयुग की परम-प्राप्तियों का अनुभव करते हुए उड़ते रहना और उड़ाते रहना ही संगमयुगी जीवन की सफलता है।

बाबा ने यह भी कहा है कि साकार ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में स्थित हो सदा जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहो। यह वे ही कर सकेंगे, जो सदा संगमयुगी प्राप्तियों का अनुभव करते हुए बाप के साथ अव्यक्त मिलन-मेले में रहेंगे।

हमारी बुद्धि में यह निश्चय पक्का रहना चाहिए कि यज्ञ में आदि से अब तक अनेक परिवर्तन होते भी यज्ञ आगे बढ़ता रहा है, बढ़ रहा है और बढ़ता ही रहेगा। जब भक्ति मार्ग के यादगार तीर्थों पर श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है तो यह तो वरदान भूमि सत्य तीर्थ है, यह भूमि अनन्त प्राप्तियों, वरदानों, अनुभूतियों से परिपूर्ण है, अनुभव का आधार है, जो अन्य स्थानों पर सम्भव नहीं है। जब-जब भी कोई परिवर्तन हुए हैं तो थोड़े समय हलचल रही है परन्तु यज्ञ

सदा ही आगे बढ़ता रहा है। जो उस हलचल में अचल रहे हैं, उन्होंने ही संगमयुग की परम प्राप्तियों का अनुभव किया है।

साकार तन द्वारा अव्यक्त बापदादा के मिलन का विधि-विधान परिवर्तन होते भी संगठित रूप में योग का अपना महत्व है, उसका अपना प्रभाव है और अनुभव है, इसलिए निश्चयबुद्धि आत्माओं का मधुवन में आना-जाना निरन्तर वृद्धि को पाता रहेगा और यज्ञ सम्पूर्णता की ओर बढ़ता रहेगा।

अभी आने वालों का और हम सबका यह सौभाग्य है कि अभी तो हमारे सामने वे आदि रतन भी हैं, जिन्होंने आदि से अब तक सब प्रकार के मिलन का अनुभव किया है और अपनी दृष्टि-वृत्ति से हमको भी अनुभव कराते हैं।

"सभी अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो ? विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। ... सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेग़मपुर का बादशाह। भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय भी बेग़मपुर के बादशाह हो अर्थात् संकल्प में भी ग़म अर्थात् दुख की लहर न हो क्योंकि दुखधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो।" अ.बापदादा 3.10.75

"रेस्पाण्ड अब भी फौरन मिलता है लेकिन बीच में व्यक्त भाव को छोड़ना पड़ेगा, तब ही उस रेस्पाण्ड को सुन सकेंगे। ... ब्रह्मा बाप भी पहले बाहरयामी था, अभी अन्तर्यामी हो गया है। अव्यक्त स्थिति में जानने की आवश्यकता नहीं रहती है (कि किसके अन्दर क्या संकल्प है, सामने आते या संकल्प करते ही सब स्पष्ट हो जाता है)। स्वत: ही एक सेकेण्ड में सारा नक्शा देखने में आ जाता है।" अ.बापदादा 2.02.69

"निश्चय इस ब्राह्मण जीवन की सम्पन्नता का फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। ... यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया, स्वयं को भी आत्म-स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है, जैसा है, वैसे जानना।" अ.बापदादा 4.12.95

"मुख्य बात है - यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन को पक्का करो। कहने को तो कह देते हो कि मैं आत्मा हूँ और हमारा बाप सर्वशक्तिमान है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिए। ... निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ, स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। ... समझदार की निशानी है कभी धोखा नहीं खाना। ये ज्ञानी की निशानी है।" अ.बापदादा 4.12.95

वैसे तो साकार में परमात्म-मिलन का अपना महत्व और अनुभव है, वह जिन्होंने किया, वे ही

जान सकते हैं। ऐसे ही अव्यक्त रूप का साकार में मिलन का भी अपना महत्व और अनुभव है, उसको भी जिन्होंने किया, वे ही उसका महत्व समझते हैं। परन्तु स्वयं अव्यक्त रूप में स्थित होकर अव्यक्त मिलन का भी अपना विशेष महत्व और अनुभव है, जो ही वर्तमान और भविष्य में विशेष सहयोगी होगा। जो आत्मायें अभी से इस मिलन के अनुभवी होंगे, वे ही भविष्य में इस अनुभव को कर सकेंगे और अन्त समय परमानन्द की अनुभूति में रहेंगे। यह अव्यक्त स्थिति के द्वारा अव्यक्त-मिलन का अनुभव ही सदा काल संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति कराने वाला है।

ड्रामा अपने पट्टे पर चल रहा है और चलता रहेगा। इसके दृश्य परिवर्तन हो रहे हैं और होते भी रहेंगे परन्तु यथार्थ ज्ञान-योगी आत्मा को हर दृश्य कल्याणकारी आनन्दमय अनुभव होगा। वे हर दृश्य को देखते हुए अपनी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होकर, इस संगमयुगी जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते रहेंगे। यथार्थ ज्ञानी-योगी सृष्टि-चक्र के अन्तिम दृश्य अर्थात् विनाश की प्रतीक्षा में अपना समय-संकल्प-स्वांस न लगाकर इसकी अनादि-अविनाश्यता को बुद्धि में रखकर परमात्मा से प्राप्त परम-प्राप्तियों से सम्पन्न हो इस संगमयुगी जीवन में सदा परमात्मा पिता के साथ मिलन मनाते परमानन्द का अनुभव करते रहेंगे क्योंकि इस संगमयुगी जीवन में ही इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है और परमात्मा के साथ का यथार्थ अनुभव सम्भव है।

सृष्टि-चक्र का अन्तिम दृश्य देखने और उस समय अचल-अडोल रहने के लिए जो अभी से अपनी अन्तिम स्थिति अर्थात् सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न इच्छा मात्रम् अविद्या की बनाकर रखेंगे वे ही अन्तिम समय भी परमात्म-मिलन मेले की अनुभूति में रहेंगे।

समय-समय पर परमात्मा के साकार तन द्वारा मिलन में परिवर्तन होता रहा है, जिसके लिए हर समय परिवर्तन से पहले बाबा इशारा भी देते रहे हैं परन्तु ड्रामा अनुसार हम आत्मायें परमात्मा के उन इशारों को समझने में असमर्थ रहे हैं। सतत् परिवर्तन इस विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी विधि-विधान है, जिसको समझकर हमको हर परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करते हुए परमात्म-मिलन के सुख का अनुभव करना है। परमात्म-मिलन का सुख इस संगमयुग का आत्माओं को वरदान है, जो परमात्मा के महावाक्यों को बुद्धि में रख यथार्थ पुरुषार्थ करेंगे, वे सदा ही इस मिलन का अनुभव करते रहेंगे।

बच्चों की वृद्धि और समय परिवर्तन के साथ बापदादा से साकार में मिलन मनाने के विधि-विधान में परिवर्तन होता रहा है परन्तु ज्ञान सागर परमात्मा का आत्माओं को जो मुख्य वरदान है, वह है इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, जो ही आत्माओं के परमात्म-मिलन और

आत्माओं की तथा समग्र विश्व की चढ़ती कला का आधार है। समय के साथ ज्ञान प्रशस्त होता गया है, इसलिए उसके आधार पर आत्मायें परमात्म-मिलन का अनुभव सहज कर सकती हैं। पहले सर्वशक्तिवान परमात्मा ने जो अनुभव आत्माओं को अपनी शक्ति से कराया, जिसका आधार साकार में दृष्टि-वृत्ति, साकार गोद आदि रहा, अभी आत्माओं को वह अनुभूति ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा कर अपने पुरुषार्थ से अव्यक्त स्थिति में रहकर करना है।

आदि से अब तक के मिलन-मेले पर विचार करें तो उसमें निश्चय का विशेष महत्व रहा है। अभी भी निश्चय का ही महत्व है। जो बाबा के महावाक्यों पर निश्चय करके अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त मिलन मनाने के विधि-विधान को स्वीकार करके मिलन मनायेंगे, वे अभी भी परमात्म-मिलन का परम-सुख अनुभव करेंगे और परमात्मा के सहयोग का भी अनुभव करेंगे, आवश्यकता अनुसार उनके डॉयरेक्शन भी ले सकेंगे। बाबा ने कहा है जब तक संगमयुग है, तब बाप और बच्चों का मिलन निश्चित है।

कहा गया है - अति सर्वत्र वर्जते। यह संगमयुग भावना और विवेक, आदर्श और यथार्थ का भी संगम है। जो चारो ही बातों का सन्तुलन बुद्धि में रखता है, वही इस संगमयुग के परम-सुख को अनुभव करता है। जो किसी कारणवश भावना को प्रधानता देकर विवेक को किनारे कर देता है, वह कभी संगमयुग के यथार्थ सुख को सदा काल अनुभव नहीं कर सकता है। ऐसे ही यथार्थ को किनारे रख आदर्श को प्रधानता देने वालों को भी कहाँ न कहाँ पश्चाताप करना ही पड़ता है अर्थात् वे भी संगमयुग के परम-सुख को सदा काल अनुभव नहीं कर सकते हैं। बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देकर चारो बातों का सन्तुलन अर्थात् बैलेन्स सिखाया है और ज्ञान की यथार्थ धारणा कर सदा यह बैलेन्स रख संगमयुग के परम-सुख को अनुभव अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति के अनुभवों में रहने के लिए कहा है।

"आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। ... आप सभी का उल्हना तो पूरा हुआ ना, आगे जैसे ड्रामा निमित्त बनायेगा, ऐसे मिलते रहेंगे। आज इतना ही ड्रामा में मिलन है। ... अभी सिर्फ बच्चों का मिलने का उल्हना पूरा करने आये हैं। तो सभी ठीक हैं? ठीक हैं तो सभी हाथ उठाओ। ... आज सिर्फ मिलने के लिए ही आये हैं, अभी आते रहेंगे और मिलते रहेंगे।"

अ.बापदादा 30.11.12

Q. अव्यक्त रूप में अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का यथार्थ साधना क्या है अर्थात् अव्यक्त मिलन की साधना, साधन और सिद्धि क्या है?

Q. अव्यक्त रूप में अव्यक्त बापदादा से मिलन की यथार्थ अनुभूति क्या है?

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने के लिए दो प्रकार की प्रक्रियायें हैं। एक है योग मार्ग और दूसरा है ज्ञान मार्ग। यद्यपि दोनों मार्ग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं परन्तु वैरायटी ड्रामा के विधि-विधान अनुसार किसी आत्मा में भावना प्रधान है, तो किसी में विवेक प्रधान है और इस ज्ञान मार्ग दोनों का ही महत्व है। जो भावना प्रधान हैं, वे भावना की प्रधानता के आधार पर सहज परमात्म-प्यार में खो जाते हैं, जिससे उनको देह और देह की दुनिया सहज ही भूल जाती है और वे अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा के साथ मिलन मनाने में सफल होते हैं अर्थात् उनको मिलन की अनुभूति और प्राप्ति का अनुभव होता है। जो विवेक प्रधान हैं, वे विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने के कारण, देह और देह की दुनिया की नश्वरता को समझते हैं और संगमयुगी परमात्म-प्राप्तियों को भी समझते हैं और दोनों को बुद्धि में रखकर देह और देह की दुनिया को भुलाकर अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने में सफल होते हैं अर्थात् वे भी परमात्मा से परम-प्राप्तियों की अनुभूति करते हैं। इस वैरायटी ड्रामा में संगम पर दोनों ही प्रकार की आत्माओं का अपना-अपना पार्ट है और यज्ञ सेवा में महत्व है।

भक्ति मार्ग में हठयोगी भी देह और देह की दुनिया को भुलाकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होते हैं अर्थात् अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित होते हैं, अनेक प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करते हैं परन्तु उस समय उनको न आत्मा का यथार्थ ज्ञान है और न ही परमात्मा का यथार्थ ज्ञान है और न ही उस समय परमात्मा का इस धरा पर कोई पार्ट है, इसलिए वे परमात्म-मिलन का अनुभव नहीं कर सकते हैं और न ही उनको परमात्म-प्राप्तियों की अनुभूति होती है। इसलिए हठयोगियों की चढ़ती कला नहीं होती है, उतरती कला ही होती है परन्तु उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है क्योंकि हर आत्मा को ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ का फल मिलता ही है। उनको जो सिद्धि अपने इस पुरुषार्थ से मिलती है, वह अल्प काल के लिए होती है।

"सिद्धि तो रिवाजी आत्माओं को भी प्राप्त होती है। वे भी एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रगट कर सकते हैं और अनुभव करा सकते हैं। वह है अल्पकाल की सिद्धि लेकिन यह है ज्ञान-युक्त विधि से सिद्धि। आगे चलकर कई नई बातें भी तो होंगी ना। जैसे आदि में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था। प्रक्टिकल में बोल रहा है, इशारा दे रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा। (यह पार्ट किन आत्माओं का होगा अर्थात् एडवान्स पार्टी वालों का, एडवान्स स्टेज वालों का या एडवान्स जन्म वालों का)"

अ.बापदादा 11.10.75

वर्तमान परिवर्तन और अव्यक्त मिलन

"जैसे साकार में मिलने का समय मालूम होता था तो नींद नहीं आती थी और समय से पहले ही बुद्धि द्वारा इसी अनुभव में रहते थे। ... वैसे ही अव्यक्त मिलन करने के लिए अमृतवेले अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रुहान करो तो ऐसा अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। ... अमृतवेले भी जो अव्यक्त स्थिति में स्थित वे ही हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे।"

अ.बापदादा 2.02.69

"आपकी मम्मा आपको कहा करती थी कि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं, वे सब आधार निकलने ही हैं, परन्तु निकलते हुए भी निश्चय की नींव मजबूत है। ... परीक्षा के समय जो सीन सामने आती है, उसमें निश्चय तो नहीं टूटा। ... ब्रह्मा बाप ने बातें तो सब बोली हुई हैं, परन्तु समय पर याद आना ही तीव्र पुरुषार्थ है। ... लेकिन वे जानते हैं कि ड्रामा में जो भी पार्ट होता है, वह कल्याणकारी है, इसलिए वे विचलित नहीं होते हैं। वह तो सम्पूर्ण अचल-अडोल, स्थिर था और है भी।"

अ.बापदादा 21.1.69

आदि से अब तक के घटनाक्रम को देखें तो निश्चय का ही विशेष महत्व रहा है। आदि में जो निश्चयबुद्धि होकर रहे, उन्होंने परमात्म-मिलन का सुखद अनुभव किया, उसका लाभ उठाया और जब परीक्षा आई तो वे उसमें पास हो गये। जो यथार्थ निश्चय न होने के कारण अन्य बातों में अपना समय, संकल्प और शक्ति लगाते रहे, वे परीक्षा में फेल हो गये, कोई बाप को छोड़कर चले गये, कोई साथ रहे परन्तु वह अनुभव और प्राप्ति नहीं कर सके, जो निश्चयबुद्धि वालों ने की।

हमारे आदरणीय दादा विश्व रतन जी जब भी अपना अनुभव सुनाते थे तो यही सुनाते थे कि मेरा ऐसा अनुभव और पुरुषार्थ है कि हमको हर कर्म और संकल्प करते हुए अनुभव होता है कि बाबा हमारे साथ है, बाबा हमको देख रहा है। यद्यपि हर समय तो साकार में बाबा उनके साथ नहीं रहते थे। परन्तु अपने निश्चय के आधार पर वे ऐसा अनुभव करते थे और उस अनुभव के आधार पर अपना आदर्श जीवन बनाया, जो हम सबके लिए भी प्रेरणादायक है भी और रहेगा भी। दादा जी ने कई बार अपना ऐसा अनुभव भी सुनाया कि उनके सामने कई कठिन परीक्षायें भी आई परन्तु उन्होंने उनको बाबा के साथ के अनुभव से सहज पार कर लिया अर्थात् उस परीक्षा में भी बाबा ने उनका साथ दिया।

वैसे भी देखा जाये तो 5-6 साल से बाबा की साकार में पधरामणी तो साल में 8-10 बार ही हो रही है और वह भी 4-5 घण्टे की ही होती है। तो प्रश्न उठता है कि सब

मिलाकर 50 घण्टे तो हम साकार तन द्वारा परमात्म-मिलन मनाते हैं, बाकी 8760-50 8710 घण्टे क्या करते हैं?

साकार में भी बाबा ने कहा है कि हर समय घोड़े पर सवारी थोड़ेही होती है। जब बच्चे बाबा से मिलने आते हैं तो बाबा को याद करते तो बाबा आ जाता है। बाबा को आने-जाने में देरी थोड़ेही लगती है। उस समय भी बाबा कहते थे कि साकार की गोद में आते हो तो शिवबाबा को याद कर, उनसे मिलने का संकल्प रखकर आओ, तो शिवबाबा से मिलन मनायेंगे।

निराकार शिवबाबा तो सर्वशक्तिवान है ही और वह कब भी कहाँ भी आ जा सकता है, परन्तु अभी तो ब्रह्मा बाबा भी फरिश्ता रूप में है तो वह भी साकार देह के बन्धन से मुक्त होने के कारण कहाँ भी स्वतन्त्रता से आ-जा सकता है और दोनों ही संगम पर साथ-साथ विश्व नव-निर्माण की सेवा में हैं, अब ये हमारे ऊपर है हम कहाँ तक निश्चयबुद्धि होकर उनकी सेवाओं का लाभ उठाते हैं और कहाँ तक उनको साथ रखकर विश्व नव-निर्माण की सेवा में सहयोग करते हैं। जो करेगा, सो पायेगा - यह तो इस विश्व-नाटक का अटल विधि-विधान है।

जब भक्ति मार्ग में भक्त हनूमान चालीसा रटते हुए, भयानक परिस्थितियों से भी पार हो जाते हैं, जो हर एक का किसी न किसी रूप में अनुभव है ही, जबकि हनूमान जैसा कोई देवता है ही नहीं। उसमें भी निश्चय के आधार पर ही आत्मा उस देवता के साथ का अनुभव करती है और शक्ति का अनुभव करती है। अभी तो हमको निराकार बाप का भी ज्ञान है, अव्यक्त वतन में बैठे फरिश्ता रूप ब्रहमा बाबा का भी ज्ञान है, उनके गुण-धर्मों और कर्तव्यों का भी ज्ञान है तो क्या हम उनके साथ और सहयोग का अनुभव नहीं कर सकते हैं! जबकि बाबा ने कहा है - मैं हर समय बच्चों को सहयोग देने के लिए हाज़िर हूँ।

अगर हम निश्चयबुद्धि होकर रहें और देह से न्यारी अव्यक्त स्थिति में रहें तो दोनों का सहयोग और साथ का अनुभव हम चलते-फिरते, कार्य करते भी करेंगे और खास बैठकर भी अनुभव करेंगे और समय पर उनकी श्रीमत भी ले सकेंगे।

हम सभी चाहते हैं कि बापदादा की साकार में पधरामणी हो परन्तु ये तो 100 प्रतिशत निश्चित है कि साकार देह और दुनिया की कुछ सीमायें हैं, जो अपना कार्य करेंगी ही, इसलिए बाबा की पधरामणी पहले जैसी तो नहीं होगी, उसमें कुछ परिवर्तन अवश्य होगा, वह भी समय बता रहा है और बतायेगा भी। परन्तु अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए अव्यक्त रूपधारी बनकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का सफल अभ्यास करना अति आवश्यक है। जो यह अभ्यास करेंगे, वे ही अन्त तक परमात्म-मिलन का अनुभव कर सकेंगे, बापदादा

का सहयोग अनुभव कर सकेंगे और संगमयुग की परम-प्राप्तियों के मौज का अनुभव कर सकेंगे।

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको अभी संगमयुग पर अनन्त प्राप्तियाँ दी हुई हैं, उनका समय-समय पर वर्णन भी किया है, अनुभव भी कराया हुआ है और हमको उन सबके अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए भी कहा है, जिससे हम स्वयं भी उन अनुभवों में रह सकें और अभी आने वाली अन्य आत्माओं को भी करा सकें। अथॉरिटी अर्थात् हम हर समय उनकी अनुभूति में रहें और दूसरों को भी वह अनुभूति करा सकें अर्थात् आत्मायें वह प्राप्ति की अनुभूति हमारे मन्सा-वाचा-कर्मणा से करें।

अगर हमने संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों के अनुभव का अभी यथार्थ रीति लाभ नहीं उठाया तो हमारी भी वही स्थिति होगी, जो बेगरी पार्ट के समय अनेक आत्माओं की हुई, जिन्होंने बाबा को यथार्थ रीति न पहचानकर, समय पर यथार्थ पुरुषार्थ नहीं किया। इसके लिए बाबा साकार रूप में और अव्यक्त रूप में हमको भिन्न-भिन्न रीति से सावधान करते रहे हैं और अभी भी कर रहे हैं।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और फरिश्ता स्वरूप

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और परमधाम जाकर एडवान्स जन्म के बीच की कड़ी फरिश्ता स्वरूप है क्योंकि हर आत्मा जब सूक्ष्मवतन से पास होती है तो उसका अन्त में फरिश्ता स्वरूप होता ही है परन्तु वहाँ वह अनुभूति नहीं है, जो इस साकार देह में रहते, देह से न्यारे अव्यक्त स्वरूप अर्थात् फरिश्ता स्वरूप में करते हैं। इसलिए बाबा बार-बार हमको स्मृति दिलाते हैं और प्रेरणा देते हैं कि अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित हो मन्सा सेवा करो, अपने को चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में अर्थात् लाइट के कार्ब में अनुभव करो। साकार में रहते देह से न्यारा अव्यक्त स्वरूप परमानन्दमय है परन्तु उस स्थिति में स्थित होने के लिए हमको इस सृष्टि-चक्र के तीनों कालों का, इसकी यथार्थता का, तीनों लोकों का ज्ञान बुद्धि में जागृत रखना अति आवश्यक है, इसके लिए ही बाबा ने ये सब ज्ञान हमको दिया है। बाबा बार-बार याद दिलाते हैं कि जैसे साकार बाबा साकार में फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति में रहे, उस स्थिति से सेवा की, वह तुम बच्चों को भी करनी है क्योंकि यह ईश्वरीय जीवन ईश्वरीय सेवा अर्थ ही है।

फरिश्ता स्वरूप स्थूल वतन से मूलवतन में जाने की एक कड़ी है, जहाँ से सभी आत्माओं को जाते समय गुजरना ही होता है परन्तु जो आत्मायें पहले से पुरुषार्थ करके

फरिश्ता स्वरूप धारण कर सूक्ष्मवतन में जाती हैं, वे आत्मायें वहाँ से विश्व-कल्याण का कर्तव्य करते हैं, जैसे ब्रह्मा बाबा। उनको अपने जीवन में कोई दुख-अशान्ति नहीं होगी परन्तु अन्य आत्माओं के दुख-दर्द को मिटाने के लिए संकल्प अवश्य होगा। ऐसे ही जो आत्मायें साकार में रहते देह से न्यारे होकर फरिश्ता स्वरूप में स्थित रहते, उनको भी कर्मभोग के समय दुख-दर्द की महसूसता नाम-मात्र रहती है। उनकी बुद्धि विश्व-कल्याण के कर्तव्य में ही रहती है। इसलिए ही बाबा हमको मन्सा सेवा करने के लिए विशेष प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि मन्सा सेवा सूक्ष्म स्वरूप से ही हो सकती है और उसमें विश्व-सेवा के साथ स्व-सेवा समाई रहती है।

"दैवी परिवार के रिश्तों में भी फरिश्ते नहीं आते। वे तो सदैव न्यारे रहते हैं। रिश्ते सब एक बाप में। ... कोई भाई-बहन के साथ भी रिश्ता जोड़ा तो एक से जरूर वह रिश्ता हल्का होगा क्योंकि बँट जाता है ना। दिल का टुकड़ा-टुकड़ा हो गया तो टूटा हुआ दिल हो गया। टूटे हुए दिल को बाप स्वीकार नहीं करते। यह भी गुह्य रिश्तों की फिलॉसॉफी है। सिवाए एक के और कोई से रिश्ता नहीं। नहीं तो उस सम्बन्ध में वह आत्मा जरूर याद आयेगी।"

अ.बापदादा 21.9.75

"फरिश्ता अर्थात् जिसका आत्माओं से कोई रिश्ता नहीं। प्रीति जुटाना सहज है लेकिन निभाना मुश्किल है। निभाने में ही नम्बर होते हैं। ... जुटाते तो सब हैं लेकिन निभाते कोई-कोई हैं। भक्त भी जुटाते हैं लेकिन निभाते नहीं हैं। बच्चे निभाते हैं लेकिन उनमें भी नम्बरवार। ... अगर अंशमात्र भी कोई का साथ लिया तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं आयेंगे। निभाना तो निभाना।"

अ.बापदादा 21.9.75

"संकल्प में भी कोई आत्मा की स्मृति आई तो उसी सेकेण्ड का भी हिसाब बनता है। तभी तो आठ ही पास होते हैं। विशेष आठ का ही गायन है। जरूर इतनी गुह्य गति होगी। तो फरिश्ता उसको कहा जाता है, जिसके संकल्प में भी कोई न रहे। कोई परिस्थिति में, मज़बूरी में भी नहीं। मजबूरी में भी मज़बूत रहे, तब है फरिश्ता।"

अ.बापदादा 21.9.75

""वाह रे मैं!" का नशा याद है? ऐसे नशे के दिन स्मृति में आते ही नशा चढ़ जाता है।... जैसे कहते हैं - फरिश्तों के पाँव धरती पर नहीं टिकते, ऐसे फरिश्ता बनने वाली आत्मायें भी इस देह अर्थात् धरती पर पाँव नहीं रखती।... अर्थात् फरिश्ता बनने वाली आत्माओं के पाँव अर्थात् बुद्धि इस देह रूपी धरती पर नहीं रह सकती। यह निशानी है फरिश्तेपन की।"

अ.बापदादा 21.09.75

"जितना फरिश्तेपन की स्थिति के समीप जाते जायेंगे, उतना देह रूपी धरती से पाँव स्वत: ही ऊपर होंगे। अगर ऊपर नहीं हैं, धरती पर रहते हैं तो समझो बोझ है। ... फरिश्ता अर्थात् हल्का। फरिश्तों के पाँव धरती से ऊंचे स्वत: ही रहते हैं, करते नहीं हैं। जो हल्का होता है, उसके लिए कहते हैं - यह तो जैसे हवा में उड़ता रहता है। ऐसे ही फरिश्ते भी ऊंची स्थिति में उड़ते हैं।" अ.बापदादा 21.9.75

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और शंकर पार्टी

Q. क्या अभी जो शंकर पार्टी के नाम से संस्था बनाई है, उन आत्माओं को परमात्मा का सहयोग मिलता है ? यदि मिलता है तो कैसे और यदि नहीं मिलता है तो क्यों ?

मिलता है नहीं मिलता है

विचारणीय है - परमात्मा को तो सर्वात्माओं का कल्याण करना है, इसलिए उनको भी सहयोग मिलेगा ही और वे भी यहाँ से योग सीखकर गये हैं तो योग में जरूर निराकार परमात्मा को भी याद करते होंगे और यदि वे परमात्मा को याद करते होंगे तो उनको भी शक्ति तो जरूर मिलेगी क्योंकि परमात्मा को याद करने से आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो उसकी शक्ति जागृत होती ही है। जब एक आतंकवादी का भी परमात्मा को कल्याण करना है तो शंकर पार्टी वालों का क्यों नहीं करेगा। बाबा ने माया को भी बेटी कहा है क्योंकि वह भी मदद करती है कच्चों को बाहर कर देती है। तो शंकर पार्टी वाले भी कच्चों को ही अपने साथ ले जाते हैं।

उनको सहयोग नहीं मिलेगा क्योंकि वे परमात्मा के कार्य में विघ्नरूप बन रहे हैं। बाप का बनकर विघ्न डालते हैं तो वे ट्रेटर हो गये।

यदि हम उनसे घृणा करेंगे तो यह हमारा संस्कार ब्राह्मणपन का है या कलियुगी है। क्या इस संस्कार के कारण हमको परमात्मा पिता की ब्लिस मिलेगी अर्थात् हम अतीन्दिय सुख में रहेंगे ?

बाबा ने कहा है - तुम विश्व कल्याणकारी हो, एक आत्मा के प्रति भी तुम्हारी घृणा की भावना है तो तुमको विश्व कल्याणकारी कैसे कहेंगे ? अब विचार करना है कि हमारा कर्तव्य क्या है और कैसे उसको पूरा करना है।

Q. कोई यज्ञ में बैठे भी यज्ञ का नियम-संयम तोड़ते हैं, विकार में जाते रहते हैं, किन्हीं आत्माओं को सताते हैं - उनमें और शंकर पार्टी वालों में क्या अन्तर है ?

Q. शंकर पार्टी वालों में भी जो पवित्र रहते और जो ज्ञान छोड़ कर चले जाते हैं, शादी करते

पतित बनते तथा जो यज्ञ में रहते भी पतित बनते रहते - इन तीनों में क्या अन्तर है और अपेक्षाकृत कौन श्रेष्ठ हैं, जिनको परमात्मा की ब्लिस मिलेगी ?

शंकर पार्टी वाले हमारे ईश्वरीय कार्य में विघ्न डालते, हमारी कमी-कमजोरी को उजागर करते हैं, परन्तु जो शंकर पार्टी में होते भी पवित्र रहते हैं, उनको परमात्मा से पवित्र रहने का फल तो अवश्य मिलेगा। जैसे सन्यासियों को मिलता है। वे परमात्मा की मुरली को भी जाने-अन्जाने अध्ययन करते ही हैं, तो प्रकृति के नियमानुसार उनको परमात्मा की याद भी अवश्य रहती होगी। जब उनको जागृति आयेगी तो वे जब पुन: इस ईश्वरीय सम्बन्ध में आयेंगे तो उनको सहज ही आगे बढ़ने का चान्स मिलेगा परन्तु जो यज्ञ में विघ्न डाला, उसका भी दण्ड भोगना पड़ेगा परन्तु विचारणीय यह है कि वे विघ्न डालने का संकल्प लेकर विघ्न डालते या नासमझी से ऐसा करते हैं या हमारी कमी-कमजोरी को उजागर करते, इसलिए हमको विघ्न लगता है।

यह भी विचारणीय है कि हमारे जिज्ञासु शंकर पार्टी में जाते क्यों हैं, जबकि उनके पास अपना कोई ज्ञान नहीं है, हमारे ब्रह्मा मुख द्वारा दिये गये ईश्वरीय ज्ञान को ही उलट-पुलट कर समझाते हैं। शंकर पार्टी वालों का अपना कोई ज्ञान नहीं है, वे परमात्मा के द्वारा ब्रह्मा मुख से दिये गये ज्ञान को ही अपनी समझ अनुसार उलट-पुलट कर सुनाते हैं।

Q. ज्ञान में आत्माओं को प्रत्यक्ष या तन्त्र-मन्त्र से सताने वाली, लोभ-मोह-अहंकार वश गलत निर्णय देकर आत्माओं को जीवघात, ज्ञान को छोड़कर शादी करने को, शंकर पार्टी में जाने के लिए बाध्य करने वाली और उनको शरण देकर ऐसी स्थिति से बचाने वाली शंकर पार्टी की भूमिका में क्या अन्तर है ?

वास्तव में तीनों का काम तो गलत ही है, तीनों के ही कर्म पाप-कर्म हैं परन्तु किसके कर्मों को अधिक पाप-कर्म कहें, वह निर्णय करने वाले की समझ पर निर्भर है।

Q. जीवघात करना, ज्ञान से मरना अर्थात् ज्ञान को छोड़ देना, शादी करना, विकारी बनना और शंकर पार्टी में जाना - तीनों खराब हैं परन्तु तीनों ज्यादा खराब क्या है अर्थात् नम्बरवार स्थिति क्या है ?

हमारे दृष्टिकोण हैं तो तीनों ही खराब परन्तु जीवघात सबसे खराब है, जो आत्मा की अज्ञानता का परिचायक है, उसके बाद है ज्ञान से मरना अर्थात् शादी करना और विकारी बनना और उसके बाद है शंकर पार्टी आदि में जाना। यदि कोई शंकर पार्टी आदि में जाता है तो सिद्ध होता है कि वह आत्म-कल्याण का संकल्प तो रखता ही है, उसके लिए पुरुषार्थ भी करना चाहता है, परन्तु किसी कारणवश वह देश-काल और परिस्थिति वश अपने को एडजस्ट नहीं

कर पाता है, इसलिए असन्तुष्ट होकर शंकर पार्टी आदि में चला जाता है। शंकर पार्टी के क्रिया-कलापों को देखते और सुनते हैं, उससे यह बात तो स्पष्ट होती ही है कि उनमें अधिकतर का अपने आत्म-कल्याण का संकल्प रखते ही हैं और बाबा की निन्दा भी कम करते हैं परन्तु नासमझी से यज्ञ में आने वाले जिज्ञासुओं को ज्ञान की बातों को उलट-पुलट कर समझाकर अपना बनाने का पुरुषार्थ करते हैं। यदि कोई किसी कारण से शंकर पार्टी में चला जाता है परन्तु वह अपने आत्म-कल्याण का संकल्प तो रखता ही है, विकारी नहीं बनता है, परमात्मा के प्रति भावना भी रहती है, इसलिए वह अपेक्षाकृत जल्दी वापस यज्ञ में आकर पुन: पुरुषार्थ कर सकता है। परन्तु यह भी विधि का विधान ही कहेंगे कि वे ड्रामा में नूँधे हुए अपने पार्ट को बजाने बिगर रह नहीं सकते। उनको वह पार्ट बजाना ही है और उस अनुसार फल भी पाना ही है।

इस सम्बन्ध में यज्ञ में भी सुधार होना ही चाहिए और कोई केस सामने आता है तो उसके सम्बन्ध में पहले अच्छी रीति इन्वेस्टीगेट करके यथार्थ निर्णय लिया जाये तो ऐसी घटनायें कम हो सकती हैं।

Q. वर्तमान परिपेक्ष में अर्थात् हम परमात्मा की डॉयरेक्ट सन्तान है, हमको विश्व-नाटक का ज्ञान है, आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार के लिए हमको बाबा ने अपना बनाया है, तो हमारा कर्तव्य क्या है, जिससे हमको परमात्मा की ब्लिस मिले अर्थात् हम सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहें और दूसरों को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करायें ?

वास्तविकता पर विचार किया जाये तो यह सृष्टि एक नाटक है अर्थात् एक खेल है, जिसमें विभिन्न प्रकार के खेल चलते हैं, उनमें शंकर पार्टी का भी खेल हैं, इसलिए इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर इन सब खेलों को साक्षी होकर देखना और सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना, कल्याण की भावना रखना ही ज्ञानी-योगी आत्माओं का कर्तव्य है और स्वयं को सम्पन्न-सम्पूर्ण बनाने का पुरुषार्थ कर जीवनमुक्त स्थिति में रहकर इस नाटक का आनन्द लेना और अन्य आत्माओं को यथा-शक्ति अनुभव कराना ही हमारे अधिकार क्षेत्र में है। किसको दोष देना आत्मा की अज्ञानता का प्रतीक है और एक प्रकार का विकर्म है, जिसका पश्चाताप आत्मा को करना ही होता है क्योंकि हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, इसलिए हर आत्मा निर्दोष है। साकार बाबा और अव्यक्त बापदादा ने भी अनेकानेक बार ये बात कही है।

कई बार बाबा ने यह भी कहा है कि तुम आत्मायें विश्व-कल्याणकारी हो, एक भी आत्मा के प्रति तुम्हारे अन्दर घृणा-द्वेष भाव है तो तुमको विश्व-कल्याणकारी कैसे कहेंगे !

हमको ज्ञान सागर परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिला है, हम जानते हैं - हर आत्मा ड्रामानुसार अपना अनादि-अविनाशी नूँधा हुआ पार्ट बजा रही है और बजाना ही है तथा उस अनुसार उसको फल भी भोगना ही है। किसके साथ घृणा रखने से उस पर विजय नहीं पाई जा सकती है क्योंकि घृणा से घृणा पर विजय नहीं पायी जा सकती है और किससे घृणा रखना ब्राह्मणपन का गुण-धर्म नहीं है।

विचारणीय यह है कि यह हमारा ईश्वरीय जीवन सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है, सारे विश्व और सारे कल्प का आधारभूत है, फिर भी कोई इसको छोड़कर आधारहीन स्थान पर आश्रय क्यों लेते हैं, उसके कारण को जानकर, उसका निवारण करने में ही हमारी विजय है। प्रोटेक्शन में ही हमारी विजय है, अटेक में नहीं। अटेक में तो हम अटेक करते ही हार जाते हैं क्योंकि अटेक करना हमारा कर्तव्य नहीं है और हमको परमात्मा की श्रीमत भी नहीं है।

शत्रु के पतन में हमारा उत्थान नहीं है, लेकिन अपने उत्थान का पुरुषार्थ करने में हमारा उत्थान है क्योंकि इस विश्व-नाटक में हर आत्मा स्वतन्त्र है और हर आत्मा अपने पुरुषार्थ का ही फल प्राप्त करती है। जो शत्रु के पतन में खुश होते हैं, वे अन्धकार में हैं क्योंकि इस विश्व में ज्ञानी आत्मा का कोई शत्रु है ही नहीं। किसको शत्रु समझने और उसके पतन में खुश होने वाले कभी भी यथार्थ पुरुषार्थ कर इस संगमयुग की परम-प्राप्तियों का सुख अनुभव नहीं कर सकते हैं। दूसरे के पतन में खुश होना भी पाप-कर्म है।

यदि कोई हमारी किसी कमी-कमजोरी की ओर इशारा करते हैं तो हमारा परम कर्तव्य है कि हम उस पर विचार अवश्य करें और यदि सत्य है तो हम खुले दिल से उसको स्वीकार करके, उसका सुधार करेंगे, उसमें परिवर्तन करेंगे, तब ही हम अपनी एडवान्स स्टेज बना सकेंगे और एडवान्स स्टेज का परम-सुख अनुभव कर सकेंगे, जिसके लिए बाबा ने कहा - तुम ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहो, उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण होकर इस ईश्वरीय जीवन का आनन्द अनुभव करो।

ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान बाबा ने कहा है - यदि किसी आत्मा का सुधार करने की अपने में शक्ति अनुभव करते हो तो करने का पुरुषार्थ करो, अन्यथा तुम साक्षी हो जाओ और अपना पुरुषार्थ करो, अपने स्वमान में रहो।

जो हुआ, वह सब ड्रामा में था, कल्प पहले भी हुआ था, तब ही अब भी हुआ है और कल्प-कल्प होगा तथा जो होगा, वह अच्छा ही होगा, इसलिए इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है, इसलिए सारे खेल को साक्षी होकर देखना है और सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखते हुए, अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करते रहना है।

"(हर संकल्प-बोल-कर्म में सक्सेसफुल) इसको ही प्रत्यक्ष फल कहा जाता है। इस समय का प्रत्यक्ष फल आपके भविष्य फल को प्रख्यात करेगा। ऐसे नहीं कि भविष्य फल के आधार पर अब के प्रत्यक्ष फल को अनुभव करने से वंचित रह जाओ। ... लेकिन भविष्य की झलक, भविष्य की प्रॉलब्ध व अन्तिम समय पर प्रसिद्ध होने वाली आत्मा की चमक अब से ही सर्व को अनुभव होनी चाहिए, इसलिए पहले प्रत्यक्ष फल और साथ में भविष्य फल। प्रत्यक्ष फल नहीं तो भविष्य फल भी नहीं। ... यह ईश्वरीय लॉ है कि स्वयं को किसी भी प्रकार से सिद्ध करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता।" अ.बापदादा 10.9.75

Q. शंकर पार्टी वालों ने यहाँ आबू में आकर जो अचल सम्पत्ति बनाई है और वे जिस भाव-भावना से आये हैं, तो क्या वे इसे छोड़कर चले जायेंगे अर्थात् हमारा दृष्टिकोण क्या है?

जैसा हमारा उनके प्रति दृष्टिकोण होगा, उस अनुसार ही हमारा उनके साथ व्यवहार होगा। वास्तविकता पर विचार करें तो जब वे इतनी हिम्मत करके यहाँ आये हैं और यहाँ अचल सम्पत्ति बनाई है, उसको छोड़कर चले जाना तो सम्भव नहीं लगता है। हाँ, हमारे सार्थक व्यवहार से उनमें परिवर्तन आ सकता है और वे सही रास्ते पर आ सकते हैं। भले ही हम उनकी तुलना में बहुत बड़ी संख्या में हैं परन्तु हम लड़कर उन पर विजय नहीं पा सकते हैं, अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो सकते हैं और बाबा ने भी हमको ऐसी कोई श्रीमत भी नहीं दी है। ऐसी ही स्थिति अन्य शहरों में, जहाँ शंकर पार्टी वालों का प्रभाव है, उन्होंने ने वहाँ भी अचल सम्पत्ति बनाई है।हमको अपने भाई-बहनों में यथार्थ ज्ञान की जागृति लानी होगी, तब ही हम अपने लक्ष्य में सफल हो सकते हैं। हमको अपने स्वमान की गरिमा को ध्यान में रखते हुए विश्व-कल्याण के कर्तव्य में रहना है और परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति करनी है। विधि और विधाता के विधान को ध्यान में रखते हुए हमको भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु हमारा ऐसा कोई कर्तव्य नहीं होना चाहिए, जिससे परमात्मा पिता, आदि पिता ब्रह्मा बाबा के पद की गरिमा को कोई बट्टा लगे क्योंकि परमात्मा सर्वात्माओं का पिता सर्व का कल्याणकारी, न्यायकारी, समदर्शी है; ब्रह्मा बाबा कल्प-वृक्ष का आदि पिता है, सर्व मनुष्यायें उनके बच्चे हैं और सबके प्रति उनका स्नेह और सहयोग है; विश्व-नाटक के नियमानुसार प्रकृति को हर आत्मा को उसके कर्मों अनुसार फल देना ही है क्योंकि यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। ऐसा हमारा विश्वास और अनुभव है। तीनों में किसी से पक्षपातपूर्ण सहयोग की आशा रखना हमारी बड़ी भूल होगी।

यज्ञ की स्थापना और सेवा के आदि के समय और परिस्थितियों पर विचार करें तो ये परिस्थिति तो कुछ भी नहीं है परन्तु उन परिस्थितियों में हमारी विजय का आधार क्या रहा, वह महत्वपूर्ण है। उस समय का जिन्होंने भी सामना किया और विजय पायी, उसका आधार उनका योगबल ही रहा। हमको बाबा ने योगबल से विजय पाने की श्रीमत दी है, उससे ही हमारी विजय हुई है और अभी भी निश्चित है। भले इस समय हमारे पास बाहुबल के अनेकानेक साधन अर्थात् धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क आदि हैं परन्तु उनसे विजय पाने की कल्पना करना एक भूल ही होगी। बाबा ने हमको प्रोटेक्ट करने की तो श्रीमत दी है परन्तु अटेक करने की श्रीमत नहीं दी है, इसके अनेकानेक उदाहरण यज्ञ के इतिहास में हैं। प्रोटेक्शन में हमारी सफलता का आधार भी योगबल ही है।

जो स्वयं सम्पन्न-सम्पूर्ण, जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में होगा, वही औरों को भी अनुभव करा सकेगा।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और दादी जी

बाबा ने दादी जी के देह त्याग के समय अर्थात् एडवान्स पार्टी में जाने के समय एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म के विषय में अनेक प्रकार के राज़ बताये, जिनके विषय में यहाँ कुछ विचार किया गया है। बाबा ने दादी जी के विषय में जो बताया है, उसको स्वयं में धारण करेंगे, तब ही हमारी एडवान्स स्टेज बनेंगी, जो एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म का आधार है। उन सब रहस्यों को धारण करने-कराने के लिए, उनको जानना अति आवश्यक है, उसके लिए ही यहाँ पर उनमें कुछ को लिखा गया है और विचार किया गया है।

जैसे और सभी बड़ी दादियाँ और भाई अपनी एडवान्स स्टेज को बनाकर नये विश्व के निर्माणार्थ एडवान्स पार्टी में गये हैं, वैसे दादी जी भी अपनी एडवान्स स्टेज को बनाकर अर्थात् संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य को पूरा करके एडवान्स पार्टी में गई हैं, अपना एडवान्स पार्टी का कर्तव्य पूरा करने के लिए और एडवान्स पार्टी का कर्तव्य पूरा करके एडवान्स जन्म लेना है। इसीलिए बाबा ने उपर्युक्त तीन शब्द अर्थात् एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म की बात कही है।

"आप सबकी प्यारी दादी अपनी इच्छा के कारण बहुत प्यार से निर्संकल्प समाधि में वा साधना में रहते हुए स्वेच्छा से बाप समान तीव्र बेहद की सेवा का अनुभव करने के लिए साथी-साक्षी और समान स्थिति का अनुभव करने के लिए बाप के साथ वतन में पहुँच गई।"

अ.बापदादा 6.9.07

"सभी ने अनुभव किया कि आदि से अन्त तक निस्वार्थ प्यार, निर्विकल्प साधना, परिस्थिति और स्तुति दोनों से न्यारी और सर्व की प्यारी जीवन का प्रभाव चारो ओर बिना मेहनत के बिना कहे देश-विदेश में पवित्र प्यार का वायब्रेशन स्वत: और सहज फैल गया। ... यह है प्रत्यक्ष स्नेही, सहयोगी, समान स्थिति का प्रभाव।"

अ.बापदादा 6.9.07

"यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फर्स्ट चेप्टर, छोटा सा चेप्टर आरम्भ हुआ है। ... दादी का एक ही उमंग था कि कोई नवीनता करें, जो सेवा का विशाल रूप हो, तो स्वत: ही सहज ही विशाल परिचय का झण्डा लहरा रहा है। अब आप सबको प्यार का स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाकर इस प्रत्यक्षता के झण्डे को ऊंचा लहराना है।"

अ.बापदादा 6.9.07

"दादी ने प्रत्यक्षता के झण्डे का प्रत्यक्षता के पर्दे का स्वीच ऑन करने के लिए बटन हाथ में पकड़ा है, तो आप सब साथी हो ना। बहुत प्यार है ना दादी से तो जैसे दादी स्वेच्छा से एवर-रेडी, नष्टोमोहा बन गई। सभी सामने खड़े थे, फिर भी निर्मोही मूर्त उड़ गई। ऐसे, जैसे दादी ने फॉलो ब्रह्मा बाप किया, अचानक के पार्ट में पास हो गई। यह अन्तिम पाठ का आप स्नेही प्रेमी आत्माओं को भी इशारा देकर गई।"

अ.बापदादा 6.9.07

"आप सोचो प्रत्यक्षता में हमें कैसे सहयोगी बनना है? ... बटन खोलने में देरी नहीं लगेगी लेकिन प्रत्यक्षता के झण्डे को ऊंचा लहराने वाले प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने के पहले विशेष पार्टधारी साथी एवर-रेडी हैं? ... सभी विश्व की स्टेज के विशेष पार्टधारी हैं। सारे विश्व की नज़र अब दादी की प्रत्यक्षता के साथ आप सबके तरफ है।"

अ.बापदादा 6.9.07

"इसमें संगठन की शक्ति चाहिए। यह रुहानी किला है। किले की एक-एक ईट जिम्मेवार है। ... एक ईट भी हिलती है तो उसका प्रभाव पड़ता है। ... दादी कहती है कल की बातें छोड़ो, आज भी नहीं, अब प्रत्यक्षता का झण्डा ऊंचा करने वाले ऊंची स्थिति का अपना सम्पन्न स्वरूप दिखाओ।"

अ.बापदादा 6.9.07

"सम्पन्न बनने के लिए कुछ भी परिवर्तन करना पड़े, सहन करना पड़े, रहम की भावना रखनी पड़े, निर्मल वाणी बनानी पड़े, शुभ भावना, शुभ कामना की नेचुरल नेचर बनानी पड़े ... तैयार हैं? ... यह सब होगा लेकिन मुझे क्या करना है, वह सोचना है।"

अ.बापदादा 6.9.07

"निर्मोही बन गई। ... अगर किसकी कोई स्मृति होती है तो स्वांस प्रगट हो जाता है ... यह हिस्ट्री में पहला एग्जॉम्पुल है। ... ऐसे छूट्टी किसने भी नहीं ली है।"

अ.बापदादा 6.9.07

"प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का दिन अब समीप लाना है। समय आने पर नहीं, लेकिन स्व-परिवर्तन से समय को समीप लाना है।" अ.बापदादा 6.9.07

"दादी के 12 दिन समाप्त हो रहे हैं, दादी को साकार वतन में विशेष न्यारा और प्यारा इसेन्शियल कार्य के लिए निमित्तमात्र पार्ट बजाना पड़ रहा है। लेकिन दादी का जन्म और कार्य अति न्यारा है, वह फिर आकर विस्तार से सुनायेंगे। बापदादा को भी ड्रामा का नूँधा हुआ पार्ट बजाना पड़ता है और बजवाना पड़ता है।"

अ.बापदादा 6.9.07

"दादी के तीन शब्द सदा याद रखना - निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। यह तीन शब्द हर घड़ी, हर कार्य को आरम्भ करने के पहले याद करना। कार्य भले बदले लेकिन यह तीन शब्दों की स्मृति नहीं बदले। यह तीन शब्द ऐसे समझना जैसे अभी बापदादा, दीदी, दादी तीन हैं ना। ... तो बहुत जल्दी और सहज दादी के समान बन जायेंगे।"

अ.बापदादा 6.9.07

Q. निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी के लिए जो दादी ने कहा है, वह धारणा कब और कैसे होगी ?

निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी की धारणा के लिए विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और बाप के साथ सतत् योग का सफल अभ्यास अति आवश्यक है क्योंकि बिना विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान के निमित्त भाव सम्भव नहीं है और निर्मान और निर्मल वाणी के लिए आत्मिक शक्ति अति आवश्यक है, जो बिना योग के सम्भव नहीं है। बिना यथार्थ ज्ञान के यदि हठ से हम ये स्थिति बनाते भी हैं तो वह स्थाई नहीं होगी अर्थात् थोड़े समय रहेगी और कुछ समय के बाद हम उससे विचलित हो जायेंगे परन्तु जब हम इस स्थिति को यथार्थ ज्ञान की धारणा से बनायेंगे तो वह स्थाई रहेगी।

"हाँ जी करो तो ताक़त आ जायेगी। करना ही है, कोई कितना भी रोके, मुझे करना ही है। दादी की सखी है ना, तो दादी ने ना कभी नहीं किया। हर कार्य में हाँ जी, हाँ जी, हाँ जी किया। ऐसे ही करना।" अ.बापदादा 6.9.07 मनोहर दादी से

"अब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय छिपा हुआ नहीं रहेगा। एक-एक एक्टिविटी तरफ खुली नज़र हो गई है। उल्टे वाले उल्टा देखेंगे, सुल्टे वाले सुल्टा देखेंगे लेकिन सबकी विशेष नज़र

पड़ गई है। तो उसी अनुसार आप सबको मिलकर सभी स्थानों के वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाना होगा क्योंकि दादी ने विश्व विद्यालय को विश्व की नज़र में लाया है।"

अ.बापदादा 6.9.07 तीन मुख्य भाइयों से

"याद तो आयेगी ना। बापदादा के वतन से जायेगी तो बापदादा को याद नहीं आयेगी! आयेगी। लेकिन सेवा है ना। जग की दादी है ना, सिर्फ मधुवन की तो नहीं है ना। ... प्यार का रिटर्न यही होता है - समान बनना। ... अभी वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने की सेवा में ऐसे ही साथी बनना, जैसे दादी की सेवा में साथी रहे। ... दादी का प्रत्यक्ष स्नेह आपकी चलन से दिखाई देगा।"

अ.बापदादा 6.9.07 दादी का सेवाधारी ग्रुप

"मुझे वायुण्डल बनाना है ... मीडिया ने चारो ओर स्पष्ट कर लिया है। अभी सबकी नज़र इधर है। ... किले को मजबूत करना है। आप निमित्त हो। ... दादी के साथ आप लोगों ने भी एवर-रेडी का पाठ तो पढ़ लिया ना। सभी को समझना चाहिए कि मैं निमित्त हूँ, वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने के लिए।"

अ.बापदादा 6.9.07 शक्ति सेना से

"दादी ने कहा - मुझे बाबा भेज रहा है लेकिन मैंने 12 दिन में बहुत-बहुत बढ़िया अनुभव किया ... और कहा - अभी बाबा भेज रहा है। मुझे यही है कि मेरा संकल्प था कि मैं जन्म नहीं लूँ लेकिन बाबा ने मुझे रहस्य समझाया है, इसलिए मैं खुशी से जा रही हूँ। ... मैं बाबा के राज़ को समझ गई हूँ इसलिए मैं खुशी से जा रही है।"

अ.बापदादा 6.9.07 बापदादा के वतन वापस जाने के बाद गुल्जार दादी ने वतन से आकर वतन का सन्देश

"दादी बाबा को देखकर बहुत मीठा मुस्कराई और कहा - बाबा आपने क्या खेल रचाया है? ... तो बाबा ने कहा मैंने खेल नहीं रचाया, बने हुए अनादि खेल में मैं भी खेल रहा हूँ, आप भी खेल रही हो।"

6.9.07 वतन का सन्देश

पाँच तत्व, एडवान्स पार्टी, ब्राह्मण परिवार और देवतायें ... मम्मा और दीदी ने मिलकर दादी को ताज पहनाया। वह ताज भी लाइट का था ... फिर बाबा ने कहा - ओ मेरे वफादार, फरमानवरदार, ईमानदार, सुपात्र और सबूत देने वाले बच्चे, बाबा ने आपको इनाम दिया है कि आप कहाँ भी रहेंगी तो वतन में आती जाती रहेंगी। तो दादी ने कहा बाबा - यही इनाम मुझे चाहिए। ... बाबा ने कहा - बच्ची न वतन छोड़ना और न मधुबन को छोड़ना।

6.9.07 वतन का सन्देश

बाबा ने सुनाया - दादी बच्चे के रूप में जायेगी ... अभी तो वतन में थी। दादी जहाँ जन्म लेगी, उसके माँ-बाप बहुत भक्ति-भावना वाले हैं और बड़ी आयु वाले हैं, उनको बच्चा होने की कोई

सम्भावना भी नहीं है। जब गर्भ में हलचल होगी तो माँ ऐसा अनुभव करेगी कि कुछ होने वाला है। वे ऐसे समझेंगे कि भगवान ने कोई अवतार भेजा है, बच्चा नहीं अवतार भेजा है। ... इस रूप से दादी एडवान्स पार्टी को, साइन्स वालों को और आप ब्राह्मण आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करने की सदा प्रेरणा देती रहेगी। ...बाबा गले से लगे, दृष्टि दी और दादी हम सबके बीच से वतन से चली गई। 6.9.07 वतन का सन्देश

हमसे भी दादी ने पूछा कैसे हो, दादी जानकी के लिए पूछा कैसे है, भारी तो नहीं हो गई है? बाबा ने कहा सभी को मेरा रूप समझकर सम्मान देना और स्वमान के अधिकारी बनाना। ऐसे दादी जानकी से खास मिली। ... मेरे से भी मिली और मेरे से कहा - तुम सभी का हालचाल पूछती रहना। 6.9.07 वतन का सन्देश

Q. बापदादा ने दादी को कौनसा राज़ बताया होगा, जिससे दादी खुशी से जन्म लेने को राज़ी हो गई?

1. एडवान्स पार्टी वालों को भी वातावरण और साधन-सुविधायें ब्राह्मणों से श्रेष्ठ ही मिलेंगी क्योंकि वे चढ़ती कला में ही जायेंगे, भले वहाँ उनको ये ज्ञान स्पष्ट नहीं होगा।

2. विश्व-नाटक में सारे कल्प जन्म लेना और देह का त्याग करना ही पड़ता है, उससे कोई आत्मा छूट नहीं सकती है। अभी तो ये जन्म ईश्वरीय सेवार्थ अर्थात् विश्व-कल्यार्थ है, तो इसमें अपना और सारे विश्व दोनों का ही कल्याण समाया हुआ है। ये संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं है कि हम को जन्म न लेना पड़े या हम जन्म न लें।

3. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म भी कलियुगी मनुष्यों के सदृश्य नहीं होगा परन्तु उससे कुछ भिन्न ही होगा अर्थात् उनको जन्म देने वाले परिवार बहुत विकारी नहीं होंगे। नाममात्र सन्तानोत्पत्ति के लिए विकार में जायेंगे। उनके माता-पिता चरित्रवान और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। इसलिए उनको गर्भ में कोई दुख-दर्द आदि नहीं होगा या नाममात्र ही होगा।

4. एडवान्स पार्टी वाले ही सतयुग के आदि में एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देने के निमित्त बनेंगे या बनायेंगे, इसलिए वे ही योगबल से जन्म देने के विधि-विधान का अविष्कार करेंगे। वह काम एडवान्स पार्टी में जाकर ही करना सम्भव है।

5. साइन्स वाले विनाश की तैयारी तो कर रहे हैं परन्तु उनको जब ये ज्ञान होगा, जागृति होगी कि भविष्य नई दुनिया स्वर्ग होगा तो उसके लिए भी तैयारी करेंगे, जाने-अन्जाने उनको वह प्रेरणा देने वाले भी एडवान्स पार्टी वाले ही होंगे क्योंकि एडवान्स पार्टी वालों को स्पष्ट ज्ञान नहीं है, परन्तु उनमें ज्ञान के संस्कार हैं और देश-काल और वातावरण के अनुसार वे उनके सम्पर्क

में आयेंगे।

यज्ञ की स्थापना के समय के जो बहनें-भाई एडवान्स पार्टी में गये, वे सब मिलते हैं लेकिन वहाँ उनको ये पहचान नहीं है ... बाबा ने कहा जैसे आपने यहाँ स्थापना की, ऐसे सतयुग की रचना के निमित्त भी आपको बनना है। ... वतन में मिलते हैं तो यह स्मृति आती है कि हमको स्थापना के निमित्त बनना है। वहाँ यह स्मृति नहीं रहती।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

"एडवान्स पार्टी वाले भी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। ... वे भी आप लोगों का आवाह्न कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। उनमें दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म लगन है लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है। यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। अगर ज्ञान इमर्ज हो जाये तो सभी भागकर मधुवन में आ जायें। ... ज्ञान की शक्ति है, शक्ति कम नहीं हुई है, परन्तु ज्ञान स्पष्ट नहीं है। ... महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा।"

अ.बापदादा 19.3.2000

6. ब्राह्मण परिवार की भी वृद्धि तो होनी ही है और उसमें नियम-संयम अलबेले न हो जायें, नई आत्मायें ब्राह्मण बनें, उनको उसकी प्रेरणा देने वाले या सहयोग करने वाले एडवान्स पार्टी वाले होंगे।

7. सतयुग की आदि की जनसंख्या 9,16,108 को जन्म देने के लिए एडवान्स पार्टी वाले ही निमित्त होंगे या निमित्त बनायेंगे और वे एक बच्चा और एक बच्ची को जन्म दें तो भी उनकी संख्या कम से कम 9,16,108 तो होनी ही चाहिए। इसलिए एडवान्स पार्टी में आत्मायें जायेंगी अवश्य, तब तो नई दुनिया की स्थापना का कार्य पूरा होगा।

8. सूक्ष्म वतन में रहकर सेवा करने का पार्ट एक ब्रह्मा बाप का ही है क्योंकि वे शिवबाबा के माध्यम हैं। इसलिए ब्रह्मा का आदि से ही सूक्ष्म में साक्षात्कार होता रहा है। परमधाम का गेट भी शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाबा को ही खोलना है, उनके पहले कोई आत्मा परमधाम कैसे जा सकती है, इसलिए अभी जो शरीर छोड़ते हैं, उनको एडवान्स पार्टी में जाना ही है।

"समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप समय का इन्तजार नहीं करना। आप समाप्ति के समय को जितना समीप लाना चाहो, ला सकते हो। समय आने पर तैयार हो जायेंगे, यह आप ब्राह्मणों का संकल्प नहीं हो। आप समय को समीप लाओ। ... समाप्ति के समय को समीप लाना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न-सम्पूर्ण बनाना क्योंकि बापदादा अकेले तो नहीं जायेगा, बच्चों सहित जायेगा।"

अ.बापदादा 15.12.10

9. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म भी कर्म-बन्धन का नहीं कहेंगे, कर्म-सम्बन्ध और सेवा के सम्बन्ध का ही कहेंगे। कर्म-बन्धन तो नाममात्र ही है, मुख्य है सेवा का पार्ट, सेवा का बन्धन। वह पार्ट भी बजाना ही होगा।

10. बापदादा ने दादी को अवश्य कहा होगा कि यदि आपको बाबा वतन में रखता है तो ब्राह्मण आत्मायें, जिनको आपसे अति प्यार है, वे आपको ही याद करने लगेंगी और शिवबाबा भूल जायेगा, जिससे उनका अहित ही होगा क्योंकि आत्मा पावन एक शिवबाबा की याद से बनती है। इस सम्बन्ध में साकार में भी बाबा ने अनेक प्रकार से महावाक्य उच्चारण किये हैं।

11. बाबा ने दादी को वह परिवार भी दिखाया होगा, जहाँ उनको जन्म लेना है, इसलिए उस परिवार की भक्ति भावना को देखकर और जो कर्तव्य दादी जी को करना है, उसके अनुकूल वातावरण को देखकर दादी जी ने जन्म लेना स्वीकार किया होगा।

12. जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में दादी जी ने विशेष पार्ट बजाया, मध्य में भी सेवा के आदि में विशेष पार्ट बजाया, ऐसे ही नये विश्व की रचना में भी दादी जी को विशेष पार्ट बजाना है, उसके लिए विधि-विधान निश्चित करने हैं, उनकी नींव डालने के लिए भी दादी जी जैसी शक्तिशाली विशेष आत्मा की आवश्यकता है, वह बात दादी जी को बाबा ने बताई होगी, तो उसके महत्व को समझकर दादी जी ने स्वेच्छा से जन्म लेना स्वीकार कर लिया होगा।

"सतयुग में कोई अपवित्र नहीं होते और वहाँ बच्चे का इन्तजार भी नहीं होता है। यहाँ तो बच्चे का इन्तजार करते हैं। वहाँ समय अनुसार आपही साक्षात्कार होता है। मनुष्य तो कहते हैं - यह कैसे हो सकता है। भला यहाँ के सम्पूर्ण विकारी मनुष्य कैसे समझ सकते कि वहाँ निर्विकारी होते हैं। वहाँ विकार से जन्म नहीं होता है।"

सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

13. अभी तो विश्व में कहाँ भी राजाई नहीं है और सतयुग में राज-व्यवस्था राजाई (Kingdomship) की होती है तो फिर से राजाई स्थापन करने के लिए भी किसी आत्मा को निमित्त बनना ही है, वह काम भी दादी को करना है, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने दादी को बताया होगा। वास्तविकता को विचार करें तो जैसी यज्ञ की कुछ आत्माओं की मान्यता है कि जो पुराने राजघराने हैं, उनसे सतयुग की राजाई की कलम लगेगी परन्तु यह बात जंचती नहीं है क्योंकि उनके जीवन व्यवहार, खानपान को देखें तो साधारण व्यक्तियों से भी पतित है। ऐसे में उनके पास ब्राह्मण जीवन से गई एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें कैसे जन्म ले सकती हैं, इसलिए सतयुग की राजाई की स्थापना किन्हीं सुशील और चरित्रवान भक्त आत्माओं के द्वारा ही होनी चाहिए, इसलिए ही बाबा ने दादी जी को भक्त-आत्माओं के घर में भेजने अर्थात् जन्म

लेने की बात कही है।

14. बाबा ने इस बात को भी बताया है कि अन्त में विनाश के समय बहुत हलचल होगी, हाहाकार होगा, उस समय एडवान्स पार्टी को उमंग-उत्साह में लाने, उनको हिम्मत दिलाने के लिए कोई शक्तिशाली आत्मा चाहिए, इसलिए उनका सहारा बनने में भी दादी जी को विशेष पार्ट बजाना है, वह बात दादी जी को बाबा ने बताई होगी, उस बात की महत्ता को समझकर दादी जी ने जन्म लेना आवश्यक समझा होगा और जन्म लेना स्वीकार कर लिया होगा।

15. अन्त में अव्यक्त बापदादा का पार्ट भी पूरा हो जायेगा क्योंकि ब्रह्मा बाबा को भी बच्चे के रूप में जन्म लेना होगा और निराकार बाप तो परमधाम में बैठ जायेगा, इसलिए उस समय एडवान्स पार्टी को किसी विशेषात्मा के सहयोग की आवश्यकता होगी, वह पार्ट भी दादी जी को बजाना है, वह बात भी दादी को बाबा ने अवश्य बताई होगी।

16. साधारण रूप में और विशेष एडवान्स पार्टी के रूप में जो आत्मायें जिन संस्कारों के साथ यहाँ से जाती हैं, उनमें वे गुण-संस्कार वहाँ अर्थात् गर्भ के समय और बाद में भी अवश्य रहते हैं। यथा - एडवान्स में जो आत्मायें यहाँ देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करती हैं और वे वहाँ भी इस गुण के आधार पर गर्भ में और जन्म लेने के बाद उनमें वह संस्कार रहता है, जिसके कारण वे कहीं भी जाकर कर्म करने में, सेवा करने में समर्थ होती हैं। इसलिए दादी भी गर्भ में रहते और जन्म लेने के बाद उस गुण-संस्कार के आधार पर कर्म करने में समर्थ होगी और विश्व की विभिन्न आत्माओं की सेवा करेगी।

17. देश-काल-परिस्थितियों, विनाश और नई दुनिया की स्थापना अर्थात् स्थूल-सूक्ष्म निर्माण कार्य, योगबल से जन्म लेने-देने आदि की बातों पर विचार करें तो ऐसा लगता है कि सतयुग के आदि में आने वाली सभी आत्माओं को एडवान्स जन्म लेना ही पड़ेगा। इसके बाद ही वे दैवी जीवन में प्रवेश करेंगी।

18. कलियुग में है कर्म-बन्धन का जन्म, सतयुग में कर्म-सम्बन्ध का जन्म होता है और संगमयुग पर सेवा के सम्बन्ध का जन्म होता है, जिसको एडवान्स पार्टी कहा जाता है। ये सेवा के सम्बन्ध का जन्म भी अति न्यारा और अति प्यारा है, जिसका महत्व सतयुग के जन्म से भी श्रेष्ठ है। सेवा के बन्धन से एडवान्स पार्टी में जो आत्मायें जाती हैं, वे पूर्व जन्म में जो परमात्मा के साथ से और ज्ञान की धारणा से देह से न्यारे होने का अभ्यास किया है, उनकी वह महारथ उनको एडवान्स पार्टी के जन्म में प्राप्त रहती है, जिससे वे एडवान्स पार्टी का कार्य सहज रीति कर सकते हैं। 27.9.07 के अव्यक्त सन्देश में भी बापदादा ने इस सेवा के सम्बन्ध के जन्म को विशेष बताया है।

19. विश्व-सेवा के आदि के समय यज्ञ से कोई भी बाबा को छोड़कर सेवा के लिए जाना नहीं चाहता था परन्तु जब यज्ञ में आवश्यकता हुई और बाबा ने सेवा के महत्व को समझाया तो सभी सेवा के लिए दिल से गये, ऐसे ही बाबा ने जब दादी जी को एडवान्स पार्टी में जन्म लेकर एडवान्स कार्य के महत्व और आवश्यकता को अनुभव कराया होगा, तब दादी स्वेच्छा से एडवान्स जन्म लेकर एडवान्स कार्य करने के लिए जाने को तैयार हो गई होंगी।

ये सब बातें दादी जैसी ज्ञानी-योगी आत्मा की बुद्धि में पहले से भी अवश्य होंगी परन्तु समय अनुसार ऐसी बातें मर्ज हो जाती हैं, जो समय पर बाबा को स्मृति दिलानी पड़ती है। जैसे हनूमान के विषय में भी गायन है कि उनको स्मृति दिलाने पर अपनी शक्ति का अहसास होता था और वे असम्भव लगने वाला कार्य भी सम्पन्न कर लेते थे।

20. एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म - एडवान्स पार्टी वाली कुछ आत्मायें योगबल से जन्म देने की प्रथा अर्थात् विधि-विधान का अविष्कार भी करेंगी, उसका विकास भी करेंगी और सतयुग की प्रथम जनसंख्या की कुछ आत्माओं को जन्म भी देंगी और सम्बन्ध-सम्पर्क से और आत्माओं को भी तैयार करेंगी जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म देने में समर्थ होंगी। उसमें भी वे ही आत्मायें होंगी, जो अपने पूर्व जन्म में थोड़ा ज्ञान लिया होगा और सम्बन्ध-सम्पर्क में आई होंगी क्योंकि एकदम ज्ञान से अनभिज्ञ आत्मायें तो ये कार्य कर नहीं सकती और न ही वे एडवान्स पार्टी के सम्बन्ध-सम्पर्क में आ सकती हैं। इस कार्य में भी दादी जी अवश्य अग्रिम भूमिका निभायेंगी।

विनाश के समय तक ये ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। नहीं तो ज्ञान का वह संस्कार अर्थात् ज्ञान सतयुग में भी चला जायेगा। विनाश और स्थापना के अन्तिम बिन्दु पर आत्मा में यही शक्ति रहेगी कि वह सहज आत्मिक स्थिति में स्थित होकर देह से न्यारी हो जाये। यही शक्ति एडवान्स पार्टी की आत्माओं से योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं को भी वर्से में मिलेगी। विनाश के समय एडवान्स पार्टी में गई कई आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम जायेंगी और आकर योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं के पास जन्म लेंगी। योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें भी एडवान्स पार्टी की ही होंगी परन्तु जन्म लेने वाली आत्मायें अधिक आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होंगी, उनका खाता अधिक संचित होगा, जिससे वे सतयुग में पहले आयेंगी अर्थात् एडवान्स जन्म लेंगी।

जो आत्मायें एडवान्स पार्टी में जा रही हैं या जायेंगी, वे स्वयं अपने माता-पिता को तैयार करेंगी, जो उनको योगबल से जन्म देंगे। इसलिए वे जहाँ जन्म ले रही हैं या लेंगी, वे आत्मायें जाने-अन्जाने ज्ञान के सम्पर्क में अवश्य आयेंगी और ज्ञान के प्रचार-प्रसार में

सहयोगी बनेंगी। विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी में ऐसी कम से कम 9-10 लाख आत्मायें अवश्य जानी चाहिए, जो जाकर अपने माता-पिता को तैयार करें, जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म दे सकें।

21. इस विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार जिस आत्मा ने जिस समय जो पार्ट कल्प पहले बजाया है, वह समय आने पर उसको बजाये बिना रह नहीं सकती, उसको उसके लिए संकल्प अवश्य आयेगा। वह बात दादी जी के सम्बन्ध में अवश्य लगेगी।

ड्रामा के विधि-विधान अनुसार जिस आत्मा का जिन आत्माओं के साथ सम्बन्ध है, हिसाब-किताब है, उनके अनुसार उन आत्माओं के साथ सम्बन्ध जोड़ने, हिसाब-किताब को पूरा करने बिना रह नहीं सकती। उसके लिए उसको उनके सम्पर्क में आना ही होगा।

जिन आत्माओं के साथ आत्मा ने कल्प पहले पार्ट बजाया था, ड्रामानुसार समय आने पर उन आत्माओं के साथ पार्ट बजाये बिना रह नहीं सकती।

इस विधि-विधान के आगे आत्माओं की तो ताक़त क्या परमात्मा का आकर्षण भी आत्मा को बाँध नहीं सकता। आत्मा उस पार्ट को बजाने, उन आत्माओं के साथ अवश्य जायेगी। इसके अनुसार दादी ने भी जो पार्ट कल्प पहले बजाया था, जिन आत्माओं के साथ बजाया था, वहाँ जाने के लिए सहज ही राजी हो गई होगी।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय बाबा ने कहा - बच्ची अभी पार्ट बजाने के लिए गई है, कर्मों के हिसाब से, कर्म-सम्बन्ध के हिसाब से नहीं गई है लेकिन सेवा के सम्बन्ध से गई है। यह सेवा के सम्बन्ध का जन्म बहुत न्यारा होता है। ... न्यारापन क्या-क्या होता है, कुछ तो बाबा सुनाओ। बाबा ने कहा - अभी नहीं सुनाऊंगा, जब जन्म ले लेगी फिर सुनाऊंगा।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय मेरा सबसे बढ़िया अनुभव लास्ट में शरीर छोड़ते समय का था ... मेरी इच्छा थी कि मैं कर्मातीत अवस्था का अनुभव करूँ ... मुझे पता पड़ रहा था कि मैं जाने वाली हूँ परन्तु बोल नहीं सकती थी ... एक तो नष्टोमोहा स्थिति क्या होती है ... जीवन में रहते जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर रही थी। अपने शरीर को, दादियों तथा सभी अनन्य भाई-बहनों को साक्षी होकर देख रही थी। ... अन्त समय शरीर की जो फीलिंग थी, उससे भी बिल्कुल न्यारी हो गयी। वह बहुत अच्छा अनुभव था।... आप सभी भी ऐसा पुरुषार्थ करो जो ऐसे कर्मातीत स्थिति के अनुभव में शरीर छूटे।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

Q. कर्मातीत स्थिति का अनुभव जैसा दादी ने अन्त समय किया और हम सबको भी करने के लिए प्रेरणा दी, उसका आधार क्या है अर्थात् वह कब और कैसे हो सकता है?

कर्मातीत स्थिति के अनुभव और अन्त समय वह स्थिति रहे, उसके लिए एडवान्स स्टेज बनानी होगी अर्थात् योग द्वारा पुनाने खाते को खत्म करना, विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर साक्षी होकर पार्ट बजाते हुए देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करना और नये विकर्मों अर्थात् पापों से बचना अति आवश्यक है। इस पुरुषार्थ द्वारा जब पुण्य का खाता जमा होगा, पाप का खाता खत्म होगा तब ही इस कर्मातीत स्थिति का अभी अनुभव होगा और अन्त समय वह स्थिति होगी अर्थात् उस स्थिति में देह का त्याग कर सकेंगे, जैसे दादी जी ने किया। इसलिए अव्यक्त बापदादा सदा ही ऐसा देह से सहज न्यारा होने का अभ्यास करने की प्रेरणा देते रहते हैं, उसका मुरली के बीच में अभ्यास भी कराते हैं और उसके विषय में महावाक्य उच्चारण करते रहते हैं। अब जो करेगा, सो उसमें सफल होगा और वही ऐसा अनुभव कर सकेगा अर्थात् उस स्थिति में देह का त्याग कर सकेगा।

कर्मातीत स्थिति के अनुभव के लिए -

विकर्मों का खाता पूरा खत्म हो, सुकर्मों का खाता भरपूर जमा हो।

सर्वात्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना हो, जिससे अन्त समय उनकी भी हमारे प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो, उनकी दुआयें हमारे साथ हों।

सर्व व्यक्तियों और वस्तुओं से नष्टोमोहा स्थिति हो अर्थात् सबसे इस देह के साथ के हिसाब-किताब खत्म हों और एक परमात्मा के साथ बुद्धियोग हो, जिससे न मुझको किसकी याद आये और न किसको मेरी याद आये अर्थात् किसकी याद मेरे को खींचे नहीं।

देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास हो, अपनी देह के साथ भी मोह न हो।

वतन में रहते जीवनमुक्त स्थिति में बहुत न्यारी और प्यारी अवस्था थी। अभी बाबा ने मुझे शरीर में भेजा है, लेकिन मैं उस भान से न्यारी हूँ। बाबा इसका राज़ आपको बाद में सुनायेगा कि मेरा जन्म कैसे न्यारा है।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

जन्म तीन प्रकार से होता है - एक कर्म-बन्धन के कारण जन्म, दूसरा है कर्म-सम्बन्ध के कारण जन्म और तीसरा है सेवा के सम्बन्ध से एडवान्स जन्म। इसलिए ही 21 जन्मों की जीवनमुक्ति का गायन है। ये सेवा के सम्बन्ध का एडवान्स पार्टी का जन्म अति न्यारा और प्यारा होता है, उसका गहरा राज़ है, जो बाबा बाद में बतायेंगे जब दादी जन्म ले लेगी।

बाबा ने कहा बच्ची को यह स्वतन्त्रता है कि जब चाहे तब बाबा के पास इमर्ज हो सकती है

क्योंकि अभी गर्भ में कोई बन्धन नहीं है। अभी आत्मा स्वतन्त्र है, इसलिए आ-जा सकती है। ... बाबा कभी साइन्स वालों की तरफ, कभी ब्राह्मणों की तरफ, कभी भक्तों की तरफ चक्कर लगवाता है। अमृतवेले बाबा के साथ चक्कर लगाने का या बाबा के डायरेक्शन से सेवा पर जाने का टाइम फिक्स है।

29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

बाबा ने कहा दादी इस सूक्ष्म सेवा से समय को जैसे समीप ला रही है। मैने कहा - बाबा जब दादी जन्म ले लेगी, फिर क्या होगा। तो बाबा ने एक बहुत अच्छा राज़ सुनाया - इनका जो पिता जी है, वह भक्त भी अच्छा है, साहूकार भी है ... उसकी विशेषता है, जिससे सभी उसको रिगार्ड देते हैं। ... इनकी राय बड़ी अच्छी है। बड़ो-बड़ों का कनेक्शन दादी के पिता से दोस्ती का है। ... दादी जन्म भले लेगी लेकिन ज्ञान का आधार से दादी में जो टचिंग और कैचिंग पॉवर है, आध्यात्मिक शक्ति है और पिता जी के संस्कार भी ऐसे हैं। ... इस कारण दादी की राय और पिता जी की राय को सब बड़े-बड़े भी मानेंगे।

29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

एडवान्स पार्टी वाले बिना ब्रह्मा कुमार-कुमारी के परिचय के दिल के समीप हैं ... सभी एक-दो के विचारों के मिलन से बहुत नज़दीक हैं। अभी दादी जायेगी तो दादी भी उनसे मिलेगी। ... उनमें मैं शक्ति भी भरता हूँ, डायरेक्शन भी देता हूँ कि कैसे कनेक्शन से आप सेवा कर सकते हो।

29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

Q. दादी का पिता परमधाम से आने वाली नई आत्मा होगी या पहले से आई हुई कोई भक्त आत्मा होगी या ब्राह्मण परिवार से गयी हुई कोई आत्मा होगी ?

विवेक कहता है कि परमधाम से आने वाली कोई नई आत्मा होनी चाहिए। क्योंकि नई आत्मा में ही इतनी शक्ति होगी या फिर कोई पुरानी भक्त आत्मा होगी तो दादी के जन्म लेने के बाद वह ज्ञान में आयेगी, सहयोगी बनेंगी क्योंकि पुराने भक्तों को तो बाबा से स्वर्ग का वर्सा भी लेना है।

विशेष 5 जनों को बाबा वतन में बुलाता है, उनमें दीदी, दादी, चन्द्रमणी दादी, विश्वकिशोर भाई और पुष्पशान्ता दादी। ... बीच-बीच में औरों को भी बाबा इमर्ज करके बुलाता है कि आप ये अपनी सेवा करो और साकार में जो ब्राह्मण हैं, वे अपनी सेवा करें।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

वायुमण्डल बनाने का काम एडवान्स पार्टी को दिया है। एक तरफ है एडवान्स पार्टी और दूसरी तरफ है एडवान्स में जाने वाली पार्टी। अभी दोनों का एक ही संकल्प होना चाहिए

कि स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करना ही है। (बाबा का एडवान्स में जाने वाली पार्टी से क्या आशय है ?) अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

प्रश्नोत्तर

Q. बाप का साथी बनकर घर जाने और बराती बनकर घर जाने की क्या स्थिति होगी अर्थात् उसकी क्या परिकल्पना (Concept) है ? अन्त में जब विनाश होगा तो क्या एक सेकेण्ड में हो जायेगा और सब समान साथी बाप के साथ चले जायेंगे ?

विनाश होने में समय अवश्य लगेगा और सब समान साथी एक साथ शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के एक साथ तो जा नहीं सकेंगे, उसके साथ एडवान्स पार्टी में रहने वाली आत्मायें भी यहाँ होंगी, उनमें भी अवश्य कुछ शक्तिशाली समान साथी आत्मायें भी होंगी। इसलिए उनकी बापदादा के साथ जाने की बात तो हो नहीं सकती है परन्तु जो आत्मायें अन्त में शिवबाबा की याद और परमधाम की याद में शरीर छोड़ेंगी वे शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के समान साथी होंगे, वे चाहे पीछे जायें या साथ जायें, उसका फर्क नहीं है परन्तु स्थिति में समान होंगे, वे उनके समान घर में जायेंगे अर्थात् वे ज्ञानयुक्त स्थिति में घर जायेंगे। जो आत्मायें बराती रूप में होंगी, वे अन्त में कुछ सजाओं के रूप में दुख भोगेगी और साधारण रीति शरीर छोड़ेंगी और सृष्टि के विधि-विधान अनुसार घर चली जायेंगी क्योंकि उस समय आत्माओं को यहाँ विश्व में रहने की सम्भावनायें तो दिखाई नहीं देंगी, इसलिए उनका बुद्धियोग इस दुनिया से हट जायेगा, दुनिया से वैराग्य होगा परन्तु यथार्थ ज्ञान की स्थिति नहीं होगी, इसलिए प्रकृति के नियमानुसार घर चली जायेंगी और बराती कही जायेंगी।

बाबा ने ये भी कहा है कि जो अच्छी स्थिति वाले होंगे, वे अन्त में विनाश देख सकेंगे तो वे साथ कैसे जायेंगे

Q. दादीजी के देह त्याग के समय बाबा ने क्या-क्या रहस्योद्घाटन किये ?

1. दुनिया में और यज्ञ में भी गर्भ को प्राय: गन्दगी भरा स्थान ही माना जाता है, इसलिए गर्भ में रहना कोई अच्छा नहीं समझता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने के लिए मनुष्यात्मा को शरीर धारण करने के लिए गर्भ में जाना ही होता है। भले ही बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उससे माना जाता है कि सतयुग में गर्भ भी महल होगा अर्थात् महल के समान सुखदायी होगा। इस बात की यथार्थता गुल्जार दादी और दादीजी के उस वार्तालाप से सिद्ध होती है, जो गुल्जार दादी की दादी जी के साथ वतन में हुई। जब गुल्जार दादी ने दादी जी से पूछा कि दादी गर्भ को तो सब गन्दगी भरा स्थान समझते हैं, आपको गर्भ में कैसा

लगता है। तो दादी जी ने बाबा को आश्चर्य से कहा - बाबा, यह मेरे को क्या पूछती है! फिर दादी जी ने कहा - मेरे तो गर्भ में कोई गन्दगी जैसी नहीं लगती है। इससे सिद्ध होता है कि गर्भ में जब बच्चा होता है तो उसको पहले का अनुभव या स्मृति भूली हुई होती है और वह वहाँ कर्मों अनुसार सुख या दुख की अनुभूति करता है।

2. अव्यक्त बापदादा एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को समय-समय पर वतन में इमर्ज कर, उनको शक्ति देते हैं और सेवा के लिए प्रेरित करते हैं अर्थात् एडवान्स पार्टी वालों की पालना भी अव्यक्त बापदादा ही करते हैं, इसलिए वे भी ब्राह्मण सम्प्रदाय ही हैं और संगम पर हैं, उनको भी बाबा से शक्ति मिलती है, इसलिए वे भी चढ़ती कला में ही हैं परन्तु चढ़ती कला का आधार प्रत्यक्ष में ब्राह्मणों और एडवान्स पार्टी वाले ब्राह्मणों का अलग-अलग है।

3. एडवान्स पार्टी वाले आपस में भी समय-समय पर मिलते हैं परन्तु संगमयुगी जीवन का ज्ञान नहीं होता है। वे मिलकर इन्डॉयरेक्ट नई दुनिया के निर्माण के लिए प्लानिंग करते हैं, सेवा में सहयोग देते हैं।

4. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म किसी तथाकथित राजा-महाराजाओं के पास न होकर धार्मिक सुसंस्कारित साहूकार समाज में सम्मानित भक्तों के घर में होता है।

Q. क्या बाबा अर्थात् भगवान जिस आत्मा को चाहे उसको बच्चा अर्थात् लड़का बनाये और जिसको चाहे उसको बच्ची अर्थात् लड़की बनाये अर्थात् जिसको चाहे स्त्री से पुरुष बनाये और जिसको चाहे पुरुष से स्त्री बनाये, ऐसा करता है या कर सकता है?

यदि परमात्मा किसको स्त्री से पुरुष बनाता है तो जितनो को स्त्री से पुरुष बनाया, उतने ही पुरुषों को स्त्री बनाना ही होगा चाहे वे चाहें या न चाहें क्योंकि इस सृष्टि के विधि-विधान अनुसार सृष्टि के सफल संचालन के लिए स्त्री-पुरुष का पूर्ण सन्तुलन होना अति आवश्यक है। वास्तविकता तो ये है और देखने में भी ऐसा ही आता है कि अपवाद को छोड़कर स्त्री, स्त्री और पुरुष, पुरुष ही बनता है। हर आत्मा के मूलभूत संस्कार हैं और उन मूलभूत संस्कारों में परिवर्तन बहुत जटिल है। हम हर एक अपने स्वभाव-संस्कार से अनुभव कर सकते हैं कि ज्ञान और परमात्मा का सहयोग होते भी मूलभूत संस्कारों में परिवर्तन के लिए कितनी मेहनत करनी होती है। संस्कारों के परिवर्तन में भी संस्कारों की कलम लगती है। इसलिए इन संस्कारों की भी कलम लगेगी तो कैसे लगेगी, यह विचारणीय है। अचानक कोई संस्कार परिवर्तन नहीं होता है। कोई स्त्री पुरुष बन सकती है और पुरुष स्त्री बन सकता है, ये बात स्वीकार्य है क्योंकि बाबा ने ऐसा कहा है, परन्तु बाबा ने भी ये बात किन्ही विशेष परिस्थितियों में ही कही है, इसलिए इस सत्य को समझने के लिए वे परिस्थितियां भी विचारणीय हैं, उनका अध्ययन भी अति

आवश्यक है। यदि हम शास्त्रों पर विचार करें तो महाभारत में एक शिखण्डी का ही उदाहरण सामने आता है। वर्तमान समय थियोसॉफीकल सोसाइटी ने जो बताया, अमेरिका के भविष्य वेत्ता एडगर केसी ने जो बताया और वर्तमान समय इमेजिंग सीरियल जो चला, उसमें भी ऐसा ही देखने में आया है कि स्त्री ने स्त्री के रूप में और पुरुष ने पुरुष के रूप में जन्म लिया।

Q. एडवान्स पार्टी, एडवान्स जन्म और एडवान्स स्टेज तीनों में क्या अन्तर है और तीनों की क्या सेवा है ?

Q. नये कल्प के संगम पर जो 25-30 साल तक एडवान्स पार्टी की आत्मायें रहेंगी, उनकी चढ़ती कला होगी या उतरती कला ?

विवेक कहता है कि नये कल्प में होते भी उन एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं की चढ़ती कला ही होगी क्योंकि उतरती कला वाली आत्मायें तो परमधाम जा नहीं सकती। वे आत्मायें उस समय भी परमात्मा के कार्यार्थ अर्थात् नई दुनिया के निर्माणार्थ ही कार्य कर रही होती हैं, इसलिए उनकी चढ़ती कला ही होती है। परन्तु उस समय जो आत्मायें परमधाम से आकर एडवान्स जन्म लेंगी, उनकी उतरती कला आरम्भ हो जायेग, जैसे पुराने कल्प के संगम पर ज्ञानी ब्राह्मण आत्माओं और एडवान्स पार्टी वाली ब्राह्मण आत्माओं की चढ़ती कला है और अन्य सब आत्माओं की उतरती कला है।

श्रीकृष्ण के जन्म से सिंहासन पर बैठने तक के 25-30 साल संगम के ही होंगे परन्तु श्रीकृष्ण और एडवान्स जन्म लेने वालों के लिए सतयुग अर्थात् स्वर्ग होगा और एडवान्स पार्टी वालों के लिए संगम का समय होगा। जैसे कलियुग के अन्त अर्थात् पुराने कल्प में अज्ञानी आत्माओं के लिए कलियुग है और ज्ञान में आने वाली ब्राह्मण आत्माओं के लिए संगमयुग है। इस सम्बन्ध में साकार बाबा ने भी मुरलियों में कहा है।

उस नये कल्प के संगम समय में एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं की उतरती कला होगी क्योंकि परमधाम से इस धरा पर आने से ही उतरती कला आरम्भ हो जाती है परन्तु एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं की चढ़ती कला होगी क्योंकि उनको सम्पूर्ण बनकर परमधाम जाना है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - श्रीकृष्ण को ही सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण की तो 25-30 साल में कुछ न कुछ उतरती कला हो जाती है।

यह खेल है उतरती कला और चढ़ती कला का। बाबा चित्र भी बनवा रहे हैं, उतरती कला और चढ़ती कला के सीढ़ी का। चढ़ने के लिए सिर्फ याद की सीढ़ी है, बाकी उतरने में तो थोड़ा-थोड़ा सारा कल्प उतरते ही आते हैं।

सा.बाबा 2.10.72

Q. जब विनाश होगा तो पहले दुनिया वाले शरीर छोड़ेंगे या एडवान्स पार्टी वाले, एडवान्स स्टेज वाले शरीर छोड़ेंगे ?

विवेक कहता है पहले एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाली जिन आत्माओं को श्रीकृष्ण के साथ पहले 9,16,108 की जनसंख्या में जन्म लेना है, उन आत्माओं को शरीर छोड़ना चाहिए क्योंकि उनको ही पहले-पहले बाबा के साथ घर जाना है और फिर आकर एडवान्स जन्म लेना है। इसके लिए बाबा ने कई बार मुरलियों में कहा है कि जो मुरब्बी बच्चे हैं, अष्ट रतनों में आने वाले हैं, वे ही बाबा के साथ समान साथी बनकर पहले घर का दरवाज़ा खोलेंगे और ब्रह्मा बाबा के साथ पहले-पहले आकर जन्म लेंगे और पहले राजाई में आयेंगे।

Q. क्या एडवान्स पार्टी को इस बात का संकल्प या उत्सुकता होगी कि विनाश जल्दी हो, जैसाकि संगमयुगी ब्राह्मणों के मुख से प्राय: सुना जाता है ?

नहीं, क्योंकि वे जहाँ जन्म लेंगे, उनको अपेक्षाकृत पूर्ण सुख-शान्ति होगी, इसलिए जल्दी विनाश हो, उसके लिए वे उत्सुक नहीं होंगे परन्तु वे नई दुनिया की परिकल्पना कर, उसके निर्माण के लिए नये-नये प्लॉन अवश्य बनायेंगे, उसके लिए यथा शक्ति पुरुषार्थ करेंगे।

Q. क्या एडवान्स स्टेज वालों को इस बात का संकल्प या उत्सुकता होगी कि विनाश जल्दी हो ? यदि नहीं होगी तो उनका क्या कर्तव्य होगा ?

नहीं, जो एडवान्स स्टेज में स्थित होंगे, वे विनाश के लिए उत्सुक नहीं होंगे क्योंकि उनमें देह से न्यारे होने की क्षमता होती है और वे सदा बाप के साथ में अभी ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं, इसलिए वे विनाश के लिए उत्सुक नहीं होंगे परन्तु बाबा ने जो सर्व आत्माओं को सन्देश देने का कार्य दिया है और अपने को सम्पूर्णता की स्थिति में स्थित रहकर पार्ट बजाने के लिए कहा है, ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहने के लिए कहा है, उसमें रहेंगे और उसके लिए प्रयत्नशील अवश्य होंगे।

"(कारण को निवारण बदल दें) तो इस नये वर्ष को ऐसे शक्तिशाली वर्ष के रूप में मनाना। क्योंकि समय तो समीप आना भी है और लाना भी है। ड्रामानुसार आना तो है ही लेकिन लाने वाले कौन है ? आप ही हो ना! ... दूसरी बात इस नये वर्ष में सदैव हर एक को, जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, चाहे ब्राह्मण परिवार का चाहे और कोई आत्मा हो, उन सबको मधुर बोल की गिफ्ट दो, स्नेह के बोल की सौगात दो।"

अ.बापदादा 31.12.94

"अगर अपनी श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति है तो सेकेण्ड के संकलप से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकेण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। ... कोई खाली हाथ

न जाये, इतनी गिफ्ट सबके पास है। ... दाता के बच्चे हो और कमी हो तो यह अच्छा नहीं है ना। इसलिए सभी भरपूर होकर जाना और सब कमियों को विदाई देकर जाना।"

अ.बापदादा 31.12.94

Q. एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज अर्थात् संगमयुगी ब्राह्मणों और वैज्ञानिकों में क्या सम्बन्ध होगा ?

एडवान्स पार्टी वालों का अधिक सम्बन्ध नये विश्व के निर्माण में काम आने वाले साधनों का अविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों से होगा और संगमयुगी ब्राह्मणों अर्थात् एडवान्स स्टेज वालों का सम्बन्ध ऐसे वैज्ञानिकों से होगा, जो विनाश के निमित्त बनने वाले हैं अर्थात् ऐसे अविष्कार करें, जिससे समय पर जल्दी विनाश हो जाये, जिससे विनाश के समय आत्माओं को अधिक दुख न भोगना पड़े। इस सम्बन्ध में बाबा ने भी कई बार महावाक्य उच्चारे हैं।

Q. क्या दीदी और भाऊ विश्वकिशोर श्रीकृष्ण के माँ-बाप होंगे, जैसी यज्ञ में कुछ लोगों की अभिधारणा है ? क्या भाऊ विश्वकिशोर प्रथम नारायण का बच्चा अर्थात् उनके उत्तराधिकारी बनेंगे ?

यह सब विचारणीय बातें है - दीदी के एडवान्स पार्टी के जन्म और भाऊ विश्वकिशोर के एडवान्स पार्टी के जन्म में 18-19 साल का अन्तर है। यदि भाऊ विश्वकिशोर की आत्मा प्रथम लक्ष्मी-नारायण का बच्चा बनती है तो वे सतयुग की आदि में तो आ नहीं सकेंगे और यदि आदि में आते हैं तो प्रथम लक्ष्मी-नारायण का बच्चा कैसे बन सकेंगे अर्थात् इतनी जल्दी शरीर कैसे छोड़ेंगे ? यदि श्रीकृष्ण को जन्म देने के निमित्त बनते हैं और उनके उत्तराधिकारी भी बनते हैं तो 50-60 साल परमधाम में रहना होगा।

Q. क्या अन्त तक यह पता पड़ेगा कि मम्मा, दीदी, दादी आदि आत्माओं ने कहाँ जन्म लिया है ?

ड्रामा की वास्तविकता और बाबा के सन्देशों को विचार करें तो इस बात को जानना कि किसने कहाँ जन्म लिया है, यह रहस्य ही रहेगा अर्थात् गुप्त ही रहेगा। इसके गुप्त रहने में ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। यदि ये रहस्य पता लग जायें तो अनेक प्रकार के व्यवधान पैदा हो जायेंगे, जिससे इस विश्व-नाटक की स्वभाविकता खत्म हो जायेगी। एडवान्स पार्टी के स्वभाव-संस्कार, उनकी निकटता और सहयोग से समझा जायेगा कि ये कोई एडवान्स पार्टी की आत्मायें हैं, लेकिन कौन है, यह जानना सम्भव नहीं होगा। लौकिक दुनिया में भी यह समझ में आ जाता है कि कोई आत्मा किसके निकट की है, उसके आधार पर ही एक-दूसरे के पास जन्म लेते हैं। वास्तविकता ये है कि अन्त समय ये जानने की जिज्ञासा भी मर्ज हो जायेगी कि

किसने कहाँ जन्म लिया, कौन पहले जन्म में क्या थे। वास्तविकता पर विचार किया जाये तो ये भी एक प्रकार से मोह और लगाव का ही अंश है। अन्त में तो यह मोह का अंश भी नहीं रहेगा क्योंकि सतयुग-त्रेता में शरीर छोड़ने के बाद कोई को किसके विषय में ऐसी जिज्ञासा नहीं होती है। इस सम्बन्ध में ब्रह्मा बाबा ने मम्मा के देह त्याग के समय अनेक प्रकार से समझाया है।

जहाँ तक मैंने ज्ञान को समझा है, उस अनुसार हमारा विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी वाले परस्पर में वैवाहिक सम्बन्ध भी नहीं बनायेंगे और बनायेंगे तो बहुत कम परन्तु उनके द्वारा जो सहयोगी आत्मायें बनेंगी, वे वैवाहिक सम्बन्ध तो बनायेंगे परन्तु ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे, फिर जब विनाश होगा तो बाद में जब विकारी जन्म की प्रथा बन्द हो जायेगी तो योगबल अर्थात् आत्मिक शक्ति से जो विधि-विधान बाबा ने समय प्रति समय मुरलियों में बताये हैं, उनमें से जो समयानुसार यथार्थ होगा, उससे गर्भ धारण कर योगबल से जन्म देंगे। जैसे द्वापर आदि में योगबल से जन्म देने की शक्ति खत्म हो जाती है, तो भोगबल से जन्म देने की प्रथा का आरम्भ होता है। ऐसे ही विनाश के बाद जब भोगबल से जन्म देने की प्रथा खत्म हो जायेगी, तो सहयोगी आत्माओं के द्वारा योगबल से जन्म देने की प्रथा चल पड़ेगी और उन आत्माओं के पास एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें आकर जन्म लेंगी।

Q. एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देने वाले कभी ब्राह्मण बनें होंगे या नहीं ? यदि नहीं तो क्या अज्ञानी आत्मायें अर्थात् पतित आत्मायें सतयुग अर्थात् स्वर्ग में आ सकते हैं ?

विवेक कहता है कि एडवान्स जन्म देने वाली आत्मायें कुछ न कुछ ज्ञान अवश्य लेंगी और सम्बन्ध-सम्पर्क में अवश्य आकर यज्ञ के सहयोगी बने होंगे और बाद में शरीर छोड़ेकर गये होंगे, फिर वे एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं के सम्पर्क में आकर एडवान्स जन्म लेने वालों को जन्म देने के निमित्त बनेंगे।

Q. अभी शरीर छोड़ने वाली ज्ञानी-योगी आत्माओं में कौन सी आत्मायें एडवान्स पार्टी में जाती हैं और कौन सी आत्मायें पुनर्जन्म लेकर फिर ज्ञान में आयेंगी ?

जो आत्मायें एडवान्स स्टेज अर्थात् कर्मातीत स्थिति में अर्थात् एक परमात्मा की याद में या विश्व-कल्याण की सेवा के संकल्प में देह का त्याग करती हैं, वे एडवान्स पार्टी में जाती हैं और जो कर्मातीत स्थिति नहीं होती है अर्थात् किसी देहधारी या साधन-सम्पत्ति की स्मृति में देह का त्याग करते हैं, वे फिर ज्ञान में आते हैं। कर्म-बन्धन वाले अपना रहा हुआ कर्म-बन्धन पूरा करने के लिए उनके पास जन्म लेकर फिर ज्ञान में आते हैं क्योंकि कर्म-बन्धन के उनमें ज्ञान

की आकर्षण भी रहती है।

Q. क्या देवी-देवताओं की भी कलम लगती है ?

वास्तविकता ये है कि इस सृष्टि में हर बात चक्रवत् चलती है और हर बात की कलम लगती है अर्थात् इस सृष्टि-चक्र में सभी बातों की एक-दूसरे से कलम लगती है। देवताओं की कलम लगने का आधार एडवान्स पार्टी वाले हैं। अन्य धर्मों की भी कलम लगती है, आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं से, जब वे वाम मार्ग में जाते हैं। परन्तु अभी संगमयुग पर परमात्मा आकर नई दुनिया की पुरानी दुनिया से अर्थात् शूद्रों से ब्राह्मणों की और ब्राह्मणों से देवताओं की कलम लगाते हैं, जिससे नया झाड़ पैदा होता है, इसलिए इस विश्व-नाटक में कलम लगने का विशेष महत्व है, जिसका ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। मनुष्य के संस्कारों की भी कलम ही लगती है अर्थात् आसुरी संस्कारों से ईश्वरीय संस्कारों की और ईश्वरीय संस्कारों से दैवी संस्कारों की कलम लगती है। फिर द्वापर से दैवी संस्कारों से आसुरी संस्कारों की कलम लगती है अर्थात् दैवी संस्कार वाले ही आसुरी संस्कार वाले बनते हैं। देवी-देवताओं की कलम एडवान्स पार्टी से लगती है क्योंकि एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म अर्थात् सतयुग के प्रथम देवी-देवताओं के बीच की एक कड़ी है।

एडवान्स जन्म वाले सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होते हैं ... एडवान्स स्टेज वाले ही एडवान्स जन्म लेंगे तो उनको ये स्थिति यहाँ ही बनानी है।

बाबा ने एक मुरली में कहा है कि श्रीकृष्ण का बाप ब्राह्मण होगा अर्थात् ब्राह्मण जन्म से एडवान्स पार्टी में गई आत्मा होगी। ऐसे ही अन्य अनेक आत्माओं को एडवान्स जन्म देने वाली आत्मायें भी ब्राह्मण आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में अवश्य होंगी।

Q. क्या एडवान्स पार्टी को ज्ञान-योग का यथार्थ सुख होगा ? यदि होगा तो कहाँ तक और यदि नहीं होगा तो क्या होगा ?

ज्ञान-योग का यथार्थ सुख ब्राह्मण जीवन अर्थात् संगमयुग के प्रथम भाग अर्थात् एडवान्स स्टेज में ही होता है। एडवान्स पार्टी को सेवा का अर्थात् विश्व-कल्याण की जो सेवा करते हैं, उसका सुख होगा, सम्बन्ध-सम्पर्क, साधन-सुविधाओं का सुख होगा। अव्यक्त बाप का सहयोग भी उनको जब तक अव्यक्त पार्ट है, मिलता रहेगा, परन्तु ज्ञान-योग का जो सुख अभी है, वह एडवान्स पार्टी में नहीं मिलता है क्योंकि उनमें ज्ञान स्पष्ट नहीं होता है। वास्तव में एडवान्स पार्टी संगमयुग के पुरुषार्थी जीवन और सतयुग के प्रालब्धी एडवान्स जन्म के बीच की एक कड़ी है, जिसमें दोनों प्रकार के गुण-धर्म होते हैं अर्थात् पुरुषार्थ के भी और प्रालब्ध के भी गुण-धर्म उनमें होते हैं।

Q. क्या जो अभी ज्ञान में आते हैं और जम्प लगाकर बाबा के बन जाते हैं, वे अपने पिछले जन्म में बाबा के थे, जैसा कि यज्ञ में बड़ी दादियाँ भी समय-प्रतिसमय कहती हैं और अनेक भाई-बहनों की भी मान्यतायें हैं?

जो बाबा के जम्प लगाकर बन जाते हैं, सेवा में मददगार बनते हैं, वे जरूर पूर्व जन्म में बाबा के होंगे। ... यज्ञ सेवा का चान्स मिला, यह भी भाग्य है।

दादी जानकी 21.09.11

Q. बाबा ने कहा है सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा करना है, तो जिसके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा है, उस आत्मा की निशानी क्या होगी अर्थात् वह कैसे समझेगा कि हमारा स्टॉक जमा है?

जिसके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, वह अपने मन-बुद्धि को एक सेकेण्ड में जहाँ चाहे, जैसे चाहे, वैसे स्थिर कर सकता है और जितना समय चाहे, उतना समय उस स्थिति में स्थित रह सकता है। उसकी ये स्थिति उसको स्वयं भी अनुभव होगी और अन्य आत्मायें, जो सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगी, वे भी अनुभव करेंगी। जैसे ब्रह्मा बाप से होता था।

"अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले किसी स्थान में रहते हैं तो वहाँ शूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ हो जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरूर बनायेंगी अर्थात् साधन स्वत: जरूर प्राप्त होंगे।"

अ.बापदादा 13.9.74

"अगर किसी भी शक्ति की कमी होगी तो कहीं न कहीं धोखा खाने का भी अनुभव होगा, इसलिए पुरुषार्थ अभी इन महीन बातों पर करना चाहिए। किसी को दुख नहीं दिया,... ये तो छोटी-छोटी बातें हैं लेकिन अभी पुरुषार्थ सर्व शक्तियों के स्टॉक के भरने का होना चाहिए।... कोई एक शक्ति का न होना अर्थात् मुरब्बी बच्चों की लिस्ट से निकल जाना।"

अ.बापदादा 13.09.74

Q. दुनिया में आत्माओं को ब्राह्मण में बुलाते हैं, जिसके विषय में बाबा ने भी समय-समय पर स्पष्ट किया है तो उस बुलाने और 25.08.11 को दादी जी के बुलाने में क्या अन्तर है?

दुनिया वाले मोह के कारण बुलाते हैं और किन्हीं बातों के विषय में जानकारी करते हैं अर्थात् उनसे पूछते हैं। यहाँ भी जो दादी जी को बुलाते हैं, उसमें भी मोह तो है ही, भले हम उसको प्यार कहते हैं। इस बुलाने में माध्यम अव्यक्त बापदादा है, इसलिए उसमें भी हमारा कल्याण नीहित है और जिसको बुलाया है, वह हमारे से एडवान्स आत्मा है, उनके शब्द हमको प्रेरणा देते हैं और उससे ज्ञान के कुछ राज़ों का स्पष्टीकरण होता है।

Q. 25.08.12 को दादी ने भी कहा और बाबा ने भी कहा - अभी जल्दी-जल्दी अपने राज्य को लाना है, तो इसका भाव क्या है और इसके लिए पुरुषार्थ क्या है ?

सतयुग की प्रथम राजधानी में जो भी होंगे, वे सभी सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमो धर्म वाले होंगे, जो अव्यक्त बापदादा ने भी पहले कहा है। तो राज्य लाना अर्थात् अपनी स्थिति को ऐसा बनाना। सम्पूर्ण बनकर ही हम वापस घर जायेंगे और जब हम अपनी सम्पूर्णता की स्थिति में होंगे, तब ही हम रहमदिल बनकर अन्य आत्माओं को उस स्थिति का अनुभव करा सकेंगे, जिससे वे आत्मायें भी परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द और परम-सुख का अनुभव करेंगी। जब हमारी सम्पूर्णता की स्थिति होगी तो उसका वायब्रेशन स्वत: ही विश्व में फैलेगा, जिससे सभी जड़-जंगम-चेतन पावन बन जायेंगे। इसके लिए ज्वालामुखी योग चाहिए।

ज्वालामुखी योग अर्थात् देहाभिमान का संस्कार भस्म हो देही-अभिमानी स्थिति हो जाये, जहाँ राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका का नाम-निशान न रहे; मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, दुख-सुख, प्राप्ति-अप्राप्ति, अपने-पराये की फीलिंग खत्म हो दोनों में समान स्थिति और दृष्टि रहे। ज्वालामुखी योग से ये स्थिति बनेंगी और ये स्थिति होगी, तब ही ज्वामुखी योग सिद्ध होगा, जिसका वायब्रेशन्स जड़-जंगम-चेतन तीनों को पावन बनायेगा। देही-अभिमानी का संस्कार परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न परमानन्दमय परम-सुखमय है। देही-अभिमानी स्थिति में ईश्वरीय संस्कार अर्थात् भाई-भाई की दृष्टि, विश्व-कल्याण की भावना और कर्तव्य, स्वदर्शन चक्रधारी होगा, जो लाइट-हाउस और माइट-हाउस बन सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखायेगा। यह ईश्वरीय जन्म परमानन्दमय है और विश्व-कल्याणार्थ ही है।

हमारे अन्दर ज्ञान का भी अहंकार नहीं होना चाहिए। ज्ञान परमात्मा की देन है, बुद्धि ड्रामा की देन है। हमको बुद्धि से ज्ञान को अच्छी रीति समझकर शुभ-भावना से ज्ञान की सत्यता को अन्य आत्माओं के सामने प्रगट करना हमारा परम कर्तव्य है।

Q. एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज और एडवान्स जन्म तीनों में सबसे गौरवपूर्ण (Graceful) जीवन किसका है और क्यों है ?

भले ही एडवान्स पार्टी और एडवान्स स्टेज वाले दोनों का जीवन चढ़ती कला का है और दोनों को ही डॉयरेक्ट या इन्-डॉयरेक्ट परमात्मा का साथ है और उसका सहयोग मिलता ही है परन्तु एडवान्स स्टेज वालों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक गौरवपूर्ण है क्योंकि वे यथार्थ ज्ञान होने के कारण देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परम-

शान्ति, परम-शक्ति; अव्यक्त स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द और इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान बुद्धि में धारण कर अपने अकाल तख्तनशीन होकर साक्षी होकर इस विश्व नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम-सुख का अपेक्षाकृत अच्छा अनुभव कर सकते हैं, जो अभी हमारे अधिकार क्षेत्र में है अर्थात् कर सकते हैं। परन्तु एडवान्स स्टेज वालों के जीवन में अपेक्षाकृत कर्मभोग का प्रभाव अधिक है, जो आत्मा को इस अनुभव में बिघ्नरूप है परन्तु जो कर्मभोग की अनुपस्थिति में देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास कर लेते हैं, उनको यह कर्मभोग का विघ्न अपेक्षाकृत कम बाधक बनता है, जिसके लिए बाबा हमको प्रेरणा भी देता है और अव्यक्त बापदादा अनुभव भी कराते हैं। एडवान्स जन्म वालों का जीवन तो उतरती कला का जीवन है, भले वहाँ भौतिक सुख प्रचुर मात्रा में हैं।

Q. क्या एडवान्स पार्टी में जाने वाली आत्मायें फिर ज्ञान में आयेंगी अर्थात् कोई आत्मा जो बचपन से ज्ञान में आती है, उसको एडवान्स पार्टी वाला कहेंगे ?

आयेंगी या आ सकती हैं नहीं आयेंगी

यदि आयेंगी तो उनको एडवान्स पार्टी वाला कैसे कहेंगे ?

नहीं आयेंगी क्योंकि एडवान्स पार्टी वाला उनको ही कहेंगे, जिनका इस ब्राह्मण जीवन का पुरुषार्थ पूरा हो गया है और उनको नये विश्व के नव-निर्माण की तैयारी करनी है। भले उनके जन्म के बाद उनके माता-पिता या सम्बन्धी ज्ञान में आयेंगे परन्तु एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें ज्ञान में रुचि न लेकर नये विश्व के नव-निर्माण के कार्यों में ही रुचि लेंगे।

स्थापना-विनाश और श्रीकृष्ण का जन्म

Q. कल्पान्त में विनाश पूरा होने के बाद श्रीकृष्ण का जन्म होगा या विनाश पूरा होने से पहले ही अर्थात् बीच में ही ?

बाद में पहले ही

यदि बाद में होगा तो क्यों और यदि पहले होगा तो कैसे

क्योंकि

i) क्या विकारी आत्माओं के होते हुए श्रीकृष्ण का जन्म हो सकता है, एडवान्स पार्टी की बात अलग है क्योंकि उन्हों का शरीर विकार से पैदा हुआ है परन्तु वे विकारी नहीं बनें हैं।

ii) विचारणीय है - श्रीकृष्ण का जन्म स्वर्ग में होगा या नर्क में क्योंकि विनाश से पहले का कल्प नर्क ही है भले संगमयुग है परन्तु वह पुराने कल्प अर्थात् नर्क का संगम समय है। विनाश के बाद नये कल्प का संगम अर्थात स्वर्ग का संगम समय आरम्भ होता है।

iii) क्या पुराने कल्प में योगबल से जन्म हो सकता है, यदि नहीं हो सकता है तो श्रीकृष्ण का जन्म विनाश पूरा होने के पहले कैसे हो सकता है। योगबल से जन्म का विधि-विधान तो नये कल्प अर्थात् स्वर्ग का है, इसलिए नर्क में योगबल से जन्म सम्भव नहीं क्योंकि योगबल से जन्म लेने और गर्भ-धारण करने की विधि स्वर्ग की ही है। परन्तु संगम पर नये कल्प की कलम लगती है, इसलिए सम्पूर्ण विनाश के पहले गर्भ धारण हो सकता है परन्तु आत्मा नये कल्प के संगम में ही प्रवेश करेगी।

iv) विनाश का कार्य पुराने कल्प के संगम के अन्त तक पूरा हो जायेगा अर्थात् पृथ्वी की उथल-पुथल पूरी हो जायेगी, पृथ्वी और अन्य तत्व अपने मूल स्वरूप में सेट हो जायेंगे, एडवान्स पार्टी की आत्माओं को छोड़कर सभी आत्मायें परमधाम चली जायेंगी, उसके रही हुई सफाई तथा विश्व नव-निर्माण का कार्य नये कल्प के संगम समय में होगा। अधिकांश सफाई तो सुनामी, अति वृष्टि, बाढ़ आदि पुराने कल्प के पूरे होते-होते हो जायेगी।

v) भक्ति मार्ग में श्रीकृष्ण का जन्म जेल में दिखाया है, सो क्यों दिखाया है? इसकी वास्तविकता पर विचार करते हैं तो समझ में आता है कि श्रीकृष्ण की जीवन-कहानी (Biography) के साथ दो की जीवन-कहानी (Biography) जुड़ी हुई है। एक श्रीकृष्ण की और दूसरी परमात्मा की। परमात्मा का अवतरण तो पुराने कल्प के संगम पर ही होता है परन्तु श्रीकृष्ण का जन्म नये कल्प के संगम में होता है।

एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज, एडवान्स जन्म और विविध ईश्वरीय महावाक्य

मैंने पूछा आप कब प्रत्यक्ष होंगे? ... तो मम्मा ने कहा - जब आपकी प्रत्यक्षता होगी, तब हमारी भी प्रत्यक्षता होगी कि ये अलौकिक अवतार बच्चे पैदा हुए हैं। आप लोग सेवा कर रहे हो प्रजा बनाने की और हम सेवा कर रहे हैं आपके आवाह्न की। हमको बाबा ने यह ड्युटी दी है। ... हम लोग भी आपस में मिलते हैं और मिलते समय परिचित आत्माओं की तरह अनुभव होता है, बिछड़ी आत्माओं की तरह नयनों से मिलते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

मैंने कहा 93 का वर्ष विशेष फरिश्ते स्वरूप बनने के लक्ष्य से सेवा का और स्वउन्नति का प्लेन बना रहे हैं। ... बाबा ने कहा - मम्मा इनको एक सीन दिखाते हैं। इतने में मैंने देखा कई ब्राह्मण आत्मायें बादल के एकदम ऊपर जैसे आकाश में फरिश्ते रूप में आधे सर्किल में दिखाई दे रहे हैं।... बाबा ने कहा - ये फरिश्ते देखे! ... फरिश्तों के पीछे सूक्ष्म धागे थे, जो बहुत ध्यान से देखने पर दिखाई देते थे।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

मम्मा ने कहा - आप जो फरिश्ता वर्ष मनाने जा रहे हो तो फरिश्ता माना जिसका किसी भी लगाव से रिश्ता नहीं। ... अन्त में ये सूक्ष्म लगाव भी उड़ने नहीं देगा। सूक्ष्म लगाव है यह बॉडी-कान्शस का। वह ऊपर उड़ने नहीं देता है, फरिश्ता बनने नहीं देता है। अभी तक यह तारें टूटी नहीं हैं, भले उड़ भी रहे हैं परन्तु ये धागे बँधे हुए हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

पहले अपने सूक्ष्म लगाव को चेक करो कि हमारा कोई भी सूक्ष्म लगाव जुटा हुआ तो नहीं है! ... अव्यक्त वर्ष मना रहे हो तो अव्यक्त स्वरूप का अर्थ ही है फरिश्ते स्वरूप की अनुभूति में रहना। ... यदि ब्रह्मा बाबा से सच्चा प्यार है, चाहे व्यक्त पालना ली है, चाहे अव्यक्त पालना ली है लेकिन बाबा प्यार का सबूत देखना चाहते हैं। ... सर्व धागे तोड़कर फरिश्ता स्वरूप बनना है।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

कर्म और योग, सेवा और तपस्या दोनों का बैलेन्स हो, यही अव्यक्त रूप है, फरिश्ता रूप है। ... उसके लिए बाबा ने स्लोगन सुनाया - 9सी फादर, सी सेल्फ" अर्थात् अपने को और बाबा को देखना है। दूसरों को सहयोग देना है और सहयोग लेना है परन्तु और कोई बात में दूसरे को नहीं देखना है। ... हर एक अपनी जिम्मेवारी समझे कि हमको सबूत देना है। ... बाबा सपूत बच्चों की लिस्ट चेक करेंगे।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

"ऐसे बहुत बच्चे हैं, जो यहाँ से शरीर छोड़कर जाते हैं, फिर दूसरा जन्म लेकर आयेंगे, बाप से वर्सा लेने, बाप से मिलेंगे भी। यह निश्चय होना चाहिए कि हम आत्मा हैं, बाप आया है हम बच्चों को वापस ले चलने। अभी बाबा रिइन्कारनेट हुआ है और तुम अभी रिज्युवनेट हो रहे हो। रिइन्कारनेशन एक बाप के लिए ही कहेंगे।"

सा.बाबा 11.04.12 रिवा.

"ईश्वरीय नशे का वर्सा तो ईश्वरीय गोद ली और प्राप्त हुआ। परन्तु जो सम्पूर्णता के अति समीप हैं, उनको निश्चय और नशा रहेगा कि सफलता मेरे पीछे-पीछे आने वाली है, सफलता मुझसे अलग हो ही नहीं सकती। ... इससे जज करो कि अति समीप हैं या समीप हैं या सामने है।"

अ.बापदादा 21.7.73

"वरदाता द्वारा सर्व वरदानों में मुख्य दो वरदान (योगी भव और पवित्र भव) हैं, जिनमें सर्व वरदान समाये हुए हैं। ... तो अपने से पूछो कि क्या मुख्य दो वरदान-स्वरूप बनें हैं अर्थात् योगी भव और पवित्र भव - इस विशेष कोर्स के स्वरूप बने हो ?... सप्ताह कोर्स का रहस्य

इन दो वरदानों में समाया हुआ है। जो भी यहाँ बैठे हो, उन सबने सप्ताह कोर्स कर लिया है? कोर्स अर्थात् फोर्स भर जाना।" अ.बापदादा 27.12.74

"ज्ञान-सितारे तो सभी हैं परन्तु उनमें भी तीन प्रकार के सितारे हैं। एक हैं सफलता के सितारे, दूसरे हैं लकी सितारे और तीसरे हैं उम्मीदों के सितारे। हर एक सितारे की अपनी-अपनी दुनिया है। ... दुनिया अर्थात् रचना। क्या आपको, अपनी रचना दिखाई देती है? ... क्या आप जानते हो कि रचना में कितनी और क्या-क्या बातें देखी जाती हैं?"

अ.बापदादा 14.07.74

मुरली में

"यह मीठी-मीठी बातें तुमको बाबा से सम्मुख सुनने में बहुत अच्छी लगती हैं, फिर घर में जाने से नशा उतर जाता है। यहाँ तो तुम जैसे शिवबाबा के घर में बैठे हो। यहाँ और बाहर में बहुत फर्क पड़ जाता है। कोई कहते हम यहाँ ही बैठ जायें। ... बाबा कहते पहले सर्विसएबुल बनो, सर्विस में लग जायेंगे तो तुम्हारे बच्चों का भी प्रबन्ध हो जायेगा।"

सा.बाबा 6.10.12 रिवा.

"ऐसे विशाल बुद्धि, सर्व में बेहद बुद्धि को धारण करने वाले, सर्वात्माओं को अनेक प्रकार के हदों से निकालने वाले, ऐसे बेहद के बुद्धिमान, बेहद समझदार, बेहद के वैराग्य वृत्ति वाले, सदा बेहद की स्थिति और स्थान में रहने वाले, ऐसी सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को बेहद के बाप का याद-प्यार और नमस्ते।" अ.बापदादा 22.9.75

"विकारों के लिए तंग करते हैं, अत्याचार होते हैं तो लाचारी में छोड़कर आते हैं तो बाप को शरण देनी पड़ती है। ... इसमें भगाने आदि की कोई बात नहीं है। यह तो ड्रामा अनुसार गऊशाला बननी थी। हैं तो बच्चे परन्तु उन्होंने नाम गऊशाला डाला है। ... सारी बात इस समय की है। इन सब बातों से पहले ज्ञान को अच्छी रीति धारण करो और बाप से वर्सा लो। विलायत में रहते भी मुरली जरूर पढ़ो।"

सा.बाबा 9.10.12 रिवा.

"निराकार परमात्मा को सब याद करते हैं, कृष्ण को सब याद नहीं करते हैं। बाप ही कहते हैं - मन्मनाभव। अभी नाटक पूरा होता है, अब सबको मेरे पास आना है, सबको घर वापस जाना है। ... हर एक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है। बच्चे मुरली नोट नहीं करते, फिर वही बातें बाबा से पूछते रहते हैं। अभी तुम बच्चे बाप से सब नई-नई बातें सुनते हो।"

सा.बाबा 10.10.12 रिवा.

"माया जीते जगतजीत है, मन को जीतने की बात नहीं है। मन तो शान्त, शान्तिधाम में ही

रहता है। यहाँ शरीर है तो शान्त रह न सके। यहाँ तुमको कितनी समझानी मिलती है, तो चिन्तन भी चलता रहे। वहाँ सेन्टर पर आते हैं तो कथा सुनी और घर जाकर धन्धे में लग गये तो खलास। यहाँ तुम बच्चे रिफ्रेश होने के लिए आते हो। यहाँ तुमको रिफ्रेश होने के लिए ताजा-ताजा भोजन मिलता है।" सा.बाबा 11.10.12 रिवा.

"परमात्मा पतित-पावन है, इसलिए उनको आत्माओं को पतित से पावन बनाने आना पड़ता है। आत्मा पर पापों का बोझा चढ़ा हुआ है, उसको उतारने का उपाय बाप ही आकर बताते हैं। पतित-पावन बाप की याद से ही आत्मा पावन बनती है। ... अगर कोई सेन्टर पर नहीं आ पाता है, तो वह मुरली पढ़ता है या नहीं, वह भी पता रखना चाहिए। किसी भी हालत में मुरली रोज़ पढ़नी है।" सा.बाबा 20.10.12 रिवा.

"बाप को स्थूल शरीर तो है नहीं, फिर बच्चों को कहते हैं - मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो। ... बाप पूछते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को 2 घण्टा याद कर सकते हैं, वे हाथ उठाओ। लज्जा नहीं करो, एक्यूरेट बताओ।... जैसे यहाँ सुबह में बाबा एक घण्टा मुरली चलाते हैं, समझाते हैं तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर चली जाती है?" सा.बाबा 20.10.12 रात्रि क्लास रिवा.

"जैसे यहाँ सुबह में बाबा एक घण्टा मुरली चलाते हैं, समझाते हैं तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर चली जाती है? ... अगर सारा समय बैठकर ध्यान से मुरली सुनें और नोट करते रहें तो बाबा कहेगा - हाँ, इनका योग ठीक है। अगर बाबा से बुद्धियोग की लिंक टूट जायेगी तो प्वाइन्ट भूल जायेगी।"

सा.बाबा 20.10.12 रात्रि क्लास रिवा.

"यहाँ तुम बाप के सम्मुख बैठे हो तो मज़ा आता है, नशा चढ़ता है, फिर घर जाने से नशा कम हो जाता है। तुम जानते हो बेहद का बाप परमधाम से आकर इनमें प्रवेश होकर हमको पढ़ाते हैं, चक्र का राज़ समझाते हैं। बाकी सारा दिन तो सवारी नहीं होती है। ... बच्चों को नाम निकालने के लिए किसमें प्रवेश होकर भी सर्विस करता हूँ। इसलिए बच्चों को कब अहंकार नहीं आना चाहिए।" सा.बाबा 23.10.12 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चे तुम स्वदर्शन चक्रधारी बन, शंखधारी बनो। तुमको ज्ञान शंख बजाना है। शंख कहो, मुरली कहो, एक ही बात है। ... काठ की मुरली की बात नहीं, यह है ज्ञान की मुरली। अभी तुम बच्चों को बुद्धि में रखना है - जैसे कल्प पहले सतयुग में पार्ट बजाया था, वैसे फिर भी बजायेंगे। बाकी अभी बाबा से वर्सा तो ले लेवें।"

सा.बाबा 23.10.12 रिवा.

"बच्चों को अपनी उन्नति के लिए आप ही पुरुषार्थ करना है। बाप से ऊंच वर्सा पाने का शौक होना चाहिए। तुम बच्चों को अपना और दूसरों का कल्याण करना है। शिवबाबा सर्व का कल्याणकारी है, तुमको भी कल्याणकारी बनना है। ... बादल सागर के पास आते हैं, उनको भरकर जाए बरसना है, सबको दान करना है। अगर दान नहीं करते तो जरूर कहेंगे कि अपना कल्याण नहीं किया है।" सा.बाबा 26.10.12 रिवा.

"बच्चे मधुवन में आते हैं, बाबा की मुरली सुनने। बाबा जहाँ भी जायेंगे तो सर्विस ही करेंगे। बाबा को भी सर्विस का शौक रहता है। बाप मुरली सुनाते तो बच्चे सम्मुख मुरली सुनकर खुश होते हैं। ... बड़ी-बड़ी सभाओं में बाप तो नहीं जा सकता, वह बच्चों का काम है। कोई सवाल करते तो बच्चों का काम है जबाब देना।"

सा.बाबा 26.10.12 रिवा.

"तुम भारतवासी स्वर्ग के मालिक थे, बाप को भूलने से तुम नीचे गिरते आये हो। अब मुझे याद करो तो ऊपर चढ़ जायेंगे। मुख्य बात है बाप को याद करना है और ज्ञान की बातें सुननी और सबको सुनानी है। ... सबकी सर्विस करना बच्चों का काम है। बाबा को तो एक जगह रहना है, सबको यहाँ आकर रिफ्रेश होना है। यहाँ मधुवन में ज्ञान सागर के पास आते हैं तो बाबा बहुत प्वाइन्ट्स देते हैं।" सा.बाबा 14.11.12 रिवा.

"यहाँ मधुवन में ज्ञान सागर के पास आते हैं तो बाबा बहुत प्वाइन्ट्स देते हैं। भल सेन्टर्स पर भी अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, जो ज्ञान बहुत अच्छा सुनाते हैं, फिर भी बाबा से मिलने यहाँ आना पड़ता है, बाबा और अच्छी तरह समझाते हैं। ... कई बच्चे आपस में लून-पानी होने से नाम बदनाम करते हैं, इसलिए बाबा मुरली में सब बातें समझाते हैं कि कहाँ बच्चों की आँख खुले।" सा.बाबा 14.11.12 रिवा.

"तुमको रोज़ मुरली जरूर सुननी या पढ़नी है। मुरली नहीं सुनते हो तो गोया बाप-टीचर को भूल जाते हो। यह भी जैसे तलाक देना हो गया। अगर अभी तुम नापास होंगे तो कल्प-कल्पान्तर नापास होंगे। अन्त में तुमको सब मालूम पड़ जायेगा कि किसने कितनी पढ़ाई पढ़ी। ... यह सुख और दुख का खेल है। यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।"

सा.बाबा 16.11.12 रिवा.

"यूँ तो सब बच्चे मुरली द्वारा भी सुनेंगे। बाप जानते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कितने सपूत हैं और कितने कपूत हैं। मम्मा-बाबा कहकर भी छोड़ देते हैं। ... बाप रोज़ खज़ाना देते हैं, रोज़ पढ़ाते हैं, प्यार भी देते हैं। यह एक ही बाप, टीचर, सत्गुरु तीनों है। ... बच्चों की चिट्ठी नहीं आती है तो बाप को फिकर होता है कि माया ने कहीं मार तो नहीं डाला, विकार में तो नहीं

ढकेल दिया!" सा.बाबा 17.11.12 रिवा.

"बाबा मुरली में ही बच्चों को सावधान करेंगे ना। बाबा राय देंगे कि ऐसे-ऐसे अपने को बचाते रहो। यह है बाप का सबसे बड़ा बच्चा, यह सबसे आगे चल रहा है। इनके पास सब प्रकार के तूफान आदि आते हैं, महावीर, हनूमान भी इनको ही कहेंगे। रुस्तम होने के कारण माया भी रुस्तम होकर इनसे ही पहले लड़ती है। ... सब तूफान मेरे पास पहले आते हैं, नहीं तो मैं तुमको सावधान कैसे करें।" सा.बाबा 17.11.12 रिवा.

"बाबा रोज़ मुरली में बच्चों को याद-प्यार भेजते हैं। बाकी एक-एक का नाम तो नहीं लिख सकते हैं। बच्चों को भी अपना समाचार देना चाहिए। ... बाप काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा, मनुष्यों को देवता बनाते हैं। कितना बड़ा जादूगर है। स्वर्ग के बगीचे में भारत ही होता है परन्तु वहाँ पता नहीं रहता है कि हमारे पीछे और कौन-कौन आने वाले हैं। यह ज्ञान अभी ही तुमको है।" सा.बाबा 17.11.12 रिवा.

"बच्चे कहते हैं हम ब्रह्मा के बच्चे, शिवबाबा के पोत्रे हैं। शिवबाबा हमको ब्रह्मा द्वारा वर्सा देते हैं। वह ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। ... यहाँ बाप के सम्मुख बैठकर सुनने से सबको मज़ा आता है, बाहर जाने से सब भूल जाते हैं। बाप से 21 जन्मों की राजाई लेना और साधारण प्रजा में पद पाना, फर्क तो बहुत है।"

सा.बाबा 17.11.12 रिवा.

"यहाँ तुम बाप की गोद में बैठे हो तो बुद्धियोग कहाँ जाना नहीं चाहिए। कईयों को रात-दिन कर्म-बन्धन का ही चिन्तन रहता है। ... तुम बच्चों की भी अगर बुद्धि बाहर जाती है तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। बाप के बच्चे बने हो तो पूरा बाप को फॉलो करना चाहिए। कहाँ, किसमें मोह नहीं जाना चाहिए। परन्तु तक़दीर में नहीं है तो मरकर, बाप का बनकर भी उस तरफ चले जाते हैं।" सा.बाबा 22.11.12 रिवा.

"मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा एक आत्माओं के बाप परमात्मा ही देते हैं, फिर किनको डॉयरेक्ट और किनको इन्-डॉयरेक्ट देते हैं। अभी तुम बच्चों के सम्मुख बाप है। दिन-प्रतिदिन तुम देखेंगे, बाबा मधुवन से बाहर कहाँ भी नहीं जायेंगे। इस पुरानी दुनिया में रखा ही क्या है। ... स्वर्ग तो पीछे आता है। मुझे तो पतित दुनिया, पतित शरीर में पराये राज्य में ही आना पड़ता है। गायन भी है दूर देश का रहने वाला।"

सा.बाबा 22.11.12 रिवा.

"यहाँ रहते बुद्धि बाहर भटकती है तो न इधर के और न उधर के हैं। बाप के बने हो तो और सबसे बुद्धि निकल जानी चाहिए। इस बेहद के सन्यास में कोई विरला ही पास होता है। माला

का दाना भी वही बन सकता है। यह तो तक़दीर है, जो यहाँ आकर रहते हैं, उनको याद में मेहनत नहीं लगनी चाहिए। परन्तु देखा जाता है कि यहाँ वालों से भी बाहर वाले तीखे चले जाते हैं। उनका किसी में मोह नहीं जाता है।"

सा.बाबा 22.11.12 रिवा.

"अभी का पोप नहीं आयेगा, क्राइस्ट जो अभी अपने अन्तिम जन्म में है, वह आयेगा। सब हिसाब है, हिसाब बड़ा भारी है। अभी सभी आत्माओं पर माया का ग्रहण लगा हुआ है। स्वदर्शन चक्र से ग्रहण निकाला जाता है। यह गोले का चित्र बहुत अच्छा है। ... बच्चों को मुरली रोज पढ़नी चाहिए। मुरली नहीं सुनेंगे तो बाप का डॉयरेक्शन अमल में नहीं ला सकेंगे।"

सा.बाबा 2.12.12 रिवा.

हमारा भाग्य खुला है, जो मधुवन में बैठे हैं। दुनिया में जहाँ मनुष्य अकेला भी शान्त नहीं रह सकता और यहां मधुवन बाबा के बेहद घर में सैकड़ों के बीच रहकर भी शान्त रहें, यह कमाल किसकी है? स्थान के वायुमण्डल की। ... ऐसा मेरा बाबा हमको यहाँ खींचता है, बच्चे, जो बनना है, अब बन लो, मैं बनाने वाला बैठा हूँ।

दादी जानकी 27.11.12

"सबसे अच्छा काम है यह रुहानी हॉस्पिटल खोलना। शिवबाबा कहते - मैं तुम्हारा लेकर क्या करूँगा, ब्रह्मा बाबा के लिए भी कहते - यह क्या करेंगे? इनके पास जो कुछ था सो शिवबाबा को दे दिया, ट्रस्टी बन गया। इसमें पूरा ट्रस्टी बनना पड़ता है। ... ऐसे नहीं कि यह मकान आदि शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा का है। सब तुम बच्चों के लिए है। यह सबकी कम्बाइण्ड प्रॉपर्टी है। (वास्तव में यथार्थ दृष्टि से देखा जाये तो सारे विश्व की चल-अचल साधन-सम्पत्ति ज्वाइन्ट प्रॉपर्टी ही है, जो हर आत्मा को पार्ट बजाने के लिए मिलती है और पार्ट बदलते ही उस पर उसका अधिकार खत्म हो जाता है और फिर पार्ट अनुसार उसको दूसरी साधन-सम्पत्ति, सम्बन्ध आदि मिलते हैं। यथार्थ समझदार वह है, जो इस सत्य को जानकर उसको ट्रस्टी बनकर सम्भाले और उपयोग करे)"

सा.बाबा 3.12.12 रिवा.

"अभी मैं तुमको कितने गुह्य-गुह्य राज़ समझाता हूँ। बाबा कोई सतसंग में थोड़ेही मुरली चलायेगा। बच्चों को बाप से मिलकर बहुत खुशी का पारा चढ़ता है। ... यहाँ मकान आदि जो कुछ बनता है, सब बच्चों के लिए है। ऐसे नहीं कि सबको यहाँ आकर बैठ जाना है। नहीं, अपने गृहस्थ व्यवहार को भी सम्भालना है। ... घर-गृहस्थ में रहते बाप से योग लगाते रहो तो विकर्म विनाश होंगे, आत्मा गोल्डन एज्ड बन जायेगी और तुम घर में चले जायेंगे। पुरुषार्थ

कर मम्मा-बाबा समान इज्ज़त से पास होकर घर जाना है।"

सा.बाबा 3.12.12 रिवा.

"आजकल रिद्धि-सिद्धि भी बहुत है। बाप तो तुमको कितना सहज समझाते हैं परन्तु पढ़ने वालों पर मदार है। टीचर तो सबको एकरस पढ़ाते हैं, पढ़ने वालों में कोई पास विद् ऑनर होंगे, कोई नापास भी होंगे। यह भी सब होना जरूर है क्योंकि सारी राजधानी स्थापन होनी है। ... बाप रोज़ पढ़ाते हैं, रोज़ बहुत गुह्य प्वाइन्ट्स निकलती हैं। ये सब हीरे-रतन हैं, रोज़ नहीं पढ़ेंगे तो ये रतन मिस हो जायेंगे।"

सा.बाबा 6.12.12 रिवा.

"मुरली रोज़ पढ़नी-सुननी चाहिए। अच्छी रीति नहीं पढ़ेंगे तो स्वर्ग की इतनी ऊंची बादशाही गँवा देंगे। ऐसे बाप को छोड़ दिया तो याद रखना नापास हो जायेंगे, फिर बहुत रोयेंगे, खून के ऑसू बहायेंगे। ... टीचर्स को न आने वालों को सावधान करना चाहिए। श्रीमत कहती है - अच्छी रीति नहीं पढ़ेंगे तो पद भ्रष्ट हो जायेंगे।"

सा.बाबा 6.12.12 रिवा.

"बाबा जो मुरली सुनाते, यह बुद्धि के लिए खाना है। इन सब बातों पर बुद्धि से विचार करना होता है। अभी तुम्हारी बुद्धि ऊपर चली गई है। तुम रचता बाप और रचना को जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में सारे सृष्टि-चक्र का राज़ है। ... अभी तुम सभी का आक्यूपेशन बता सकते हो। ड्रामा में किसका क्या पार्ट है, सब तुम्हारी बुद्धि में है।"

सा.बाबा 6.12.12 रिवा.

"यह है ज्ञान की डमरू, इसको शंखध्वनि भी कहा जाता है। बाबा इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का सब राज़ समझाते हैं। यह ज्ञान की मुरली है, जो बाबा आकर सुनाते हैं। ... मुझ बिन्दी में कितना पार्ट नूँधा हुआ है, ये बातें कोई नये की बुद्धि में बैठ न सकें। पुरानों में भी कितनों की समझ में नहीं आता है। सबकी बुद्धि में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही ज्ञान बुद्धि में बैठता है।"

सा.बाबा 7.12.12 रिवा.

मुरली, मधुबन, मुरलीधर और परमात्म-मिलन की प्रक्रिया

परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव और परिवर्तन की प्रक्रिया

गायन है आत्मा, परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सत्गुरु मिले दलाल।

ज्ञान सागर परमात्मा से ज्ञान नदियों का मिलन मधुवन में ही होता है और वे आत्मायें ज्ञान

सागर की मुरली सुनकर हर्षित होती हैं। साथ ही जहाँ मुरलीधर परमात्मा है, उनकी मुरली चलती है, वह भी मधुवन ही है परन्तु वह अस्थाई मधुवन कहा जायेगा।

सूक्ष्मवतन से अव्यक्त बापदादा जो विश्व की सर्वात्माओं की सेवा कर रहा है, वह भी अगर किसके कल्याणार्थ इशारा करेगा तो मधुवन की ओर ही करेगा क्योंकि सारे विश्व में यही ईश्वरीय कर्तव्य का केन्द्र-बिन्दु है।

आत्मा और परमात्मा का मिलन सारे सृष्टि-चक्र में सबसे सुन्दर मिलन मेला है, जो कल्प के संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं। सारे कल्प में यही मंगल मिलन है, जब आत्मा और सारे विश्व की चढ़ती कला होती है, इसलिए इसको सुन्दर मेला कहा जाता है। इस मिलन-मेले के कई अद्वितीय परिदृश्य हैं, जो आत्माओं को लुभाते भी हैं, हर्षाते भी हैं और जीवन में परम-प्राप्ति की अनुभूति भी कराते हैं। निराकार परमात्मा के साकार तन में आकर मिलन मनाने की एक अद्भुत कहानी है, जिसको सुनकर, उस पर विचार करने से आत्मा गद्गद् हो जाती है और स्वयं भी उस मिलन का अद्भुत अनुभव करके अपने को धन्य-धन्य अनुभव करती है। इस मिलन के अनेक दृश्य है, जिनमें

* निराकार बाप का गुप्त वेष में मिलन अर्थात् आदि में निराकार शिवबाबा ने अनेकानेक आत्माओं को साक्षात्कार आदि के द्वारा अलौकिक अनुभव कराकर प्रेरित किया और आत्माओं को ऐसा अनुभव कराया कि वे देह और देह की दुनिया भूलकर, पतित दुनिया की लोक-लाज छोड़कर प्रभु संग के रंग में रंग गई।

दूसरा है गोप-गोपियों और गोपी-वल्लभ के रूप में आत्मा-परमात्मा का मिलन। यज्ञ की स्थापना के आदि में 14 साल की अखण्ड भट्ठी चली, जिसमें अखण्ड तपस्या के साथ साकार तन में पधारे परमात्मा और साकार ब्रह्मा बाबा के साथ ब्रह्मा वत्सों का गोप-गोपियों के रूप में मिलन रहा और उन्होंने परमात्म-मिलन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हुए अखण्ड तपस्या की।

तीसरा मिलन है, जब 14 साल की भट्ठी के बाद संस्था का मुख्यालय कराची से भारत में स्थानान्तरित हुआ और विश्व-कल्याण की सेवा की आदि हुई तो आने वाली आत्माओं ने निराकार शिवबाबा का साकार मम्मा-बाबा की परम सुखदायी गोद के मिलन का अनुभव अर्थात् दोनों का साथ-साथ मिलन का अनुभव। आने वाली आत्मायें पहले मम्मा की गोद में, फिर बाबा की गोद में जाकर परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव करते थे। वे आत्मायें भी

परम भाग्यशाली रहीं, जिन्हों के मिलन का वह पार्ट रहा।

चौथा है साकार में परमात्मा से मिलन और उनकी परम कल्याणमयी गोद का मिलन अर्थात् उसका अनुभव। जब मम्मा एडवान्स पार्टी में सेवा-अर्थ चली गई तो साकार बाबा के तन द्वारा निराकार बाप का मिलन भी अद्वितीय था। साकार बाबा ने मम्मा-बाबा दोनों का पार्ट बजाया और बच्चों को गोद में लेकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराया। परमात्म-मिलन का वह अनुभव भी अविस्मरणीय है। वह अनुभव भी बड़े भाग्य की बात है, जिसके लिए बाबा ने कहा है, समय आयेगा जब इस साकार मिलन को आत्मायें याद करेंगी।

पांचवा है साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद अव्यक्त बापदादा का साकार तन द्वारा साकार के समान मिलन। जनवरी सन् 1969 में जब साकार ब्रह्मा बाबा कर्मातीत होकर अव्यक्त हुए तो अव्यक्त बापदादा का साकार में आकर मिलन भी अति न्यारा-प्यारा था। जैसे साकार में शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के तन द्वारा व्यक्तिगत रूप में मिलते थे, हाल-चाल पूछते थे, अपनी कल्याणमयी दृष्टि से, मधुर वचनों से आत्माओं को प्यार और दुलार देते थे वैसे ही अव्यक्त बापदादा भी बच्चों से मिलकर उनका हालचाल पूछते और बच्चों को प्यार और दुलार देकर बच्चों की पालना करते थे।

छठा है अव्यक्त बापदादा का साकार तन द्वारा व्यक्तिगत रूप में मिलन-मेला अर्थात् वृद्धि होने से पहले जैसा मिलन का विधि-विधान तो नहीं रहा लेकिन अव्यक्त बापदादा आत्माओं को व्यक्तिगत रूप में वरदान देकर मिलन मनाते थे। समय सतत परिवर्तनशील है, इसलिए समय की गाड़ी आगे बढ़ती गई और समय के साथ मिलन की रीति भी परिवर्तन होती गई, फिर भी समय-समय पर अव्यक्त बापदादा व्यक्तिगत रूप में मिलकर भी वरदान देते मिलन मनाते रहे। वह भी समय था, जब ओम् शान्ति भवन में अव्यक्त बापदादा के साथ मिलन मनाने में गुड-नाइट और गुड-मार्निंग दोनों साथ-साथ होते थे अर्थात् मिलन में रात से दिन हो जाता था।

सातवाँ है अव्यक्त बापदादा का पार्टी के रूप में मिलन अर्थात् बापदादा का पार्टी के रूप में मिलन मनाने का समय अर्थात् दृश्य। उसमें भी बापदादा रात-रात भर बच्चों से मिलन मनाते रात को दिन बनाते रहे और आत्माओं को भरपूर करते रहे।

आठवाँ आया सभा में दृष्टि और मुरली के द्वारा मिलन मेला अर्थात् बाबा का साकार तन में आकर सारी सभा को दृष्टि देकर मिलन मनाने का समय अर्थात् दृश्य, वह भी अति मंगलकारी मिलन मेला रहा। जिसके लिए बाबा नये-नये बच्चों को कहते थे - लेट आये परन्तु टू-लेट नहीं। यह भी बड़ा भाग्य है।

नौवाँ दृश्य है अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर परमात्म-मिलन मनाना अर्थात् अब समय आया है अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मेले का, जिसके लिए अव्यक्त बापदादा ने 1969 में ही इशारा दिया था कि अन्त तक सदा काल का मिलन वे ही बच्चे कर सकेंगे, जो अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का सफल अभ्यास करेंगे।

समय परिवर्तनशील है, समय की गति के साथ परमात्म-मिलन की रूपरेखा परिवर्तन होती रही है और परिवर्तन हो भी रही है और होनी भी है, जिसके लिए अचानक की चेतावनी बापदादा दो साल से देते रहे हैं और कहते रहे हैं कि अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाना ही स्थाई मिलन मनाना है।

समय के अनुसार अभी जो यह परिवर्तन हुआ है कि हम सबको संगठन में अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर इस परमात्म-मिलन का अनुभव करना है। यह मिलन मेला भी अति मंगलकारी है और आत्माओं को शक्ति देने वाला है। यह संगठन का मिलन भी अन्तिम समय में हमको विशेष सहयोग देने वाला है। क्योंकि अन्त समय तो शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों ही परमधाम जायेंगे, उस समय इस संगठन के मिलन-मेले का विशेष महत्व होगा। जो निश्चयबुद्धि बनकर अभी इस संगठन के मिलन-मेले के महत्व को जानकर स्वयं में परिवर्तन करेंगे और इस संगठन के मिलन के महत्व को स्वीकार करेंगे अर्थात् समय के परिवर्तन को स्वीकार करके इस मिलन को मनायेंगे, वे अन्त समय इसके महत्व को अनुभव करेंगे। अन्त में विनाश के समय यह संगठन का मिलन-मेला हमारे लिए छत्रछाया बन जायेगा। हम सभी को भी घर तो वापस जाना ही है परन्तु अन्त समय के अति भयानक दृश्य को सहन करने और अति मंगलकारी दृश्य को देखने के लिए यह संगठन का मिलन-मेला ही सहयोगी होगा। मिलन के दिन संगठित योग में भाग लेना हमारा कर्तव्य भी है और उसमें ही हमारे ब्राह्मण जीवन की सफलता भी समाई हुई है।

"इसमें हर एक की इण्डिविजुअल तक़दीर है, इसलिए हर एक को पुरुषार्थ भी इण्डिविजुअल करना है। अपनी आपही चेकिंग करनी चाहिए। ... जो पक्का प्रण कर लेते हैं कि हम बाप को

कभी नहीं भूलेंगे, बाप से स्कॉलरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। ऐसे बच्चों को फिर मदद भी मिलती है। ऐसे बच्चे अन्त में साक्षात्कार करते रहेंगे। जैसे शुरू में हुआ, वही फिर पिछाड़ी में देखेंगे। जितना नज़दीक होते जायेंगे, उतना खुशी में नाचते रहेंगे। उधर खूने नाहेक खेल भी चलता रहेगा।" सा.बाबा 6.11.12 रिवा.

"अभी तुम्हारा यह टाइम बहुत वेल्यूएबुल है, इसको वेस्ट नहीं करना है। भक्ति मार्ग में बहुत टाइम वेस्ट करते आये हो। ... योग में रहने की ऐसी प्रैक्टिस हो, जो भल कितना भी आवाज़ हो, अर्थक्वेक हो, बॉम्बस गिरें, तो भी डरना नहीं है। यह तो जानते ही हो कि रक्त की नदियाँ बहनी है। आगे चल बहुत आफतें आनी है।"

सा.बाबा 7.11.12 रिवा.

अब समय तो सम्पूर्णता की ओर बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए अन्तिम मिलन-मेले का अनुभव करना और खुशी-खुशी घर जाने के लिए तैयारी करने के लिए यह संगठन का मिलन-मेला भी ड्रामा में नूँधा हुआ है। परिवर्तनशील ड्रामा है, हर क्षण परिवर्तन होता रहता है और परिवर्तन होता रहेगा, उस परिवर्तन के साथ स्वयं में परिवर्तन करना और समय की चुनौती को स्वीकार करना ही ज्ञानी आत्माओं का लक्षण है, भूतकाल को सोचने में समय गँवाना एक भूल होगी। बाबा ने हमको जो दिया है, जो अनुभव कराया है, उसके महत्व को जानकर, उसका उपयोग करना और कराना ही इस संगमयुगी जीवन की सफलता है। इस विश्व-नाटक की विविधता और सतत् परिवर्तनशीलता को बुद्धि में रखकर समय अनुसार अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करके परमात्म-मिलन मनाना, मिलन का अनुभव करना और आत्माओं को कराना हर ब्राह्मण आत्मा परम कर्तव्य है।

बाबा ने यह भी कहा है कि जो पार्ट आदि में चला है, वह अन्त में भी अवश्य चलेगा अर्थात् आत्माओं को साक्षात्कार आदि होंगे, परमात्म-मिलन का अनुभव होगा। बाबा के ये महावाक्य भी हमारी बुद्धि में जागृत रहें।

यह भी इस विश्व-नाटक की सत्यता है कि जिस आत्मा ने कल्प पहले जो और जैसा अनुभव किया है, उसकी ही उसको समय पर आकर्षण होती है और वह उसमें ही सन्तुष्टता का अनुभव करता है। अभी भी जो परिवर्तन हुआ है और हो रहा है, उसको स्वीकार करके जो श्रृद्धा-भावना से यहाँ आयेंगे, वे अवश्य ही परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव करेंगे, उनको प्रेरणा मिलेगी क्योंकि यह वरदान भूमि है, इस भूमि में परमात्म-मिलन का अलौकिक अनुभव समाया हुआ है, जो आने वाली हर आत्मा को होगा ही।

परिवर्तनशील ड्रामा है, आदि से ही परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे।

परिवर्तनशीलता के इस सत्य को बुद्धि में रखकर अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर परमात्म-मिलना मनाना और अन्य आत्माओं को अनुभव कराना ही ज्ञानी-योगी आत्माओं का कर्तव्य है। संगमयुग परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण है, इसलिए संगमयुग की परम-प्राप्तियों का अनुभव करते हुए उड़ते रहना और उड़ाते रहना ही संगमयुगी जीवन की सफलता है।

बाबा ने यह भी कहा है कि साकार ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में स्थित हो सदा जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहो। यह वे ही कर सकेंगे, जो सदा संगमयुगी प्राप्तियों का अनुभव करते हुए बाप के साथ अव्यक्त मिलन-मेले में रहेंगे।

हमारी बुद्धि में यह निश्चय पक्का रहना चाहिए कि यज्ञ में आदि से अब तक अनेक परिवर्तन होते भी यज्ञ बढ़ता रहा है, बढ़ रहा है और बढ़ता ही रहेगा। जब भक्ति मार्ग के यादगार तीर्थों पर श्रृद्धालुओं की भीड़ रहती है तो यह तो वरदान भूमि सत्य तीर्थ है, यह भूमि अनन्त प्राप्तियों, वरदानों, अनुभूतियों से परिपूर्ण है, अनुभव का आधार है, जो अन्य स्थानों पर सम्भव नहीं है। जब-जब भी कोई परिवर्तन हुए हैं तो थोड़े समय हलचल रही है परन्तु यज्ञ सदा ही आगे बढ़ता रहा है। जो उस हलचल में अचल रहे हैं, उन्होंने ही संगमयुग की परम प्राप्तियों का अनुभव किया है।

साकार तन द्वारा अव्यक्त बापदादा के मिलन का विधि-विधान परिवर्तन होते भी संगठित रूप में योग का अपना महत्व है, उसका अपना प्रभाव है और अनुभव है, इसलिए निश्चयबुद्धि आत्माओं का मधुवन में आना-जाना निरन्तर वृद्धि को पाता रहेगा और यज्ञ सम्पूर्णता की ओर बढ़ता रहेगा।

अभी आने वालों का और हम सबका यह सौभाग्य है कि अभी तो हमारे सामने वे आदि रतन भी हैं, जिन्होंने आदि से अब तक सब प्रकार के मिलन का अनुभव किया है और अपनी दृष्टि-वृत्ति से हमको भी अनुभव कराते हैं।

"सभी अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो ? विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। ... सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेग़मपुर का बादशाह। भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय भी बेग़मपुर के बादशाह हो अर्थात् संकल्प में भी ग़म अर्थात् दुख की लहर न हो क्योंकि दुखधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो।" अ.बापदादा 3.10.75

"रेस्पाण्ड अब भी फौरन मिलता है लेकिन बीच में व्यक्त भाव को छोड़ना पड़ेगा, तब ही उस रेस्पाण्ड को सुन सकेंगे। ... ब्रह्मा बाप भी पहले बाहरयामी था, अभी अन्तर्यामी हो गया है। अव्यक्त स्थिति में जानने की आवश्यकता नहीं रहती है (कि किसके अन्दर क्या संकल्प है,

सामने आते या संकल्प करते ही सब स्पष्ट हो जाता है)। स्वत: ही एक सेकेण्ड में सारा नक्शा देखने में आ जाता है।" अ.बापदादा 2.02.69

"निश्चय इस ब्राह्मण जीवन की सम्पन्नता का फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। ... यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया, स्वयं को भी आत्म-स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है, जैसा है, वैसे जानना।" अ.बापदादा 4.12.95

"मुख्य बात है - यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन को पक्का करो। कहने को तो कह देते हो कि मैं आत्मा हूँ और हमारा बाप सर्वशक्तिमान है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिए। ... निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ, स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। ... समझदार की निशानी है कभी धोखा नहीं खाना। ये ज्ञानी की निशानी है।" अ.बापदादा 4.12.95

वैसे तो साकार में परमात्म-मिलन का अपना महत्व है और अनुभव है, वह जिन्होंने किया, वे ही जान सकते हैं। ऐसे ही अव्यक्त रूप का साकार में मिलन का भी अपना महत्व है और अनुभव है, उसको भी जिन्होंने किया, वे ही जानते हैं। परन्तु स्वयं अव्यक्त रूप में स्थित होकर अव्यक्त मिलन का भी अपना महत्व और अनुभव है और वर्तमान समय और भविष्य में भी ये मिलन ही प्रैक्टिकल में सम्भव होगा और आत्माओं को परम-प्राप्तियों का अनुभव कराने वाला होगा।

ड्रामा अपने पट्टे पर चल रहा है और चलता रहेगा। इसके दृश्य परिवर्तन हो रहे हैं और होते भी रहेंगे परन्तु यथार्थ ज्ञान-योगी आत्मा को हर दृश्य कल्याणकारी आनन्दमय अनुभव होगा। वे हर दृश्य को देखते हुए अपनी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होकर, इस संगमयुगी जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते रहेंगे।

यथार्थ ज्ञानी-योगी सृष्टि-चक्र के अन्तिम दृश्य अर्थात् विनाश की प्रतीक्षा में अपना समय-संकल्प-स्वांस न लगाकर इसकी अनादि-अविनाश्यता को बुद्धि में रखकर परम-प्राप्तियों से सम्पन्न इस संगमयुगी जीवन में सदा परमात्मा पिता के साथ मिलन मनाते परमानन्द का अनुभव करते रहेंगे क्योंकि इस संगमयुगी जीवन में ही इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है और परमात्मा के साथ का यथार्थ अनुभव सम्भव है।

सृष्टि-चक्र का अन्तिम दृश्य देखने के लिए जो अपनी अन्तिम स्थिति अर्थात् सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति बनाकर रखेंगे वे ही अन्तिम समय भी परमात्म-मिलन मेले में रहेंगे।

समय-समय पर परमात्मा के साकार तन द्वारा मिलन में परिवर्तन होता रहा है, जिसके लिए हर समय परिवर्तन से पहले बाबा ने इशारा भी दिया है परन्तु ड्रामा अनुसार हम आत्मायें परमात्मा के उन इशारों को समझने में असमर्थ रहे हैं। सतत् परिवर्तन इस विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी विधि-विधान है, जिसको समझकर हमको हर परिवर्तन को स्वीकार करते हुए परमात्म-मिलन के सुख का अनुभव करना है। परमात्म-मिलन का सुख इस संगमयुग का आत्माओं को वरदान है, जो परमात्मा के महावाक्यों को बुद्धि में रख यथार्थ पुरुषार्थ करेंगे, वे सदा ही इस मिलन का अनुभव करते रहेंगे।

बच्चों की वृद्धि और समय परिवर्तन के साथ बापदादा से साकार में मिलन मनाने के विधि-विधान में परिवर्तन होता रहा है परन्तु ज्ञान सागर परमात्मा का आत्माओं को जो मुख्य वरदान है, वह है इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, जो ही आत्माओं के परमात्म-मिलन और आत्माओं की तथा समग्र विश्व की चढ़ती कला का आधार है। समय के साथ ज्ञान प्रशस्त होता गया है, इसलिए उसके आधार पर आत्मायें परमात्म-मिलन का अनुभव सहज कर सकती हैं। पहले सर्वशक्तिवान परमात्मा ने जो अनुभव आत्माओं को अपनी शक्ति से कराया, जिसका आधार साकार में दृष्टि-वृत्ति, साकार गोद आदि रहा, अभी आत्माओं को वह अनुभूति ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा कर अपने पुरुषार्थ से करनी है।

आदि से अब तक के मिलन-मेले पर विचार करें तो उसमें निश्चय का विशेष महत्व रहा है। अभी भी निश्चय का ही महत्व है। जो बाबा के महावाक्यों पर निश्चय करके अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त मिलन मनाने के विधि-विधान को स्वीकार करके मिलन मनायेंगे, वे अभी भी परमात्म-मिलन का परम-सुख अनुभव करेंगे और परमात्मा के सहयोग का भी अनुभव करेंगे, आवश्यकता अनुसार उनके डॉयरेक्शन भी ले सकेंगे। बाबा ने कहा है जब तक संगमयुग है, तब बाप और बच्चों का मिलन निश्चित है।

कहा गया है - अति सर्वत्र वर्जते। यह संगमयुग भावना और विवेक, आदर्श और यथार्थ का भी संगम है। जो चारो ही बातों का सन्तुलन बुद्धि में रखता है, वही इस संगमयुग के परम-सुख को अनुभव करता है। जो किसी कारणवश भावना को प्रधानता देकर विवेक को किनारे कर देता है, वह कभी संगमयुग के यथार्थ सुख को सदा काल अनुभव नहीं कर सकता है। ऐसे ही यथार्थ को किनारे रख आदर्श को प्रधानता देने वालों को भी कहाँ न कहाँ पश्चाताप करना ही पड़ता है अर्थात् वे भी संगमयुग के परम-सुख को सदा काल अनुभव नहीं कर सकते हैं। बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देकर चारो बातों का सन्तुलन अर्थात् बैलेन्स सिखाया है और ज्ञान की यथार्थ धारणा कर सदा यह बैलेन्स रख संगमयुग के परम-

सुख को अनुभव अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति के अनुभवों में रहने के लिए कहा है।

"आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। ... आप सभी का उल्हना तो पूरा हुआ ना, आगे जैसे ड्रामा निमित्त बनायेगा, ऐसे मिलते रहेंगे। आज इतना ही ड्रामा में मिलन है। ... अभी सिर्फ बच्चों का मिलने का उल्हना पूरा करने आये हैं। तो सभी ठीक हैं? ठीक हैं तो सभी हाथ उठाओ। ... आज सिर्फ मिलने के लिए ही आये हैं, अभी आते रहेंगे और मिलते रहेंगे।"

अ.बापदादा 30.11.12

Q. अव्यक्त रूप में अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का यथार्थ साधना क्या है अर्थात् अव्यक्त मिलन की साधना, साधन और सिद्धि क्या है?

Q. अव्यक्त रूप में अव्यक्त बापदादा से मिलन की यथार्थ अनुभूति क्या है?

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने के लिए दो प्रकार की प्रक्रियायें हैं। एक है योग मार्ग और दूसरा है ज्ञान मार्ग। यद्यपि दोनों मार्ग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं परन्तु वैरायटी ड्रामा के विधि-विधान अनुसार किसी आत्मा में भावना प्रधान है, तो किसी में विवेक प्रधान है और इस ज्ञान मार्ग दोनों का ही महत्व है। जो भावना प्रधान हैं, वे भावना की प्रधानता के आधार पर सहज परमात्म-प्यार में खो जाते हैं, जिससे उनको देह और देह की दुनिया सहज ही भूल जाती है और वे अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा के साथ मिलन मनाने में सफल होते हैं अर्थात् उनको मिलन की अनुभूति और प्राप्ति का अनुभव होता है। जो विवेक प्रधान हैं, वे विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने के कारण, देह और देह की दुनिया की नश्वरता समझते हैं और संगमयुगी परमात्म-प्राप्तियों को भी समझते हैं और दोनों को बुद्धि में रखकर देह और देह की दुनिया को भुलाकर अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने में सफल होते हैं अर्थात् वे परमात्मा से परम-प्राप्तियों की अनुभूति करते हैं। इस वैरायटी ड्रामा में संगम पर दोनों ही प्रकार की आत्माओं का अपना-अपना पार्ट है और यज्ञ सेवा में महत्व है।

भक्ति मार्ग में हठयोगी भी देह और देह की दुनिया को भुलाकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होते हैं अर्थात् अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित होते हैं परन्तु उस समय उनको न आत्मा का यथार्थ ज्ञान है और न परमात्मा का यथार्थ ज्ञान है और न ही उस समय परमात्मा का इस धरा पर कोई पार्ट है, इसलिए वे परमात्म-मिलन का अनुभव नहीं कर सकते हैं और न ही उनको परमात्म-प्राप्तियों की अनुभूति होती है। इसलिए हठयोगियों की न ही चढ़ती कला होती है, उतरती कला ही होती है परन्तु उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है क्योंकि हर

आत्मा को ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ का फल मिलता ही है।

वर्तमान परिवर्तन और अव्यक्त मिलन

"जैसे साकार में मिलने का समय मालूम होता था तो नींद नहीं आती थी और समय से पहले ही बुद्धि द्वारा इसी अनुभव में रहते थे। ... वैसे ही अव्यक्त मिलन करने के लिए अमृतवेले अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रुहान करो तो ऐसा अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। ... अमृतवेले भी जो अव्यक्त स्थिति में स्थित वे ही हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे।"

अ.बापदादा 2.02.69

"आपकी मम्मा आपको कहा करती थी कि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं, वे सब आधार निकलने ही हैं, परन्तु निकलते हुए भी निश्चय की नींव मजबूत है। ... परीक्षा के समय जो सीन सामने आती है, उसमें निश्चय तो नहीं टूटा। ... ब्रह्मा बाप ने बातें तो सब बोली हुई हैं, परन्तु समय पर याद आना ही तीव्र पुरुषार्थ है। ... लेकिन वे जानते हैं कि ड्रामा में जो भी पार्ट होता है, वह कल्याणकारी है, इसलिए वे विचलित नहीं होते हैं। वह तो सम्पूर्ण अचल-अडोल, स्थिर था और है भी।"

अ.बापदादा 21.1.69

आदि से अब तक के घटनाक्रम को देखें तो निश्चय का ही विशेष महत्व रहा है। आदि में जो निश्चयबुद्धि होकर रहे, उन्होंने परमात्म-मिलन का अनुभव किया, उसका लाभ उठाया और जब परिक्षा आई तो उसमें पास हो गये। जो यथार्थ निश्चय न करके अन्य बातों में अपना समय, संकल्प और शक्ति लगाई, वे फेल हो गये, कोई बाप को छोड़कर चले गये, कोई साथ रहे परन्तु वह अनुभव और प्राप्ति नहीं कर सके, जो निश्चयबुद्धि वालों ने की।

हमारे आदरणीय दादा विश्व रतन जी जब भी अपना अनुभव सुनाते थे तो यही सुनाते थे कि मेरा ऐसा अनुभव और पुरुषार्थ है कि हर कर्म करते बाबा हमारे साथ है और हमको देख रहा है। यद्यपि हर समय तो साकार में बाबा उनके साथ नहीं रहते थे। परन्तु अपने निश्चय के आधार पर अपना आदर्श जीवन बनाया, जो हमारे लिए भी प्रेरणादायक है और रहेगा।

वैसे भी देखा जाये तो 5-6 साल से बाबा की साकार में पधरामणी तो साल में 8-10 बार ही होती थी और वह भी 4-5 घण्टे की ही होती थी। तो प्रश्न उठता है कि 50 घण्टे तो हम परमात्म-मिलन मनाते थे, बाकी 8760-50 8710 घण्टे क्या करते थे।

साकार में भी बाबा ने कहा है कि हर समय घोड़े पर सवारी थोड़ेही होती है। जब बच्चे बाबा से मिलने आते हैं तो बाबा को याद करते तो बाबा आ जाता है। बाबा को आने-जाने

में देरी थोड़ेही लगती है। उस समय भी बाबा कहते थे कि साकार की गोद में आते हो तो शिवबाबा को याद कर, उनसे मिलने का संकल्प रखो, तो शिवबाबा से मिलन मनायेंगे।

निराकार शिवबाबा तो सर्वशक्तिवान है ही और वह कब भी कहाँ भी आ जा सकता है, ब्रह्मा बाबा भी अभी फरिश्ता रूप में है तो साकार देह के बन्धन से मुक्त होने से कहाँ भी स्वतन्त्रता से आ-जा सकता है और दोनों ही संगम पर विश्व नव-निर्माण की सेवा में हैं, अब ये हमारे ऊपर है हम कहाँ तक निश्चयबुद्धि होकर उनकी सेवाओं का लाभ उठाते हैं और कहाँ तक उनको साथ रखकर विश्व नव-निर्माण की सेवा में सहयोग करते हैं। जो करेगा, सो पायेगा - यह तो इस विश्व-नाटक का अटल विधि-विधान है।

जब भक्ति मार्ग में भक्त हनूमान चालीसा रटते हुए, भयानक परिस्थितियों से भी पार हो जाते हैं, जो हर एक का किसी न किसी रूप में अनुभव है ही, जबकि हनूमान जैसा कोई देवता है ही नहीं। उसमें भी निश्चय के आधार पर ही आत्मा शक्ति का अनुभव करती है, साथ का अनुभव करती है। अभी तो हमको निराकार बाप का भी ज्ञान है, अव्यक्त वतन में बैठे फरिश्ता रूप ब्रहमा बाबा का भी ज्ञान है, उनके गुण-धर्मों और कर्तव्य का भी है तो क्या हम उनके साथ और सहयोग का अनुभव नहीं कर सकते हैं। जबकि बाबा ने कहा है - मैं हर समय बच्चों को सहयोग देने के लिए हाज़िर हूँ।

अगर हम निश्चयबुद्धि होकर रहें और चलें तो दोनों का सहयोग और साथ हम चलते-फिरते भी करेंगे और खास बैठकर भी अनुभव करेंगे, उनकी श्रीमत भी ले सकेंगे। हम सभी चाहते हैं कि बापदादा की पधरामणी हो परन्तु ये तो 100 प्रतिशत निश्चित है कि बाबा की पधरामणी पहले जैसी तो नहीं होगी, उसमें कुछ परिवर्तन अवश्य होगा। परन्तु अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए अव्यक्त रूपधारी बनकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने का सफल अभ्यास करना अति आवश्यक है। जो यह अभ्यास करेंगे, वे ही अन्त तक परमात्म-मिलन का अनुभव कर सकेंगे, बापदादा का सहयोग अनुभव कर सकेंगे और संगमयुग की परम-प्राप्तियों के मौज का अनुभव कर सकेंगे।

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको अभी संगमयुग पर अनन्त प्राप्तियाँ दी हुई हैं, उनका अनुभव कराया हुआ है और हमको उन सबके अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है। अथॉरिटी अर्थात् हम हर समय उनकी अनुभूति में रहें और दूसरों को भी वह अनुभूति करा सकें।

अगर हमने ईश्वरीय प्राप्तियों के अनुभव का अभी यथार्थ रीति लाभ नहीं उठाया तो हमारी भी वही स्थिति होगी, जो बेगरी पार्ट के समय अनेक आत्माओं की हुई, जिन्होंने बाबा को यथार्थ रीति न पहचानकर, समय पर यथार्थ पुरुषार्थ नहीं किया। इसके लिए बाबा साकार रूप

में और अव्यक्त रूप में हमको भिन्न-भिन्न रीति से सावधान करते रहे हैं।

मुरली, मधुबन और परमात्म-अवतरण

जैसे आदि में बहुत समय तक शिवबाबा के अवतरण का पता नहीं चला, ऐसे ही अन्त में जब शिवबाबा जायेगा तब भी स्पष्ट पता नहीं चलेगा। जाने के बाद सिविल वार आदि आरम्भ हो जायेगी, साक्षात्कार आदि होते रहेंगे। शिवबाबा के जाने के बाद एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मायें भी परमधाम जाना आरम्भ हो जायेंगी, अन्त में एटॉमिक वार और प्राकृतिक आपदायें आयेंगी, भूतल पर उथल-पाथल होगी और सब आत्मायें परमधाम जायेंगी। "यह शिव जयन्ति तुम्हारा सबसे बड़ा दिन है। तुमको यह बहुत खुशी से और धूमधाम से मनानी चाहिए। सबको बताना है कि हम बेहद के बाप की जयन्ति मना रहे हैं, हम उनसे स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। शिवबाबा की मृत्यु तो हो न सके। वह जैसे आया है, वैसे ही चला जायेगा। ज्ञान पूरा होगा और लड़ाई शुरू हो जायेगी। पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होना है।"

सा.बाबा 6.12.12 रिवा.

"तुम जानते हो - कैसे बाप ने आकर प्रवेश किया है। दूसरी आत्मायें भी प्रवेश करती हैं। ... आत्माओं को बुलाते हैं। परन्तु आत्मा क्या चीज़ है, कैसे आती-जाती है, यह सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ऐसे नहीं कि आत्मा निकलकर यहाँ आती है। बाप कहते हैं - किसकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए यह साक्षात्कार कराता हूँ, जो पहले से ही ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 7.12.12 रिवा.